भजन संहिता
भाग एक

इस्राएल के भजनों की 1-2 पुस्तकों पर एक आराधनात्मक दृष्टि

एफ वॉयन मेक लियोड

HARVEST MISSION PUBLICATIONS
V-82, SECTOR-12, NOIDA (U.P.)

Psalms (Hindi) Volume - 1

Copyright @ F. Wayne Mac Leod

First Edition : April 2013

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic,mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Published in Hindi by **Harvest Mission Publishers** with permission.

Contact Address:
V – 82 Sector- 12, NOIDA, UP- 201301
Tel : 0120- 2550213, 4264860, 6417828, 9811373357
bijujo@bijujohn.com, bijujohn@roadrunnerworldmission.com
website: www.harvestpublishers.org

Printed at : **New life Printers (P) Ltd,** Delhi

विषय-सूची

इस्राएल के भजनों की 1-2 पुस्तकों पर एक आराधनात्मक दृष्टि 1
प्रस्तावना 5
भजन संहिता का परिचय 6
1. धर्मी की आशीष 8
2. क्षुब्ध देश, शासक प्रभु 13
3. प्रभु मेरी ढाल है 17
4. अलग किये गये लोग 20
5 बुराई से प्रसन्न नहीं होता 24
6. अविश्वसनीय प्रेम 28
7. हे प्रभु, उठ 31
8 मनुष्य क्या है? 34
9. अपने न्याय के कारण जाना गया 37
10. प्रभु जो सुनता है 41
11 प्रभु धर्मी है 45
12. जीभ की शक्ति 48
13. कब तक 52
14. पुनः स्थापित भविष्य 55
15. परमेश्वर के पवित्र स्थान में वास करना 59
16 आनंदमय मीरास 64
17. उसकी आँख की पुतली 69
18. प्रभु की विजय 73
19. परमेश्वर और उसके उद्देश्य का प्रकाशन 78
20. परमेश्वर, जो जवाब देता है 82
21 परमेश्वर का विश्वसनीय प्रेम 86
22 तूने मुझे क्यों छोड़ दिया? 89
23. प्रभु मेरा चरवाहा है 95
24. अपने हाथ उंचे उठाओ 99
25. मुझे लज्जित होने न दे 103
26. न्याय, जांच और छुटकारा 107
27 यहोवा की बाट जोहता रह 110
28. मेरी पुकार सुन ले 114
29. उसकी वाणी की प्रशंसा में 117
30. तूने मुझ पर अनुग्रह किया 120
31 यहोवा मेरा रक्षक है 124

32 क्षमा की आशीष 129
33. परमेश्वर की स्तुति और भय मानने के कारण 132
34. परखकर देखो 136
35. न्याय के लिए पुकार 140
36. पापी मनुष्य और परमेश्वर का प्रेम 143
37. धर्मी और दुष्ट 147
38. पापी मूर्खता 151
39. दुख में चुप्पी 154
40. सबक सीखना 158
41. चंगाई को ऊँचा करना 162
42. परमेश्वर कहाँ है? 165
43. तेरे नाम के निमित्त 169
44. एक विवाह भजन 173
45. परमेश्वर हमारा शरण स्थान 178
46. समस्त पृथ्वी का राजा 181
47. पर्वत सिय्योन 183
48. सामान्य अन्त 186
49. धन्यवाद बलि 189
50. मुझे शुद्ध कर 192
51 दोएग एदोमी 196
52. इस्राएल के लिए उद्धार 201
53. धर्मी की विजय 204
54. जब मैं भयभीत हूँ 208
55. मैंने परमेश्वर को पुकारा 211
56. न्याय के लिए प्रार्थना 214
57. गुर्राने वाले कुत्ते और सुरीला संगीत 218
58. हमें पुनःस्थापित कर 221
59. एक राजा का निवेदन 224
60. मज़बूत और प्रेमी परमेश्वर 228
61. सन्तुष्ट 232
62. एक शिकायत और प्रतिज्ञा 235
63. लोगो परमेश्वर की स्तुति करो 238
64. हे परमेश्वर, उठ 244
65. मुझे बचा ले 248
66. मेरा बचाव कर 253
67 राजा की प्रार्थना 257
लाईट टू माई पाथ पुस्तक वितरण 262

प्रस्तावना

भजनों की पुस्तक पर इस वृत्तांत का उद्देश्य स्वभाव में आराधनात्मक होना है। अर्थात्, मेरा लक्ष्य जीवन और परमेश्वर के साथ हमारे संबन्ध पर पुस्तक की व्यावहारिकता को दिखाना है। मैं इस पुस्तक में दार्शनिक या शैक्षिक होने का प्रयास नहीं कर रहा हूँ। मैंने इसे उनके लिए छोड़ा है जो मुझसे अधिक योग्य हैं। तथापि, मेरी इच्छा है कि बाइबल के इस अनिवार्य भाग में प्रगट की गई सच्चाइयों के द्वारा पाठक बल प्राप्त करें, उत्साहित हों और सांत्वना पाएं।

प्रत्येक भजन तक पहुँचने के लिए समय लें। यह वृत्तांत बाइबल नहीं है। तथापि इसे इसलिए तैयार किया गया है कि पाठक बाइबल और उसकी व्यावहारिकता को समझें। इस पुस्तक में बाइबल परिच्छदों और टिप्पणियों को पढ़ने पर, पवित्र आत्मा से आप पर उन सत्यों को प्रगट करने के लिए कहें जिन्हें वह आपको दिखाना चाहता है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में दिए गए प्रश्नों पर विचार करने के लिए समय लें और जो आपने पढ़ा है उसके बारे में प्रार्थना करें। मैं यह मानता हूँ कि पवित्र आत्मा अपने वचन के प्रगटीकरण का प्रयोग उन्हें उत्साहित करने व बल प्रदान करने को कर सकता है जो इसके सत्यों को पढ़ने व मनन करने के लिए समय निकालते हैं।

भजनों की पुस्तक पढ़ने पर परमेश्वर आपके व्यवहार को चुनौती देने पाए। वह आप पर स्वयं को एक नये व ताज़े रूप से प्रगट करने पाए। मेरी प्रर्थाना है कि पवित्र आत्मा इस वृत्तांत का प्रयोग अपने लोगों को अपने निकट लाने और जीवन के तूफानों और परीक्षाओं के बीच उनकी वचनबद्धता को बल देने में प्रसन्न होने पाए।

एफ. वायन मेक लियोड

भजन संहिता का परिचय

लेखन

भजन संहिता की पुस्तक भिन्न लेखकों द्वारा लिखित 150 भजनों का संग्रह है। उन्हें कई वर्षों की अवधि में एकत्रित कर एक साथ रखा गया है। इस संग्रह में पाए जानेवाले दो तिहाई भजनों को लिखने का श्रेय राजा दाऊद को दिया जाता है। अन्य लेखक निम्नलिखित हैं:

लेखक	भजन
सुलैमान	72, 127
आसाप	50, 73-83
मूसा	90
एज्रा वंशी हेमान	88
एज्रा वंशी एतान	89
कोरह के पुत्र	42, 44-49; 84-85; 87-88

पृष्ठभूमि

भजन संहिता को पांच पुस्तकों में बांटा गया है। इन पुस्तकों के विभाजन को स्पष्ट रूप से चिन्हित किया गया है।

पुस्तक	पुस्तक में पाए जानेवाले भजन
पुस्तक 1	भजन 1-41
पुस्तक 2	भजन 42-72
पुस्तक 3	भजन 43-89
पुस्तक 4	भजन 90-106
पुस्तक 5	भजन 107-150

पांच पुस्तकों में इस विशिष्ट विभाजन का कोई स्पष्ट कारण नहीं है। यह संभव है कि आज हमारे पास जो संग्रह है वह समय के साथ साथ इसमें जुड़ता चला गया है। भजनों का प्रयोग दाऊद के बाद से परमेश्वर की आराधना में किया जाता था। कुछ मामलों में, उन्हें एक विशिष्ट अवसर पर मन्दिर के संगीतकारों द्वारा गाए जाने को लिखा जाता था। कुछ भजनों में भजन के गाए जाने के समय में बजाए जाने वाले वाद्ययंत्रों को बजाने के निर्देश भी दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, भजन 5 को बांसुरी के लिए लिखा गया था। दूसरी ओर भजन 6 को तारवाले वाद्ययंत्रों के लिए लिखा गया था।

कुछ भजन सामान्य धुन के लिए लिखे गए थे। उदाहरण के लिए भजन 9 को 'एक पुत्र की मृत्यु' की धुन पर लिखा गया था, जबकि भजन 22 को 'प्रात:कालीन की हरिणी की धुन पर लिखा गया था। निस्संदेह इन धुनों से आज हर कोई परिचित है। इस संग्रह में बहुत सी संगीत प्रणालियों का भी प्रयोग हुआ है। कुछ भजनों के आरम्भ में पाए जानेवाले संगीत शब्द उस संगीत का संकेत देते हैं जिनका प्रयोग विशिष्ट भजनों में हुआ है।

आज पुस्तक का महत्व

भजन संहिता बाइबल की सबसे प्रिय पुस्तकों में से एक है। इसका कारण संभवत: भजनकारों की ईमानदारी हो सकती है। उन्होंने अपने संघर्षों और दुखों को बताया है। उन्होंने अपने संघर्षों और दुखों को बताया है। उन्होंने अपनी विजयों और प्रभु में अपनी आशा के बारे में भी बताया है। ये संघर्ष करनेवालों को सांत्वना देते तथा जीवन की परीक्षाओं का समाना करनेवालों को निर्देश देते हैं। ये हमें उस प्रभु की ओर संकेत देते हैं जो सभी दुख और दर्द से ऊपर है और जिसके उद्देश्य सदैव सफल होंगे।

भजनकार एक निष्कपट और खुले तरीके से स्वयं को परमेश्वर के प्रति व्यक्त करते हैं। वे उसे अपने संघर्षों के बारे में बताते हैं। वे हमें दिखाते हैं कि जबकि हमारे पास जीवन की समस्याओं को देने के लिए सदैव जवाब नहीं होंगे, हम तब भी प्रभु परमेश्वर में अपने भरोसे को रख सकते हैं।

भजन संहिता का एक सबसे बड़ा विषय यह है कि प्रभु की देखभाल व दिलचस्पी उनके लिए है जो उससे संबन्धित हैं। प्रभु एक चरवाहा, योद्धा, गढ़ और चट्टान उनके लिए है जो उसके पास आते हैं। भजन संहिता का परमेश्वर स्तुति योग्य है। वह अपनी संतान की पुकार को सुनता है। वह एक ऐसा परमेश्वर नहीं है जो बहुत दूर रहता है परन्तु वह ऐसा है जो उनके बहुत से निकट रहता है जो उससे प्रेम करते और उसके नाम पर भरोसा रखते हैं। अपनी संतानों से सहभागिता रखने को वह उन्हें क्षमा करता और फिर से स्थिर करता है।

भजनों की पुस्तक परमेश्वर की उस अंतरंगता को दिखाती है जिसकी इच्छा परमेश्वर हम सभी से करता है। परमेश्वर की संतानों के निष्कपट प्रश्न उसे भयभीत नहीं करते। उसकी संतानों की असफलता उनके लिए उसके प्रेम में कोई परिवर्तन नहीं लाती। परमेश्वर को अपने लोगों के प्यासे और पश्चात्तापी हृदयों में खुशी मिलती है। भजनों की पुस्तक स्तुति और शुक्रगुज़ारी की पुस्तक है। यह इस पृथ्वी पर जीवन के उतार चढ़ाव को एक प्रेमी व दयालु परमेश्वर की देख रेख के अन्तर्गत प्रगट करती है।

1. धर्मी की आशीष

पढ़ें भजन 1:1-6

पहले भजन का आरम्भ एक आशीष से होता है। 'धन्य' शब्द एक खुशहाल दशा को बताता है। हम कई बार संपत्ति की आशीष से भ्रम में पड़ सकते हैं। इसमें भौतिक संपदा को भी शामिल किया जा सकता है, तौभी आशीष धन या भौतिक संपत्ति पर निर्भर नहीं है। यहाँ बताई गई आशीष जीवन और मन की एक दशा है। यह सामान्यता संतुष्टि और खुशहाली की एक दशा है। धन्य व्यक्ति वह है जो खुश और संतुष्ट है उसका जीवन पूर्ण और सार्थक है। उसके हृदय और प्राण में संतुष्ट आनंद का प्रवाह है।

जिस संसार में हम रहते हैं उसे इस तरह से धन्य होने की ज़रूरत है। बहुत से लोग जीवन में अर्थ और उद्देश्य की पुकार कर रहे हैं। वे जिस तरह से धन्य होने की चाह करते हैं वह एक बड़े बैंक के खाते और बड़े घरों और कारों में नहीं मिलता। धन इस आशीष को नहीं खरीद सकता। यहाँ तक कि आत्मिक गतिविधियाँ भी इस संसार के स्त्री पुरुषों के हृदयों के खाली स्थानों को भरने में समर्थ नहीं है। कलीसियाएं उन लोगों से भरी हैं जिन्होंने इस परिच्छेद में भजनकार द्वारा बताई गई आशीष का अनुभव अब तक नहीं किया है।

यह धन्य व आशीषित होने की वह दशा है जो संतुष्टि देने के साथ-साथ हमारे जीवनों में असली खुशी कों लाएगी। ध्यान दें कि भजनकार धन्य व्यक्ति के बारे में हमें पांच चीज़ें बताता है।

पहली, धन्य व्यक्ति वह है जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता। दुष्ट के बारे में बोलने पर, भजनकार उनके बारे में बोलने पर, भजनकार उनके बारे में बोलता है जो प्रभु परमेश्वर के मार्गों पर नहीं चलते। दुष्ट परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं सुनता या उसके जीवन के लिए परमेश्वर की रुचि पर ध्यान नहीं देता।

धन्य व्यक्ति दुष्ट या बुरे व्यक्ति की सलाह या युक्ति के अनुसार नहीं चलता। दुष्ट की युक्ति पर चलना परमेश्वर और उसके उद्देश्य से दूर जाना है। यहां एक विवेकपूर्ण निर्णय लेना है। धन्य व्यक्ति वह है जिसने प्रभु और उसके उद्देश्यों की खोज करने का चुनाव किया है, और सोच समझकर बुरे प्रभावों से भटक न जाने का चुनाव करता है। धन्य होना केवल हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य में पाया जा सकता है।

यहां इस तरह से कहना चाहिए कि दुष्टों की युक्ति उपयुक्त प्रतीत हो सकती है। ऐसे भी समय होते हैं जब प्रभु के मार्गों का अर्थ नहीं दिखता। दानिय्येल के इस तरह से कहने की कल्पना करें, 'मुझे यह ठीक जान नहीं पड़ता कि राजा को क्रोधित कर शेरों को मांद में डाला जाऊं, इसलिए मैं सोचता हूँ कि मुझे परमेश्वर से प्रार्थना करना बन्द कर देना चाहिए।' प्रेरित पौलुस के कहने की कल्पना करें: 'मुझे ठीक जान नहीं पड़ता कि यरूशलेम में गिरफ्तार हो जाऊँ। इससे तो केवल मेरी सेवकाई का अन्त ही होगा, इसलिए मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।' इन पुरुषों ने अपने प्रभु परमेश्वर की सुनने का चुनाव किया। कई बार ठीक नहीं जान पड़ा लेकिन उन्होंने आज्ञाकारी बने रहने का चुनाव किया। उन्होंने अपने मित्रों की सलाह मानने से इन्कार कर दिया। उन्होंने अपने पापी हृदय की आवाज़ को भी नहीं सुना भजनकार जिसे आशीष या धन्य होने के बारे में यहां बता रहा है उसे जानने के लिए हमें कई बार परमेश्वर की बुलाहट के प्रति, अपनी आज्ञाकारिता के लिए शत्रु के क्रोध का सामना करना होगा।

दूसरी, धन्य व्यक्ति वह है जो पापियों के मार्ग में खड़ा नहीं होता। इस भाव में खड़े होने से अभिप्राय ठहरे रहना है। अन्य शब्दों में, वह व्यक्ति जो भजनकार द्वारा बताई गई आशीष के बारे में जानना चाहता है दुष्ट लोगों के मार्गों पर ठहरा नहीं रहेगा। वे अपनी बुराई में पापियों के साथ रहने को संतुष्ट नहीं होंगे। धन्य व्यक्ति को परमेश्वर की व्यवस्था का अनादर करनेवालों के साथ 'बने रहने' में आनंद नहीं मिलता। उन्हें बुराई में मज़ा नहीं मिलता। वे पाप को वैसे ही देखते हैं जैसे परमेश्वर उसे देखता है और परमेश्वर के शोकित हो जाने पर वे भी शोकित हो जाते हैं। उन लोगों के आस-पास ठहरे रहने में कोई आशीष नहीं है जो पापी मार्गों पर चलते हैं। धन्य व्यक्ति वह है जो स्वयं को बुराई से अलग करता है और ऐसा करनेवालों के साथ उसे कोई खुशी नहीं मिलती है।

तीसरा, धन्य व्यक्ति ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में नहीं बैठता। ऐसे बहुत से हैं जो खुले रूप से परमेश्वर के मार्गों का ठट्ठा करते हैं। ये व्यक्ति खुले रूप से परमेश्वर का अनुसरण करनेवालों की आलोचना करते हैं। मुझे विश्वविद्यालय के उन धार्मिक प्रोफेसर से मिलने का अनुभव हुआ है जिन्होंने खुले रूप से उनकी हंसी उड़ाई जिन्होंने व्यक्ति उद्धार या बाइबल पर विश्वास किया जो परमेश्वर से प्रेरित है। इनमें से कुछ ठट्ठा करने वाले धार्मिक भाषाएं भी बोल सकते हैं परन्तु परमेश्वर के वचन का विरोध करते हैं। नये नियम के फरीसी इसी वर्ग के थे। स्वयं को आत्मिक रूप से देखने पर भी उन्होंने यीशु में परमेश्वर के उद्देश्य का ठट्ठा उड़ाया। ठट्ठा करनेवाले के स्थान में कोई आशीष नहीं होगी। इस भजन की आशीष को जानने वाले को परमेश्वर तथा उसके वचन को गंभीरता से लेना है।

पद 2 में भजनकार हमें बताता है कि धन्य व्यक्ति परमेश्वर की व्यवस्था में प्रसन्न रहता है, प्रसन्न रहने का अर्थ किसी चीज़ में प्रसन्न रहने या उसकी चाह करने से है। इस संदर्भ में हमें कई चीज़ों का वर्णन करने की ज़रूरत है।

प्रभु की व्यवस्था में प्रसन्न रहने को एक आशीषित होने के फल के रूप में देखना सहायक होगा बजाय इसके कि इसे धन्य या आशीषित होने की एक शर्त के रूप में देखा जाए। अन्य शब्दों में, धन्य व्यक्ति की एक विशेषता यह है कि वह प्रभु की व्यवस्था में अति प्रसन्न रहता है। परमेश्वर ने सत्य के लिए तथा उस सत्य में रहने के आनन्द के लिए उसकी आँखों को खोला है।

हमें इस पर भी ध्यान देना है कि प्रसन्न रहना एक शक्तिशाली शब्द है। इसमें भावनाएँ और हृदय आता है। इसमें भावनाएं और हृदय आता है। धन्य व्यक्ति वह है जो व्यवस्था की वैध मांग से आगे आज्ञाकारिता के सच्चे और आनंदमयी जीवन की ओर बढ़ता है। पुन: यह आशीषित या धन्य होने का फला है। जिन्होंने आज्ञाकारिता के आनन्द को पा लिया है वे उस आशीष को अनुभव कर रहे हैं जिसके बारे में भजनकार ने इस भजन में बताया है।

अन्तत: पद 2 में भजनकार हमें बताता है कि धन्य व्यक्ति परमेश्वर की व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। एक ऐसा व्यक्ति का चित्र मस्तिष्क में आता है जो अपना कमरा बन्द कर 24 घन्टे अपनी बाइबल को पढ़ता रहता है। ऐसा नहीं है। परमेश्वर के वचन पर ध्यान करने के कई तरीके हैं। हम दिन का आरम्भ हमारी शक्ति के रूप में इसकी प्रतिज्ञा के साथ कर सकते हैं और इसे हमारे मार्ग के प्रत्येक कदम पर आशीष देने की अनुमति दे सकते हैं। हमें प्रार्थनापूर्वक इस पर विचार करने की ज़रूरत होगी कि दिन भर में हमारे द्वारा सामना की जाने वाली विशिष्ट स्थिति में यह कैसे लागू होता है। हम अपने हृदयों को कठिन समयों का सामना करते समय इन प्रतिज्ञाओं के द्वारा आनंदित कर सकते हैं। दिन के अन्त में हमें पीछे की ओर पलटकर आनंद व स्तुति करते हुए देखना है कि परमेश्वर कैसे अपने वचन के प्रति विश्वायोग्य रहा है। परमेश्वर के वचन पर प्रार्थनापूर्वक ध्यान करने की यह रीति विश्वासी के लिए अद्वितीय आशीष लाती है। इसके द्वारा पिता का हृदय बात करता है और उसकी शक्ति व उद्देश्य का प्रगटीकरण होता है। यह सब परमेश्वर के साथ गहन अंतरंगता रखने को बढ़ावा देता है जो बदले में महान आशीष की ओर लेकर जाता है।

पद 3 हमें बताता है कि धन्य व्यक्ति उस वृद्धा के समान है जो बहती नदी के किनारे पर लगाया गया हो। वह वृक्ष संघर्ष के समयों में भी स्थिर बना रहता है। इसके स्वस्थ और फलदायी होने का कारण यह है कि इसकी जड़ें गहराई में होती हैं और नदी से पानी लेती रहती हैं। हमने देखा कि धन्य व्यक्ति परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है। वह दिन और रात उस व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है। वह इसकी प्रतिज्ञाओं को लेता और उन प्रतिज्ञाओं से बल प्राप्त करता है। उसके संपन्न होने का कारण उसका अच्छी भूमि में रोपा जाना और परमेश्वर की व्यवस्था से शक्ति पाना है। 'धन्य' होने की दशा और परमेश्वर के वचन से शक्ति लेने के बीच एक घनिष्ठ संबन्ध है। परमेश्वर का वचन विश्वासी को उत्साहित करता है। यह कठिन समयों में उसे स्थिर रखता और उस मार्ग में उसकी अगुवाई करता है जिसमें उसको जाना

चाहिए। परमेश्वर के आत्मा को भी उस विश्वासी को ताज़गी व शक्ति देने में खुशी मिलती है जो आज्ञाकारिता में चलता है। वह उस विश्वासी को अपनी शक्ति, दानों और अनुग्रह से भरता है जिससे वह सच में धन्य हो जाए।

दुष्ट व्यक्ति के साथ ऐसा नहीं है।

पद 4 में दुष्ट की तुलना भूसी से की गई है जो अनाज से अलग हो जाने के बाद हवा से उड़ा दी जाती है।

भूसी अन्न से अलग हो जाने के बाद किसान के किसी काम की नहीं होती। भूसी हवा में उड़ जाती है और हवा उसे जहाँ चाहे वहां ले जाती है। भजनकर दुष्ट व्यक्ति की तुलना भूसी से इसलिए ही नहीं करता क्योंकि राज्य के लिए वे किसी काम के नहीं है परन्तु उनके जीवन के कारण भी। जो एक आधारहीन जीवन है। भूसी को एक जगह से दूसरी जगह पर उड़ा दिया जाता है। वृक्ष के विपरीत जो मज़बूती से जड़ पकड़े होता है, भूसी की जड़ नहीं होती। यह नदी के ठण्डे पानी से स्थिर नहीं बने रहती। भूसी को जीवन देने वाले स्रोत से अलग कर दिया गया होता है। हवा इसे जहाँ चाहे उड़ा ले जाती है। इस तरह के जीवन में न कोई आराम और न कोई सुरक्षा है। यह एक ठोस आधार रहित जीवन है जिसे केवल परमेश्वर और उसका वचन दे सकता है।

न्याय के दिन, दुष्ट खड़े नहीं रह पाएंगे। ऐसा नहीं है कि उनका न्याय नहीं होगा परन्तु इसके विपरीत खड़े होने के लिए उनके पास भूमि नहीं होगी। उनके पास बचाव के लिए कुछ नहीं होगा। उनका दोषरोपण और दण्ड निश्चित है। उन्हें धर्मियों के साथ स्थान नहीं मिलेगा।

भजनकार अपने पाठकों को यह स्मरण कराते हुए समापन करता है कि प्रभु धर्मी व्यक्ति के मार्ग को जानता है परन्तु दुष्ट का मार्ग नाश हो जाएगा। दुष्ट के लिए कोई आशा नहीं है।

धन्य व्यक्ति वह है जिसने परमेश्वर की व्यवस्था में बड़ी शक्ति और प्रसन्नता को पा लिया है। हमें इस बारे में सावधान रहने की ज़रूरत है कि हमें यह नहीं मान लेना है कि परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने पर हम आशीषित हो सकते हैं। यह भजन हमें यह बताना चाहता है कि आज्ञाकारिता आशीष है। धन्य व्यक्ति वह नहीं है जो आज्ञा का पालन करता है ताकि परमेश्वर से कुछ आशीष पा सके। सच में धन्य व्यक्ति वह है जो परमेश्वर के प्रति भरोसे और आज्ञाकारिता के संबन्ध में रहकर आशीष की पूर्णता को पाता है।

विचार करने के लिए:

- यहाँ भजनकार जिस आशीष के बारे में बता रहा है क्या वह भौतिक आशीषों को प्राप्त करने के बारे में है या वह मस्तिष्क की वह स्थिति है जो परमेश्वर

और उसके उद्देश्यों में गहरी संतुष्टि और अर्थ को पाती है? क्या यह आपका अनुभव रहा है?

- आशीष और संपत्ति के बीच यदि कोई संबन्ध है तो वह क्या है?
- आशीषित होने के लिए आज्ञापालन करने और आशीष के रूप में आज्ञाकारिता के बीच क्या अन्तर है?
- भजनकार धर्मी व्यक्ति के परमेश्वर की व्यवस्था से 'प्रसन्न' रहने के बारे में बताता है यह परमेश्वर के साथ हमारे संबन्ध में उसके मन के बारे में क्या बताता है?
- परमेश्वर के वचन ने आपको कैसे बनाए रखा व सांत्वना दी है?
- इस जीवन में जो भी हमारा है उसे खोने पर भी सच में धन्य होना क्या संभव है, इसलिये कि हम परमेश्वर और उसके वचन के प्रति विश्वासयोग्य रहे हैं?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से उसके वचन पर अधिक मनन करने में आपकी सहायता करने को कहें। उससे कहें कि दिन भर में वह इसे आपके मन में लाता रहे।
- बाइबल में किसी विशिष्ट प्रतिज्ञा के लिए जिसका आपके लिए बहुत महत्व है, कुछ समय परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए निकालें।
- परमेश्वर से आपको उसकी व्यवस्था में 'प्रसन्न' रहने की योग्यता देने को कहें।
- परमेश्वर से आपको उस प्रत्येक चीज़ से जुड़ने के लिए शक्ति देने को कहें जो आपके जीवन के लिए उसके उद्देश्यों के प्रतिकूल है।
- परमेश्वर से आपको उसके साथ पूर्ण आज्ञाकारिता और अंतरंगता के आनंद को दिखाने के लिए कहें।

2. क्षुब्ध देश, शासक प्रभु

पढ़ें भजन संहिता 2 : 1-12

क्या कभी समाचार पढ़कर आपको इस संसार की दशा के बारे में आश्चर्य हुआ है? क्या आपको कभी आश्चर्य हुआ है कि हुल्लड़ और बुराई के बीच परमेश्वर कहाँ था? यदि ऐसा है तो आप अकेले नहीं हैं। वर्षों पूर्व, भजनकार ने भी अपनी निराशा को व्यक्त किया, उन सब बातों के लिए जो उसके दिनों में हो रही थीं।

वह अपने भजन का आरम्भ एक प्रश्न से करता है। ''जाति-जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं और देश देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोच रहे हैं?'' भजनकार के मन में, जातियों के बीच योजना को बताने का प्रगटीकरण हुआ पद 2 हमें बताता है कि प्रभु और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध पृथ्वी के राजा और उनके हाकिम खड़े हुए हैं।

बाइबल के एनआईवी संस्करण में 'अभिषिक्त' को प्रमुख रूप से दिखाया गया है। यह संकेत देता है कि यह शब्द यीशु मसीह के बारे में बताता है। यूनानी शब्द 'मसीह' का अक्षरश: अर्थ 'अभिषिक्त' है। देश और उन देशों के लोग परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे। इसने उनके लिए जीवन को बहुत कठिन बना दिया होगा जो परमेश्वर से प्रेम करते थे तथा उसकी सेवा करना चाहते थे।

यहां प्रयुक्त शब्द अधिक शक्तिशाली हैं। देशों ने प्रभु के विरुद्ध खड़े होकर षडयंत्र रचा है। यहां कोई निर्दोष चीज़ नहीं चल रही है। यहां प्रभु परमेश्वर और उसके वचन के सिद्धान्तों के विरुद्ध खड़े होने का जानबूझकर प्रयास किया जा रहा है। हम समझ सकते हैं कि इस सबके पीछे शैतान है। भजनकार परमेश्वर के उद्देश्यों के विरुद्ध विरोध को देखता है। देश कह रहे थे: आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें और उनकी रस्सियों को अपने ऊपर से उतार फेंकें।' इन बन्धनों और रस्सियों पर विवाद भी हुआ है कि वे क्या हैं। इसे अन्यजाति देशों के दृष्टिकोण से देखना अच्छा होगा। ये देश प्रभु की व्यवस्था या उसके उद्देश्यों के साथ कुछ करना नहीं चाहते थे। वे अपनी इच्छा से विश्वास करने को स्वतंत्र होना चाहते थे। हमारे दिनों में भी, ऐसे लोग हैं जो मसीहियत को बंधन मानते हैं। वे परमेश्वर के उद्देश्यों और उस जीवन से बंधा हुआ पाते हैं जिसे जीने के लिए वह अपने लोगों का बुलाता है। वे विश्वास के बंधनों और रस्सियों को तोड़कर वह करते हैं जो उनके मन को सही लगता है।

अपने दिनों में यह सब देखने पर भजनकार दुखी होता है। उसने देशों को

परमेश्वर के उद्देश्यों के विरुद्ध विद्रोह करते देखा। उसने लोगों को अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की योजना की उपेक्षा करते देखा। यह सब देखकर उसका मन टूट गया था। यह क्यों हो रहा है? हमारे इस संसार में इतना अन्याय और बुराईं क्यों हैं, सभी देशों ने परमेश्वर की ओर पीठ करके उसके उद्देश्यों की उपेक्षा क्यों की है? इस भजन को लिखते समय भजनकार के मस्तिष्क में यही सब प्रश्न चल रहे थे।

भजनकार के इस स्थिति पर चिन्तन करने पर वह उस खतरे से भी अवगत है जो परमेश्वर पर भरोसा करनेवालों के सिर पर घात किये जाने को बना रहता है। ये देश केवल परमेश्वर की ओर से विमुख ही नहीं हो रहे थे परन्तु वे खुले रूप से परमेश्वर और लोगों के विरुद्ध षडयंत्र कर रहे थे। इससे विश्वासियों के लिए चीज़ें और भी कठिन हो जातीं। इस चिन्ता का कारण था।

विश्वासी की घात में बैठने के खतरे को जानने पर भी, भजनकार अपनी आंखें उस एक पर लगाता है जो स्वर्ग में विराजमान है। ऊपर परमेश्वर की ओर देखने पर, वह उसे हंसते हुए देखता है। प्रभु विश्वासियों या देश के व्रिदोहियों पर नहीं हंस रहा है। वह देशों/जातियों के इस तरह से विचार करने की मूर्खता पर हंस रहा है कि वे उसके उद्देश्यों में बाधा उत्पन्न करने में सफल हो सकते हैं।

पद 5 में भजनकार प्रभु को क्रोध में आकर देशों को झिड़कते हुए देखता है। उसने उन्हें अपने क्रोध से भयभीत कर दिया है। इस तरह से भजनकार जानता था कि परमेश्वर स्वर्ग से शासन करता है। वह महाप्रतापी परमेश्वर है, जिसके उद्देश्य बने रहेंगे। इन विद्रोही देशों का उससे कोई मेल नहीं था। परमेश्वर के लोग इस कारण सुरक्षित थे क्योंकि उनका परमेश्वर एक महाप्रतापी परमेश्वर था जो उनकी देखभाल करने के साथ-साथ उनके शत्रुओं का न्याय भी करेगा।

भजनकार परमेश्वर को यह कहते हुए सुन सका: ''मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर बैठा चुका हूँ।'' यहां इसका एक अर्थ निकलता है जिसमें यह परिच्छेद दाऊद के बारे में बताता है, जिसने संभवत: इस भजन को लिखा था। परमेश्वर संभवत: दाऊद को बता रहा था कि उसने उसे यरूशलेम में राजा के रूप में स्थापित किया था और कि कोई भी उसके विरुद्ध खड़ा नहीं रह पाएगा। तथापि, इसके अतिरिक्त यह मसीह का स्पष्ट हवाला है, जिसे हमेशा का राजा होने के लिए आना था।

प्रभु परमेश्वर अपने पुत्र मसीह को यरूशलेम में क्रूस पर मरने के लिए भेजेगा। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान परमेश्वर के लोगों के लिए विजय को लाए और उनके सभी शत्रुओं का नाश करेंगे। वह अपने लोगों पर राजा के रूप में सदा के लिए राज करेगा और कोई भी कभी उसके राज को चुनौती नहीं दे पाएगा। परमेश्वर का एक उद्देश्य था। उसके विरुद्ध किया गया देशों का षडयंत्र असफल होगा। मसीह राजा आएगा और विद्रोह का नाश करके अपने लोगों को विजय देगा।

भजनकार उसे बताना जारी रखता है जो प्रभु से उसने उस दिन कहते सुना था: ''यहोवा न मुझ से कहा, 'तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ' (पद 7)। पुनः ऐसा हो सकता है कि भजनकार से इसे प्रत्यक्ष रूप से बोला गया था जो इस सच्चाई से संघर्ष कर रहा था कि देश उसके और परमेश्वर के उद्देश्यों के विरुद्ध योजना बना रहे थे। तथापि, इसके अतिरिक्त, यह प्रभु यीशु का स्पष्ट उल्लेख है जो परमेश्वर के पुत्र के रूप में हमारे बीच रहने को आया और इस विद्रोह पर विजय और आशा को लेकर आया।

उस पुत्र को, और जो उससे सबंन्धित हैं, उनसे परमेश्वर कहता है: मुझ से मांग और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिए और दूर-दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूंगा'' (पद 8)। जिन देशों ने परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के विरुद्ध विद्रोह की योजना बनाई थी उन्हें पुत्र को उसकी मीरास के रूप में दिया जाएगा। वह उन पर लोहे के दण्ड से शासन कर उन्हें टुकड़े टुकड़े करेगा। ये देश परमेश्वर के उद्देश्यों पर कभी विजयी नहीं होंगे। ऐसा प्रयास करनेवाला प्रत्येक देश अपने कार्य के परिणामों को भोगेगा।

इसी कारण भजनकार पृथ्वी के राजाओं को बुद्धिमान होने की चेतावनी देता है। वह प्रभु और उसके उद्देश्यों के विरुद्ध योजना बनाने के खतरे को भविष्यवाणी के द्वारा चिताता है। परमेश्वर से मुँह मोड़नेवालों के लिए केवल विनाश और पराजय ही होगी। भजनकार उन्हें भय के साथ प्रभु की सेवा करने की चुनौती देता है। वह उन्हें प्रभु की ओर आने और कांपते हुए उसमें आनंद करने को बुलाता है। वह एक ऐसा परमेश्वर है जिससे भयभीत होना चाहिए। परन्तु वह तब ही करुणामयी और दयालु होगा जब वे उसकी ओर फिरेंगे। उन्हें पुत्र को चूमने के लिए बुलाया गया है ताकि वह उन पर अधिक क्रोधित न हो। प्रभु परमेश्वर की शरण में आनेवाले ही सुरक्षित व धन्य होंगे।

इस भजन से हम देखते हैं कि इस जीवन में जबकि चीज़ें सरल नहीं होगी, तौभी प्रभु से प्रेम करनेवालों और उसके नाम पर भरोसा करनेवालों के लिए अद्वितीय आशा है। यह सच है कि हम अपने चारों ओर बुराई के प्रमाण को देखते हैं। सारे देश परमेश्वर के वचन के सिद्धान्तों से मुड़ते हुए प्रतीत होते हैं। कई बार हमें आश्चर्य होता है कि क्या कोई आशा है। हो सकता है कि आप अपने आस-पास की परिस्थितियों से स्वयं को घिरा हुआ अनुभव करते हों।

भजनकार के समान, उन दिनों में, हमें अपनी आंखें स्वर्ग के परमेश्वर को उन लोगों की मूर्खता पर हंसते हुए देखने को ऊपर उठानी हैं जो यह सोचते हैं कि वे उसके उद्देश्य और योजना में बाधक हो सकते हैं। जान लें कि देशों के क्रोधित होने पर, हमारा परमेश्वर राज करता है।

विचार करने के लिए:

- क्या आपके बीच में आत्मिक युद्ध का कोई प्रमाण है? यह कैसा प्रमाण है?

- क्या आपने स्वयं को कभी समस्याओं और कठिनाइयों से हारा हुआ अनुभव किया है? इस भजन में आपको क्या प्रोत्साहन मिलता है?
- हम उस सुरक्षा के बारे में क्या सीखते हैं जो प्रभु यीशु में हमारी है?
- यह परिच्छेद हमें परमेश्वर के न्याय के बारे में क्या सिखाता है? क्या बुराई हमेशा तक बनी रहेगी?
- प्रभु पर अपनी आंखें केन्द्रित करने पर हमारी कठिनाइयों में क्या अन्तर आता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए समय लें कि वह प्रतापी परमेश्वर है जो सभी पर राज करता है।
- कठिनाई और परीक्षा के समय में अपनी आंखें प्रभु पर केन्द्रित रखने के लिए उससे अपनी सहायता करने को कहें।
- अपने बीच आप जिस बुराई और विद्रोह को देखते हैं प्रभु से उसे तोड़ने को कहें। उसको आपके राज्य को उसमें लाने को कहें।

3. प्रभु मेरी ढाल है

पढ़ें भजन संहिता 3:1-8

इस भजन को दाऊद ने अपने जीवन के सबसे कठिन समय में लिखा था। 2 शमूएल 15 इस समय के बारे में बताता है। अबशालोम, दाऊद का पुत्र बाशा राजा बनना चाहता था। वास्तव में, उसने स्वयं को राजा घोषित कर दिया था और अपने पिता का विरोधी बन गया था। दाऊद के विरुद्ध अबशालोम का षडयंत्र जब बढ़ने लगा तब दाऊद ने अबशालोम के क्रोध से बचने के लिए यरूशलेम को छोड़ना ज़रूरी समझा। इस भजन को दाऊद ने अपने जीवन के इस समय पर विचार करते हुए लिखा था।

दाऊद जान गया था कि उसके बहुत से शत्रु थे। उसका अपना पुत्र भी उन शत्रुओं में था। जिस समय वह इस भजन को लिख रहा था, ये शत्रु उसके विरुद्ध यह घोषणा करते हुए खड़े हो रहे थे कि उसका बचाव परमेश्वर की ओर से भी नहीं होगा (पद 2)

दाऊद ने अपने शत्रुओं के शब्दों को सुना परन्तु वह जानता था कि प्रभु परमेश्वर उसकी आवश्यकता के समय में उसे नहीं छोड़ेगा। दाऊद ने अपने शत्रुओं को देखा परन्तु उसने प्रभु परमेश्वर पर अपने भरोसे और आत्म-विश्वास को रखने का चुनाव किया। परमेश्वर उसके लिए एक ढाल था। उसे भरोसा था कि परमेश्वर इस कठिन समय से उसे बचा लेगा। यहाँ बहुत से ऐसे बिन्दु हैं जिन पर हमें बल देने की ज़रूरत है।

प्रथम, दाऊद ने विश्वास किया कि परमेश्वर उसके सिर को ऊँचा करेगा। वर्तमान समय में दाऊद का सिर ऊँचा नहीं उठाया गया था। प्रमुख विचार यह है कि वह स्थिति के भार का अनुभव कर रहा था। उसके पुत्र का उसके विरोध में खड़ा होना सरल बात नहीं थी। दाऊद के लिए अपने शत्रुओं से दूर भागना सरल नहीं था। प्रतिदिन वह अपने सिर को नीचे लटकाए चलता था। वह जानता था कि निराश और परास्त होने का क्या अर्थ है। उसने विश्वासघात के दर्द को अनुभव किया था। दर्द वास्तविक था परन्तु उसी तरह से दाऊद का भरोसा भी था। उसे विश्वास था कि एक दिन अवश्य ही परमेश्वर उसके सिर को ऊँचा करेगा। परमेश्वर उसे हमेशा के लिए दुख व दर्द में पड़ा नहीं रहने देगा। विजय आ रही थी।

द्वितीय, दाऊद ने विश्वास किया कि परमेश्वर उस पर महिमा को लाएगा। इस समय, अपने शत्रुओं से भागने पर उसके लिए इस महिमा का कोई अर्थ नहीं था। अपने शत्रुओं से भागने पर कुछ भी महिमामयी नहीं होता। पुनः दाऊद ने विश्वास किया कि यह अस्थाई था। अपने समय पर परमेश्वर अपनी महिमा को लाएगा। दाऊद का सम्मान होगा। इस समय, उसे अपने शत्रुओं से भागना था, परन्तु अन्त में परमेश्वर उसे विजय

देगा। शत्रु उस पर विजयी नहीं हो सकते क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने स्वयं उसको एक ढाल के समान घेरा हुआ है। कोई भी चीज़ उस ढाल को क्षति नहीं पहुँचा सकती।

परमेश्वर अपनी संतानों की आवाज़ सुनने को बहरा नहीं हुआ था। वह अपनी पवित्र पहाड़ी पर से दाऊद की आवाज़ को जवाब देगा। एक प्रेमी माता या पिता के समान वह अपने बच्चे की ज़रूरत के समय पर सहायता करने को दौड़ता हुआ आएगा। इस सबका दाऊद को पूरी तरह से भरोसा था, बेशक इस समय उसे अपमानित होकर भागना पड़ा था।

समस्याएं बहुत वास्तविक थीं। एक समय पर, दाऊद का सिर नीचे लटका था। तौभी वह जानता था, कि प्रभु उसकी चिन्ता करेगा। पद 5 में वह हमें बताता है कि वह लेटकर सो गया और फिर जाग उठा क्योंकि परमेश्वर ने उसे सम्भाला। पुनः हमें यहाँ फिर से दो विषयों को देखने की ज़रूरत है।

पहला, दाऊद सोने पाया। संकट और कठिनाई से समयों में कई बार हम अपने पलंग पर करवटें बदलते रहते हैं तथा सो नहीं पाते। नींद न आना हमारे चिन्ता करने का संकेत है। क्योंकि दाऊद जानता था कि परमेश्वर उसकी देखभाल या चिन्ता करने में समर्थ है, वह अपने मस्तिष्क को आराम की अवस्था में रख सका। वह शांति से सो सका क्योंकि उसे पता था कि परमेश्वर उसकी स्थिति की चिन्ता करेगा। परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य के बाहर कोई भी चीज़ उसे हानि नहीं पहुँचा पाएगी। उसे परमेश्वर पर पूरा भरोसा था। प्रभु ने उसे घेरा हुआ था। इसी कारण वह शांति से सो सका।

दूसरा, दाऊद अगली सुबह सोकर उठ सका। दाऊद सुबह इसलिए उठ सका क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने उसे रात भर सुरक्षित रखा था। उसने शत्रु को उसकी नींद पर हमला करने या परेशान करने से दूर रखा था। उसके शांतिपूर्वक सो जाने पर परमेश्वर ने उसकी रखवाली की और उसे हानि से बचाकर रखा।

दाऊद जानता था कि चाहे हर ओर से दस हज़ार शत्रु उसके विरोध में क्यों न खड़े हों तौभी प्रभु परमेश्वर के द्वारा उसकी रक्षा की जाएगी। परमेश्वर ने उसके चारों ओर जिस ढाल को रखा था शत्रु को पहले उसे बेधना होगा। उस तक पहुंचने के लिए उन्हें सबसे पहले परमेश्वर तक पहुंचना होगा। एक या दस हज़ार दाऊद के लिए इसका कोई महत्व नहीं था। परमेश्वर उन सभी को रोक सकता है।

इस भरोसे के साथ दाऊद पद 7 में परमेश्वर को पुकारता है:

उठ हे यहोवा! हे मेरे परमेश्वर उसे बचा ले! क्योंकि तू ने मेरे सब शत्रुओं के जबड़ों पर मारा है, और तू ने दुष्टों के दांत तोड़ डाल हैं।

दाऊद अपनी शक्ति और विजय के स्रोत को जान गया था। उसने अपनी शक्ति से शत्रुओं से लड़ने को हथियार नहीं लिये थे। उसने मामले को परमेश्वर को सौंप दिया था कि वही उसे देखे।

पद 8 में दाऊद ने कहा, ''उद्धार यहोवा ही की ओर से होता है।'' उसने

परमेश्वर को पुकारा कि अपने लोगों पर उनके संकट के समय में अपनी आशीषों को उण्डेले।

कितनी बार अपनी परीक्षाओं में मैंने विषय को अपने हाथों में लेने का चुनाव किया? दाऊद इस बात से इन्कार कर सकता था कि वह अपने पुत्र से छिपे। उसने बहुत सी लड़ाइयों को जीता था और एक निपुण योद्धा था। वह अपने स्थान पर खड़ा रह कर अपने सम्मान और प्रतिष्ठा का बचाव कर सकता था। वह उस सिंहासन के लिए लड़ सकता था जिसे परमेश्वर ने उसे दिया था। उसने ऐसा न करने का चुनाव किया। इसके विपरीत उसने परमेश्वर द्वारा इस पर अपने तरीके से व्यवहार किये जाने का चुनाव किया।

हमारी कठिनाइयों में हमारे लिए चुनौती परमेश्वर की मनसा और इच्छा का पता लगाने की होती है। उन समयों में (और इसी तरह से बाकी के समयों में) हमें निर्देशन और मार्गदर्शन पाने के लिए उसकी ओर देखना है। हमारा भरोसा हमारी योग्यता पर नहीं परन्तु हमें बचाने और हमारा नेतृत्व करने को परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य पर होना चाहिए। हमें उसके भरोसे की ढाल के पीछे विश्राम करना है कि समय आने पर वह हमारे सिरों को उपर उठाएगा।

विचार करने के लिए:

- क्या दाऊद इस परिच्छेद में विश्वासघात के दर्द का अनुभव करता है? क्या मसीही आज दुख उठाएंगे?
- दाऊद इस संकट के समय में कैसे सो पाया इसमें हमारे लिए क्या व्यावहारिकता है?
- प्रभु पर भरोसा करने और स्वयं पर भरोसा करने के बीच में क्या अन्तर है?
- आज आप किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं? यह भजन उन समस्याओं से निपटने के बारे में आपको क्या सिखाता है?

प्रार्थना के लिए

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह हमारी ढाल है।
- परमेश्वर से आपको यह सीखने में सहायता करने को कहें कि मामले को अपने हाथों में लेने और उस पर और उसके नेतृत्व पर भरोसा करने के अन्तर की पहचान कैसे करें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि आपके संकट के समय में उसने आपको नहीं छोड़ा।
- परमेश्वर को घन्यवाद दें कि जबकि कुछ समय के लिए हमारे सिर लटक सकते हैं, तौभी वही हमारे सिरों को उपर करेगा।

4. अलग किये गये लोग

पढ़ें भजन संहिता 4:1-8

भजन संहिता पद 4 दाऊद का भजन है। मन्दिर के संगीत में तारवाले यन्त्रों को बजाया जाता था।

इस भजन में दाऊद अपने चारों ओर देखता है और वह दुष्टों को तथा धार्मिकता के प्रति उनकी रुचि की कमी को देखता है। इनमें से अधिकांश व्यक्ति झूठे देवताओं की खोज में थे। चारों ओर झूठे धर्मों पर चलनेवालों को देखकर वह परमेश्वर के दुखी व क्रोधित हृदय को अनुभव करता है। पद 7 में ध्यान दें, वह परमेश्वर से कैसे विनती करता है कि उसे जवाब दे और उसकी निराशा से उसे आराम दे। इस निराशा का कारण पद 2 में मिलता है। उसने अपने दिनों के लोगों की महिमा को अपमान में बदलते देखा था। उन्हें भ्रम से प्रेम करना अच्छा लगा और झूठे देवताओं के निकट आना चाहा। आइये, अधिक विस्तार से इसकी जांच करें।

दाऊद इस सच्चाई पर विलाप करने के द्वारा आरम्भ करता करता है कि उसके समय के लोगों ने महिमा को अनादर में बदल दिया था। इसे सही रूप से समझना कठिन है कि दाऊद यहां क्या सोच रहा था। दाऊद अपनी महिमा के बारे में क्या सोचता है? यह हो सकता है कि प्रभु और उसके मार्गों का अनुसरण करनें में उसने राजा के रूप में अपनी महिमा को देखा था। ऐसा होने पर दाऊद इस सच्चाई पर विलाप कर रहा है कि उस देश के लोग परमेश्वर के महिमामयी मार्गों का अनुसरण नहीं कर रहे थे। वास्तव में, वे परमेश्वर के मार्गों को पिछले और पुराने फैशन के रूप में देख रहे थे। यह भी हो सकता है कि दाऊद की महिमा स्वयं प्रभु था। इस तरह से भजनकार इस सच्चाई पर विलाप कर रहा है कि उसके समय के लोग परमेश्वर से मुँह फेर रहे थे बजाय इसके कि वे उसका आदर करें। किसी भी तरह से, दाऊद दुखी था क्योंकि देश में प्रभु की ओर आने के बजाय, उसके समय के लोगों ने भ्रम से प्रेम किया और झूठे देवताओं के निकट आना चाहा। यह भ्रम उनके अपने विचार थे या झूठे धर्मों की शिक्षा थी। इन विचारों और शिक्षा ने कोई आशा नहीं दी। परन्तु लोग तब भी उन से जुड़े रहे। ऐसा करने में उन्होंने परमेश्वर और उसके वचन के सत्य के प्रति अपने मुंह को फेर लिया था।

दाऊद यह पूछते हुए पुकार उठा कि ये लोग कब तक इन भ्रमों और झूठी शिक्षाओं के धोखे में रहेंगे। यहाँ शोक और दुख की धुन है। उसका हृदय उन बहुत से व्यक्तियों का विचार करके दुखी व क्रोधित है जो झूठ और छल को शिकार हो रहे हैं।

दाऊद के चारों ओर जो हो रहा है उसका मन उस पर प्रश्न करता है। वह पूछता है, इतने सारे लोग शत्रु के झूठ में क्यों पकड़े गए हैं? ये झूठ धर्म संपन्न होते क्यों प्रतीत होते हैं? वे इतने सारे लोगों को अपने जाल में क्यों फंसाते हैं? यही प्रश्न आज भी किये जा सकते हैं।

पद 3 में दाऊद को इस सच्चाई से सांत्वना मिलती है कि परमेश्वर ने भक्तों को अपने लिए अलग कर रखा है। दाऊद को इस सच्चाई को जानकर आराम मिलता है कि परमेश्वर की खोज करनेवाला वह अकेला ही नहीं है परन्तु और भी हैं जो अपने मन को उसके साथ बांटते हैं। इन व्यक्तियों को परमेश्वर तथा उसकी महिमा के लिए अलग करके रखा गया है। उन्होंने संसार और उसके धर्म से धोखा नहीं खाया है। दाऊद के समान उन्होंने परमेश्वर से प्रेम किया व उसकी सेवा की।

ये लोग जिन्हें परमेश्वर द्वारा अलग किया गया है, सदैव संसार द्वारा ग्रहण नहीं किये जाते। कई बार उन्हें सताया जाता व उनकी हंसी उड़ाई जाती है। दाऊद को इस सचाई से आराम मिला कि प्रभु उनकी पुकार को सुनेगा जिन्हें उसने अपने लिये अलग कर रखा है। जब वे उसे पुकारेंगे, परमेश्वर उन्हें जवाब देगा।

समाज की दशा के कारण जबकि दाऊद का हृदय शोकित था, दो चीज़ों ने उसे उत्साहित किया। पहली थी कि धर्मी जीवन जीने के अपने प्रयास में वह अकेला नहीं था। परमेश्वर ने अपने लिए लोगों को अलग कर रखा था। दूसरा प्रोत्साहन इस सच्चाई में था कि चाहे उनके साथ कुछ भी हुआ था उनका एक ऐसा परमेश्वर था जिसकी उनमें रुचि थी और जो सहायता के लिए उनकी पुकार को सुनता।

पद 4 में भजनकार ने अपने पाठकों को बताया कि उन्हें पाप नहीं करना परन्तु इसके विपरीत मन ही मन सोचना और चुप रहना है। दुष्टों ने उन्हें कुचल दिया जो प्रभु के पीछे चलते थे। इन दुष्ट व्यक्तियों ने अन्याय करते हुए बेईमानी का जीवन जीया। दाऊद के समय में, उसने देखा कि उसका अपना बेटा उसे पद से हटा देना चाहता था। ये सब चीज़ क्रोध का वैध कारण थीं। हमें अन्याय, अनैतिकता और बेईमानी पर क्रोधित होना चाहिए।

तौभी, दाऊद ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि जबकि क्रोध करने का वैध कारण था, तौभी उन्हें पाप न करने के प्रति सावधान रहना है। क्रोध में उत्तेजित होना सरल होता है। विषय को परमेश्वर पर छोड़ने के विपरीत हम इसे स्वयं पर ले लेते हैं। इससे पहले कि हम स्वयं को पाप में डालें क्रोध पर नियंत्रण कर लेना ज़रूरी है।

पद 4 में दाऊद हमें बताता है कि क्रोधित होने पर हमें अपने मन की जांच करनी है। अपने मन की जांच करने में अपने रवैये और व्यवहार का परीक्षण करना आता है। पाप के लिए क्रोध एक उपजाऊ मिट्टी के समान है। इस समय में हमें ये देखने को सावधान होने की ज़रूरत है कि क्रोध की मिट्टी में पाप तो नहीं फूट रहा है। गलत रवैया दिखने पर हमें इसे जड़ सहित निकाल देना है।

दाऊद पद 4 में हमें यह भी बताता है कि न केवल हमें अपने मन की जांच करनी है परन्तु हमें चुपचाप भी रहना है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें हमारे आस-पास होनेवाले अन्याय के विरुद्ध कभी बोलना नहीं है। तौभी, इसका अर्थ यह है कि हमें परमेश्वर के सम्मुख शांत रहने और उसकी अगुवाई व निर्देशन के लिए सुनने को समय निकालना है। ऐसे समय भी होंगे जब परमेश्वर हमसे इसमें से बाहर आने को कहेगा और अन्याय व बुराई के प्रति बोलने को। अन्य समयों पर, वह हमारी अपने समय पर प्रतीक्षा करने में अगुवाई करेगा। हमारे वैध कारण पर क्रोधित होने पर दाऊद हमें बताता है कि हमें कुछ करने से पूर्व अपने लिए समय निकालना है। मार्गदर्शन और सुरक्षा के लिए हमें परमेश्वर की खोज करने की ज़रूरत है। हमें उसकी प्रतीक्षा करते हुए उसे अगुवाई करने देना है। केवल तब ही हमें प्रतिक्रिया देनी है, जब वह हमारा मार्गदर्शन करता है। हमारे प्रतीक्षा करने और सुनने पर हम अपने क्रोध में पाप करने से बचे रहते हैं।

पद 5 में दाऊद हमें बताता है कि जब हम अपने चारों ओर बुराई को देखते हैं और लोगों को कपट व झूठ की तलाश में जाते हुए, हमें तब भी प्रभु को सही बलिदान चढ़ाते रहना है और उस पर भरोसा रखना है। हमें संसार के मार्गों को अपने सोचने के ढंग से आकार नहीं देना है, हमें बुरे स्त्री पुरुषों के प्रभाव में नहीं आना है। हमें आशा को नहीं खोना है। इसके विपरीत हमें प्रभु पर भरोसा करना है और वही करना है जो सही है। हमें अंधकार के बीच सत्य और धार्मिकता के उदाहरण के रूप में चमकना है। प्रभु को चढ़ाए गए हमारे बलिदानों को हमें पाप और बुरे व्यवहार से कलंकित नहीं करना है।

जिस समय दाऊद ने इस भजन को लिखा, बहुत से लोग पूछ रहे थे: ''कौन हम को कुछ भलाई दिखाएगा?'' शायद ऐसा हुआ होगा कि उस समय में भला देखना बहुत कठिन हो गया होगा। झूठे धर्म के भ्रम में पड़ने वाले अधिक हो गए थे। यह पता लगाना कठिन हो गया था कि परमेश्वर की खोज करनेवाले कितने हैं। उन दिनों की बुरी रीतियों ने परमेश्वर की व्यवस्था की रीति को ढाक दिया होगा। इसी कारण लोग यह पूछने लगे थे कि हमें कुछ भलाई देखने को मिलेगी या नहीं।

इस प्रश्न के प्रकाश में दाऊद सरल रूप से परमेश्वर से अपने मुख का प्रकाश उस पर और उसके लोगों पर चमकाने के लिए कहता है। दाऊद परमेश्वर से अपनी रुचि दिखाने और अपनी आशीष को उण्डेलने के लिए कहता है। उसे भरोसा था कि उसके दिनों के अन्धकार में भी परमेश्वर की आशीष सब कुछ बदल सकती है।

दाऊद आशा रहित नहीं था। परमेश्वर ने उसके मन को अधिक आनन्द से भर दिया था उससे कहीं अधिक जो उसे अन्न और दाखमधु की बढ़ती से होता था। वह अपने मन में परमेश्वर के आनन्द को अनुभव कर रहा था। यह आनन्द उस समय उसमें आया जबकि वह अपने चारों ओर बुराई से घिरा था। यह ऐसा आनन्द था जिसे संसार छीन सकता था। उसे इसमें भी आराम मिला।

इस पर भी ध्यान दें कि दाऊद को अपने जीवन में शांति थी। यह शांति परमेश्वर के साथ उसके संबन्ध के परिणाम में थी। पद 8 में उसने अपने पाठकों को बताया, वह लेटकर शांति से सो सका क्योंकि परमेश्वर ने उसे सुरक्षित रखा था।

दाऊद अपने समाज की दशा पर दुखी था। बुरे लोगों के संख्या में बढ़ने पर उसका हृदय परास्त हो चुका था। धर्मी लोगों की हंसी उड़ाई जाती थी। उसका समाज एक ऐसे स्थान पर आ गया था जहां लोग पूछ रहे थे, कि क्या यहां कोई भलाई देखने को मिलेगी। दाऊद को इस सच्चाई से आराम मिला कि परमेश्वर ने अपने से संबन्धित लोगों को अलग कर रखा था। परमेश्वर ने इन लोगों को घेर रखा था तथा इनकी पुकार को सुना था। उसने उन्हें सुरक्षित रखा था। उन्हें अपने परमेश्वर पर भरोसा करना था क्योंकि वही उनकी पुकार को सुनेगा। वे संख्या में कम थे परन्तु परमेश्वर उनकी ओर था। इसी कारण वे आनन्दित और आश्वस्त थे।

विचार करने के लिए:

- इस परिच्छेद में क्या प्रमाण मिलता है कि दाऊद अपने समाज की बुराई पर दुखी था, आपके समाज की बुराई ने आपको कितना दुखी किया है?
- क्या क्रोध करने का समय होता है? इस परिच्छेद में दाऊद हमें क्रोध के बारे में क्या सिखाता है? हमारे क्रोधित होने पर वह हमसे कौन सी दो चीज़ों को करने के लिए कहता है?
- परमेश्वर द्वारा अलग किये जाने का क्या अर्थ है? यह व्यक्तिगत रूप से आपके लिए किस प्रोत्साहन को लाता है?

प्रार्थना के लिए:

- कुछ समय के लिए अपने समाज को प्रभु के निकट लाएं। उससे पाप से व्यवहार करने और सुसमाचार की सच्चाई के लिए स्त्री पुरुषों के मनों को खोलने के लिए कहें।
- परमेश्वर से आपको क्रोध में पाप न करने में सहायता करने के लिए कहें। उससे कहें कि वह आपको आपके हृदय की जांच करना और उसके सामने चुप रहना सिखाए।
- आपके हृदय में परमेश्वर ने जिस आनन्द को डाला है उसके लिए उसे धन्यवाद दें।
- आपके चारों ओर चाहे कुछ भी हो रहा हो परमेश्वर से उसके प्रति सत्य बने रहने को कहें।

5 बुराई से प्रसन्न नहीं होता

पढ़ें भजन संहिता 5:1-12

यह भजन दाऊद द्वारा लिखा गया था। इसमें संगीत डालकर प्रभु की आराधना के लिए गया जाता था। इस भजन के शीर्षक के अनुसार इस भजन के संगीत को बांसुरी के लिए लिखा गया था।

इस भजन का विषय घनिष्ठ रूप से चौथे भजन से संबन्धित है, दाऊद का मन बोझिल है। पद 1 में ध्यान दें, कि वह कैसे अपने आहें लेने के बारे में बोलता है, जो इस बात का संकेत है कि उसके मन पर कोई बोझ है। भजन के आरम्भ में, दाऊद प्रभु अपने राजा और परमेश्वर से विनती करता है कि उसकी पुकार को सुन।

ध्यान दें कि वह प्रभु को अपना राजा और अपना परमेश्वर कहता है। दाऊद जानता है कि वह एक सर्वोच्च अधिकार के आधीन है। बेशक वह एक राजा है, वह प्रभु अपने परमेश्वर के समर्पण में झुकता है और अपने लिए उसकी ज़रूरत को समझता है।

दाऊद भोर के समय परमेश्वर को पुकारता है। इसका अर्थ यह है कि दाऊद अपनी आदत के अनुसार प्रति भोर प्रभु को पुकारता है। एक व्यस्त सारणी के बीच, दाऊद ने अपनी समस्याओं को परमेश्वर को सौंपने का समय निकाल लिया था। ध्यान दें कि यह दाऊद के लिए खाली परम्परागत नहीं था। दाऊद को विश्वास था कि प्रभु ने उन निवेदनों को सुना था (पद 3)। तौभी इससे भी अधिक, पद 3 में दाऊद ने परमेश्वर को बताया कि उसने आशा के साथ उसकी बाट जोही थी। दाऊद को विश्वास था कि परमेश्वर उसके निवेदनों को जवाब देगा। उसने परमेश्वर के जवाब की प्रतीक्षा की थी। सुबह बिस्तर से सोकर उठने पर, दाऊद स्वयं को परमेश्वर को सौंप देता था ताकि देख सके कि परमेश्वर क्या करेगा। उसने यह संदेह नहीं किया कि परमेश्वर उसकी प्रार्थनाओं के जवाब नहीं देगा।

किस चीज़ ने दाऊद के मन को दुखी किया था? ऐसा लगता है कि चारों ओर की बुराई के कारण। पद 4 में दाऊद ने जान लिया था कि परमेश्वर दुष्ट से प्रसन्न नहीं होता। दुष्ट व्यक्ति परमेश्वर के साथ नहीं रह पाएंगे। बुराई ने उसके मन को दुखी किया था। घमण्डी और पापी व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े नहीं हो सकते। दाऊद, आगे कहता है कि परमेश्वर सब अनर्थकारियों से घृणा करता है। (पद 5)

ऐसा कहने से दाऊद का क्या अर्थ था परमेश्वर सब अनर्थकारियों से घृणा करता

है? हममें से प्रत्येक ने पाप किया है। मेरा जीवन सिद्धता से दूर है। मेरे प्रति परमेश्वर की भावनाएं क्या हैं? हमें यहां यह समझने की ज़रूरत है कि इस भजन को लिखने वाले दाऊद ने जबकि यह जान लिया था कि वह एक पापी था। उसके जीवन में ऐसी चीज़ें थीं जिन्होंने परमेश्वर के मन को दुखी किया था। दाऊद हमें यह नहीं बता रहा है कि परमेश्वर से प्रेम करने के लिए हमें सिद्ध बनना है। यदि ऐसा होता तो परमेश्वर किसी से भी प्रेम नहीं कर पाता। इसे इस तरह से समझना अच्छा है कि परमेश्वर का क्रोध उनकी ओर जाता है जो उसके उद्देश्यों को अस्वीकृत कर पाप में में जीते हैं। उनका न्याय करने में उसे संकोच नहीं होगा। उन्हें अनन्तकाल के लिए उससे अलग किया जाएगा।

दाऊद आगे पद 6 पर जाता है, परमेश्वर सब झूठ बोलनेवालों को नाश करेगा। वह हत्यारे और छली मनुष्यों से निपटता है। दाऊद प्रभु के न्याय के लिए उसकी प्रशंसा करता है। वह परमेश्वर के द्वारा पाप से निपटने के कारण धन्यवादी था। दुष्टता संपन्न नहीं होगी। बुराई बनी नहीं रहेगी। परमेश्वर अपनी सृष्टि को देख रहा था और एक दिन उसका न्याय करेगा। भलाई और धार्मिकता बने रहेंगे। यह दाऊद के लिए बड़े आराम की बात थी।

पद 7 में ध्यान दें कि दाऊद का प्रभु परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत संबन्ध पर बड़ा भरोसा है। ऐसा नहीं है कि उसे ऐसा लगता था कि वह इस संबन्ध के योग्य है। वह जानता था कि उसने भी अपने जीवन में पाप किया है और परमेश्वर के मन को दुखी किया है। वह परमेश्वर के मन्दिर की ओर मुंह करके झुकता था जहां परमेश्वर की उपस्थिति प्रगट हुई थी। दाऊद का प्रभु परमेश्वर के साथ एक रोचक संबन्ध है। वह उसके पास आने तथा अपना मन उसके सामने खोलने को स्वतंत्र है परन्तु वह बड़ी श्रद्धा और आदर के साथ आता है।

दाऊद जान गया था कि उसे परमेश्वर की बुद्धि व बल की ज़रूरत थी। पद 8 में वह परमेश्वर से धार्मिकता के मार्ग में अपनी अगुवाई करने को कहता है। उसे चारों ओर से घेरने वाले बुरे शत्रुओं के प्रकाश में दाऊद ने परमेश्वर से विनती की कि उसके मार्ग को सीधा व स्पष्ट करे। संकट के इस समय में, दाऊद को परमेश्वर के मार्गों में चलने के लिए स्पष्टता को जानने की ज़रूरत थी।

अपने आस-पास देखने पर दाऊद ने जाना कि बहुत से हैं जो प्रभु के लिए नहीं जी रहे थे। उनके मन विनाश से भरे थे। उनके शब्द बुराई और मृत्यु से भरे थे। उनके मुंह छल वाले शब्द बोलते थे। हो सकता है कि इनमें से कुछ शब्दों से दाऊद को भी चोट पहुंची थी।

दाऊद परमेश्वर से इन लोगों को दोषी ठहराने की विनती करता है। ''वे अपनी ही युक्तियों से आप ही गिर जाएं ''पद 10 में उसने परमेश्वर से कहा। अन्य शब्दों में वह परमेश्वर से उन्हें अपने जाल में ही फंसे रहने को कहता है। वे सभी चीज़ें जिनकी योजना वे दूसरों के लिए बना रहे थे एक दिन उनका नाश करने के साथ साथ उन्हें

दोषी ठहराएंगी। दाऊद परमेश्वर से न्याय से कार्य करने तथा सभी बुरा करनेवालों का नाश करने के लिए कहता है।

दाऊद के इस निवेदन पर ध्यान दें, जिसे वह परमेश्वर से प्रेम करनेवालों के लिए करता है। वह पहले परमेश्वर से कहता है कि अपने सभी लोगों को उसमें शरण लेने की अनुमति दे। बुराई के उन्हें घेर लेने पर वे एक छिपने के स्थान को पा सकें या एक ऐसा स्थान जहां वे तूफानों और परीक्षाओं से बचने के लिए शरण पा सकें। दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर अपने लोगों को उनके संकट के दिनों में आश्रय दे।

दूसरा, उसने परमेश्वर से अपना आनन्द उन्हें देने को कहा। दाऊद जानता था कि यह नकारात्मक भावनाओं के साथ रहने के समान था। परमेश्वर अपने लोगों से जो चाहता था– दुख: शोक और आशाहीनता का भाव उसके शत्रु थे। तथापि यह बुराई से घिरे होने का स्वाभाविक परिणाम था। दाऊद ने परमेश्वर को अपने लोगों को उनके संकट के समय में आनन्द देने को कहा। वह चाहता था कि उसके लोग निराशा के समय में भी आनन्द से गाने वाले बन सकें।

तीसरा, दाऊद ने परमेश्वर को उसके लोगों पर अपनी सुरक्षा फैलाने को कहा जिससे वे उससे आनद कर सकें। इससे हम यह समझते हैं कि परमेश्वर न केवल हमें विजय देना चाहता है परन्तु वह यह भी चाहता है, कि हम आनन्द में रहें और हर स्थिति में आनंदित रहें। उनके आनंद करने के विषय पर ध्यान दें। अपनी समस्याओं में नहीं परन्तु स्वयं प्रभु परमेश्वर में। दाऊद परमेश्वर से कह रहा था कि गहरे संकट के समय में वह अपने लोगों के निकट आए और कि उन्हें उसकी उपस्थिति और व्यक्तित्व में बड़ा आनंद मिले।

दाऊद प्रभु परमेश्वर के बारे में स्पष्ट कथन के साथ समापन करता है। उसे विश्वास था कि परमेश्वर धर्मी को आशीष देता व उन्हें एक ढाल के समान घेरे रहता है। यहां वह जो परमेश्वर से कह रहा था वह उसके चरित्र के विरुद्ध नहीं था। परमेश्वर की रुचि अपने लोगों को आशीष देने तथा उन्हें चारों ओर से अपने अनुग्रह से घेरे रखने की है। दाऊद परमेश्वर को केवल वही करने को कहता है जिसके बारे में उसे पता है कि परमेश्वर को ऐसा करने में खुशी होगी। इसी कारण उसके पास आशा से बाट जोहने का प्रत्येक कारण था। परमेश्वर दुष्टता से प्रसन्न नहीं होता। वह बुराई का न्याय कर अपने लोगों को आशीष देने तथा उन्हें चारों ओर से अपने अनुग्रह से घेरे रखने की है। दाऊद परमेश्वर को केवल वही करने को कहता है जिसके बारे में उसे पता है कि परमेश्वर को ऐसा करने में खुशी होगी। इसी कारण उसके पास आशा से बाट जोहने का प्रत्येक कारण था। परमेश्वर दुष्टता से प्रसन्न नहीं होता। वह बुराई का न्याय कर अपने लोगों की रक्षा करेगा, उन्हें अपने आनंद से घेरते हुए तथा अपनी उपस्थिति में आनंदित करते हुए।

विचार करने के लिए:

- क्या हमारा परमेश्वर के साथ समय बिताना महत्वपूर्ण है? जब दाऊद ने परमेश्वर के साथ समय बिताया, उसने आशा के साथ उसकी प्रतीक्षा की। क्या यह परमेश्वर के साथ आपके समय का एक भाग है? क्या आप दिन भर उससे आशा करते हुए प्रतीक्षा करते हैं? यदि नहीं तो आप परमेश्वर के साथ इसे अपने समय का भाग कैसे बना सकते हैं?
- परमेश्वर से स्वयं को ग्रहण कराने के लिए क्या हमें सिद्ध बनना है?
- क्या आपको यह भरोसा है कि आप परमेश्वर के सामने खड़े हो सकते हैं? परमेश्वर के सामने आपके खड़े होने में दया की क्या भूमिका है?
- इस परिच्छेद में हम देखते हैं कि दाऊद धर्मी तरीके से जीवन बिताने के लिए बुद्धि और बल पाने को परमेश्वर के पास आता है। हमें परमेश्वर की बुद्धि और बल की कितनी ज़रूरत होगी कि वैसे रह सकें जैसे वह हममें रह रहा हो?
- इस भजन में आनन्द करने और आनंद का विषय क्या है? परिस्थितियों में आनंद करने आनंद करने और परमेश्वर में आनंद करने के बीच क्या अन्तर है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से आपकी यह सीखने में सहायता करने को कहें कि प्रतिदिन उससे आशा करते हुए कैसे बिताएं।
- कुछ समय परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए दें कि जो उसके पास विश्वास और पश्चात्ताप के साथ आते हैं वह उन्हें ग्रहण करता है।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह न्याय का परमेश्वर है जो पाप से निपटेगा।
- अपने समय के धर्मी लोगों के लिए दाऊद की प्रार्थना जिन्होंने दुष्टता की ओर से विरोध का सामना किया था यह थी कि परमेश्वर उनका रक्षक बने, कि वह उन्हें आनंद दे और कि वह अपनी सुरक्षा उन पर फैलाए। यही प्रार्थना कुछ समय के लिए उस व्यक्ति हेतु करें जो आज विरोध का सामना कर रहा है।
- परमेश्वर से आपकी इसे अधिक समझने में सहायता करने को कहें कि उसमें और उसकी उपस्थिति में आनन्दित होने का क्या अर्थ है।

6. अविश्वसनीय प्रेम

पढ़ें भजन संहिता 6: 1-10

प्रभु में भरोसा होने पर भी भजनकार दुख और दर्द का अनुभव करता है। परमेश्वर सदा हमारे दुख को दूर नहीं करता है परन्तु वह कठिन समयों में हमारे साथ रहने की प्रतिज्ञा करता है और इसमें हमें बड़ा आनन्द मिल सकता है। भजन 6 में दाऊद अपने द्वारा अनुभव किये जाने वाले दर्द को खुले रूप से व्यक्त करता है परन्तु हमें यह भी दिखाता है कि इस दर्द में उसका भरोसा प्रभु परमेश्वर में है।

भजन को दाऊद ने इस मंशा से लिखा कि यह प्रभु परमेश्वर की सार्वजनिक आराधना में प्रयोग हो सके। इसमें संगीत डाला गया तथा तारवाले बाज़े पर बजाया गया। भजन की प्रस्तावना या आरम्भ को देखे, इसे 'शेमिनिथ' के अनुसार लिखा गया था। यह शब्द एक विशिष्ट संगीत प्रणाली के लिए दिखता है।

दाऊद भजन का आरम्भ परमेश्वर से वह कहते हुए करता है कि क्रोध में आकर उसे न डांट या क्रोध में आकर उसे अनुशासित न कर। इस पद की कुंजी यह है कि परमेश्वर कैसे अनुशासित करता व डांटता है। दाऊद के जीवन की जांच करने पर, हम देखते हैं कि वह इस अनुशासन को ग्रहण करने के लिए तैयार था। दाऊद परमेश्वर से यह नहीं कह रहा है कि उसे अनुशासित करना बन्द कर दें। वह परमेश्वर से उदारता व दया के साथ करने को कह रहा है। यदि प्रभु क्रोध में आकर हमें ताड़ना दे तो हमारा क्या होगा? हमारा क्या होगा, यदि परमेश्वर अपने क्रोध में करुणा और प्रेम को स्मरण न करे? निश्चय ही उसकी पवित्रता और न्याय में परमेश्वर हमें भस्म कर देगा। तथापि, प्रेम और करुणा में वह हमें अपने क्रोध की गंभीरता से बचाता है।

दाऊद परमेश्वर से पाप और विद्रोह की उपेक्षा न करने को कह रहा है। वह यहां विशिष्ट रूप से अपने बारे में बोल रहा है। एक राजा और परमेश्वर का सेवक होने का कारण, दाऊद के अपने 1 हिस्से के दुख और परीक्षाएं थी। ये परीक्षाएं उसमें से बहुत कुछ ले रही थीं। उसने परमेश्वर से उस पर दयालु बनने को कहा क्योंकि वह कमजोर और मूर्छित हो चला था। उसने उसकी हड्डियों को चंगा करने को कहा क्योंकि वह दुख में था।

पद 3 में ध्यान दें, कि न कवेल उसका शरीर थका था परन्तु उसका प्राण भी। दाऊद ने प्रभु को बताया कि उसका प्राण खेदित था। विषय की वास्तविकता यह है कि प्रभु के लोगों के जीवनों में खेद और दुख के दिन होंगे। यहां तक कि यीशु ने भी

अपने मन में दुख उठाया था (यूहन्ना 11:33)। एक विश्वासी होना इस बात की गारंटी नहीं देता कि हम कभी दुखी नहीं होंगे। पद 3 में दाऊद का खेद इतना अधिक था कि उसे इस पर आश्चर्य हुआ कि उसे कब तक इसे सहना होगा। उसे अपने दुखों का अन्त नहीं दिख रहा था।

दाऊद जानता था कि प्रभु एक अविश्वासनीय प्रेम का परमेश्वर था। यह उसके प्रभु के आधार पर है कि उसने परमेश्वर से अपने प्राण के खेद से छुड़ाए जाने की विनती की है। परमेश्वर की चंगाई सामर्थ का इतना अधिक प्रगटीकरण नहीं है जितना कि वह प्रेम का प्रगटीकरण है। प्रेम ही उसे हमारी पुकार पर सहायता करने को प्रेरित करता है।

पद 5 में ध्यान दें, कि दाऊद का दुख इतना अधिक था कि उसे अपने जीवन का भी डर था। इस महान व्यक्ति के जीवन में ऐसे बहुत से समय रहे थे जब ऐसा लगता था कि दुखों ने उसे हरा दिया है। दाऊद का प्रभु की आराधना करने वाला मन था। उसके लिए जीवित रहना परमेश्वर की आराधना और प्रशंसा करना था। ''अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा'', दाऊद पद 5 में पूछता है। हो सकता है कि वह परमेश्वर से कह रहा हो कि वह उसे जीने दे जिससे वह पृथ्वी पर उसके नाम की प्रशंसा कर सके।

दाऊद के द्वारा अनुभव किया जानेवाला दुख और दर्द इतना अधिक था कि पद 6 में उसने प्रभु को स्मरण कराया कि वह कराहते कराहते थक गया है। दुख इतना गहरा था कि वह सारी रात रोकर अपना बिस्तर आंसुओं से भिगोता था। ऐसा लगता था कि दाऊद का सारा आनंद चला गया था। उसकी आंखें आँसुओं से भरी रहती थीं। उसके शत्रु ही उसके इन आंसुओं का कारण थे। उन्होंने उसके जीवन को बहुत कठिन बना दिया था।

क्या आप कभी किसी ऐसी स्थिति में रहे हैं कि जब आपको उस समस्या या दर्द का अन्त नहीं दिख रहा हो जिसका आप अनुभव कर रहे थे? मेरे जीवन में, व्यक्तिगत रूप से ऐसे समय रहे हैं जब मेरे मन में कोई गीत नहीं था। संकट का भार इतना अधिक लगता था कि ऐसा प्रतीत होता था इसके बने रहने का क्या कोई कारण है।

जबकि दाऊद गहरे दर्द और पीड़ा को जानता था, वह प्रभु परमेश्वर ने एक अन्तर किया था। जब तक परमेश्वर अपने सिंहासन पर है तब तक आशा है। पद 8 में वह अपनी आंखें ऊपर उठाकर पुकारता है: सब अनर्थकारियों मेरे पास से दूर हों; क्योंकि यहोवा ने मेरे रोने का शब्द सुन लिया है।'' मैं चाहता हूँ कि जब दाऊद ने ये शब्द कहे मैं वहां होता। इस समय में, उसकी आंखें अपने दर्द से हटकर प्रभु की विजय पर लग गई थीं। यह उसके लिए एक अद्‌भुत आशीष रही थी। वह जानता था कि परमेश्वर ने उसकी पुकार को सुना था और उसके दर्द को दूर कर दिया था। उसके बचाव के लिए स्वयं परमेश्वर आया था।

दाऊद जानता था कि उसकी आवश्यकता के समय में परमेश्वर उसे नहीं छोड़ेगा।

उसने अपने प्रति परमेश्वर के अविश्वसनीय प्रेम पर भरोसा किया। संकट के समयों में हमारे लिये यह महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध के प्रति आश्वस्त हों। दाऊद परमेश्वर को जानता था। वह जानता था कि उसकी ज़रूरत के समय में वह उसे कभी नहीं छोड़ेगा। परमेश्वर ने उसकी पुकार को सुना व उसकी प्रार्थना को ग्रहण किया था। उसके शत्रुओं को परमेश्वर के सामने खड़े होकर उसका जवाब देना था जो उन्होंने दाऊद के साथ किया था। जो कुछ उन्होंने किया था उसके कारण वे लज्जित होंगे। वे मिट भी जाएंगे और लौट जाएंगे।

ऐसा इसलिए होगा क्योंकि परमेश्वर दाऊद से प्रेम करता था और जिस में से होकर वह गुज़र रहा था उसे उसकी चिन्ता थी। उसकी आवश्यकता के समय में, दाऊद को प्रभु परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध में बड़ा आराम मिला था। वह जानता था कि परमेश्वर उसे कभी नहीं छोड़ेगा। वह जानता कि परमेश्वर के अविश्वसनीय प्रेम के कारण उसके शत्रु कभी उस पर विजयी नहीं हो पाएंगे। क्या हमें आज परमेश्वर के साथ ऐसा संबन्ध होने का आश्वासन है?

विचार करने के लिए:

- क्या आपने कभी परमेश्वर की डांट या अनुशासन का अनुभव किया है? स्पष्ट करें।
- क्या मसीही आज दुख उठाते हैं? परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबन्ध हमारे मार्ग में आने वाली परीक्षाओं का सामना करने की सामर्थ कैसे देता है?
- दाऊद के परमेश्वर के साथ संबन्ध ने उसके दुख और संकट के समय में कैसे उसे बल और प्रोत्साहन दिया?
- दुख के प्रति हमारी प्रतिक्रिया परमेश्वर के साथ हमारे संबन्ध के बारे में क्या बताती है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह सहायता के लिए की जानेवाली हमारी पुकार को सुनता है।
- प्रभु के अविश्वसनीय प्रेम के लिए उसे धन्यवाद दें। उसे धन्यवाद दें कि इस प्रेम के कारण हम भरोसे के साथ जीवन का सामना कर सकते हैं।
- परमेश्वर को आपको और निकट लाने के लिए कहें जिससे आप परीक्षाओं का सामना उसमें दृढ़ आश्वासन के साथ कर सकें।

7. हे प्रभु, उठ

पढ़ें भजन संहिता 7:1-17

भजन 7 को दाऊद के जीवन के उस समय में लिखा गया था जब उसके शत्रु उस पर दबाव डाल रहे थे। इस भजन के आरम्भ में, हमें बताया गया है कि इस भजन को कूश, एक बिन्यामीनी के लिए लिखा गया था।

इस पद में कूश के परिचय के संबन्ध में बहुत से विचारों का सुझाव दिया गया है। कुछ का मानना है कि 'कूश' शाऊल के लिए प्रयुक्त एक नाम था। यह विचार देने वाले ऐसा इस आधार पर कहते हैं कि शाऊल कीश का पुत्र था 'कूश' के समानान्तर एक शब्द (देखें 1 शमूएल 9:1-2)। अन्यों का मानना है कि यह शाऊल के सेवकों में से एक था जो दाऊद को हानि पहुंचाना चाहता था। तीसरा प्रस्ताव शिमाएल नामक एक व्यक्ति का है जिसने 2 शमूएल 6:5-6 के अनुसार दाऊद को शाप दिया जबकि वह अपने पुत्र अबशालोम के कारण भागा था। अन्ततः हम नहीं जानते कि कूश कौन है।

यहां यह स्पष्ट होता है कि कूश ने दाऊद का विरोध किया और उसे परेशान किया। पद 1 में दाऊद को प्रभु में सुरक्षा मिली। उसने परमेश्वर से उसे अपना पीछा करनेवालों से छुड़ाने को कहा। दाऊद अपने शत्रुओं की मंशा को जानता था। पद 2 में उसने स्पष्ट किया यदि परमेश्वर उसे छुटकारा नहीं देता तो उसके शत्रु उसे उसी प्रकार मार डालते जैसे एक सिंह अपने शिकार को टुकड़े-टुकड़े कर डालता है।

दाऊद परमेश्वर से अनुशासित होने को तैयार था। पद 3 में उसने परमेश्वर को बताया कि यदि वह अपने शत्रु को सिंह के समान फाड़ डालने का दोषी रहा था या यदि उसके हाथों से कोई कुटिल काम हुआ था तो शत्रु उसे आकर पकड़ लें। यदि उसने किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बुरा किया था जो उसके साथ शांति से रहा था या उसने अपने शत्रु को लूटा था तो वह तैयार है कि उसके शत्रु पीछा करके उसे आ पकड़ें और उसके प्राण को भूमि पर रौंद डालें (पद 5)।

तथापि, संदर्भ इस बात का संकेत देता है कि दाऊद की समस्या किसी व्यक्तिगत पाप का परिणाम नहीं थी। दाऊद के शत्रुओं ने तब भी उसका पीछा किया था जबकि उसके विचार से उसने कुछ गलत नहीं किया था। कई बार अच्छे लोगों के साथ बुरी चीज़ें होती हैं। हम इसे अय्यूब और प्रभु यीशु के साथ भी देखते हैं। हम से एक संकट रहित जीवन की प्रतिज्ञा नहीं की गई है। प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस से कहा:

पर जितने मसीह में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे। (2तीमुथियुस 3:12)

दाऊद को इस सिद्धान्त से कोई आपति नहीं थी। वह परमेश्वर से प्रेम करता था और उसकी सेवा करना चाहता था। परन्तु यह भी जानता था कि अपने शत्रुओं से भागना किसके समान था।

यदि दाऊद ने अपने जीवन में संकट का सामना न किया होता तो कितने भजन कभी लिखे नहीं गए होते? कितने ही धर्मी लोगों को अपनी ज़रूरत के समय में भजनों की ओर फिर कर शांति और आराम न मिला होता? अपने संकटों के कारण दाऊद आज दुख उठाने वालों को समझा सका। कई बार हमें परमेश्वर दुख उठाने देता है ताकि हम दूसरों की सेवा कर सकें।

दाऊद ने अपनी आवश्यकता के समय में परमेश्वर के पास आने और सहायता मांगने में संकोच नहीं किया। पद 61 में वह परमेश्वर से उसके क्रोधित शत्रुओं के विरुद्ध क्रोध करके उठने को कहता है। वह परमेश्वर को न्याय के लिए पुकारता है। वह परमेश्वर से अपने लोगों को अपने चारों ओर एकत्रित करने और उन पर शासन करने को कहता है। यह सुरक्षा का एक चित्र है। परमेश्वर अपने लोगों के संकट के समय में उनकी सुरक्षा करने को उन्हें अपने चारों ओर एकत्रित करता है। एक प्रेमी चरवाहे के समान वह अपनी भेड़ों को एकत्रित करता और उनके शत्रुओं के विरोध में खड़ा होता है।

पद 8 में ध्यान दें कि दाऊद परमेश्वर को उनकी धार्मिकता और निष्ठा के अनुसार न्याय करने को कहता है। उसे निश्चय था कि वह परमेश्वर के साथ ईमानदारी से चल रहा था। वह जानता था कि वह परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं कर रहा था कि जिस संकट को वह अनुभव कर रहा था वह उसके जीवन के किसी व्यक्तिगत, छिपे पाप का परिणाम नहीं था।

दाऊद परमेश्वर से हिंसा का अन्त करने और धर्म को स्थिर करने के लिए कहता है (पद 9)। उसे निश्चय था कि परमेश्वर, मन और मस्तिष्क को जांचनेवाला, उसकी ढाल होगा। परमेश्वर दुष्टों की मंशा को जानता था। उसने धर्मी लोगों के हृदयों को भी देखा था। वह अन्याय को विजयी नहीं होने देगा। परमेश्वर एक धर्मी न्यायी था।

दाऊद जानता था कि यदि दुष्ट अपनी बुराई को नहीं छोड़ेंगे तो परमेश्वर अपनी तलवार पर सान चढ़ाएगा और अपने तीर चढ़ाकर न्याय करेगा व दण्ड देगा। अब भी, परमेश्वर के न्याय के हथियार उसके धनुष से निकलने को तैयार हैं। उसके न्याय के अग्निबाण अपने निशाने पर लगकर उसके लोगों को आराम देंगे।

वे जिन्हें उत्पात या बुराई का गर्भ है, वे झूठ को उत्पन्न करेंगे। अन्य शब्दों में, जो उनमें हैं वे उससे निराश होंगे। उनकी बड़ी योजनाएं थीं परन्तु वे योजनाएं उन्हें निराश और परास्त छोड़ देंगी। गड्ढा खोदनेवाले स्वयं उस में गिर पड़ेंगे। बुरी योजना

बनानेवाले और बुरा करनेवाले उस बुराई के कारण दुख उठाएंगे। जिस बुराई को उन्होंने किया वही उनका विनाश करेगी।

अपने संकट के समय में दाऊद को परमेश्वर में सुरक्षा मिली। बेशक उसने दुख उठाया तौभी वह जानता था कि परमेश्वर पवित्र व न्यायी है और अन्याय व बुराई को विजयी नहीं होने देगा। दाऊद ने परमेश्वर को धन्यवाद देने और उसकी प्रशंसा करने का चुनाव किया। यद्यपि उस समय शत्रु उसके पीछे थे, प्रभु उसकी आवाज़ को सुनकर और उठकर उसकी सहायता करने को आएगा। परमेश्वर बुराई पर विजयी होगा।

परीक्षा के समयों में हमारे लिए अपने दुख दर्द पर ध्यान देना अधिक सरल होता है। दाऊद हमें यहाँ सिखाता है कि हमारे लिए प्रभु पर आंखें लगाना भला है और हमें उसके चरित्र के बारे में समझना है। वह हमें अपने चारों ओर एकत्रित करेगा और हमारे संकट के दिनों में हमारा आश्रय बनेगा। उठकर वह न्याय और धर्म के कारण बचाव करेगा। अपने दुख और परीक्षाओं से ऊपर उठकर जब हम प्रभु की ओर देखते हैं, तब हम गहरे दर्द में भी आराम और आश्वासन को पा सकते हैं।

विचार करने के लिए:

- न्याय और परमेश्वर की पवित्रता में दाऊद का भरोसा उसके संकट के समय में कैसे उसे प्रोत्साहन देता है?
- परमेश्वर ने दाऊद के संकट का प्रयोग भलाई को पूरा करने के लिए कैसे किया?
- दाऊद अपने संकट के समय में परमेश्वर से अपने लिए क्या करने को कहता है?
- हम जो भी बुराई करते हैं वह अन्त में पलटकर हम तक कैसे आती हैं? क्या आपने इसे अपने अनुभव में देखा है?

प्रार्थना के लिए:

- अपने संकट में दाऊद के पास प्रशंसा करने का कारण था। आज परमेश्वर की प्रशंसा करने का आपके पास क्या कारण है?
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह न्याय और पवित्रता का परमेश्वर है।
- उन समयों के लिए प्रभु को धन्यवाद दें जब आपके संकट के समय में वह आपका रक्षक रहा था।
- परमेश्वर से आपकी आंखें आपके दुख पर से हटाने में सहायता करने को कहें और उसकी ओर चेहरा उठाने को कहें जहां आराम और आश्वासन है।

8 मनुष्य क्या है?

पढ़ें भजन संहिता 8:1-9

पिछले भजनों में हमने देखा कि दाऊद के अपने संकट थे। उन समयों में वह सहायता के लिए परमेश्वर की ओर मुड़ा। छुटकारा पाने के लिए वह अपने परमेश्वर के अनुग्रह और करुणा से भरा गया था। इस भजन में, परमेश्वर की अपने लोगों में रुचि को देखकर दाऊद आश्चर्य करता है।

पद 1 में वह प्रशंसा के कथन के साथ आरम्भ करता है।

हे यहोवा हमारे प्रभु तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही प्रतापमय है!

एक नाम व्यक्ति के चरित्र को बताता है। प्रभु प्रतापी है। प्रताप शाही जीवन का गुण है। प्रताप भय सहित आदर को प्रेरित करता है। प्रताप के आने पर हम श्रद्धा और प्रशंसा से झुकते हैं। दाऊद हमें यह भी बताता है कि प्रभु परमेश्वर ने अपनी महिमा को स्वर्ग पर रखा है। इसका अर्थ यहां यह निकलता है कि प्रभु की महिमा स्वर्ग की महिमा से भी बड़ी है। पृथ्वी के दृष्टिकोण से स्वर्ग परमेश्वर की सृष्टि का सबसे महिमामयी भाग है। हममें से जिसने छिपते सूर्य को नहीं देखा है महिमा से कैसे अचम्भित हुआ है? हममें से ऐसा कौन है जो आकाश की ओर देखकर इसके विस्तार से अचंम्भित नहीं हुआ है? परमेश्वर की महिमा उस किसी भी चीज़ से बड़ी है जिसका प्रदर्शन कभी स्वर्ग कर सकते हैं। पृथ्वी पर की किसी भी चीज़ भी तुलना कभी परमेश्वर से नहीं की जा सकती।

महिमामयी और प्रतापी परमेश्वर ने बच्चों और शिशुओं के होठों से स्तुति कराई है। इस पद की दो संभावित व्याख्याएं हैं। यह देखना संभव है कि इसे बच्चों और शिशुओं के संदर्भ में कहा गया है। ऐसा होने पर, दाऊद छोटे बच्चों में जन्म और जीवन के चमत्कार के बारे में बोलता है, और कि यह कैसे सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के बारे में बताता है। हममें ऐसा कौन है जो एक बच्चे के जन्म को देखकर जीवन के इस चमत्कार के लिए प्रशंसा न करें या धन्यवादी न हो। यहां तक कि जो परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते हैं या विद्रोह में रहनेवाले कुछ क्षण रुककर शांति से जन्म और जीवन के चमत्कार पर चिन्तन करते हैं।

इस पद में आत्मिक बच्चों के संदर्भ को देखना भी संभव हो सकता है। यीशु ने मत्ती 11:25 में कहा:

उसी समय यीशु ने कहा, 'हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु; मैं तेरा धन्यवाद

करता हूँ कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा और बालकों पर प्रकट किया है।'

यहां 'बालकों' बोलते हुए प्रभु का अर्थ किसी विशिष्ट आयुवर्ग से नहीं था। वह सरल लोगों, अपने विश्वास और परमेश्वर को समझने में युवा के लिए 'बालकों' शब्द का प्रयोग करता है। इस भाव में हम सभी बालकों को हमारे जीवित परमेश्वर को स्तुति और महिमा देने के लिए बुलाया गया है।

स्वर्ग की व्यापकता को देखने पर वह जान पाता है कि वे परमेश्वर की उंगली का कार्य थे। उसने चंद्रमा और तारों को देखा जिन्हें परमेश्वर ने अपने स्थान में रखा है और इस सर्वशक्तिमान परमेश्वर की बुद्धि और सामर्थ पर अचम्भित हुआ। इसके बाद उसने स्वयं को देखा और इस पर और भी अचम्भित हुआ कि इतने सामर्थी परमेश्वर की मनुष्यों में रुचि है।

परमेश्वर को स्त्री पुरुषों की चिन्ता क्यों करनी चाहिए? जिनमें से होकर वे गुज़र रहे हैं उसमें उसकी रुचि क्यों होनी चाहिए? किस कारण इतना बड़ा और अद्वितीय परमेश्वर आप और मुझ जैसे लोगों तक पहुंचने को बढ़ता है व इतने प्रेम और करुणा से व्यवहार करता है? बार-बार दाऊद ने इस अद्वितीय परमेश्वर को स्वर्ग से नीचे पृथ्वी पर आकर प्रेम से उसका स्पर्श करते देखा। उसने इस परमेश्वर को उसके शत्रुओं को खामोश करते देखा। इसके कारण दाऊद कभी अचम्भित होना बन्द न कर सका। परमेश्वर को उससे इतने प्रेम और करुणा से व्यवहार क्यों करना चाहिए? वह जानता था कि वह परमेश्वर के ध्यान के योग्य नहीं था परन्तु परमेश्वर की स्तुति हो कि उसने अपनी दृष्टि में उसे इतना कीमती जाना।

परमेश्वर ने स्त्री पुरुषों को स्वर्गीय प्राणियों से कुछ ही कम बनाया है। सृष्टि के शब्दों में, मानवजाति स्वर्गदूतों के समान स्वभाववश सामर्थी या महिमामयी नहीं थी। स्वर्गदूत परमेश्वर की उपस्थिति में स्वर्ग में रहते हैं। स्त्री और पुरुष इस पृथ्वी पर रहते हैं और आयु व मृत्यु के अधीन हैं। तथापि स्वर्ग के स्वर्गदूतों से विपरीत परमेश्वर ने मानवजाति पर आदर और महिमा का मुकुट रखा है। अर्थात्, अपने स्वरूप में स्त्री पुरुषों को बनाए जाने के द्वारा उनके जीवनों में महत्व को रखते हुए उसने उन्हें आदर दिया है। उसने उन्हें पृथ्वी पर शासक बनाया और पृथ्वी की बनाई सब चीज़ों पर। उसने पृथ्वी की सभी चीज़ों को उसके अधिकार में कर दिया। उन्हें भेड़, बकरी, गाय, बैल और उनके जितने पशु हैं उन पर प्रभुत्व करना है। वे आकाश के पक्षियों और समुद्र की मछलियों पर अधिकारी हैं। सृष्टि का प्रतापी और अद्वितीय परमेश्वर स्त्री पुरुषों को इस तरह से आदर देगा। इस प्रेम और करुणा के लिए वह अपने हृदय की गहराई से उसकी स्तुति प्रशंसा करता है।

इस भजन में हमारे समझने के लिए तीन चीज़ें हैं। प्रथम वह महत्व है जो परमेश्वर मनुष्यों के जीवन में रखता है। दाऊद को आश्चर्य होता है कि प्रभु मनुष्यों की सुधि क्यों लेता है। तौभी, वह समझ जाता है प्रभु ने उन्हें आदर दिया और साथ ही

पृथ्वी पर अधिकार भी। प्रभु परमेश्वर मानव जीवन में बड़े महत्व को रखता है।

इस परिच्छेद में हमें जिस दूसरी चीज़ को समझने की ज़रूरत है वह यह कि परमेश्वर मानव जीवन को महत्व देता है। इसलिए हमें भी ऐसा करना चाहिए। मसीह की देह में एक दूसरे के साथ हमें इसी तरह से कार्य करना है। अविश्वासी या समाज से बहिष्कृतों के साथ व्यवहार करने में भी यह कार्य करता है। हमें इस भजन की व्यावहारिकता को दूसरी संस्कृति के लोगों के साथ हमारे संबन्ध में समझने की ज़रूरत है। परमेश्वर ने हम सभी की सृष्टि की और वह सभी संस्कृति व समाज के विभिन्न वर्ग के स्त्री पुरुषों को महत्व देता है। जातिवाद के लिए यहां और स्थान नहीं है। यह भजन गर्भपात की व्यावहारिकता पर है। अजन्मे बच्चे के जीवन को भी आदर दिया जाना चाहिए क्योंकि परमेश्वर उस जीवन को महत्व देता है।

अन्त में, यह भजन इस पृथ्वी की देखभाल करने के हमारे उत्तरदायित्व को दिखाता है। हम इस विषय को कभी गंभीरता से नहीं लेते। यदि परमेश्वर ने हमें अपनी सृष्टि पर अधिकार दिया है तो हमारे लिए यह कितना महत्वपूर्ण है कि अपने आस-पास के वातावरण का आदर करें और जो उसने हमें सौंपा है उसके प्रति उत्तरदायी होते हुए परमेश्वर को आदर दें।

विचार करने के लिए

- प्रताप क्या है? परमेश्वर कैसे प्रतापी है?
- परमेश्वर की महिमा को पृथ्वी और स्वर्ग में कैसे दिखाया गया है?
- यह भजन हमें मानव जीवन के महत्व के बारे में क्या सिखाता है?
- इस पृथ्वी की देखभाल करने के हमारे दायित्व के लिए यह भजन क्या सिखाता है? इस पृथ्वी की देखभाल करने के लिए हमारे भाग के किन व्यावहारिक तरीकों को हम कर सकते हैं?
- यदि परमेश्वर हमें मनुष्य के रूप में महत्व देता है तो दूसरों के साथ हमारे संबन्ध में व्यावहारिक रूप से यह कैसे कार्य करता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को उसके प्रताप के लिए धन्यवाद दें कुछ क्षण उसके एक प्रतापी परमेश्वर होने के कारण स्तुति में बिताएं।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको दिखाए कि आप इस पृथ्वी के अच्छे भण्डारी कैसे हो सकते हैं जिसे उसने आपको देखभाल करने के लिए दिया है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह आपको मनुष्य के रूप में महत्व देता है।
- परमेश्वर से कहें कि आपके बहन और भाइयों को महत्व देने में वह आपकी सहायता करे।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह व्यक्तिगत रूप से आपसे प्रेम करता है और आपके जीवन को महत्व देता है।

9. अपने न्याय के कारण जाना गया

पढ़ें भजन संहिता 9:1-20

दाऊद परमेश्वर को एक न्यायी परमेश्वर के रूप में जानता था। भजन में बार बार न्याय का विषय सतह पर आता है। न्याय का परमेश्वर ही दाऊद की आशा थी। वह जानता था कि चाहे पास-पास बुरी चीज़ें हो रही हों परमेश्वर एक दिन सभी लोगों को अपने कामों का लेखा देने को बुलाएगा।

दाऊद भजन 9 का आरम्भ अपने पूरे तन से परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए करता है। ध्यान दें कि वह परमेश्वर से कहता है कि वह उसकी स्तुति करेगा और उसके सारे आश्चर्यकर्मों के बारे में बताएगा। मुख्य विचार यह है कि वह उसकी प्रशंसा करेगा और उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करता रहेगा। यह दाऊद के लिए एक समय की घटना नहीं थी। वह जीवन में कई संकटों से गुज़रा था। यह भी संभव था कि अभी उसे और भी बहुत से संकटों से निकलना होगा। इस सच्चाई के बावजूद कि उसे बड़ी परीक्षाओं का सामना करना होगा, दाऊद में पूरी तरह से परमेश्वर की स्तुति करने की वचनबद्धता थी। वह अच्छे समयों के समान बुरे समयों में भी उसकी स्तुति करेगा।

पद 2 में उसने प्रभु से कहा कि वह परमप्रधान के लिए प्रसन्न होगा, प्रफुल्लित होगा और स्तुति में गाएगा। पुनः हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि दाऊद का जीवन समस्याओं से भरा था। उसकी वचनबद्धता प्रभु में आनन्दित और प्रफुल्लित होने की थी। बहुत सी चीज़ें उसके इस आनन्द को चुराने के लिए आई होंगी। तौभी, ध्यान दें कि जिसका अनुभव दाऊद ने किया था वह न केवल उसकी समस्याओं में था परन्तु प्रभु में। यह एक महत्वपूर्ण अन्तर है। प्रभु में आनन्दित होने पर हम स्वयं को उसकी भलाई और प्रभुत्व का स्मरण कराते हैं। हम स्मरण करते हैं कि वह न्याय और पवित्रता का परमेश्वर है। हम जान पाते हैं कि वह हमारे मार्ग में आनेवाली प्रत्येक चीज़ का प्रयोग हमें अपने स्वरूप में लाने को शुद्ध करने व आकार देने के लिए करेगा। प्रभु में आनन्दित होना यह जानना है कि वह कुछ नहीं कर सकता जिसका प्रयोग परमेश्वर हमारी भलाई के लिए न करे (रोमियों 8:28)। हम परीक्षाओं में हमेशा आनंदित नहीं रह सकते हों परन्तु हम यह जान सकते हैं कि परमप्रधान और प्रेमी परमेश्वर की बांहों में रहना आनंददायक है।

दाऊद के जीवन के इस समय में ऐसा लगता था कि परमेश्वर उसके शत्रुओं को पीछे करके अपनी सामर्थ का प्रदर्शन कर रहा था। दाऊद ने इसे हल्के रूप से नहीं लिया। उसका हृदय आनंद और धन्यवाद से भरा था क्योंकि परमेश्वर उसके संकट के

समय में उस तक पहुंचा था। उसके शत्रु प्रभु परमेश्वर के सामने ठोकर खा रहे थे और नाश हो रहे थे। इसने उसके मन को स्तुति और धन्यवाद देने को प्रेरित किया।

प्रभु ने दाऊद के द्वारा सामना किये जानेवाले संकट को देखा था। वह अपने दास के मन को जानता था और उसका बचाव करने को आया। परमेश्वर ने अपने सिंहासन पर बैठकर धार्मिकता से न्याय किया था। वह एक परमप्रधान परमेश्वर है जिनके अपने दास दाऊद पर अन्याय को विजयी नहीं होने दिया। न्याय में परमेश्वर ने अन्यजातियों को झिड़का। उसने दुष्टों का नाम पृथ्वी पर से हमेशा के लिए मिटाते हुए उनको नाश किया। इन शत्रुओं को हमेशा के लिए उनके नगरों से उखाड़ दिया गया कि उन्हें कोई फिर याद नहीं करेगा।

7-8 पदों में दाऊद हमें बताता है कि यहोवा सदैव सिंहासन पर विराजमान है उसने अपना सिंहासन न्याय के लिए सिद्ध किया है। वह संसार का न्याय धर्म से करेगा। चूंकि परमेश्वर धर्म से न्याय करता है, इसी कारण वह सदैव सही करता है। वह कभी भी बुराई और दुष्टता को विजयी नहीं होने देगा। जबकि हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जो दुष्टता और बुराई से बंधा है, परमेश्वर इसे देखता है और एक दिन न्याय करेगा। बुराई विजयी नहीं हो सकती क्योंकि परमेश्वर न्याय का परमेश्वर है जो धर्म से न्याय करता है। इसमें हमारे लिए एक बड़ी आशा है।

दाऊद आगे हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर पिसे हुओं के लिए रक्षक ठहरेगा (पद 9) उनके संकट के समयों में वह उनके लिए गढ़ होगा। उसकी बांहें सदैव उनके लिए खुली रहेंगी जिन्हें उसकी ज़रूरत होगी। इसमें दाऊद आनंद कर सका। वह जानता था कि विश्वासी के जीवन में चाहे संकट आए, परमेश्वर वहां उसके लिए होगा।

जो प्रभु को जानते थे उस पर पूरी तरह से भरोसा कर सके। परमेश्वर उस किसी भी व्यक्ति को नहीं छोड़ेगा जो उसे ढूंढता है। जीवन के संघर्षों में यह कितनी अद्‌भुत सांत्वना है। हो सकता है कि वह उसी समय दूर भी न करे परन्तु हम निश्चित हो सकते हैं कि उसने हमारी पुकार को सुना है और हमारी ज़रूरत के समय में हमें नहीं छोड़ेगा।

आनंद करने का यही कारण था। दाऊद पुनः उस परमेश्वर की स्तुति करता है जो सिय्योन के सिंहासन पर बैठा है। वह शासन कर रहा है और प्रत्येक चीज़ पर उसका नियंत्रण है। कुछ भी उसके नियंत्रण से बाहर नहीं है। सभी जातियों को हमारे परमेश्वर के अद्‌भुत कार्यों को जानने की ज़रूरत है। उसके लोगों को परमेश्वर की उन भली चीज़ों के बारे में बताने की ज़रूरत है जिन्हें उसने उनके लिए किया है। हमारा परमेश्वर उस खून का पलटा लेगा जिसे शत्रु ने बहाया है। वह दुखी लोगों की पुकार को अनसुना नहीं करता।

इस भजन को लिखते समय दाऊद व्यक्तिगत रूप से संघर्ष कर रहा था। पद 13

में ध्यान दें कि वह कैसे परमेश्वर को पुकारता है: मेरे दुख को देख जो मेरे बैरी मुझे दे रहे हैं।'' वह परमेश्वर से उस पर दया करने और मृत्यु के फाठकों से उसे उठाने को कहता है। यह हमें दिखाता है कि दाऊद कितना पिसा हुआ था। उसे 'मृत्यु के फाटकों' पर लाया गया था। उसकी एकमात्र आशा प्रभु परमेश्वर में थी और वह उसे एक प्रेमी, दयालु और न्यायी परमेश्वर के रूप में जानता था।

पद 14 में उस कारण पर ध्यान दें कि दाऊद क्यों चाहता था कि उसे मृत्यु के फाटकों से उठाया जाए। उसकी इच्छा प्रभु परमेश्वर की सराहना करने की थी। उसका छुटकारा केवल उसके लिए ही नहीं था। उसे स्तुति की भट्टी के लिए इंधन की ज़रूरत थी। उसे प्रभु की प्रशंसा करने में आनंद आता था। ध्यान दें कि दाऊद सिय्योन पर खड़े होकर प्रभु के उद्धार पर सार्वजनिक रूप से आनन्दित होना चाहता था। उसे प्रभु की प्रशंसा करने में शर्म नहीं आती थी और न ही दूसरों के सम्मुख परमेश्वर पर गर्व करने में। वह चाहता था कि हर कोई परमेश्वर की भलाई को देखें।

दाऊद ने जातियों को उन गड्ढों में गिरते देखा था जिसे उन्होंने उसके लिए खोदा था। उसने उन्हें अपने ही जाल में फंसते देखा था। परमेश्वर एक न्यायी परमेश्वर है। वह जातियों को हमेशा के लिए उनकी दुष्टता को नहीं करने देगा। वह दिन आएगा जब वे बुराइयाँ उन पर आ पड़ेंगी जिन्हें उन्होंने दूसरों के लिए किया था।

इस परिच्छेद में दाऊद जिस सत्य को बता रहा है उसे समझना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है, वह हमें याद दिला रहा है कि परमेश्वर उस बुराई से अच्छी तरह से परिचित है जो हमारे आस-पास हो रही है। वह हमें बता रहा है कि बुराई करनेवालों को एक दिन अपनी इस बुराई की कीमत चुकानी होगी। कुछ क्षण के लिए उन्हें उस बुराई से लाभ मिले परन्तु अन्त में यह उन पर ही पड़ेगा। बुराई करने वालों की प्रतीक्षा में केवल न्याय और मृत्यु ही है।

ज़रूरतमंदों के लिए दाऊद ने उन्हें स्मरण कराया कि उन्हें भुलाया नहीं जाएगा। यह सच है कि ऐसे समय भी होते हैं जब हमें आश्चर्य होता है कि क्या परमेश्वर हमारी प्रार्थना को सुन रहा है। परमेश्वर का समय हमारे समान नहीं है। परमेश्वर हमारी प्रार्थना का जवाब देने में देरी अवश्य कर सकता है, तौभी हमें भुलाया नहीं जाएगा। वह ज़रूरतमंदों की प्रार्थना को सुना है और सही समय पर वह जवाब भी देगा। पद 18 में दाऊद हमें स्मरण कराता है कि सताए हुए लोग हमेशा अपने परमेश्वर में आशा रख सकते हैं।

दाऊद भजन का समापन परमेश्वर से न्याय को बनाए रखने की मांग करने के द्वारा करता है। वह परमेश्वर से उठने के लिए कहता है जिससे मनुष्य अपने उद्देश्यों पर प्रबल न होने पाएं। वह परमेश्वर को उठकर जातियों का न्याय करने को बुलाता है, उन पर भय लाते हुए ताकि वे जान सकें कि वे केवल मनुष्य ही हैं।

क्या ऐसे समय नहीं होते जब हम यह भूल सकते हैं कि हम केवल मनुष्य ही है।

क्या हमारे इतिहास ने ऐसे स्त्री पुरुषों को प्रगट नहीं किया जिन्होंने स्वयं के ईश्वर होने पर विश्वास किया? इन व्यक्तियों को लगता है कि वे अपनी परिस्थितियों और अपने जीवनों के नियंत्रण में हैं। जब परमेश्वर न्याय करने के लिए उठेगा तब यह कितनी भयानक चीज़ होगी। वह दिन आएगा जब सभी एक सच्चे परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। बेशक कुछ समय के लिए हम संकट में हों, आइये अपनी आंखें ऊपर उठाएं। परमेश्वर अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा। वह एक न्यायी परमेश्वर है जो अपने सिंहासन से शासन करता है। बेशक वह देरी करता है, वह आएगा। वह उठेगा और पृथ्वी का न्याय करेगा। अपनी संतान की दोहाई को वह नहीं भूलेगा। संकट के समय में वह उसके लिए सहारा होगा। उसकी स्तुति और धन्यवाद करने के लिए हमारे पास उचित कारण है।

विचार करने के लिए:

- विरोध और सकंट के बीच क्या परमेश्वर की स्तुति करना संभव है?
- प्रभु में आनन्दित होना और अपनी समस्याओं मं आनन्दित होने का प्रयास करने के बीच क्या अन्तर है?
- परमेश्वर के समय के बारे में हम क्या सीखते हैं? क्या वह हमेशा हमारे समय में जवाब देता है?
- दुष्टों के लिए इस भजन में क्या चेतावनी है?
- प्रभु के छुटकारे और उद्धार के प्रति दाऊद की क्या प्रतिक्रिया है?

प्रार्थना के लिए:

- जिस विजय की प्रतिज्ञा प्रभु ने दी है उसके लिए उसे धन्यवाद दें। मैं उसे धन्यवाद देता हूं कि वह उन्हें नहीं भूलता जो उसके हैं।
- प्रभु से आपके संकट के बीच आपको सहारा देने के लिए कहें जब तक कि वह आपको पूरी तरह से उसमें से न निकाल दे।
- कुछ समय यह याद करने को लें कि अतीत में परमेश्वर ने आपको एक विशिष्ट संकट से कैसे छुड़ाया था। प्रभु को इसके लिए धन्यवाद दें और उन शिक्षाओं के लिए जिन्हें आपने इसमें सीखा।
- आपके संकट के समय में प्रभु की और अधिक स्तुति करने में आपकी सहायता करने को कहें; यह जानते हुए कि वह न्याय और धर्म का परमेश्वर है।

10. प्रभु जो सुनता है

पढ़ें भजन संहिता 10 1-18

विश्वासी के जीवन में ऐसे समय भी आते हैं जब उसे परमेश्वर की योजना या उद्देश्य पर आश्चर्य होता है। कई बार ऐसा लगता है कि परमेश्वर बहुत दूर है। भजनकार परमेश्वर से इस अकेलेपन के भाव को समझ गया था।

पद 7 में भजनकार पुकार उठता है:

हे यहोवा तू क्यों दूर खड़ा रहता है? संकट के समय में क्यों छिपा रहता है?

विश्वासी के लिए संभवत: इस भाव से विनाशकारी और कुछ नहीं होगा कि परमेश्वर दूर है। जब विश्वासी को परमेश्वर की उपस्थिति का स्पष्ट अहसास होता है; तब ऐसा कुछ नहीं होता जिसका सामना वह न कर सके। विश्वासियों ने स्वेच्छा से अपने जीवनों को न्यौछावर किया व अद्वितीय बाधाओं का सामना किया है। इसे करने में उनकी शक्ति का भाव उनके साथ परमेश्वर की उपस्थिति को जानना था। जब प्रभु दूर प्रतीत होता है, हम साहस खो देते हैं।

जबकि यह सत्य है कि ऐसे समय होते हैं जब ऐसा लगता है कि परमेश्वर शांत है, ऐसे समय भी होते हैं जब हमारे संकट उसकी उपस्थिति के प्रति हमें अन्धा कर देते हैं। यहां भजनकार परमेश्वर को पुकारता है। अपने संकट के समय में वह परमेश्वर को देखना चाहता है। उसे यह जानने की ज़रूरत है कि परमेश्वर नियंत्रण में है।

पद 2 में हम भजनकार की निराशा के कारण को देखते हैं। दुष्ट निर्बलों का शिकार कर रहे थे। वे उन्हें जाल में फंसाने के लिए योजनाएं बना रहे थे और उनको गिराकर संपन्न हो रहे थे। उन्होंने अपनी अभिलाषा पर घमण्ड किया और जो लोभी थे उन्हें आशीषित किया। उनकी अभिलाषा भौतिक संपत्ति के लिए थी। वे भौतिकता और लोभ के जाल में फंस गए थे। सांसारिक सामग्री उनके ईश्वर बन गए थे। अपनी जेबों को भरने के लिए वे ज़रूरतमंदों को सताते व परेशानी में डालते थे।

इन लोगों के पास परमेश्वर के लिए समय नहीं था। न ही वे उसे खोजना चाहते थे। उनके विचारों में परमेश्वर और उसके मार्गों के लिए कोई स्थान न था! वे केवल इतना ही सोच सकते थे कि स्वयं को कैसे संपन्न करें। वे धन और संपत्ति के लिए जीते थे।

भजनकार को संकट में डालने वाली सच्चाई यह थी कि ये लोग संपन्न हो रहे थे। ये घमण्डी लोग थे जो न तो दुख उठा रहे थे और न ही जीवन में संघर्ष कर रहे थे

तौभी उनके पास परमेश्वर की व्यवस्था के लिए करने को कुछ न था। वे अपने शत्रुओं पर हंसे। अपने धन के कारण उन्होंने सुरक्षा का अनुभव किया।

उन्हें लगा कि कोई भी चीज़ उन्हें हानि नहीं पहुंचा सकती। उन्होंने विश्वास किया कि उनकी खुशी उनकी संपन्नता से आई थी और वे सदा खुश रहेंगे। उन्होंने विश्वास किया कि उनका धन उन्हें किसी भी संकट से बचाकर रख सकता है। (पद 6)

इन लोगों ने अपने आस-पास के लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया। उन्हें लगा कि उनका मन जो चाहे उसे वे कर सकते हैं। उन्होंने अपने पड़ोसियों को शाप दिया, झूठ बोला और डराया। उनकी जीभ बुराई और संकट से भरी है। उन्हें लगा कि उनका धन ही उनकी शक्ति है। अपनी संपन्नता में उन्होंने सुरक्षा को अनुभव किया। पद 10 हमें बताता है कि वह गांवों के निकट छिप कर बैठ जाते हैं। वे घात में बैठते और वहां से गुज़रनेवालों की हत्या करते। वे स्वयं में एक व्यवस्था थे। उन्होंने अपने ही नियम बनाए। उन्होंने जो चाहा वह लिया और गरीबों के बल पर स्वयं को संपन्न किया। जैसे सिंह अपनी झाड़ी में, वैसे ही वे भी छिपकर घात में बैठा करते हैं। वे असहाय के लिए जाल बिछाते और जो कुछ हो सके अपने जाल में फंसाकर घसीट लाते हैं। वे अपने शिकार को कुचलकर उसका नाश कर देते हैं। उनके धन ने उन्हें शक्तिशाली बनाया है। वे अपने मार्ग में आनेवाली किसी भी चीज़ को हटाने के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करते हैं।

इन लोगों ने एक झूठ पर विश्वास किया। उन्होंने विश्वास किया कि चूंकि परमेश्वर ने उन्हें उसी समय नाश नहीं किया, वह उनके अपराधों को भूल गया है। उन्होंने विश्वास किया कि वे अपराध कर सकते हैं और परमेश्वर नहीं देखेगा या जो कुछ उन्होंने किया उसका हिसाब नहीं लेगा।

पद 12 में भजनकार परमेश्वर को पुकार उठता है और उससे उठकर दुष्टों से निपटने के लिए कहता है। वह परमेश्वर से असहायों को न भूलने की विनती करता है। बेशक इस समय वह परमेश्वर को देख नहीं सका, तौभी उसने आशा नहीं खोई।

भजनकार को केवल इस बात ने दुखी नहीं किया था कि दुष्ट व्यक्ति ज़रूरतमंद को सताते हैं परन्तु इसने भी कि उन्होंने परमेश्वर को शाप दिया व उसकी व्यवस्था की उपेक्षा की थी। उन्होंने विश्वास किया कि वे परमेश्वर की व्यवस्था से ऊपर थे। किसी तरह से, उन्होंने यह अनुभव किया था कि परमेश्वर उन्हें उनके कार्यों के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराएगा (पद 13)।

परमेश्वर के दूर प्रतीत होने पर भी, भजनकार इस सच्चाई से जुड़ा रहा कि परमेश्वर ने अपने लोगों द्वारा-सामना किये जाने वाले दुख और संकट को देखा था। वह अपने हृदय में जानता था कि परमेश्वर इन विषयों को अपने हाथों में लेगा। वह जानता था कि असहाय पीड़ित अपने आपको परमेश्वर को सौंपेंगे तथा परमेश्वर अनाथों का सहायक होगा। (पद 14)।

भजनकार ने अपने आस-पास के संकट को देखा था। उसने देखा था कि बुरे लोग कैसे संपन्न हो रहे थे। उसने ज़रूरतमंद लोगों को सताव सहते हुए देखा था। उसने धनी व शक्तिशाली लोगों की धमकियों व शापों को सुना था जिन्होंने परमेश्वर की उपेक्षा की थी और तब भी संपन्न हुए थे। उसके लिए निराश होना कितना सरल रहा होगा। इन सब में परमेश्वर कहाँ था? मानव तर्क परमेश्वर के अस्तित्व और उद्देश्यों पर प्रश्न करता रहा है। तथापि भजनकार ने परमेश्वर के वचन के सत्य की ओर देखा और जो वह परमेश्वर के बारे में जानता था। कई बार हमारे पास केवल परमेश्वर का वचन और उसका चरित्र होगा कि उस पर भरोसा करें। मानव तक पर्याप्त नहीं है। भावनाएं हमें हरा देंगी। परमेश्वर का वचन बना रहता है।

पद 15 में, भजनकार परमेश्वर से कार्य करने के लिए पुकार उठा। उसने परमेश्वर से दुष्ट की भुजा को तोड़ने के लिए कहा। भुजा बल और शक्ति का प्रतीक है। वह धर्मी पर से दुष्ट की सामर्थ को तोड़ने के लिए कह रहा है। वह परमेश्वर से दुष्ट को उसका लेखा देने को कहता है। वह चाहता है कि परमेश्वर उसे प्रगट करें जिसे उसने गुप्त में किया था।

भजनकार 16-18 पदों में यहां एक बहुत सकारात्मक टिप्पणी के साथ समापन करता है। ''यहोवा अनन्तकाल के लिए महाराज़ है'', उसने अपने पाठकों को स्मरण कराया। अन्य शब्दों में, प्रभु सारी पृथ्वी पर शासन करता है। राजा होने के कारण वह नियंत्रण में था। राजा होने के कारण प्रत्येक घुटना उसके समक्ष झुकेगा और हरेक को अपने कार्यों का लेखा देना होगा। जो जातियाँ उससे फिर गई थीं वे उसके हाथों से नाश होंगी।

भजनकार जो कुछ परमेश्वर के बारे में जानता था उस आधार पर उसने यह मान लिया था कि परमेश्वर ने ज़रूरतमंदों की पुकार को सुना है। वह उनकी इच्छाओं को जानता था। उसने विश्वास किया कि परमेश्वर उठेगा और दुखी लोगों की सहायता के लिए आएगा। वह उनकी पुकार को सुनेगा। वह अनाथों और पिसे हुओं को बचाएगा। वह दिन आ रहा है जब परमेश्वर दुष्टों को रोकेगा ताकि वे अधिक समय तक ज़रूरतमंदों को पीसने न पाएं और डराने न पाएं।

भजनकार के मन में इस बारे में कोई प्रश्न नहीं है कि प्रभु परमेश्वर नियंत्रण में है। उसने ज़रूरतमंदों की पुकार को सुना है और उनकी सहायता के लिए आएगा। तौभी, परिस्थिति वर्तमान समय में इतनी अच्छी नहीं दिखती। भजनकार को परमेश्वर में बड़ा आराम मिला है। बेशक, वह परमेश्वर को देख नहीं सका, उसे परमेश्वर के चरित्र पर कोई संदेह नहीं। परमेश्वर के बारे में वह जिस सत्य को जानता था वह उसके संदेह के समय में उसके मन में एक बड़ी आशीष को लाया। ऐसे समयों में जब आप परमेश्वर को नहीं देख सकते या उसकी आवाज़ को नहीं सुन सकते, उस सत्य की ओर देखें जिसे उसने आप पर स्वयं के बारे में प्रगट किया है। वह सत्य तब

तक आपको आशीष देगा और सुरक्षित रखेगा जब तक कि उसकी उपस्थिति स्पष्ट रूप से प्रगट न हो जाए।

विचार करने के लिए:

- क्या आपने कभी स्वयं को ऐसी स्थिति में पाया है जहां परमेश्वर दूर लग रहा हो? आपने उस स्थिति को कैसे संभाला था?
- हम यहां उन समयों में सत्य के महत्व के बारे में क्या सीखते हैं जब परमेश्वर दूर प्रतीत होता है?
- इस परिच्छेद में भौतिकता के छल के बारे में हम क्या देखते हैं? इस जाल पर विश्वास करनेवाले किस बात में पकड़े जाते हैं?
- इस भजन में अपनी ज़रूरत के समय पर हमें क्या प्रोत्साहन मिलता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को उसके चरित्र को और अधिक दिखाने को कहें ताकि संकट के समयों में आपको बल मिले।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि सारी परिस्थितियों पर उसका नियंत्रण है और कुछ भी उसके नियंत्रण से बाहर नहीं।
- परमेश्वर ने आप पर अपने बारे में जो प्रगट किया है, कुछ समय उसके लिए प्रभु की स्तुति करें।
- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो इस समय संकट का सामना कर रहा है? परमेश्वर से एक बहुत विशिष्ट तरीके से स्वयं को उस पर प्रगट करने के लिए कहें।

11 प्रभु धर्मी है

पढ़ें भजन संहिता 11:1-7

ग्यारहवां भजन दाऊद का भजन है। ध्यान दें कि इसे संगीत के निर्देशन हेतु लिखा गया था। यह संकेत देता है कि इसे सार्वजनिक आराधना के लिए लिखा गया था। दाऊद चाहता था कि इस भजन का संदेश भावी पीढ़ी के लिए एक प्रोत्साहन बने। वह जानता था कि उसके संघर्ष उसके लिए ही विचित्र नहीं थे।

दाऊद हमें यह स्मरण कराते हुए आरम्भ करता है कि उसे प्रभु में आश्रय मिल गया है। एक आश्रय हमारे आस-पास के संकट से सहारा पाने का स्थान है। जीवन के तूफानों के बीच यह सुरक्षा और शांति का स्थान है। इसी स्थान पर हम सहारा पा सकते हैं जबकि हमारे आस-पास की चीज़ें गिरती प्रतीत हो रही हों। प्रभु दाऊद के लिए एक आश्रय था। प्रभु में उसने जीवन की परीक्षाओं में सुरक्षा और शांति को पा लिया था।

दाऊद अपने हिस्से की समस्याओं को जानता था। राजा शाऊल और दाऊद का अपना पुत्र अबशालोम दोनों ही उसकी हत्या करना चाहता था उसके बहुत से शत्रु थे। उसके जीवन का एक अच्छा भाग शाऊल से भागने में बीत गया था। पद 1 के अनुसार ऐसे समय भी थे जब दाऊद के मित्र उसे उसके शत्रुओं से बचने के लिए पहाड़ पर भाग जाने की सलाह देते थे। दाऊद अपने मित्रों की सलाह को सुनता था परन्तु उनकी सलाह पर उसे भरोसा नहीं था। उसका भरोसा प्रभु परमेश्वर में था। अपने छुटकारे और सुरक्षा के लिए उसने परमेश्वर पर भरोसा किया।

कुछ समय पूर्व जब मैं अपने एक मसीही मित्र से बात कर रहा था उसने मुझे बताया कि वह अपने सण्डे स्कूल के लिए किस तरह से तैयारी करती थी। जो वह बता रही थी मैंने उसे सुना और उसके समाप्त कर लेने के पश्चात् मैंने उससे पूछा कि क्या उसे अपनी तैयारी पर भरोसा है या परमेश्वर पर। मैं यह अच्छी तरह से जानता हूं कि अपने प्रयासों पर भरोसा करना कितना सरल है। जबकि भजनों की पुस्तक पर यह वृत्तांत कई माह के कार्य का फल है, मैं यह पूर्ण रूप से जानता हूँ, कि यदि इन शब्दों पर प्रभु की आशीष न हो तो ये आत्मिक रूप से कुछ पूरा नहीं कर पाएंगे। मैं अपने सावधानीपूर्वक प्रयोग किये गए शब्दों या पवित्रशास्त्र को समझने की अपनी योग्यता पर भरोसा करने का साहस नहीं करता। दाऊद को यह सीखना था कि जबकि वह एक निपुण योद्धा था, केवल परमेश्वर ही उसका आश्रय और बल था।

दाऊद अपने आस-पास के दुष्ट लोगों से परिचित था। उनके तीर झुके हुए और धनुष पर चढ़ने को तैयार थे। ये तीर अन्धियारे में सीधे लोगों पर चलाए गए थे (पद 2)। शत्रु अन्धियारे में घात में बैठ जाते थे कि किसी भी क्षण विश्वासी को खतरे में डाल दें। हमें सदैव सावधान रहने की ज़रूरत है। पतरस अपनी पहली पत्री में हमें बताता है

सचेत हो और जागते रहो क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए (2पतरस 5:8)।

शत्रुओं से भागते समय दाऊद को अपने द्वारा लिये गए प्रत्येक कदम को ध्यान से देखना था। उसके शत्रु कहीं भी हो सकते थे। जब उसने उसकी कम अपेक्षा की शत्रु के तीर धनुष से निकलकर बेध देते। विश्वासी होने के कारण हमारे समय भी ऐसा ही है। शैतान ने अपनी दृष्टि को स्थिर किया हुआ है। जब भी उसे अवसर मिलता है, वह अपने तीर चला देता है। हमें निरन्तर रक्षा करते रहना चाहिए।

पद 3 में दाऊद इस सच्चाई पर विलाप करता है कि नीवें ढा दी गई हैं। यहां वह जिन नेवों के बारे में बोल रहा है वे उसके समाज की नीवें हैं। धार्मिकता और नैतिकता के सिद्धान्त काट दिये गए थे। सरकार और धार्मिक अगुवे परमेश्वर के वचन के सत्य के प्रति समर्पण नहीं कर रहे थे। समाज में न्याय नहीं रह गया था। न्यायी भ्रष्ट थे। आत्मिक अगुवे अब सत्य की अगुवाई में नहीं चल रहे थे। इन नीवों के तोड़े जाने पर परमेश्वर के स्त्री और पुरुष कहां जाएंगे?

दाऊद-पद 4 में इस प्रश्न का जवाब देता है। वह हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर अपने पवित्र भवन में सिंहासन पर बैठा है। जबकि समाज की नीवों को ढा दिया गया था, परमेश्वर तब भी नियंत्रण में था। स्वर्ग में अपने सिंहासन से; जो कुछ हो रहा था उसने देखा। वह अपने धर्मी बच्चों के संघर्षों से परिचित था। उन्होंने उसे व्यर्थ में नहीं पुकारा था।

वह दिन आ रहा है जब परमेश्वर सब बुरा करनेवालों का न्याय करेगा। ध्यान दें कि दाऊद ने कैसे कहा कि परमेश्वर उपद्रव या हिंसा करनेवालों से घृणा करता है। परमेश्वर इन हिंसा के प्रेमियों पर आज गन्धक और प्रचण्ड लहू बरसाएगा। वह उनके विद्रोह को जारी नहीं रहने देना।

जब दाऊद ने कहा कि प्रभु हिंसा से घृणा करता है वह यह नहीं कर रहा था कि उनके लिए कोई आशा नहीं थी। जो कोई भी परमेश्वर के पास पश्चात्तापी मन के साथ आता है वह उन्हें क्षमा करता है। प्रेरित पौलुस इसका एक स्पष्ट उदाहरण है। उसने खुले रूप से प्रभु और उसके मार्गों के प्रति विद्रोह किया। उसने मसीहियों को उनके घरों से घसीटा कि उन्हें सताया या रौंदा जा सके (प्रेरित. 8:5)। पौलुस को क्षमा कर दिया गया था। जबकि परमेश्वर का प्रेम उन तक भी जाता है जो उसके लोगों को सताते हैं उसकी घृणा और न्याय भी बहुत वास्तविक है। परमेश्वर पाप से घृणा करता है और उनके साथ सहभागिता नहीं कर सकता जो इसमें बने रहते हैं। यदि वे पश्चात्ताप न करें तो उसका न्याय उन पर आएगा।

दाऊद अपने पाठकों को यह स्मरण कराते हुए भजन का समापन करता है कि परमेश्वर एक धर्मी परमेश्वर है जो न्याय से प्रेम करता है। वे जिन्होंने सही जीवन जीया वे उसके चेहरे को देखेंगे। इसे समझने के कई तरीके हैं जो दाऊद का परमेश्वर के चेहरे को देखने से अभिप्राय है। वह दिन आ रहा है जब हम प्रभु के चेहरे को देखेंगे। पौलुस इस बारे में 1कुरिन्थियों में लिखता है, ''अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है; परन्तु उस समय आमने-सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परन्तु उस समय ऐसी रीति से पहचानूंगा जैसा मैं पहचाना गया हूँ।''

ऐसा हो सकता है कि जब वह धर्मियों के परमेश्वर के चेहरे को देखने के बारे में बोल रहा था उसके मन में यह था। धर्मी इसमें प्रभु को देखेंगे कि कैसे प्रभु उन्हें उनके आस-पास की बुराई से छुड़ाने के लिए आया। परमेश्वर अपनी संतान को उनके दर्द में हमेशा के लिए नहीं छोड़ेगा। वह दिन आ रहा था जब वह उनकी सहायता के लिए आएगा और उनके शत्रुओं से उन्हें छुड़ाएगा। वे उसकी उपस्थिति को जानेंगे और अपने बीच में उसे चलता हुआ देखेंगे।

अपने चारों ओर बुराई से घिरे होने पर हम क्या करते हैं? हम परमेश्वर की ओर दौड़ते हैं। हम उसे तथा उसकी शक्ति को खोजते हैं। उसमें हम अपने आस-पास की बुराई से सुरक्षा पा सकते हैं। उसका न्याय हमारी रक्षा करेगा और हमारे लहू का बदला लेगा। जो उसके हैं वह उन्हें नहीं भूलेगा।

विचार करने के लिए:

- क्या परमेश्वर आपके लिए एक आश्रय रहा है? उस समय के बारे में बताएं जब परमेश्वर आपके लिए सहारा बना था।
- दाऊद ने इस सच्चाई पर शोक किया कि उसके समाज की नीवें टुकड़े-टुकड़े हो गई थीं। आपके समाज में यह कहां तक सत्य है?
- इस परिच्छेद में हम धर्मी की आशा के बारे में क्या सीखते हैं? यह आपको आपके संघर्ष में बने रहने में कैसे प्रोत्साहित करता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से आपके समाज की आत्मिक और नैतिक नीवों को मज़बूत करने के लिए कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह दिन आ रहा है जब आप उसे आमने-सामने देखेंगे।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि जबकि आपको यहां नीचे परीक्षाओं का सामना करना पड़ सकता है, वह तब भी नियंत्रण में है।
- कुछ समय स्वयं को तथा अपनी समस्याओं को परमेश्वर को सौंपने के लिए निकालें। उससे आपको तब भी भरोसा करने का अनुग्रह देने को कहें जब आपके आस-पास की स्थिति नियंत्रण से बाहर लग रहीं हों।

12. जीभ की शक्ति

पढ़ें भजन संहिता 12:1-8

हमारे जीवन में ऐसे समय होते हैं जब हम परमेश्वर के उद्देश्यों और योजनाओं को समझ नहीं पाते। इन समयों में ऐसा लगता है कि पृथ्वी पर दुष्टता का राज्य है। प्रभु दूर प्रतीत होता है और हम उसकी आवाज़ सुन नहीं पाते हैं। दाऊद इन भावनाओं से परिचित था।

भजनकार इस भजन का आरम्भ प्रभु परमेश्वर से यह कहते हुए करता है:

हे परमेश्वर बचा ले, क्योंकि एक भी भक्त नहीं रहा; मनुष्यों में से विश्वासयोग्य लोग मर मिटे हैं।

अपने चारों ओर देखने पर दाऊद हैरान हो गया कि भक्त कहाँ हैं। उसके चारों ओर के लोग प्रभु और उसके वचन के सिद्धान्तों से दूर जाते प्रतीत हो रहे थे। प्रभु के लिए जीनेवालों का पता लगाना कठिन हो गया था। यह उनके एक दूसरे को बुरा बोलने और अपने पड़ोसियों से छल करने के कारण प्रमाणित हो गया था। दाऊद ने जो कुछ सुना था उससे वह दुखी था। लोग झूठ बोलने के साथ-साथ छल कर रहे थे। एक व्यक्ति अपने पड़ोसी पर भरोसा नहीं कर सकता था। इससे दाऊद का मन टूट गया। उसके समाज का ढांचा छिन्न-भिन्न हो गया था। हम नहीं जानते कि इस भजन को लिखने के लिए दाऊद को किस चीज़ ने प्रेरित किया था। हो सकता है कि उसने स्वयं से ही धोखा खाया था। हो सकता है कि लोग उसके बारे में झूठ बोल रहे थे। हमारे लिए रोचक बात यह है कि दाऊद अपने विषय से कैसे निपटता है।

सबसे पहले ध्यान दें कि दाऊद का मन इस कारण टूट गया था क्योंकि उसके सह नागरिकों ने परमेश्वर के वचन का अनुसरण नहीं किया था। हमें ऐसे व्यक्ति की सराहना करनी है जो पाप के लिए वैसा ही अनुभव करता है जैसा परमेश्वर अनुभव करता है। जब हमारे कस्बे के लोग परमेश्वर के वचन का अनादर करते हैं तब हमें कैसा लगता है? हमारे समाज में परमेश्वर के वचन का अनादर होने के कारण क्या हमारे हृदय टूटे हुए हैं? दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार एक व्यक्ति था। अपने समाज में झूठ और छल के लिए उसने वही अनुभव किया जैसा अनुभव परमेश्वर करता है।

दूसरा, ध्यान दें दाऊद अपनी चिन्ताओं को परमेश्वर के पास लेकर गया। उसके चारों ओर की परिस्थितियां उसे घुटनों पर लेकर आईं। अपने समाज के पाप के बारे में

वह परमेश्वर को पुकार उठा। हमें ऐसे और बहुत से लोगों की ज़रूरत है जो प्रार्थना में प्रभु के समक्ष उन विषयों के लिए पुकार उठें जिनसे परमेश्वर के मन को दुख पहुंचता है। दाऊद यहां कुड़कुड़ाता नहीं और शिकायत नहीं करता है। जितने झूठ बोले गए थे, उसके विरोध में भी इन सभी से वह अपने आदर और प्रतिष्ठा को बचाना नहीं चाहता था। उसके समाज की बुराई उसे प्रार्थना में प्रभु के पास ले आई थी। हमें दाऊद के समान बहुत से लोगों की ज़रूरत है जो तब तक अपने समाज के लिए मध्यस्थता करते रहें जब तक कि परमेश्वर फिर से पुनःस्थापन करने के लिए समाज की बुराई को दूर न कर दें।

ध्यान दें पद 3 में दाऊद क्या प्रार्थना करता है। वह परमेश्वर से चापलूस होंठों और बड़ा बोल बोलने वाली जीभ को काट डालने के लिए कहता है। अपने आस-पास देखने पर दाऊद ने ऐसे लोगों को देखा जो जीभ की शक्ति पर भरोसा करते थे। इन व्यक्तियों ने यह विश्वास किया कि अपने शत्रुओं के विरुद्ध बोलकर वे उन्हें हरा सकते हैं। जीभ एक शक्तिशाली हथियार है। कुछ समय के लिए जीभ की शक्ति पर ध्यान दें।

जीभ से एक व्यक्ति अपने पड़ोसी की प्रतिष्ठा का नाश कर सकता है। जीभ से एक व्यक्ति अपने पड़ोसी को उस मार्ग तक पहुंचा सकता है जो उसके जीवन का नाश कर देता है। अदन के बगीचे में शैतान के परीक्षा में डालनेवाले शब्दों पर ध्यान दें, हव्वा को वर्जित फल के लिए लुभाते हुए। पुराने नियम के समय के झूठे भविष्यद्वक्ताओं के शब्दों पर विचार करें जिन्होंने परमेश्वर के लोगों को सत्य से मोड़ लिया था। इसके बाद यीशु के दिनों के लोगों के शब्दों पर ध्यान दें जो उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए कह रहे थे। शब्दों में मार डालने की सामर्थ होती है।

ध्यान दें कि दाऊद के दिनों के लोग क्या कह रहे थे। ''हम अपनी जीभ ही से जीतेंगे, हमारे होंठ हमारे ही वश में हैं, हमारा प्रभु कौन है?'' (पद 4)। इन लोगों ने जीभ की शक्ति पर विश्वास किया था। जीभ उनका प्रभु बन गई थी। अर्थात् उन्होंने विश्वास किया कि जीभ उनके लिए उनकी मनचाही चीज़ ला सकती थी। झूठ बोलने, धोखा देने या बड़े बोल बोलने के द्वारा वे लोगों से वह सब कर सकते थे जो वे उनसे कराना चाहते थे। उन्होंने जीभ की शक्ति को ऊपर किया। जब उनके पास उनकी सिद्धान्त रहित जीभें थी उन्हें तलवार की क्या ज़रूरत थी।

दाऊद पद 3 में हमें जीभ की शक्ति का एक छोटा चित्र देता है। कमज़ोरों को रौंदा जा रहा था। ज़रूरतमंद दर्द और दुख से कराह रहे थे उसके कारण जो उनके साथ हुआ था। यहां किसी तलवार का प्रयोग नहीं किया गया था। शब्द ही नाश करने में समर्थ थे। हममें से ऐसा कौन है जो जीभ की शक्ति से चोट खाया हुआ न हो?

समस्या को बताते हुए, दाऊद अपना ध्यान परमेश्वर की ओर लगाता है। उसे इस बात का अहसास है कि परमेश्वर उससे बोल रहा है, जैसा वह लिखता है, ''परमेश्वर कहता है, 'अब मैं उठूंगा जिस पर वे फुंकारते हैं उसे मैं चैन विश्राम दूंगा'' (पद 5)।

जीभ एक शक्तिशाली हथियार है परन्तु परमेश्वर अपने लोगों की इसके विरुद्ध रक्षा करने के योग्य है। लोग हमारे बारे में हर तरह की बुरी चीज़ कह सकते हैं परन्तु परमेश्वर हमें विजय देगा। वह जानता है कि हमारे विरुद्ध क्या बोला गया है। वह हमारे शत्रुओं द्वारा बोले गए झूठ और बड़े बोलों को सुनता है। इस विषय पर बोलते हुए प्रभु यीशु ने कहा:

धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था। (मत्ती 5:11-12)।

परमेश्वर जानता है कि हमारे शत्रु क्या कह रहे हैं। एक दिन वह न्याय में होकर बोलेगा। वह हमारी सहायता के लिए आएगा। दाऊद को भरोसा था कि परमेश्वर अपने लोगों को बुरे लोगों से सुरक्षित रखेगा जो अपनी जीभ को धर्मी के विरुद्ध एक हथियार के रूप में प्रयोग करते हैं (देखें पद 7)।

दुष्ट अपने घमण्डी शब्दों से अकड़ में थे। उन्हें लगा कि वे न्याय से सुरक्षित थे। ये व्यक्ति यह समझने में असफल हो गए थे उन्होंने कहा कि उनके शब्दों से कहीं अधिक शक्तिशाली परमेश्वर का वचन है (पद 6)। पद 6 में दाऊद हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर का वचन पवित्र है। इन शब्दों को मिट्टी की भट्टी में सात बार शुद्ध किया गया था। पवित्रशास्त्र में सात की संख्या सिद्धता को प्रस्तुत करती है। किसी भी चीज़ को सात बार शुद्ध किये जाने पर वह सिद्ध हो जाती है।

परमेश्वर का वचन हमारे विरुद्ध बोले गए किसी भी वचन से सिद्ध और अधिक सामर्थी है। इस वचन के द्वारा, संसार को बनाया गया और इसके द्वारा संसार का न्याय होगा। दाऊद का भरोसा परमेश्वर के वचन में है। परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा उनके विरुद्ध बोले गए वचनों से करने में असफल नहीं होगा।

समापन करने पर, हमारे लिए हमारे जीवनों में जीभ की शक्ति का जानना महत्वपूर्ण है। यह कितना महत्वपूर्ण है कि जो हम कहते हैं उसे देखते हैं। हमारे शब्द प्रभु में हमारे भाई बहनों के सम्मान को नष्ट कर सकते और उन्हें हतोत्साहित कर सकते हैं। इनका प्रयोग निर्माण करने व प्रोत्साहन देने के लिए किया जा सकता है। यीशु ने मत्ती 12:36 में सरलता से बताया है:

मैं तुम से कहता हूँ, कि जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे।

परमेश्वर शब्दों की शक्ति को समझने में आपकी सहायता करे।

विचार करने के लिए:

- क्या आप अपने विरुद्ध बोले गए किसी व्यक्ति के शब्दों से दुखी हुए हैं? स्पष्ट करें।
- जीभ की शक्ति क्या है? यह क्या कर सकती है?
- इस परिच्छेद में परमेश्वर के वचन के बारे में हम क्या सीखते हैं?
- अपने शब्दों का प्रयोग कैसे करें इस संबन्ध में यह भजन क्या चुनौती देता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से अपने किसी भी ऐसे समय के लिए आपको क्षमा करने को कहें जब प्रभु में किसी भाई या बहन से आप निष्कपट रूप से नहीं बोले थे?
- परमेश्वर से कहें कि अपने शब्दों से उसका आदर करने में वह आपकी सहायता करे।
- कुछ समय अपने समाज के लिए प्रार्थना करने को निकालें। परमेश्वर से निष्ठा व ईमानदारी को पुन:स्थापित करने को कहें।
- परमेश्वर को उसके वचन के लिए धन्यवाद दें। उसे धन्यवाद दें कि आपकी गणना उस वचन पर की जा सकती है। यह आपको जो आशा देता है उसके लिए धन्यवाद दें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह आपको बचाएगा?

13. कब तक

पढ़ें भजन संहिता 13:1-6

परमेश्वर का समय हमारे समान नहीं है। हम समय के प्राणी हैं। हममें से किसी को भी अपनी प्रार्थनाओं के जवाब के लिए अधिक समय तक प्रतीक्षा करना अच्छा नहीं लगता। यहां तेरहवें भजन में, दाऊद अपने जीवन में जिस समस्या का सामना कर रहा था उसके लिए परमेश्वर को पुकारता है। वह उससे उसके द्वारा सहायता के लिए किये गए निवेदन के जवाब पर समय के बारे में प्रश्न करता है। कुछ सीमा तक, हम सभी को आश्चर्य होता है कि परमेश्वर जैसे हम चाहते हैं उस तरह से हमारे प्रश्नों का जवाब शीघ्रता से क्यों नहीं देता।

दाऊद परमेश्वर से यह पूछने के द्वारा आरम्भ करता है कि वह उसकी प्रार्थना को सुनने तथा उसकी सहायता के लिए आने में इतनी देर क्यों कर रहा है। पद 1में वह कहता है, ''क्या सदैव मुझे भूला रहेगा?'' हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि दाऊद ने सच में यह मान लिया था कि परमेश्वर अपनी किसी भी संतान को भूल सकता है। इस भजन के निष्कर्ष से हम समझते हैं कि परमेश्वर का प्रेम अनन्त है और कि वह सही समय पर कार्य करेगा। जब दाऊद परमेश्वर द्वारा उसे भुला दिये जाने के बारे में बोलता है, तो वह मानव शब्दों में बोलता है। वह अपनी प्रार्थना के जवाब में देरी होने के बारे में बोलता है। दाऊद को यह समझने में संघर्ष करना पड़ता है कि परमेश्वर तेज़ी से कार्य क्यों नहीं कर रहा था।

परमेश्वर की प्रतीक्षा करने के समयों में हमारे विश्वास की परख होती है। हम स्वयं को दाऊद द्वारा पूछे गए इसी प्रश्न से मल्लयुद्ध करते पाते हैं। क्या परमेश्वर हमें भूल गया है, या वह हमारी सहायता के लिए आएगा? ऐसे समयों में, हमें हमारे विश्वास को मज़बूत करना है कि परमेश्वर हमसे उसकी प्रतीक्षा करने को कहता है।

इस पर भी ध्यान दें कि प्रतीक्षा के इस समय में, दाऊद को आश्चर्य होता है कि परमेश्वर ने अपना मुख उससे क्यों छिपा लिया है। प्रतीक्षा के इस समय में, परमेश्वर दूर प्रतीत होता है। ऐसा लगता है कि प्रार्थनाएं छत से टकरा कर वापस आ रही हैं। विश्वासी के लिए ये कठिन समय होते हैं। इस समय में, हमारे विश्वास की परख होती है। कई बार हम अपने प्राण के भीतर यह खोजना आरम्भ कर देते हैं कि वहां कोई छिपा पाप तो नहीं है जिसके कारण परमेश्वर हमसे दूर हो गया है और उसने अपना मुख छिपा लिया है। हमें आश्चर्य होने लगता है कि हमारी प्रार्थना के जवाब देखने की कोई आशा है भी या नहीं। खामोशी डरा देनेवाली होती है। हम आश्चर्य

करते हैं कि कितने समय तक हम टिके रह सकते हैं।

पद 2 में हमें पता चलता है कि परमेश्वर की प्रतीक्षा करने के इस समय में, दाऊद ने अपने विचारों से मल्लयुद्ध किया। हमें यह नहीं बताया गया कि वे क्या विचार थे। उसके मन में बहुत से प्रश्न थे। क्या उसने ऐसा कुछ किया था जिससे परमेश्वर उस पर क्रोधित होता? परमेश्वर उसकी प्रार्थना का जवाब क्यों नहीं दे रहा था? ये गहरे और कठिन प्रश्न थे। इनका कोई सरल जवाब नहीं था। परमेश्वर के मार्गों को समझना कठिन है। दाऊद संदेह में पड़ गया था। हो सकता है कि इन विचारों के कारण उसे रात में नींद भी नहीं आती थी। दाऊद हमें बताता है कि वह इन विचारों से युक्तियाँ निकालता रहता था। युक्तियाँ शब्द इन विचारों की प्रगाढ़ता के बारे में बताता है। इन विचारों में संघर्ष और दुख था।

पद 2 में भी ध्यान दें कि दाऊद का मन दुखी था। वास्तव में दुख यह था कि परमेश्वर बहुत दूर प्रतीत होता था। बहुत से अनुत्तरित प्रश्नों का दुख था। दाऊद खिंच गया था। उसे आश्चर्य था कि वह टिका रह सकता है या नहीं। ऐसे समयों में दर्द असहनीय लगता है। ऐसा लगता था कि इस दुख से किसी तरह से छुटकारा नहीं मिल सकता। प्रतिदिन यह उसके मन और मस्तिष्क को क्षति पहुंचाता था।

पद 2 में ही हम देखते हैं कि दाऊद के शत्रु उस पर विजयी हो रहे थे। परमेश्वर शत्रु को उसकी अपनी संतान पर विजयी क्यों होने दे रहा था? ये शत्रु, परमेश्वर के लोगों पर विजय पाने की बड़ी बातें क्यों बोलने पाए?

चित्र बहुत घुंधला दिखता है। दाऊद अपने शत्रु के हाथों से दुख उठा रहा था। यद्यपि उसने प्रार्थना की, तौभी ऐसा लगता था कि परमेश्वर प्रार्थना का जवाब नहीं दे रहा था। वह अपने मन में इन प्रश्नों पर मल्लयुद्ध कर रहा था कि परमेश्वर उसकी सुन क्यों नहीं रहा था। प्रत्येक दिन वह दुखी हृदय से बिताता था जबकि उसके शत्रु उस पर हंसते थे।

यह विश्वास ही था जिसने इस समय में दाऊद को विजय दी। वह परमेश्वर को लगातार पुकारता रहा। वह जानता था कि परमेश्वर के बिना वह अपने दुख ही में मर जाएगा। पद 3 में वह कहता है, हे मेरे परमेश्वर, मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर दे।'' दाऊद जानता था कि केवल परमेश्वर ही उसकी आशा है। उसने आशा छोड़ने से इंकार कर दिया। वह परमेश्वर से जुड़ा रहा और स्वर्ग में लगातार अपने निवेदनों को भेजता रहा। ऐसा कोई और स्थान नहीं था जहां वह जा सकता था।

पद 5 में वह परमेश्वर से कहता है कि उसे परमेश्वर के अनन्त प्रेम पर भरोसा है। बेशक परमेश्वर दूर लगता था, दाऊद उस पर भरोसा करता रहा। उसने मान लिया था कि परमेश्वर का प्रेम अभी भी उसे असफल नहीं होने देगा। उसे निश्चय था कि परमेश्वर उसे बचा लेगा। वह इस पर मगन हुआ कि अतीत में कैसे परमेश्वर ने उसे बचाया था और उसके पास यह विश्वास करने का प्रत्येक उचित कारण था कि इस बार भी वह अपने स्वभाव को सही साबित करेगा। परमेश्वर पर संदेह करने का उसके

पास कोई कारण नहीं था। इस विषय में उस पर भरोसा करने के लिए उसने स्वयं को सौंप दिया था। अपने मन में इन सत्यों को मज़बूती से रोपकर दाऊद पद 6 में प्रभु के लिए गाने का समर्पण करने के साथ समापन करता है। बेशक अब भी परमेश्वर दूर प्रतीत हो रहा था, तौभी दाऊद ने विश्वास के द्वारा परमेश्वर के नाम के लिए आराधना करने और स्तुति गाने का चुनाव किया। वह परिस्थितियों को अवसर नहीं देगा कि वे परमेश्वर पर से उसके ध्यान को हटा दें। वह परिस्थितियों को प्रभु की आराधना और स्तुति करने से उसे रोकने का अवसर नहीं देगा, उसके लिए जो वह है।

दाऊद ने हार के भाव में रहने से इंकार कर दिया था। उसने भ्रम और संदेह को स्वयं पर हावी नहीं होने दिया। वह जानता था कि जब तक परमेश्वर अपने सिंहासन पर है तब तक आशा है। परमेश्वर का प्रेम अनन्त है। वह अपनी संतान को नहीं छोड़ेगा। दाऊद ने परमेश्वर की स्तुति करने का चुनाव किया। उसने अपने मन को धन्यवाद के साथ उस परमेश्वर की ओर उठाया जो भला व अपने लोगों के प्रति विश्वासयोग्य है। दाऊद ने विचारों को उसे परास्त करने और जानने से दूर नहीं रहने दिया जो वह परमेश्वर के बारे में सत्य होने के लिए जानता था।

हमारे संघर्ष के समय में हमारे विचार और हमारा रवैया हमारे शत्रु हो सकते हैं। शैतान जानता है कि हमारे विचारों को दूषित करना और हमसे झूठ बुलवाना कितना सरल है परमेश्वर हमारे मानव विचारों से हमें सुरक्षित रखे और हमारी परीक्षा के समयों में अपने वचन की सच्चाई की ओर चलाए।

विचार करने के लिए:

- इस परिच्छेद में इसका क्या प्रमाण है कि दाऊद अपने विचारों से मल्लयुद्ध कर रहा था? वे विचार क्या थे?
- परमेश्वर के खामोश प्रतीत होने पर दाऊद किससे जुड़ा रहता है?
- आपके विचार से परमेश्वर हमें कुछ समय के लिए दुख और दर्द में क्यों पड़े रहने देता है?
- अपनी परीक्षा के समय में आपने किन विचारों से मल्लयुद्ध किया है? परमेश्वर के बारे में सत्य उन बुरे विचारों पर हमें कैसे विजयी करता है?
- संघर्ष हमें परमेश्वर की आराधना करने से कैसे रोककर रख सकते हैं? अपनी परीक्षा के समय में आराधना करने के लिए दाऊद का क्या समर्पण है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को उसके अनन्त प्रेम के लिए धन्यवाद दें।
- पिछले कुछ महीनों में आपको परमेश्वर ने जी आशीषें दी हैं उन पर कुछ समय के लिए चिन्तन करें। उन आशीषों के लिए उसकी स्तुति करें।
- परमेश्वर से तब भी उस पर भरोसा करने में सहायता करने को कहें जब आपको आपकी जरूरत के सभी जवाब नहीं मिलते।

14. पुनः स्थापित भविष्य

पढ़ें भजन संहिता 14:1-7

दाऊद इस्राएल के राजा, के दिनों में भी, ऐसे लोग थे जो यह मानने से इन्कार कर देते थे कि स्वर्ग में एक परमेश्वर है। जब हम पुराने नियम के समय में, परमेश्वर के कार्य करने के तरीके को देखते हैं, तो उसे अद्वितीय पाते हैं। जितना अद्वितीय यह था, हम दाऊद को इन लोगों के बारे में विशिष्ट रूप से यहां इस भजन में बोलता पाते हैं।

दाऊद के अनुसार, केवल एक मूर्ख ही यह कह सकता है कि कोई परमेश्वर नहीं है। स्वर्ग के परमेश्वर की वास्तविकता के बहुत से प्रमाण हैं। सृष्टि और परमेश्वर के विशेष कार्य परमेश्वर की और सामर्थ के स्पष्ट प्रमाण हैं। अन्यजाति लोग जो परमेश्वर की आराधाना भी नहीं करते, उन्होंने यह माना है कि किसी तरह का कोई ईश्वर है। कुछ तो बहुत से ईश्वरों पर भी भरोसा करते हैं।

प्रत्येक के इस पर विश्वास करने का एकमात्र तरीका कि कोई परमेश्वर नहीं है यही है कि वे कारण का इन्कार कर देते हैं। दाऊद के अनुसार ऐसा करके व्यक्ति स्वयं को मूर्ख बनाएंगे। स्वीकृत रूप में, ऐसे समय होते हैं जब परमेश्वर दूर प्रतीत होता है। ऐसे भी समय होते हैं जब मानव मस्तिष्क उसके मार्गों को समझ नहीं पाता। दाऊद को परमेश्वर के मार्गों और उद्देश्यों को समझने के लिए संघर्ष करना पड़ा था। तौभी खामोशी और उलझन के इस समय में उसके मन में इस बारे में कोई प्रश्न नहीं था कि इस्राएल के परमेश्वर का अस्तित्व है और इस ब्रह्मण्ड की घटनाओं पर उसका नियंत्रण है।

बाइबल के एनआई वी अनुवाद में एक फुटनोट संकेत देता है कि मूर्ख के लिए वचन इस पर कार्य करता है कि ऐसा व्यक्ति ''नैतिक रूप से विकृत'' है। अन्य शब्दों में, जो व्यक्ति परमेश्वर पर विश्वास करने से इन्कार कर देता है वह परमेश्वर को आदर दिये बिना रहना चाहता है। उन्होंने अपना जीवन ऐसे जीया मानो ऐसा कोई परमेश्वर नहीं था जिसकी आज्ञा का पालन किया जाए। एक अनैतिक और अधर्मी जीवन जीने के लिए उन्होंने परमेश्वर का इन्कार कर दिया।

केवल एक मूर्ख ही सृष्टिकर्त्ता और इस ब्रह्मण्ड को बनाए रखनेवाले का खुले और ब्रिदोही रूप से अनादर करेगा और परमेश्वर तथा उसके उद्देश्यों के प्रति कोई आदर न रखते हुए जीवन बिताएगा। केवल एक मूर्ख ही ऐसे जीवन जीएगा कि उसका आनेवाले न्याय से कोई लेना-देना नहीं है।

दाऊद के अनुसार ये लोग बिगड़े हुए थे और इन्होंने घिनौने काम किये थे (पद 7)। वे अनैतिक लोग थे। इन्होंने न्याय से भय रहित जीवन जीया। इन्होंने यह मान लिया था कि यह स्वीकार करने से इंकार करना है कि स्वर्ग में कोई परमेश्वर है। यदि कोई परमेश्वर नहीं है तो वे जैसा चाहे वैसे कर सकते हैं।

दाऊद ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि परमेश्वर ने स्वर्ग में से मनुष्यों पर दृष्टि की है कि देखे कि कोई बुद्धिमान या परमेश्वर का खोजी है या नहीं। इस संदर्भ को समझने वाला व्यक्ति यह जान जाता है कि कोई परमेश्वर नहीं है जिसके प्रति उन्हें लेखा देना होगा। स्वर्ग का यह परमेश्वर एक व्यक्तिगत परमेश्वर था जिसने यह चाहा कि स्त्री और पुरुष उसे खोजें तथा उसके मार्गों पर चलें।

दाऊद हमें यहां बता रहा है कि पमेश्वर चाहता है कि उसे खोजा जाए। वह ऐसे लोगों की इच्छा करता है जो उसकी और उसके मार्गों की खोज करें। हमारे पास कितना अद्‌भुत विशेषाधिकार है कि उनमें हों जिन्होंने उसे पा लिया है।

विषय की सच्चाई यह है कि परमेश्वर को ढूंढने और पाने का श्रेय हम नहीं ले सकते हैं। पद 3 में, भजनकार हमें स्मरण कराता है कि जब परमेश्वर ने स्वर्ग पर से नीचे देखा कि देखे कोई उसकी खोज करनेवाला है या नहीं। उसे कोई नहीं मिला। उसे केवल वे ही लोग मिले जो उससे फिर गए थे और जो अपने जीवनों को उसमें कोई रुचि न दिखाते हुए जी रहे थे। हर कहीं उसने स्त्री और पुरुषों को भ्रष्ट पाया। कोई भी ऐसा नहीं था जो भला था, एक भी नहीं।

यह कथन संभवत: उलझन में डालने वाला हो सकता है। क्या दाऊद के समान ऐसे लोग नहीं थे जिन्होंने परमेश्वर की खोज की थी? भजनकार हमें क्यों बताता है कि कोई भी परमेश्वर का खोजी नहीं है?

दाऊद यहां हमें यह बता रहा है कि प्रत्येक पुरुष; स्त्री या बच्चा जिसका कभी जन्म हुआ एक पापी और परमेश्वर से अलग किया हुआ था। अपनी स्वाभाविक दशा में उन्होंने परमेश्वर की खोज नहीं की। स्वीकार्य रूप में, कुछ ऐसे थे जिन्होंने धर्म, मूर्तियों और विभिन्न दर्शनशास्त्रों की खोज की थी। तथापि एकमात्र सच्चे परमेश्वर को ढूंढना और पाना ऐसा नहीं था जो मानवता में स्वाभाविक रूप से आया था। परमेश्वर स्वयं को अपनी सृष्टि पर प्रगट करना चाहता था। पाप और बुराई ने परमेश्वर की सारी सृष्टि की आँखों को अन्धा कर दिया था। पुरुषों और स्त्रियों ने अपने मार्ग पर चलने का चुनाव किया। स्वर्ग से नीचे देखने पर, परमेश्वर को ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं मिला जो स्वाभाविक रूप से उसकी खोज करता। इससे परमेश्वर का मन कैसे दुखी होता है।

इस स्थिति के उपचार के लिए, परमेश्वर को यहूदी जाति पर स्वयं को एक विशेष तरीके से प्रगट करना था। वह उनके अपने भविष्यद्वक्ता दासों के द्वारा बोला, उन्हें अपनी व्यवस्था दी और महान व सामर्थी चिन्हों से अपने अस्तित्व को प्रमाणित किया।

पद 4 में हम समझते हैं कि जिन पर परमेश्वर ने स्वयं को प्रगट किया उन्हें अनर्थकारियों ने खा लिया था। उन्हें ऐसे खाया गया था जैसे मनुष्य रोटी खाते हैं। अनर्थकारियों का परमेश्वर और उसके लोगों से कुछ लेना देना नहीं था। उन्होंने उन्हें सताया जो परमेश्वर को खोजते थे। मसीहियत का इतिहास हमें स्पष्ट रूप से दिखाता है कि कलीसिया को आरम्भ से ही सताया गया है। मत्ती 5:11-12 में यीशु ने हमें बताया है:

धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था।

हम आशा कर सकते हैं कि स्वर्ग के इस परमेश्वर को ग्रहण करने पर हमें संसार के सताव को सहना होगा। स्वाभाविक रूप से यह संसार परमेश्वर के स्वयं के प्रगटीकरण को ग्रहण नहीं करता। ऐसा करनेवालों का ठट्ठा किया जाता, हंसी उड़ाई जाती या सताया भी जाता है।

तथापि, पद 5 में दाऊद हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर के न्याय करने का दिन आ रहा है। अनर्थकारियों पर बड़ा अंधकार छा जाएगा क्योंकि परमेश्वर स्वयं को अपने ढूंढनेवालों के बीच प्रगट करेगा। उसकी उपस्थिति उसके लोगों को घेरे रखेगी व सुरक्षित रखेगी।

परमेश्वर निर्धन के लिए शरणस्थान होगा। वह अविश्वासियों की उनके विरुद्ध बनाई गई योजनाओं को विफल कर देगा। निर्धन वे थे जो अपने लिए परमेश्वर की आवश्यकता को जानते थे। उन्होंने उसे खोज लिया था क्योंकि वे उसके अलावा और कहीं नहीं गए थे। परमेश्वर के मन में उनके लिए एक विशेष स्थान था। उनकी ज़रूरत के समय में वही उनकी सुरक्षा करेगा।

इस भजन का समापन करने पर वह भविष्यवाणी करते हुए कहता है : भला हो कि इस्राएल का उद्धार सिय्योन से प्रगट होता है'' (पद 7)। परमेश्वर से प्रेरित होकर वह घोषणा करता है कि प्रभु परमेश्वर अपने लोगों के लिए सिय्योन या यरूशलेम से उद्धार को लाएगा। उद्धार प्रभु यीशु के व्यक्तित्व में होकर आना था। वह परमेश्वर के लोगों के छुटकारे को लाएगा जिन्हें उन लोगों ने सताया था जो परमेश्वर की खोज नहीं करते। प्रभु यीशु अपने लोगों और उनके भविष्य को पुन:स्थापित करेगा। वह उद्धार, क्षमा और सामर्थ को लाएगा। इस्राएल के पास आनंद करने का प्रत्येक कारण था। परमेश्वर ने स्वयं को उनके द्वारा प्रगट करने का चुनाव किया था। वह उनकी सुरक्षा करेगा और उन्हें संभालेगा। वह अपनी उपस्थिति के लिए उनकी आंखों को खोलेगा और उन लोगों के हाथों से उन्हें सुरक्षित रखेगा जो उन्हें सताते हैं। परमेश्वर के भाग का यह अनुग्रह का एक कार्य था। किसी ने भी परमेश्वर को नहीं खोजा परन्तु परमेश्वर ने उन्हें खोजा और प्रेम में होकर स्वयं को उन पर प्रगट किया।

इस भजन में हम यह देखते हैं कि जब प्रभु परमेश्वर ने स्वर्ग से नीचे देखा, उसने देखा कि हम सभी अपने पाप में भटके हुए थे। हममें से किसी ने भी उसे स्वाभाविक रूप से नहीं चुना। इसके उपचार के लिए, प्रभु परमेश्वर ने लोगों को चुना। उसने उनकी आँखों को खोला ताकि वे उसे देख सकें, उसने स्वयं को उन पर प्रगट किया और उनका नेतृत्व व मार्गदर्शन करने को अपने आत्मा को उनके बीच रखा। इन लोगों को उनके आस-पास की जातियों ने अच्छी तरह से स्वीकार नहीं किया था। उन्हें सताया व रौंदा गया था। परमेश्वर अपने लोगों की दोहाई के प्रति बहरा नहीं हो गया था। वह उनकी सहायता के लिए आएगा। वह उनकी आवश्यकता के समय में उन्हें बचाएगा और जो कुछ शत्रु ने उनसे ले लिया है उन्हें फिर से देगा। परमेश्वर अपने लोगों को देखता है।

विचार करने के लिए:

- हमारे पापी स्वभाव के बारे में यह भजन हम पर क्या प्रगट करता है?
- दाऊद का यह कहने से क्या अभिप्राय है कि केवल मूर्ख ही कहता है कि कोई परमेश्वर नहीं है?
- परमेश्वर के होने का आपके पास क्या प्रमाण है?
- आपके मन में इसका क्या प्रमाण है कि आप स्वाभाविक रूप से परमेश्वर की खोज नहीं करते?
- परमेश्वर ने आप पर स्वयं को कैसे प्रगट किया?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने स्वयं को आप पर प्रगट किया है।
- प्रभु से स्वयं को एक मित्र या संबन्धी पर प्रगट होने को कहें जो उसे नहीं खोज रहा हो।
- परमेश्वर को उसकी उपस्थिति तथा इस बात के लिए धन्यवाद दें कि वह अपने लोगों को देखता है।
- परमेश्वर से आपको अनुग्रह देने के लिए कहें कि उन लोगों से विरोध प्राप्त करने पर जो उस पर विश्वास नहीं करते आप उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

15. परमेश्वर के पवित्र स्थान में वास करना

पढ़ें भजन संहिता 15:1-5

भजन 15 का आरम्भ करने पर, दाऊद एक प्रश्न करता है। हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा?'' प्रश्न के जवाब की जांच करने से पूर्व; हमें यह समझना है कि दाऊद क्या पूछा रहा है। दाऊद यहां परमेश्वर के पवित्र स्थान और प्रभु के पवित्र पर्वत के बारे में पूछ रहा है। पुराने नियम में 'पवित्र स्थान' शब्द उस तम्बू को बताता है जहां परमेश्वर ने पृथ्वी पर अपनी उपस्थिति को प्रगट किया था (यहोशू 22:27)। भीतरी पवित्र स्थान को यहां पवित्र स्थान या परमपवित्र के रूप में जाना जाता था जिसमें केवल महायाजक ही वर्ष में एक बार जा सकता था (1राजा 6:16)। परमेश्वर के पवित्र स्थान के बारे में बोलते हुए वह उस मन्दिर के बारे में बोल रहा है जहां परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति का आभास कराया था।

पवित्र पर्वत के अर्थ में, यह यरूशलेम नगर के विषय बताता है जो एक पहाड़ी पर स्थित था। भजन संहिता 2:6 से हम इसे देखते हैं:

मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर बैठा चुका हूँ।

पवित्रशास्त्र में यरूशलेम सामान्यता एक स्वर्गीय नगर के प्रतीक के रूप में दिखाया जाता है। प्रेरित यूहन्ना प्रकाशितवाक्य 21:10 में स्वर्गीय यरूशलेम के बारे में बोला:

और वह मुझे आत्मा में, एक ऊँचे और बड़े पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा।

पवित्र पर्वत का संदर्भ स्वर्ग में परमेश्वर के वास स्थान के लिए है। इस भजन में दाऊद यह प्रश्न करता है: ''परमेश्वर की उपस्थिति में कौन प्रवेश कर सकता है?''

इस भजन के शेष भाग में दाऊद उस व्यक्ति की विशेषताओं को बताता है जो परमेश्वर की उपस्थित में प्रवेश कर सकता है। हम इन पदों को अलग अलग करके प्रत्येक विशेषता की जांच करेंगे।

दाऊद हमें यह स्मरण कराते हुए आरम्भ करता है कि निर्दोष ही परमेश्वर की

उपस्थिति में प्रवेश कर सकता है। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि निर्दोष होने का अर्थ यह नहीं कि हमने कभी पाप न किया हो। इस भाव में तो केवल प्रभु यीशु ही निर्दोष है। निर्दोष होने का अर्थ है कि परमेश्वर और हमारे बीच पाप न खड़ा हो। यह केवल परमेश्वर की क्षमा से ही संभव है। जबकि हम सभी ने पाप किया है, प्रभु की क्षमा हमें हमारी हर दोष भावना से आज़ाद करती है। वह हमें क्षमा करता और हमें अपनी दृष्टि में निर्दोष बनाता है। निर्दोष होने के लिए हमारे पापों को क्षमा किया जाना है। केवल वे जिन्हें उनके पापों से क्षमा किया गया है प्रभु की उपस्थिति में प्रवेश कर सकते हैं।

दाऊद आगे कहता है कि केवल वह जो धर्म के काम करता है, वही परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश कर सकता है। यदि हम अपने उद्धार के आश्वासन को पाना चाहते हैं और परमेश्वर के सम्मुख सही रूप में खड़े होना चाहते हैं तो हमें अपने कार्यों की जांच करने की ज़रूरत है। यीशु ने अपने शिष्यों को बताया कि वे एक विश्वासी को उसके फलों से पहचान सकते हैं; उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे क्या झाड़ियों से अंगूर, या ऊँटकटारों से 'अंजीर तोड़ते हैं? इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है। (मत्ती 7:16-17)

हम उन्हें पहचान सकते हैं जिनके पापों को उनके जीवन जीने के तरीके के द्वारा क्षमा कर दिया गया है। जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है, वह हमें एक नया व्यक्ति बनाता है। वह जिसके पाप क्षमा कर दिये गए हैं ऐसा जीवन जीता है जो धर्मी व पवित्र होता है। ये लोग अपने प्रत्येक कार्य में परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं। यदि आप अपने जीवन में धर्म के प्रमाण या परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा को नहीं देखते तो आप इस पर आश्चर्य कर सकते हैं कि आप परमेश्वर की उपस्थिति में कभी प्रवेश कर भी पाएंगे या नहीं।

हमें यहां यह कहने की ज़रूरत है कि धर्मी जीवन इस तर्क में नहीं पाया जाता कि हम परमेश्वर को देखेंगे परन्तु एक व्यक्ति के चरित्र में जो परमेश्वर के साथ सही संबन्ध में है। उद्धार हमारे भले कार्यों पर आधारित नहीं है परन्तु उस व्यक्ति पर जो परमेश्वर के सम्मुख अपने जीवन जीने के ढंग के द्वारा प्रमाणों को बचाता है।

दाऊद उस व्यक्ति की तीसरी विशिष्टता की ओर बढ़ता है जो परमेश्वर को देखने के साथ-साथ उसकी उपस्थिति में प्रवेश करेगा। आगे वह हमें बताता है कि यह व्यक्ति अपने हृदय से सच बोलता है। यहां बल 'हृदय से' वाक्यांश पर है। हृदय से बोलते हुए हम अपने भीतर से बोल रहे होते हैं। इसमें निष्कपटता होती है। यह व्यक्ति ढोंगी नहीं है। यीशु ने सामान्यता अपने दिनों के फरीसियों के विरुद्ध बोला जो बाहर से तो पवित्र थे परन्तु भीतर से पापी थे (मत्ती 23:27)। परमेश्वर को देखने व उसकी उपस्थिति में प्रवेश करने वाला वह है जो हृदय से ईमानदार है।

इस निष्कपट हृदय के प्रमाण को कई तरह से देखा जा सकता है। पद 3 में, दाऊद अपने पाठकों को बताता है कि परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करनेवाला

व्यक्ति अपनी जीभ से अपने पड़ोसी की निन्दा नहीं करता, न ही अपने पड़ोसी के साथ कुछ बुरा करता है। अन्य शब्दों में, परमेश्वर को देखनेवाला अपने आस-पास के लोगों के साथ सही संबन्ध में होगा। मत्ती 5:23 में यीशु ने इसे स्पष्ट किया है कि जब हम परमेश्वर को उसकी वेदी पर भेंट चढ़ाने के लिए आते हैं और यह स्मरण रखते हैं कि हमारे मन में हमारे भाई या बहन के विरुद्ध कुछ है तो हमें अपनी भेंट को वेदी पर ही छोड़कर उनसे मेल कर लेना है। मत्ती 6:14-15 में यीशु ने हमें बताया है कि यदि अपने भाई या बहन को उसके लिए क्षमा नहीं करते जो उन्होंने हमारे विरुद्ध किया होता है, तो हमारा स्वर्गीय पिता भी हमें क्षमा नहीं करेगा। यदि हम परमेश्वर की आराधना करना चाहते हैं, तो इसके लिए हमारा अपने भाई या बहन के साथ सही होना ज़रूरी है। यदि हम चाहते हैं कि हमें क्षमा कर दिया जाए तो हमें उन्हें क्षमा करने की ज़रूरत है जो हमारे विरुद्ध अपराध करते हैं। दाऊद हमें यह बता रहा है कि परमेश्वर को देखने व उसकी उपस्थिति में प्रवेश करनेवाला व्यक्ति वह है जो उन्हें क्षमा करना है जिन्होंने उसके विरुद्ध पाप किया होता है। हम, जिन्हें परमेश्वर ने क्षमा किया अपने पड़ोसी को हमारे विरुद्ध की गई कम चीज़ों के लिए क्षमा क्यों नहीं कर सकते?

पद 4 में, दाऊद आगे कहता है कि परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करनेवाला व्यक्ति वह है जो निकम्मे व्यक्ति को तुच्छ जानता और परमेश्वर का भय माननेवालों का आदर करता है। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि जिस व्यक्ति को परमेश्वर ने क्षमा कर दिया होता है उसे पाप और बुराई में प्रसन्नता नहीं मिलती। वे जान जाते हैं कि परमेश्वर पाप से घृणा करता है। वे जान जाते हैं कि पाप उसके हृदय को दुखी करता है परमेश्वर की प्रत्येक चीज़ के विरुद्ध खड़ा होता है। ये लोग पाप से घृणा व धर्म से प्रेम करते हैं। इस बारे में उनका मन परमेश्वर के समान होता है। वे अधर्म के मार्गों से घृणा करते हैं। अधर्म और पाप को देखकर उन्हें प्रसन्नता नहीं होती। न ही उन्हें उनकी संगति से आनंद दिलाता है जो परमेश्वर से मुंह फेर लेते हैं। इसके विपरीत उन्हें अपने समान मनवालों की संगति अच्छी लगती है। उन्हें उनके साथ आनंद करना अच्छा लगता है जिनके धर्मी हृदय हैं। दाऊद हमें यह नहीं बता रहा है कि हमें अविश्वासी से नफरत करनी है। तथापि, वह हमें दिखा रहा है कि परमेश्वर की उपस्थिति में आनेवाले व्यक्ति के हृदय को बुराई या बुरे लोगों से प्रसन्नता नहीं होती। इसके विपरीत, वह उनका आदर करता है जो परमेश्वर का भय मानते व उसके मार्ग में चलते हैं। अन्त में ध्यान दें कि परमेश्वर की उपस्थिति में आनेवाला व्यक्ति एक त्यागपूर्ण जीवन जीता है। वे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बने रहने और उसके मार्गों पर चलने के लिए बड़े बलिदान देने को तैयार रहते हैं। दाऊद 4-5 पदों में इसके तीन उदाहरण देता है।

इस त्यागपूर्ण व्यवहार को धर्मी व्यक्ति द्वारा अपनी शपथ को पूरा किये जाने के ढंग में दिखाया जाता है (पद 4)। दाऊद हमें बताता है कि वह हानि उठाकर भी अपनी शपथ को पूरा करता है। चाहे उन्हें बड़े बलिदान करने पड़ें तौभी वे अपने वचन

के प्रति सच्चे बने रहते हैं। अपने वचन के प्रति सच्चे बने रहने को वे स्वेच्छा से हानि उठाने को भी तैयार रहते हैं।

दूसरा, इस त्यागपूर्ण व्यवहार को इसमें दिखाया जाता है कि वे अपने पड़ोसी को बिना ब्याज के धन देते हैं। अपने ज़रूरतमंद भाई या बहन से लाभ उठाने का उनका कोई उद्देश्य नहीं होता। किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति से मिलने पर वे उन्हें बिना ब्याज के ऋण देते हैं। वे अपने धन से अपने ज़रूरतमंद भाई या बहन की सहायता करते हैं।

तीसरा, यह त्यागपूर्ण व्यवहार निर्दोष के विरुद्ध रिश्वत लेने से इन्कार करके दिखाया जाता है। अन्य शब्दों में, अधिक से अधिक धन भी उन्हें निर्दोष व्यक्ति के विरुद्ध झूठ नहीं बुलवा पाएगा और न ही उन्हें कोई हानि पहुंचाएगा। उन्हें खरीदा नहीं जा सकता। अपने प्रभु के प्रति सच्चे बने रहने को वे बड़े लाभ को भी छोड़ देते हैं।

परमेश्वर को देखने व उसकी उपस्थिति में प्रवेश करनेवाले प्रभु यीशु से उदाहरण को लेते हैं। जिसने स्वेच्छा से अपने लोगों के लिए सभी चीज़ों का त्याग किया। मसीही जीवन में बलिदान के बिना कभी किसी महान कार्य को पूरा नहीं किया जा सकता। हम सभी को परमेश्वर के राज्य के खातिर अपने जीवनों को न्यौछावर कर देना सीखना है। युद्ध में जानेवाला एक सैनिक जानता है कि उसे अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए युद्ध में अपने प्राण भी न्यौछावर कर देने हैं। हमारे मसीही जीवन में भी यही सत्य है। परमेश्वर की उपस्थिति में आनेवाले व्यक्ति का व्यवहार त्यागपूर्ण होगा।

दाऊद हमें यह स्मरण कराते हुए समापन करता है कि इन विशेषताओं को प्रदर्शित करनेवाले ही परमेश्वर के सच्चे सेवक हैं और कभी हिलाए नहीं जा सकते। अर्थात् वे अन्त तक सुरक्षित रखे जाएंगे। वे परमेश्वर को देखेंगे और अपने जीवनों के द्वारा एक सच्चे उद्धार को प्रदर्शित करेंगे। प्रभु का उद्धार हमें बदलता है। प्रभु के उद्धार को जानने वाले कभी भी पहले के समान नहीं रहेंगे। प्रभु को देखने वाले वे हैं जो उससे संबन्धित हैं। जो परमेश्वर के हैं वे अपनी जीवन शैली के द्वारा इसके प्रमाण को दिखाएंगे।

विचार करने के लिए:

- यहां उनके बारे में छह विशेषताएं हैं जो परमेश्वर को देखेंगे। ये छह विशेषताएं कौन सी हैं?
- इस परिच्छेद में पाई जानेवाली विशेषताओं की अपने जीवन में जांच करने के लिए कुछ समय लें। क्या किये जाने की ज़रूरत है?
- परमेश्वर के राज्य के लिए आप क्या बलिदान कर रहे हैं? हमारे लिए सुखी होना और कोई बलिदान न करना कितना आसान है?
- इस अध्याय में पाई जानेवाली विशेषताओं का प्रदर्शन क्या सभी मसीही करते हैं? उन्हें ऐसा करने से क्या चीज़ रोकती है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु से आपके जीवन में इन सभी विशेषताओं को प्रदर्शित करने में आपकी सहायता करने को कहें।
- प्रभु को उस अद्‌भुत कार्य के लिए धन्यवाद दें जो वह आपके जीवन में कर रहा है। जो परिवर्तन उसने आप में किये हैं उनके लिए उसे धन्यवाद दें।
- इस भजन में वर्णित विशेषताओं में से किसी एक का चुनाव करें और इस सप्ताह इसे विशेष प्रार्थना का एक विषय बनाएं। परमेश्वर से आपके जीवन में इस विशिष्टता के प्रमाण को बढ़ाने के लिए कहें।

16 आनंदमय मीरास

पढ़ें भजन संहिता 16:1-11

अंतिम भजन में, हमने उस, व्यक्ति की विशेषताओं को देखा जो परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करता है। यहां भजन 16 में, दाऊद हमें उनकी मीरास के बारे में कुछ दिखाता है जो परमेश्वर से प्रेम करते व उसकी सेवा करते हैं।

दाऊद पद 1 में अपने पाठकों को यह बताते हुए आरम्भ करता है कि उसे प्रभु परमेश्वर में शरण मिल गई है। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि इस जीवन में विश्वासियों के लिए कई परीक्षाएं हो सकती हैं। ऐसा भी हो सकता है कि एक अविश्वासी की तुलना में विश्वासी को कई संघर्षों का सामना भी करना पड़ सकता है। जबकि परीक्षाएं एक सच्चाई हैं; उसी तरह से परमेश्वर का आराम और आश्रय भी। इन समयों में दाऊद को सामान्यता अपने प्रभु परमेश्वर में शरण मिल जाती थी। एक आश्रय सुरक्षा का स्थान होता है। यह हमारे द्वारा सामना किये जाने वाले दर्द और परीक्षाओं से विश्राम पाने का एक स्थान है। प्रभु दाऊद के लिए शरण था जैसा वह अपने पास आनेवाले सभी लोगों के लिए होता है। वह हमारे संघर्ष के समय में हमें अपनी बांहों से घेरता और हमारी रक्षा करता है। वह हमारी बेचैनी को शांत करता और हमारे घावों को चंगा करता है। यह विश्वासी के लिए एक सच्चाई है। हम भरोसे में होकर बढ़ सकते हैं क्योंकि हमारी ज़रूरत के समय में वह हमें घेरेगा और हमारी रक्षा करेगा।

पद 2 में ध्यान दें कि दाऊद हमें बताता है कि जो कुछ उसका है वह सब प्रभु ने ही दिया है। सभी भली चीज़ों का स्रोत परमेश्वर ही है। शैतान हमें यह विश्वास कराने का हर संभव प्रयास करेगा कि हम एक भले जीवन से चूक रहे हैं जिसे देने के लिए हमसे कहा गया है। अदन की वाटिका में, शैतान ने सर्प के रूप में हव्वा को संसार की सारी खुशी देने को कहा, यदि वह भले व बुरे के ज्ञान के वृक्ष से फल को खा ले। उसने उसे विश्वास दिलाया कि प्रभु की आज्ञाकारिता में रहने के कारण वह अपने जीवन में किसी भली चीज़ को खो रही थी। हव्वा ने उस पर विश्वास किया और उसने तथा उसके पति आदम ने वर्जित वृक्ष के फल को खाया। परिणाम विनाशकारी था। आदम और हव्वा ने पाप और बुराई की वास्तविकता का अनुभव किया। जो संसार ने उन्हें दिया उसे उन्होंने लिया और आत्मिक रूप से मर गए।

यहां दाऊद जिस भलाई के बारे में बोलता है वह उससे बड़ी है जो संसार देता है। ऐसे भी समय थे जब दाऊद को अपने शत्रुओं से भागना पड़ा था, अपनी सारी

दुनियावी संपत्ति को पीछे छोड़ते हुए। क्या उन दिनों में वह परमेश्वर की भलाई को अनुभव कर सकता था? भजनों की पुस्तक की एक तीव्र जांच हमें दिखाएगी कि अपने जीवन में संकट के अलावा और कुछ न होने पर भी दाऊद परमेश्वर की भलाई को जानता था। वह प्रभु की उपस्थिति को जानता था। वह प्रभु के विश्राम को जानता था। वह प्रभु की आशीष को जानता था। इन सभी चीज़ों का असीम रूप से संसार द्वारा दी जानेवाली चीज़ों से अधिक बड़ा महत्व था।

इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर ने दाऊद को भौतिक आशीषें नहीं दी थीं। ये चीज़ें भी, परमेश्वर के हाथ से ही आई थीं। दाऊद इस सबसे यह जान गया था कि उसने अपने जीवन में जिन अद्‌भुत आशीषों को अनुभव किया था उनका स्रोत परमेश्वर ही था। हमारे परमेश्वर को अपनी संतान को आशीष देने में खुशी मिलती है। चाहे यह सदैव भौतिक आशीषों के रूप में न हो परन्तु यह सदैव भली ही होंगी। परमेश्वर की सभी संतानों को अपने जीवनों में उसकी भलाई के बारे में कुछ न कुछ जानना है।

धर्मी जनों से संबन्धित एक अन्य आशीष सहभागिता की आशीष है। पद 2 में ध्यान दें, दाऊद हमें बताता है कि पृथ्वी पर के पवित्र लोगों से उसे कैसी खुशी मिलती है। दाऊद को अविश्वासियों के हाथों अपने हिस्से का विरोध मिल गया था। उन लोगों का पता लगाना सच में बहुत कठिन था जो परमेश्वर से प्रेम करते थे परन्तु इस तरह के लोगों का पता लगाने पर, उसका हृदय उनमें आनन्दित था। प्रभु में विश्वासियों की सहभागिता में कुछ अद्‌भुत था। आराम, प्रोत्साहन और आशीष इस तरह की सहभागिता का ही परिणाम हैं। कितनी बार हम प्रभु में किसी भाई या बहन द्वारा प्रोत्साहित किये जाते हैं? कितनी बार अपनी आवश्यकता के समय में हमें अपने सह विश्वासियों से सहारा और सहायता मिलती है? एक दूसरे के साथ बांटना कितना प्रसन्न करनेवाला होता है। पृथ्वी पर के अन्य धर्मी जनों के साथ संबन्ध और सहभागिता में दाऊद को बड़ी प्रसन्नता मिली।

पद 3 में दाऊद हमें स्मरण कराता है कि पराए देवताओं के पीछे भागनेवालों की प्रतीक्षा में दुख रहता है। उसने स्वयं को केवल परमेश्वर की खोज करने के लिए ही सौंप दिया था। उसने इन देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इन्कार कर दिया था क्योंकि वह जानता था कि दूसरे देवताओं की अगुवाई में केवल बड़ा दुख और खालीपन ही होता है।

इस्राएल के प्रभु परमेश्वर में दाऊद ने एक बड़े अन्तर को पाया था। प्रभु ने दाऊद के लिए एक सुरक्षित भाग को रखा था। (पद 5) अन्य शब्दों में, दाऊद के जीवन में उसका भाग परमेश्वर द्वारा ही दिया गया था। उस की सीमाएं उसे प्रसन्न करती थीं। दाऊद अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को मनभावना बताता है। (पद 5) यह उस दुख के प्रतिकूल है जो अन्य देवताओं के पीछे जानेवालों की प्रतीक्षा में रहता है। प्रभु परमेश्वर का अनुयायी होने के कारण दाऊद ने यह जान लिया था कि उसके लिए

प्रभु की योजना मनभावनी थी। परमेश्वर का हममें से प्रत्येक के लिए एक उद्देश्य है। हमारा उस उद्देश्य पर को जानने और उस पर चलने का एक विशेषाधिकार है। हमारे जीवन का सबसे बड़ा आनंद इस उद्देश्य पर चलने से आएगा।

विश्वासी होने कारण हम पर ऐसे भी समय आते हैं जब हमारे लिए उसे स्वीकार करना कठिन हो जाता है जो परमेश्वर ने हमें दिया है। ऐसे भी समय होते हैं जब मेरे यह विचार कि मैं क्या चाहता हूँ मेरे और मेरे परमेश्वर के बीच आ जाते हैं। तथापि, मैंने यह पाया है कि अपने विचारों के लिए मरने के द्वारा और उसे स्वीकार करने के जो परमेश्वर ने हमें दिया है, मुझे बड़ा संतोष और संतुष्टि मिली है। दाऊद के जीवन का भाग निश्चय ही सरल नहीं था। उसके बहुत से शत्रु थे। उसकी एक पत्नी थी जो उसके विरुद्ध हो गई थी। उसका एक पुत्र था जो उसकी हत्या करना चाहता था। उसकी बेटी के साथ बलात्कार किया गया था। उसके देश के लोग उसे शाप देते थे। वह व्यभिचार के पाप में गिरा। वह एक बड़ी विपत्ति के लिए उत्तरदायी था जिसने उसके देश के हज़ारों लोगों को मिटा दिया था। इन चीज़ों से निपटना कठिन है। दाऊद संभावित रूप से कैसे कह सका कि मेरे लिए माप की डोरी मनभावने स्थान में पड़ी? यह केवल तब ही संभव था जब वह अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को स्वीकार करता और इन परीक्षाओं में परमेश्वर की उपस्थिति के आनंद और आराम को जानने के लिए अपने हृदय को खोलता। परीक्षाओं की घाटी भी, परमेश्वर के हमारे साथ चलने पर मनोहर स्थान बन सकता है।

ध्यान दें कि पद 7 में दाऊद परमेश्वर की उसे सम्मति देने के लिए कैसे प्रशंसा करता है। रात में भी परमेश्वर उसके मन को निर्देश देता है। इस में घनिष्ठता है। इस ब्रह्माण्ड के सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने अपने दास दाऊद को उसके जीवन की रात में सलाह और निर्देश देने के लिए समय निकाला। उसने उसका मार्गदर्शन किया और उसे उस मार्ग को दिखाया जिस पर उसे चलना था। वही परमेश्वर आज भी अपने लोगों की अगुवाई करता व उन्हें निर्देश देता है। दाऊद को अपने जीवन की रात के समयों में प्रभु परमेश्वर से सहभागिता करने का विशेषाधिकार मिला था। प्रत्येक चीज़ के अन्धकारमय और भयानक होने पर परमेश्वर उसके साथ चला। अपने द्वारा सामना की जानेवाली परीक्षाओं में उसने अपने सृष्टिकर्त्ता की सहभागिता को जाना था।

प्रभु परमेश्वर की अद्‌भुत उपस्थिति को जानने पर दाऊद को क्या भरोसा था। दाऊद जानता था कि परमेश्वर की उपस्थिति उसके दहिने हाथ रहती है। दहिना हाथ आदर का स्थान है। हमारे लिए यहां यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जबकि परमेश्वर उसके आगे चला, वह दाऊद के साथ-साथ उसे आराम, सुरक्षा और मार्ग-दर्शन देने को चला। यह जानना कितनी अद्‌भुत चीज़ है कि परमेश्वर हमारे आगे जाता है, परन्तु वह हमारे साथ उन मार्गों पर भी चलता है जिन्हें वह हमारे लिए निर्धारित करता है। परमेश्वर के उसके आगे होने और उसके साथ होने के कारण दाऊद सुरक्षित था। कोई शत्रु उस पर विजयी नहीं हो सका। कोई उसे हिला नहीं सका।

पद 9 में ध्यान दें कि दाऊद जानता था कि प्रभु परमेश्वर उसे कभी नहीं छोड़ेगा। चाहे उसे अपना जीवन भी देना पड़े, परमेश्वर उसे कब्र में भी नहीं छोड़ेगा। दाऊद को प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति में कब्र में भी जीवन की आशा थी। इसी कारण, दाऊद प्रभु में मगन और आनन्दित था। मृत्यु में भी, वह सुरक्षित और निश्चित था।

पतरस ने इस पद का प्रयोग प्रेरितों के काम 3:23-32 में अपने प्रथम संदेश में किया है। वहां, पतरस बताता है कि दाऊद मसीह के पुनरुत्थान और उसके कार्य के कारण हमारी आशा के बारे में भविष्यवाणी के रूप में बोला। यह पद हमें स्मरण कराता है कि जिस तरह से यीशु मृतकों में से जी उठा उसी तरह से हम जो प्रभु यीशु को जानते हैं– जी उठेंगे और कब्र के बाद हमारे प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति में अनन्त जीवन को अनुभव कर सकते हैं। यह दाऊद की आशा थी। अपने प्रभु परमेश्वर में, उसने कब्र पर जय पा ली थी। मृत्यु उसका शत्रु नहीं थी। उसके शत्रु उसका क्या कर सकते हैं यदि मृत्यु में भी, वह विजयी था?

दाऊद पद 10 में अपने पाठकों को यह स्मरण कराते हुए समापन करता है कि जिस परमेश्वर की उसने सेवा की थी उसने अपने लोगों पर जीवन के मार्ग को प्रगट किया था। यदि वे सुनते, उनका परमेश्वर उन्हें मार्ग दिखाता। उन्हें इस गड़बड़ी के संसार में खोना नहीं है। परमेश्वर का एक उद्देश्य है और वह उस उद्देश्य को स्पष्ट करेगा। अपने दासों के लिए परमेश्वर का जो मार्ग था वह परमेश्वर की उपस्थिति में आनंद से भरा और उसके दहिने हाथ में अनन्त खुशी से पूर्ण था। दहिना हाथ आदर का स्थान है। प्रभु अपने विश्वासी का आदर करता और उसे अनन्त आनंद देता है।

प्रभु की उपस्थिति में आनंद और खुशी अनन्त है। इसका अर्थ है कि यह कभी नहीं रुकेगी। परमेश्वर विश्वासी के हृदय को इस आनंद और खुशी से भर देता है और कोई भी चीज़ इसे छीन नहीं सकती है। विश्वासी की मीरास प्रसन्न करनेवाली होती है। उनकी मीरास पर विचार करें जो प्रभु से प्रेम करते हैं जैसा– दाऊद इस भजन में बताता है:

1. आवश्यकता के समय में शरण
3. परमेश्वर के हाथ से भली चीज़ें
3. सह विश्वासियों के साथ सहभागिता
4. जीवन में मनभावना भाग
5. उलझन के समय में परामर्श
6. परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सहभागिता
7. मृत्यु पर विजय
8. आनन्द और खुशी से भरा अनन्त जीवन

हमें अपनी मीरास और उस अद्‌भुत विशेषाधिकार को इस तरह के परमेश्वर के बारे में जानने के लिए अपनी आंखों को कितना अधिक खुला रखने की ज़रूरत है। इन आशीषों के लिए हमें कितना अधिक धन्यवादी होना चाहिए।

विचार करने के लिए:

- प्रभु परमेश्वर आपके लिए व्यक्तिगत रूप से कैसे एक शरण रहा है?
- प्रभु परमेश्वर से आपने किन भली चीज़ों को प्राप्त किया है?
- प्रभु को जानना आपके जीवन में आपको कैसे सुरक्षा देता है?
- विश्वासी होने के कारण आज परमेश्वर हमें कैसे परामर्श देता है?
- इस भजन में दाऊद विश्वासी की अनन्त मीरास के बारे में कैसे बताता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि संकट के समयों में वह हमारी शरण बनने की प्रतिज्ञा करता है।
- प्रभु ने आपको आपके जीवन में जो भली चीज़ें दी हैं कुछ समय उनके लिए धन्यवाद देने को निकालें। विशिष्ट बनें।
- क्या आप एक ऐसी स्थिति में हैं जहां आप नहीं जानते कि किस दिशा में जाना है या क्या निर्णय लेना है? कुछ समय लें और इस विषय को परमेश्वर को सौंप दें। उससे कहें कि इस विषय में मार्गदर्शन करे या आपको परामर्श दे।
- परमेश्वर को उन समयों के लिए आपको क्षमा करने को कहें जब आपने उसके द्वारा दी गई भली चीज़ों के लिए उसकी सराहना नहीं की थी।
- कुछ समय परमेश्वर को उस अद्‌भत आशा के लिए धन्यवाद देने को निकालें जो उसने अपने सभी लोगों को अनन्तता में दी है।

17. उसकी आँख की पुतली

पढ़ें भजन संहिता 17:1-15

भजन 17 दाऊद की प्रार्थना है। यहां इस भजन में, वह ज़रूरत के समय में प्रभु परमेश्वर को सहायता के लिए पुकार उठता है। दाऊद के शत्रुओं ने उसे घेर लिया था और उसके प्राण के खोजी थे। वह अपनी आँखें प्रभु पर लगाता है और अपनी आशा और उद्धार के रूप में उसकी ओर देखता है।

अपनी प्रार्थना का आरम्भ करने पर दाऊद अपने स्वयं के हृदय की खोज करता है। हमारे लिए आरम्भ करने का यह एक अच्छा स्थान है। ऐसे समय भी होते हैं जब हम स्वयं पर एक स्थिति को लाते हैं। कई बार हम परमेश्वर को छुटकारे के लिए पुकारते हैं जबकि हमें इसके विपरीत क्षमा के लिए पुकारने की ज़रूरत होती है। कई बार हम स्वयं को जिस स्थिति में पाते हैं वह परमेश्वर का हमें अनुशासित करने या चेतावनी देने का तरीका होता है, हमारे हिस्से के किसी पाप या असफलता के लिए। यह प्रार्थना करने से पहले कि परमेश्वर उसे उसके शत्रुओं के पाप से छुड़ाए दाऊद कुछ क्षण, परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध की जांच करने के लिए लेता है। इस संबन्ध के बारे में निश्चिंत होकर ही वह उससे उसके छुटकारे के लिए कहता है।

यहाँ इस भजन के आरम्भिक पदों में ध्यान दें जो दाऊद अपने बारे में कहता है। वह परमेश्वर से उसकी प्रार्थना को सुनने के लिए कहता है क्योंकि यह छली होठों से नहीं निकली है (पद 1)। दाऊद के निवेदन में कोई झूठ नहीं था। अपने मन की जांच करने पर वह जानता था कि वह इस निवेदन को परमेश्वर के सम्मुख ला सकता है क्योंकि यह उसके होठों से नहीं आया था जो बोलता एक बात था और करता दूसरी। यदि दाऊद अपने शत्रुओं के समान पाप कर रहा था तो वह किस आधार पर परमेश्वर के पास अपने छुटकारा पाने को कहने के लिए आता? दाऊद के निवेदन में कोई दिखावा अथवा पाखण्ड नहीं था।

दूसरे, पद 2 में ध्यान दें कि दाऊद चाहता था कि उसका निर्दोष ठहराया जाना केवल परमेश्वर की ओर से हो। हम जानते हैं कि शत्रु के द्वारा हमें चोट पहुंचाए जाने या हमारे प्रति अपराध किये जाने पर मामले को अपने हाथ में लेना कितना आसान होता है। परमेश्वर के पास आकर हम न्याय करने को कहते हैं परन्तु गुप्त रूप से, हमारे मन में हम अपने ही तरह से बदला लेना चाहते हैं। दाऊद ने इस संबन्ध में अपने मन की जांच की थी। अपने मन की जांच करने पर उसे भरोसा हो गया था कि उसने विषय को पूरी तरह से परमेश्वर को सौंप दिया था। उसने कहा, ''मेरे मुकद्दमे का

निर्णय तेरे सम्मुख हो।'' वह चाहता था कि परमेश्वर इस विषय को ले। उसने इसे स्वयं न लेने का चुनाव किया। परमेश्वर न्याय करेगा और वही करेगा जो सही है। अपने शत्रुओं से निपटने के लिए दाऊद ने परमेश्वर पर विश्वास किया।

पद 3 में दाऊद को भरोसा था कि यदि परमेश्वर उसके हृदय की जांच करता, तो वह उसे शुद्ध पाता। यदि पाप के लिए वह उसकी जांच करता तो वह उसमें नहीं पाता। दाऊद जानता था कि उसके जीवन में छिपा पाप केवल उसकी प्रार्थना में बाधक बनता। वह परमेश्वर के सामने एक साफ हृदय होने के आश्वासन से आया। वह स्वयं को साफ रखने के आश्वासन से आया। वह स्वयं को साफ रखने के लिए दृढ़ निश्चयी था। उसकी प्रार्थना में बाधक बनने वाली कोई चीज़ नहीं होगी।

दाऊद ने परमेश्वर को स्मरण कराया कि उसने स्वयं को मनुष्यों के क्रूर तरीकों से बचाए रखा था (पद 4)। यह एक महत्वपूर्ण कथन है क्योंकि यदि दाऊद ने स्वयं को क्रूरता से न बचाया होता, तो वह परमेश्वर से अपने को दूसरों की क्रूरता से बचाए जाने को कैसे कहता। यदि हम कोई अपराध कर रहे हैं तो उसी अपराध के दूसरों द्वारा हमारे विरोध में किये जाने पर हम परमेश्वर से छुटकारा दिलाने की प्रार्थना नहीं कर सकते। यह केवल पाखण्ड होगा। पद 5 में दाऊद को पूरी तरह से भरोसा है, कि वह प्रभु के उस पथ पर स्थिर रहा था जो उसने उसके लिए निर्धारित किया था। उसके पांव उस पथ से नहीं फिसले थे।

पद 6 में जो दाऊद कहता है उस पर ध्यान दें। उसने परमेश्वर से कहा कि उसने उससे इसलिए निवेदन किया है क्योंकि वह जानता है कि वह उसे जवाब देगा और उसकी प्रार्थना को सुनेगा। यह हमें दिखाता है कि दाऊद विश्वास द्वारा परमेश्वर पर यह भरोसा और विश्वास कर रहा था कि परमेश्वर उसकी सुनेगा और वही करेगा जो सही है। यदि हम अपने मनों में सन्देह करें कि वह जवाब देगा या नहीं, तो हम प्रार्थना में परमेश्वर के पास नहीं आ सकते। प्रार्थना में विश्वास सबसे ज़रूरी सामग्री है। यदि हम यह विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर जवाब देगा तो हम क्यों प्रार्थना करते? यदि हम विश्वास नहीं करते कि हमारी प्रार्थना अन्तर उत्पन्न करेगी तो हम प्रार्थना क्यों करते?

पद 7 और 8 में हमें एक और चीज़ को देखने की ज़रूरत है। ध्यान दें कि दाऊद के प्रार्थना में परमेश्वर के पास आने पर उसे परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध पर भरोसा था और परमेश्वर के लिए उसकी इच्छा पर भी। पद 7 में, दाऊद ने परमेश्वर से अपने महान प्रेम के आश्चर्य को दिखाने के लिए कहा। उसे भरोसा है कि वह ब्रह्माण्ड के महान परमेश्वर के पास आकर उससे अपने प्रेम को उसे दिखाने के लिए कह सकता है। जब हम समझ जाते हैं कि परमेश्वर कितना बड़ा है, तो इसमें आश्चर्य होता है कि वह हमसे प्रेम करता है। परमेश्वर की तुलना में हम बहुत कमज़ोर और छोटे हैं। दाऊद जानता था कि वह कितना छोटा था। वह जानता था कि वह इसके योग्य नहीं था कि परमेश्वर से उसके प्रेम को दिखाने के लिए कहता, परन्तु उसे भरोसा था कि वह ऐसा कर सकता है। अपनी अयोग्यता में ही वह परमेश्वर के पास आया और उससे कहा

कि अपनी आंखें खोलकर उसको ग्रहण करे। प्रार्थना में परमेश्वर के पास आने पर, हमें भी यही भरोसा होना चाहिए। हमारे परमेश्वर को हमारे लिए अपनी बांहे खोलने में खुशी मिलती है। अपने प्रेम के आश्चर्य को हमें दिखाने में उसे खुशी होती है।

पद 7 में इस पर भी ध्यान दें कि दाऊद को भरोसा है कि परमेश्वर अपनी शरण में आनेवालों को उनके शत्रुओं से बचाता है। हम जानते हैं कि उसके परमेश्वर के पास आने और उसकी बांहों में उछलने पर शत्रु कुछ नहीं कर सकता था। उसे परमेश्वर के प्रेम पर भरोसा था परन्तु उसे उसकी सामर्थ और शक्ति पर भी भरोसा था। शत्रु बड़ी बड़ी बातें बोल सकता था या घमण्ड से फूल सकता था, परन्तु दाऊद जानता था, कि परमेश्वर की बांहों में, वे उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे।

पद 8 में दाऊद स्वयं को परमेश्वर की आंख की पुतली कहता है। वह जानता था कि वह परमेश्वर की दृष्टि में विशिष्ट था। वह जानता था कि उसका पक्ष लिया गया था। वह परमेश्वर से अपनी आंख की पुतली के समान उसे सुरक्षित रखने और अपने पंखों की छाया में छिपाने को कहता है। मां मुर्गी (या किसी और पक्षी) का चित्र है जो अपने चूज़ों को अपने पंखों के नीचे ले लेती है। परमेश्वर उसी मां मुर्गी के समान था; दाऊद पर अपने पंखों की छाया करते हुए। उसके पंखों की शरण में आने पर कोई भी चीज़ उसे हानि नहीं पहुंचा सकती थी।

इस भजन के प्रथम आठ पद हमें दिखाते हैं कि प्रार्थना में दाऊद परमेश्वर के पास कैसे आया। उसने अपने मन और मस्तिष्क की जांच की थी और परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध पर उसे भरोसा था। वह एक साफ मन के साथ विश्वास में होकर परमेश्वर के पास आया जो उससे गइराई से प्रेम करता था। वह जानता था कि वह उस पर पूरी तरह से भरोसा कर सकता था।

पद 9 दृश्य को बदल देता है। अब ध्यान शत्रु पर और जो वह कर रहा है उस पर है। दाऊद ने प्रभु को स्मरण कराया कि शत्रु उस पर अत्याचार कर रहा था। पद 9 में वह अपने शत्रु को घातक शत्रु कहता है। अन्य शब्दों में, शत्रु उसे मार डालना चाहता था। ये शत्रु दाऊद को मारे बिना किसी भी तरह से नहीं रुकते। वर्तमान समय में भी उन्होंने उसे चारों ओर से घेरा हुआ था। पद 10 उनके मनों को निर्दयी, कठोर और मोड़े न जानेवाला बताता है। वे अपनी योग्यता पर घमण्ड करते हुए वहुत घमण्ड और अकड़ से बोले कि वे क्या कर सकते हैं। उन्होंने दाऊद के लिए उसी तरह से जाल लगाया जैसे एक शिकारी अपने शिकार के लिए जाल लगता है। वे भूखे सिंहों के समान उसे खा जाने को छिप कर बैठे। वे उस समय की प्रतीक्षा में थे कि उसे भूमि पर पटक कर मार डालते (पद 11)। शत्रु की मंशा स्पष्ट थी। किसी भी सामान्य व्यक्ति के लिए यह शत्रु भयानक था। जितने बड़े वे थे, परमेश्वर पर और उसके साथ अपने संबन्ध पर दाऊद का भरोसा और भी बड़ा था।

पद 13 में, दाऊद परमेश्वर से इस शत्रु का सामना करने को कहता है। वह जानता था कि ऐसा करने को वह स्वयं पर्याप्त रूप से बड़ा नहीं था। परमेश्वर से

उसने अपनी तलवार निकालकर उसके लिए लड़ने को कहा।

पद 14 में ध्यान दें कि दाऊद अपने शत्रुओं के बारे में क्या कहता है। वह हमें बताता है कि उनका प्रतिफल इसी जीवन में है। अन्य शब्दों में, स्वर्ग में उनके लिए कोई प्रतिफल नहीं है। उनकी एकमात्र आशा इस पृथ्वी से जो हो सके वही लेने की है। उनके न्याय के समय में यह पर्याप्त नहीं होगा। वह दिन आ रहा था जब उन्हें परमेश्वर का सामना कर अपने कार्यों का लेखा देना होगा। वह कितना भयानक दिन होगा।

शत्रु ने दाऊद को घेर लिया था परन्तु उसे अपने प्रभु परमेश्वर पर भरोसा था। इस भजन के अन्तिम पदों में, दाऊद परमेश्वर की प्रशंसा करता है कि उसमें अभी भी उन लोगों की भूख है जो उससे प्रेम करते हैं। परमेश्वर अपनी संतान को उनकी ज़रूरत के समय में नहीं छोड़ेगा। परमेश्वर उनकी पुकार को सुनेगा और उन्हें तृप्त करेगा। परमेश्वर उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा तथा उससे भी अधिक करेगा।

जहां तक दाऊद की बात है उसे पूरा भरोसा था कि जागने पर वह प्रभु के चेहरे को देखेगा। चाहे उसके शत्रु उसकी जान भी ले लेते, दाऊद जानता था कि वही विजयी होगा। वह दिन आ रहा था जब दाऊद परमेश्वर को देखेगा। परमेश्वर की अद्‌भुत उपस्थिति से वह अपने प्राण की गहराई तक संतुष्ट होगा। मृत्यु में भी विजय थी।

विचार करने के लिए:

- प्रार्थना में परमेश्वर के सम्मुख आने से पहले अपने जीवनों की जांच किये जाने के महत्व के बारे में यह भजन हमें क्या सिखाता है?
- दाऊद प्रार्थना और विश्वास के बीच संबन्ध के बारे में हमें क्या सिखाता है?
- इस भजन में हमने जो कुछ देखा है उससे परमेश्वर के साथ उसके संबन्ध के बारे में बताएं। क्या परमेश्वर के साथ आपका भी यही संबन्ध है?
- अनंतकाल के लिए दाऊद की क्या आशा है?
- जीवन में आपकी विशिष्ट चिन्ता क्या है? यह भजन आपको क्या प्रोत्साहन देता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को उस संबन्ध के लिए धन्यवाद दें जो वह आपके साथ रखना चाहता है।
- किसी भी तरह के पाखण्ड को प्रगट करने के लिए परमेश्वर से आपके मन की जांच करने को कहें जो आपके प्रार्थना के जवाब में बाधक हो सकता है।
- परमेश्वर को उस अद्‌भुत और अनन्त आशा के लिए लिए धन्यवाद दें जो आपकी उसमें है।
- कुछ समय के लिए परमेश्वर को उस संबन्ध के लिए धन्यवाद दें जो वह आपके साथ रखना चाहता है। उससे स्वयं को उसके पास लाने के लिए कहें।

18. प्रभु की विजय

पढ़ें भजन संहिता 18: 21-50

भजन 18 एक विजय का भजन है। यह दाऊद की अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेने पर प्रभु के लिए धन्यवाद की प्रार्थना है। विशिष्ट रूप में, दाऊद अपने ससुर शाऊल पर विजय पाने के समय में प्रभु की आराधना करता है।

भजन का आरम्भ करने पर, दाऊद परमेश्वर की आराधना उसके लिए करता है जो वह है और उसके लिए परमेश्वर के महत्व पर। सबसे पहले इस पर ध्यान दें कि वह परमेश्वर को बताता है कि वह उससे प्रेम करता है। यह सच है कि परमेश्वर को पहले से ही पता होता है कि हम उसके बारे में क्या सोचते हैं परन्तु आराधना उन भावनाओं को शब्द देती है। दाऊद को परमेश्वर को यह बताने में कोई संकोच नहीं होता कि वह उसके लिए क्या अनुभव करता है।

दूसरा, ध्यान दें कि दाऊद प्रभु से कहता है कि इस परीक्षा के समय में वह उसके लिए कितना महत्व रखता है। दाऊद शाऊल से भाग रहा था जो कि उसके प्राण का खोजी था। इस संकट के समय में परमेश्वर ही दाऊद का बल था। वह जानता था कि उसने अपनी स्वाभाविक शक्ति से जय नहीं पाई थी। उसने परमेश्वर को उसे बल देने का श्रेय दिया।

परमेश्वर दाऊद के लिए चट्टान रहा था (पद 2)। एक चट्टान दृढ़ और ठोस नींव होती है। अपनी इस आवश्यकता के समय में दाऊद को किसी ठोस चीज़ पर खड़े होने की ज़रूरत थी। कोई भी चीज़ प्रभु और उसके उद्देश्यों को नहीं हिला सकती। उसकी प्रतिज्ञाएं तूफानों में भी बनी रहेंगी। बेशक उसके शत्रु ने उसे हिलाने का प्रयास किया, परन्तु दाऊद एक ठोस आधार पर खड़ा था। प्रभु एक अडिग चट्टान है।

प्रभु एक गढ़ भी है। गढ़ एक सुरक्षा का स्थान होता है। शत्रु इसकी मज़बूत दीवारों को बेध नहीं सकता। गढ़ के समान, प्रभु ने दाऊद को चारों ओर से घेरा हुआ था।

परमेश्वर एक छुड़ानेवाला भी था। प्रभु ने उसे उसके शत्रुओं पर विजय दी। उसने उसे शत्रु से छुड़ाया। पद 2 में दाऊद आगे परमेश्वर को ढाल कहता है। ढाल एक सैनिक को शत्रु के तीरों से बचाती है। इसी तरह से, परमेश्वर ने दाऊद को उन तीरों से बचाने के लिए चारों ओर से घेरा हुआ था। इस उदाहरण में विशेष रूप से रोचक चीज़ ढाल है जो सैनिक की रक्षा करती है, ढाल को शत्रु पर चलाए गए तीरों को अपने पर लेना होता है। इसी तरह से, परमेश्वर दाऊद के लिए शत्रु द्वारा किये जाने

वाले प्रहारों को लेने को तैयार था। प्रभु यीशु हमारी ढाल बने। उन्होंने उस दण्ड को ले लिया जो हमारे लिए निर्धारित था।

परमेश्वर दाऊद के लिए सींग भी था। एक जानवर के लिए सींग उसका बचाव करनेवाले होते हैं। सींग शक्ति का एक प्रतीक बन गया था। एक जानवर का सींग सिपाही के लिए तलवार के समान था। दाऊद परमेश्वर को अपने बचाव करनेवाले के रूप में देखता है। ध्यान दें कि इस सींग को उद्धार के सींग कहा गया है। प्रभु ने दाऊद का बचाव किया और उसे उसके शत्रुओं से बचाया।

अन्त में पद 2 में, दाऊद ने परमेश्वर को एक ऊँचे गढ़ के रूप में देखा। ऊँचा गढ़ सुरक्षा का स्थान होता है। इसे ऊँचा गढ़ इसलिए कहा गया क्योंकि इसे शत्रु नहीं ले सकता था। दाऊद को पता था कि जब प्रभु उसका ऊँचा गढ़ है वह शत्रु के किसी भी हमले से सुरक्षित है।

दाऊद ने परमेश्वर ने इस उद्धार को कैसे प्राप्त किया? पद 3 हमें बताता है कि उसने केवल इतना किया कि परमेश्वर को पुकारा और परमेश्वर उसकी सहायता के लिए आया। दाऊद को न तो धन देना पड़ा और न ही कोई बलिदान करना पड़ा। उद्धार इतना ही सरल है। परमेश्वर को पुकारने के अलावा हम और कुछ नहीं कर सकते। बहुत से लोग इस कारण परमेश्वर के उद्धार को प्राप्त नहीं कर पाते क्योंकि वे सोचते हैं कि इसे पाने के योग्य उन्हें बनाना होगा। पद 3 हमें बताता है कि दाऊद ने केवल परमेश्वर को पुकारा और परमेश्वर ने उसे बचाया।

4 और 5 पदों में दाऊद अपने पाठकों को उस स्थिति के बारे में बताता है जिसमें वह स्वयं को पाता है। वह हमें बताता है कि मृत्यु की रस्सियों ने उसे चारों ओर से घेर लिया था। यदि आपने कभी मकड़ी के जाल में किसी मक्खी को फंसे देखा है तो आप समझ जाएंगे कि दाऊद यहां क्या कह रहा है। मृत्यु उस जाल के समान थी जिसने दाऊद को फंसा लिया था और अब इस उलझे जाल में मृत्यु रूपी मकड़ी उसे मिटा डालने को उसकी ओर बढ़ रही थी। मृत्यु दाऊद के द्वार पर थी।

विनाश के भय ने उसे परास्त कर दिया था। उस पुरुष या स्त्री का चित्र है जो नदी के बहाव से लड़ रहा है। अपने इस युद्ध में हारकर नदी उन्हें बहाकर मृत्यु तक ले जा रही है।

पद 5 में दाऊद अपने पाठकों को बताता है कि पाताल की रस्सियों ने उसे घेरा हुआ था। जिस तरह से एक भूखा सांप अपने शिकार के चारों ओर फुंकारता है, उसी तरह से दाऊद भी अपने जीवन की अंतिम दशा में था। अपने जीवन के वह उस स्थान पर था जहां सारी आशा खोई हुई लग रही थी। वह एक जानवर के समान मृत्यु के पंजे में फंस गया था।

अपनी निराशा के इस समय में दाऊद ने सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारा। वह अपने स्त्रोतों की सीमा पर पहुंच चुका था। उसमें लड़ने की शक्ति नहीं थी। वह केवल इतना ही कर सका कि स्वयं को प्रभु पर डालकर उससे दया करने को कहा। परमेश्वर ने दाऊद की पुकार को सुनकर उसकी ज़रूरत के समय में उसे जवाब दिया।

सहायता के लिए अपने दास के पुकारे जाने पर परमेश्वर की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें। परमेश्वर क्रोधित था। पद 7 हमें बताता है कि पृथ्वी हिल गई और कांप उठी। अपने दास की ज़रूरत के समय में उसकी सहायता के लिए परमेश्वर के 36 जाने पर चट्टानों की नीवें हिल गई। एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर की पूरी शक्ति दाऊद का बचाव करने को आई।

दाऊद उसकी सहायता के लिए परमेश्वर के उठ खड़े होने के चित्र में रंग भरता है। उसके नथनों से अग्निमय धुआं निकला। न्याय की भस्म करनेवाली आग उसके मुंह से निकली। प्रभु परमेश्वर स्वर्ग को नीचे झुकाकर दाऊद की ओर आया। पद 9 में दाऊद हमें बताता है कि उसके पांवों तले अन्धकारमय बादल थे। कुछ भयानक चीज़ होने को थी। अन्धकारमय बादल सामान्यता तूफान का संकेत देते हैं। परमेश्वर के न्याय का तूफान पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों के शत्रुओं के विरुद्ध आने को ही था। जिस तरह से योद्धा घोड़े पर सवार होकर आता है उसी तरह से वह पवन के पंखों पर सवारी करके उड़ा (पद 10)।

घने वर्षा के बादलों ने प्रभु की भयानक उपस्थिति को ढांप लिया (पद 11)। परमेश्वर के अपने अग्निमय न्याय के उन्मुक्त किये जाने पर पृथ्वी पर एक तूफान आनेवाला था। बिजली की चमक और ओलों ने उसके न्याय की घोषणा कर दी थी। प्रभु आकाश में गरजा। उसने अपने तीर चलाकर शत्रु को तितर-बितर कर दिया (पद 14)। बिजलियां उन पर गिरी जिससे वे अपने जीवनों को बचाने के लिए भागे।

जिस दिन प्रभु दाऊद के बचाव के लिए आया, कुछ भी उससे छिपा नहीं था। समुद्र की घाटियां प्रगट हो गई थीं। पृथ्वी की नीवें दिखने लगी थीं। उसके नथनों की सांस ने हर चीज़ को वैसे प्रगट कर दिया जैसी वह थी। इस ब्राह्मण्ड के महान परमेश्वर ने आकाश से नीचे उतरकर दाऊद को उस गहरे जल से बाहर खींच लिया जिसमें वह डूब रहा था। दाऊद के शत्रु उसके लिए बहुत शक्तिशाली थे परन्तु परमेश्वर ने उसे बचाया।

दाऊद की विपत्ति के समय में प्रभु ने उसे सहारा दिया (पद 18)। यदि परमेश्वर नहीं होता तो वह गिर गया होता। इसके विपरीत, परमेश्वर उसे चौड़े स्थान पर लेकर आया। अर्थात्, बहुतायत और संपन्नता का स्थान (पद 19)।

परमेश्वर ने दाऊद को क्यों बचाया? दाऊद ने स्वयं से यह प्रश्न किया। वह जवाब भी जानता था। पद 19 में वह हमें बताता है कि प्रभु ने उसे इसलिए छुड़ाया क्योंकि वह उससे प्रसन्न था। परमेश्वर दाऊद के मन को जानता था। वह जानता था कि उसके पास परमेश्वर को आदर देने वाला एक मन है। परमेश्वर की दया दाऊद पर थी क्योंकि उसने अपने परमेश्वर से प्रेम करने के साथ-साथ पूरे मन से उसकी सेवा भी की थी। दाऊद ने प्रभु परमेश्वर की सेवा करने के लिए जातियों के ढंग से मुंह फेर लिया था। जो परमेश्वर की सेवा विश्वासयोग्यता के साथ करते हैं वह उन्हें प्रतिफल देता है। जो उसे आदर देते हैं वह उनसे प्रसन्न होता है। परमेश्वर ने दाऊद को इसलिए सम्मानित किया क्योंकि उसने स्वयं को शुद्ध रखा था।

पद 25 में दाऊद हमें बताता है कि विश्वासयोग्य के साथ परमेश्वर स्वयं को विश्वासयोग्य दिखाता है और शुद्ध व निर्दोष के साथ, वह स्वयं को शुद्ध व निर्दोष दिखाता है। परमेश्वर हमारे जीवनों पर ध्यान देता है। दूसरी ओर, वे जो टेड़े हैं उनका न्याय होगा। हम सभी को परमेश्वर के सम्मुख अपने जीवनों का लेखा देना होगा। परमेश्वर दीन लोगों को बचाता परन्तु घंमडियों को नीचा करता है।

दाऊद को परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध पर भरोसा था। वह जानता था कि प्रभु परमेश्वर उसके दुखों के अन्धकार को ज्योति, आशा और विजय में बदल देगा। वह जानता था कि जब तक परमेश्वर उसके साथ है, वह अपने शत्रु की सेना के विरुद्ध आगे बढ़ सकता है। परमेश्वर के उसकी ओर होने पर वह अपने मार्ग में आनेवाली किसी भी बाधा पर विजयी हो सकता है। दाऊद अपनी शक्ति के स्त्रोत को जानता था। दाऊद और परमेश्वर के बीच एक शक्तिशाली संबन्ध था। दाऊद ने परमेश्वर को आदर दिया और परमेश्वर दाऊद से प्रसन्न था। दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया और परमेश्वर ने उसे उसके शत्रुओं के विरुद्ध शक्ति दी।

दाऊद को परमेश्वर के मार्गों पर पूरा भरोसा था। उसके मार्ग सिद्ध थे। उसके शब्द गलती रहित थे। परमेश्वर उनके लिए ढाल बना था जो उसकी शरण में आए थे। दाऊद के लिए परमेश्वर के तुल्य और कोई परमेश्वर नहीं था। दाऊद ने उस पर एकमात्र परमेश्वर होने का भरोसा किया।

दाऊद ने अपने पाठकों पर यह स्पष्ट किया कि उसमें उसकी अपनी शक्ति नहीं थी। उसकी सारी शक्ति उसके प्रभु परमेश्वर से आई थी। प्रभु ही दाऊद के आगे-आगे उसके मार्ग को सीधा व सिद्ध बनाने को चला। उसने उसके पैरों को हिरणियों के समान बनाकर उसे ऊंचे स्थानों पर खड़े होने के योग्य किया। युद्ध में अपनी विजय का श्रेय दाऊद परमेश्वर को देता है (पद 34-35)। उसे एक महान राजा बनाने का श्रेय भी वह परमेश्वर को देता है। वह स्वयं कोई महिमा लेने से इन्कार कर देता है।

पद 36 में ध्यान दें कि परमेश्वर ने दाऊद के लिए स्थान को चौड़ा कर दिया ताकि वह न फिसले। अन्य शब्दों में, वह दाऊद का मार्ग तैयार करने को उसके आगे-आगे चला। प्रत्येक कदम लेने पर दाऊद जानता था कि मार्ग को सुरक्षित करने के लिए पहले परमेश्वर इस पर से होकर गया था। दाऊद के लिए यह कितने आराम की बात थी।

चूंकि परमेश्वर दाऊद के साथ था, इसलिए उसने अपने शत्रुओं का पीछा तब तक किया जब तक कि उसने उन्हें परास्त नहीं कर दिया। उसने परमेश्वर द्वारा दी गई शक्ति से उनका नाश कर दिया। उसके शत्रु उसके पांवों पर गिर पड़े। यद्यपि उसके शत्रुओं ने परमेश्वर को पुकारा, तथापि परमेश्वर ने सुनने से इंकार कर दिया था। उनका पूरी तरह से नाश कर दिया गया।

परमेश्वर ने दाऊद को सम्मानित किया और उसे अन्यजातियों का प्रधान बनाया, उन दिनों का सबसे शक्तिशाली राजा, जातियाँ दाऊद को आदर देने के लिए उसके

सामने झुकीं। उन्होंने उसका और उस शक्ति का भय माना जो प्रभु ने उसे दी थी। वे उसके सामने कांप उठे।

दाऊद ने उस सबके लिए परमेश्वर की बड़ाई की जो उसने उसके लिये किया था। वह एक महान राजा था क्योंकि परमेश्वर ने उसका बदला लिया और उसके शत्रुओं को परास्त किया था। वह इसलिए भी एक महान राजा था क्योंकि परमेश्वर ने उसे उसके शत्रुओं पर ऊँचा उठाने को चुना था। वह इसलिए सफल था क्योंकि परमेश्वर ने उसे बचाया था। इस सब के लिए दाऊद ने परमेश्वर की प्रशंसा की और उसके नाम के लिए गीत गाए। वह अपने परमेश्वर से लजाया नहीं। वह जाति-जाति के बीच उसके महत्व को बताएगा।

दाऊद और उसके परमेश्वर के बीच एक शक्तिशाली संयोजन पाया जाता है। दाऊद ने अपने जीवन में परमेश्वर की शक्ति को प्रगट किया था। वह परमेश्वर के कारण ही सफल व विजयी था। प्रभु ने उसकी प्रार्थना सुनकर उसे उसके उन शत्रुओं से बचाया जो उससे भी शक्तिशाली थे। अपने शब्दों से, दाऊद ने इस्राएल के परमेश्वर को ऊपर उठाया था। अपने जीवन से, उसने अपनी सामर्थ और करुणा की सच्चाई को प्रगट किया था। परमेश्वर हमें इस योग्य करे कि हम अपने जीवनों में उसके अनुग्रह और सामर्थ की सच्चाई को जानें।

विचार करने के लिए:

- क्या आपने कभी स्वयं को ऐसे शत्रुओं के सामने पाया है जो आपसे भी शक्तिशाली थे, परमेश्वर ने आपको कैसे छुड़ाया था?
- दाऊद द्वारा परमेश्वर को आदर दिये जाने और परमेश्वर द्वारा उसे आदर दिये जाने के बीच क्या अन्तर है?
- क्या आपने कभी स्वयं को उन चीज़ों को श्रेय लेते हुए पाया है जिन्हें परमेश्वर ने किया था?
- एक राजा और योद्धा के रूप में दाऊद की सफलता के पीछे क्या रहस्य था?

प्रार्थना के लिए:

- अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के लिए धन्यवाद देने को कुछ समय निकालें। उस विजय के लिए उसे धन्यवाद दें जो उसने आपको दी है।
- प्रभु से कहें कि उसके अनुग्रह और करुणा के लिए आपकी आंखों को खोले। उससे उन समयों के लिए आपको क्षमा करने को कहें जब आपने उसे श्रेय नहीं दिया था।
- परमेश्वर को आप पर उस किसी भी चीज़ को प्रगट करने के लिए कहें जिसमें आप अपने जीवन में उसे आदर न दे रहे हों। इस क्षेत्र में विजयी होने के लिए उससे शक्ति मांगें।

19. परमेश्वर और उसके उद्देश्य का प्रकाशन

पढ़ें भजन संहिता 19:1-14

हमारा परमेश्वर वह परमेश्वर है जिसे स्वयं को और मानवजाति के लिए अपने उद्देश्यों को प्रगट करने में प्रसन्नता होती है। यहां भजन संहिता 19 में दाऊद उन दो तरीकों पर विचार करता है जिनमें होकर परमेश्वर स्वयं को और अपने उद्देश्यों को प्रगट करता है।

दाऊद हमें यह दिखाते हुए आरम्भ करता है कि आकाश कैसे परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है। आकाश के द्वारा दाऊद स्वर्ग के बारे में बताता है। हममें से ऐसा कोई भी नहीं है जो आकाश की असीमता पर हैरान न हुआ हो। आकाश का कोई अन्त होता नहीं दिखता। हम आकाश की ओर देखने पर करोड़ों मील दूर जलते हुए सूरज को देखते हैं, जो पृथ्वी को गर्मी दे रहा है और हमें आराम से रखे हुए है। रात के समय आकाश में देखने पर हम तारों को देखते हैं और परमेश्वर पर आश्चर्य करते हैं जिसने इन्हें बनाया। आकाश की ओर देखकर सृष्टिकर्ता द्वारा रखे गए आश्चर्यों को देखकर हैरान न होना असंभव है, परमेश्वर ने ही सबको उनके स्थान पर रखा है। यदि आकाश महिमावान है तो इस आकाश का सृष्टिकर्त्ता कितना अधिक महिमावान होगा?

प्रतिदिन आकाश अपने रचियता के आश्चर्यों को बताता है। दिन और रात बिना कोई शब्द कहे उसके कार्यों के विषय बताते हैं। आकाश प्रत्येक संस्कृति और भाषा से बोलता है। परमेश्वर ने आकाश को इस तरह से बनाया है कि कोई भी खुले मन वाला व्यक्ति यह समझ सकता है कि जिस परमेश्वर ने इसे बनाया है वह अद्वितीय और महिमामयी परमेश्वर है जिसके मार्ग हमारे मार्गों से अलग और जिसकी बुद्धि हमारी समझने की क्षमता से परे है।

पद 4 में दाऊद हमें स्मरण कराता है कि प्रभु परमेश्वर ने सूर्य के लिए कैसे एक मण्डप खड़ा किया है। अन्य शब्दों में, उसने सूर्य को उसके लिए एक स्थान दिया है। एक दुल्हे के समान सूर्य अपनी पूरी महिमा में प्रति प्रातः निकलता है। एक शूरवीर धावक की नाईं, यह आकश के एक भाग से उदय होकर दूसरे भाग में छिपते हुए अपनी दौड़ को पूरी करता है। इस प्रक्रिया के द्वारा यह पूरी पृथ्वी को गर्म करता है। किसने सूर्य को उसके स्थान पर रखा है? किसने उसे उदय और अस्त होने के लिए बनाया? यह इस्राएल का परमेश्वर है जो महिमावान है। हमारा परमेश्वर अद्वितीय और

सामर्थी परमेश्वर है। अपनी सृष्टि के द्वारा वह स्वयं को प्रगट करता है। वह चाहता है कि उसे जाना जाए। वह चाहता है कि उसकी आराधना की जाए। वह हमारे आदर और स्तुति के योग्य है।

न केवल परमेश्वर अपनी सृष्टि के द्वारा अपनी उपस्थिति को प्रगट करता है परन्तु वह अपनी व्यवस्था के साधनों के द्वारा अपने उद्देश्यों को भी प्रगट करता है। व्यवस्था को मूसा द्वारा दिया गया था जो परमेश्वर की सृष्टि के लिए उसके मन को प्रगट करती है। दाऊद 7 से 11 पदों में इस व्यवस्था पर विचार करता है।

दाऊद हमें स्मरण कराता है कि प्रभु की व्यवस्था सिद्ध थी। इस पर चलने वालों ने अपने प्राण को नया पाया। हमें परमेश्वर के साथ मेल में रहने के लिए बनाया गया था। परमेश्वर के साथ सही संबन्ध में रहने पर ही हमारा हृदय पूर्ण आनन्द और संतोष को जान सकता है। दाऊद के अनुसार इस व्यवस्था पर चलने वाले अपने प्राण में आनंद और शांति की इस अद्‌भुत जागृति को जानते थे।

''यहोवा के नियम'' दाऊद हमें बताता है, ''विश्वासयोग्य हैं'' (पद 7)। वे साधारण लोगों को भी बुद्धिमान बना देते हैं। परमेश्वर के उद्देश्य और योजना का सही प्रस्तुतीकरण होने को परमेश्वर का वचन जो हमें कहता है उस पर हम भरोसा कर सकते हैं। जो व्यक्ति परमेश्वर के वचन को नहीं जानता वह अपने जीवन के अर्थ और उद्देश्य को नहीं जानता। संसार के सबसे साधारण व्यक्तियों को भी वह बुद्धि मिलेगी जिसकी ज़रूरत उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था और नियमों में प्रगट की गई सच्चाई को जानने के लिए होगी।

पद 8 में दाऊद हमें बताता है परमेश्वर के उपदेश हृदय को आनंद देते हैं। चूंकि हमें परमेश्वर द्वारा बनाया गया था इसी कारण हम परमेश्वर के साथ एक होकर ही खुश रहेंगे। परमेश्वर के उद्देश्य से बाहर और किसी चीज़ में कोई आनंद नहीं है। परमेश्वर के साथ मेल में रहने और उसके उपदेशों के अनुसार चलने पर ही सच्चा आनंद मिलता है।

पद 8 में दाऊद हमें बताता है कि यहोवा की आज्ञा निर्मल है जो आंखों को ज्योति देती है। परमेश्वर की योजना और उद्देश्य से बाहर जैसे उसके वचन में हम पर प्रगट किया गया है, केवल अंधकार ही है। पवित्रशास्त्र अक्सर उनके बारे में बताता है जो अंधकार में होने के लिए परमेश्वर की इच्छा से बाहर होते हैं (मत्ती 4:16; यूहन्ना 3:19) पवित्रशास्त्र का सत्य उनके लिए ज्योति लाता है जो अंधकार में रह रहे हैं।

परमेश्वर की व्यवस्था जीवन के अंधकारमय मार्ग पर प्रकाश डालती है। परमेश्वर का वचन ज्योति है जो हमें मार्ग को दिखाता है। (भजन: 119:105)। यह स्पष्ट मार्गदर्शन देता है। यह उस मार्ग को प्रगट करता है जिसमें परमेश्वर हमारे साथ चलता है।

पद 9 में, दाऊद हमें बताता है कि यहोवा का भय पवित्र और सदा तक बने रहने वाला है। परमेश्वर का भय माननेवाले अपने अपने सारे कार्यों से उसका आदर और

सम्मान करते हैं। वे पवित्र भय के साथ उसके सामने आते और उसकी व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारिता के साथ रहते हैं। यह भय सदा तक बना रहता है। परमेश्वर का भय मानने वालों को अनन्त जीवन प्राप्त होगा। उन्हें उसकी उपस्थिति में सदा तक उसे आदर देने का विशेषाधिकार प्राप्त होगा।

परमेश्वर के नियम सत्य और पूरी तरह से धर्ममय हैं। प्रभु के मार्ग में कोई बुराई नहीं है। प्रत्येक नियम सिद्ध व सही है। हम उसकी व्यवस्था पर पूरी तरह से भरोसा कर सकते हैं। दाऊद को प्रभु की व्यवस्था में बड़ा आनन्द मिलता था। उसने परमेश्वर के नियमों को सोने से भी अधिक कीमती जाना था। सोना कभी भी खुशी को नहीं खरीद सकता। सोना कभी भी जीवन को अर्थ और उद्देश्य नहीं दे सकता। प्रभु के नियम शहद से भी मीठे हैं। वे किसी भी अच्छे भोजन की तुलना में अधिक आनंद और संतुष्टि को लाते हैं।

परमेश्वर की व्यवस्था और नियमों के द्वारा परमेश्वर के सेवकों को चिताया जाता था। व्यवस्था ने जीवन के मार्ग पर खतरों को दिखाया था। इसने शत्रु के फंदों को प्रगट किया था। यह हमें सही दिशा में ले जाती और बुराई से बचाकर रखती है।

प्रभु की व्यवस्था और नियमों का पालन करने में बड़ा प्रतिफल मिलता है। परमेश्वर उन्हें आशीष देता है जो उसके उद्देश्यों के प्रति विश्वास योग्य रहते हैं। (2 तीमुथियुस 4:8; याकूब 1:8; 1 पतरस 5:4)।

परमेश्वर ने अपनी सृष्टि और अपने वचन के द्वारा स्वयं को प्रगट किया है। सृष्टि के द्वारा वह अपनी महिमा और सामर्थ को दिखाता है। अपनी व्यवस्था में वह अपने उद्देश्य और इच्छा को प्रगट करता है। परमेश्वर के इस स्पष्ट प्रकाशन और उसके उद्देश्य के प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया है। दाऊद की प्रतिक्रिया उसकी छिपी हुई गलतियों के लिए परमेश्वर से क्षमा मांगने की थी। दाऊद जानता था कि परमेश्वर ने अपने उद्देश्य को प्रगट करने के लिए काई खर्च बचाकर नहीं रखा था। उसने सृष्टि में देखा कि परमेश्वर एक अद्‌भुत और अनोखा परमेश्वर था। वह परमेश्वर के साथ एक सही संबन्ध में रहना साहता था। उसे डर था कि उसका पाप किसी तरह से उसके परमेश्वर का अनादर करेगा। वह परमेश्वर के सामने शुद्ध बने रहना चाहता था। उसने परमेश्वर से उसके हृदय की खोज करने और किसी भी छिपे पाप को क्षमा करने के लिए कहा, जिन्हें वह प्रकट कर सकता है।

दाऊद यह भी प्रार्थना करता है कि परमेश्वर उसे ढिठाई के पापों से बचाकर रखे। (पद 13) वह अपने पापपूर्ण स्वभाव को जानता था। वह समझ गया था कि वह आसानी से परमेश्वर की ओर से बुराई की ओर फिर सकता है। वह जानता था कि उसे परमेश्वर पर कितना निर्भर होकर रहना था तथा कितना धार्मिकता के मार्ग पर चलना था। उसने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे बल दे और उसे परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किये जाने से बचाकर रखे।

दाऊद यह भी प्रार्थना करता है कि परमेश्वर उसके मुंह और उसके हृदय के

विचारों को उसके ग्रहणयोग्य बनाए। दाऊद की रुचि बाहरी चीज़ों पर नहीं थी। वह अपने हृदय से शुद्ध होना चाहता था। वह चाहता था कि उसके विचार परमेश्वर के सम्मुख सही हों। वह भीतर और बाहर से शुद्ध होना चाहता था।

वह परमेश्वर को अपनी चट्टान और अपना छुड़ानेवाला स्वीकार करते हुए समापन करता है। अन्य शब्दों में, परमेश्वर उसकी सुरक्षा और निश्चित आधार था। एक चट्टान होने के कारण परमेश्वर उसे सुरक्षित रखने के साथ-साथ बुराई से बचाए रख सका। एक छुड़ानेवाला वह होता है जो किसी चीज़ को फिर से खरीदता है। दाऊद ने प्रभु परमेश्वर को अपने छुड़ानेवाले के रूप में देखा था। परमेश्वर ने उसे शैतान और पाप की पकड़ से छुड़ाया था। परमेश्वर ने उसे छुड़ाया था और एक चट्टान होने के कारण केवल वही उसकी सुरक्षा करके उसे सही मार्ग पर रख सकता था। दाऊद को पता था कि जब तक परमेश्वर उसे बल न दे और उसकी सुरक्षा न करे वह परमेश्वर के उद्देश्य में नहीं रह सकता है।

परमेश्वर हम पर स्वयं को प्रगट करना चाहता है। हमारे जीवनों के लिए उसका एक उद्देश्य है। दाऊद ने स्वयं को अपने सृष्टिकर्त्ता को खोजने और उसके उद्देश्य में रहने के लिए सौंप दिया था। परमेश्वर हम पर अपने बारे में जो प्रगट करता है उसके प्रति यही हमारी एकमात्र प्रतिक्रिया है।

विचार करने के लिए:

- मानवता पर स्वयं को प्रगट करने के लिए परमेश्वर किस सीमा तक गया?
- सृष्टि हम पर परमेश्वर और उसके चरित्र के बारे में क्या प्रगट करती है?
- परमेश्वर ने हमें अपनी व्यवस्था क्यों दी?
- परमेश्वर और उसके मार्गों के प्रति आज्ञाकारी न होकर क्या हम सच्चे संतोष और जीवन के अर्थ का अनुभव कर सकते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि हम पर वह अपने उद्देश्यों को प्रगट करना चाहता है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह सृष्टि के द्वारा स्वयं को प्रगट करता है।
- आपके जीवन में किसी भी छिपे पाप के लिए परमेश्वर से आपको क्षमा करने को कहें।
- परमेश्वर को ढिठाई के पाप से आपकी सुरक्षा करने को कहें।
- प्रभु को चट्टान व छुड़ानेवाला होने के लिए धन्यवाद दें।

20. परमेश्वर, जो जवाब देता है

पढ़ें भजन संहिता 20:1-9

भजन 20 का आरम्भ आशीर्वचन के साथ होता है। इस भजन को जन्म देने वाली विशिष्ट परिस्थितियों के बारे में हमें नहीं बताया गया है। तौभी, भजन की जांच करने पर यह संभव है कि युद्ध के लिए तैयार होने पर दाऊद और उसकी सेना के लिए एक प्रार्थना है।

पद 1 में भजनकार यह कहते हुए आरम्भ करता है: ''संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले।'' एक ऐसे व्यक्ति का चित्र है जो दुखों और संकटों के कारण दबा हुआ है। कहीं भी जाकर वह अपने दर्द को कम नहीं कर सकता है। दुख में वह परमेश्वर को सहायता के लिए पुकारता है। परमेश्वर निराशा से आई उस दुर्बल पुकार को सुनकर उसकी सहायता के लिए आता है। हो सकता है कि दाऊद की सेना अपने शत्रुओं का सामना कर रही थी और वे अपने पर भारी बोझ का अनुभव कर रहे थे। प्रार्थना यह है कि परमेश्वर उनकी निराशा की पुकार को सुन ले।

आगे भजनकार कहता है: ''याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे ऊँचे स्थान पर नियुक्त करे'' (पद 1)। प्रभु परमेश्वर का नाम सामर्थी नाम है। उसका नाम नर्क की दुष्टात्माओं को भागने पर बाध्य कर देता है। उसके नाम को लेनेवाला निराश प्राण परमेश्वर की अद्‌भुत क्षमा और उद्धार को जान सकता है। परमेश्वर के लिए भजनकार की पुकार है कि उसका नाम उनके शत्रु द्वारा उनके विरुद्ध की जानेवाली हानि से उनकी रक्षा करते हुए उनकी ढाल बने।

पद 2 में दाऊद के हृदय की पुकार यह है कि परमेश्वर सिय्योन और अपने पवित्र स्थान से सहायता को भेजे। पवित्र स्थान से अभिप्राय मन्दिर से है जहां परमेश्वर ने उस समय अपनी उपस्थिति को प्रगट किया था। अपने सेवक की सहायता के लिए की गई पुकार की प्रतिक्रिया में परमेश्वर को उसके पार्थिव वास स्थान से चलते हुए देखा जाता है। यदि यह दाऊद और उसकी सेना के लिए एक प्रार्थना है, तब दाऊद की पुकार यह है कि उनके शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में परमेश्वर उनके आगे चले।

पद 3 में दाऊद प्रार्थना करता है कि परमेश्वर अपने लोगों की बलियों को स्मरण करे और उनकी होमबलियों की ग्रहण करे। एक भेंट या बलि ग्रहण करने पर परमेश्वर यह प्रमाणित करता था कि वह बलिदान किस बात का प्रतीक था। अन्य शब्दों में, यदि बलिदान पापों की क्षमा के लिए दिया जाता था, तब बलिदान को ग्रहण करने के द्वारा परमेश्वर यह दिखाता था कि उसने उस पाप को क्षमा कर दिया था। यदि भेंट

शुक्रगुजारी की भेंट होती थी, तब भेंट को ग्रहण करने के द्वारा परमेश्वर भेंट दिये जाने वाले व्यक्ति की स्तुति और शुक्रगुज़ारी को भी ग्रहण करता था।

किसी भी युद्ध से पहले इस्राएल और यहूदा के राजाओं को प्रभु को भेंट देनी होती थी। दाऊद की पुकार यह थी कि परमेश्वर उनके बलिदानों को स्मरण करे और जिस युद्ध का सामना वे कर रहे थे उसके लिए उन्हें विजय का आश्वासन देने के द्वारा उनकी भेंट को ग्रहण करे।

इस भजन में अगला निवेदन यह है कि परमेश्वर अपने लोगों को सफल करे। हमारी बहुत सी इच्छाएं होती हैं। उनमें से सभी हमारे लिए भली नहीं होतीं। हमें इस पद का अर्थ पूरे भजन के संदर्भ में निकालने की ज़रूरत है। दाऊद एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बोल रहा है जिसके बलिदान और भेंट को ग्रहण किया गया था। यह वह व्यक्ति है जो परमेश्वर की सहभागिता में रहा है। उसकी इच्छा परमेश्वर को आदर व महिमा देने की है। इस व्यक्ति के लिए दाऊद की प्रार्थना यह है कि प्रभु परमेश्वर उसके मन की इच्छा को पूरा करे। इन लोगों के मन की सबसे बड़ी इच्छा यह है कि उनके जीवनों में परमेश्वर को महिमा मिले और सब चीज़ों में वे वैसे ही जीयें जैसे वह उनसे चाहता है।

पद 4 की अन्य संभावित व्याख्या है। दाऊद की प्रार्थना इतनी अधिक यह नहीं है कि परमेश्वर उसके सेवकों की वही दे जो वे चाहते हैं, जबकि यह है कि वह उनके मनों में सही इच्छा को डाले। अन्य शब्दों में, परमेश्वर उन पर अपनी इच्छा को प्रगट करे जो उसके साथ सहभागिता में रह रहे थे। वह उनके मनों मे बोझ डाले और जब वे उस बोझ को लेकर आगे बढ़ते हैं तो वह उन्हें सफलता दे। वह उनके मनों में अपने उद्देश्यों को डाले और उनके आज्ञाकारिता में रहने पर वे उसकी आशीषों को जानें जब वे अपने मार्गों में सफलता प्राप्त करते हैं।

पद 5 में, दाऊद अपने पाठकों को बताता है कि विजयी होने पर वे आनंद से ऊंचे स्वर से गाएं। दाऊद और उसकी सेना को प्रभु परमेश्वर के नाम में अपने झण्डे को ऊपर उठाना है। झण्डे का प्रयोग एक सेना या लोगों की पहचान के लिए किया जाता था। सैनिकों के युद्ध में विजयी होकर लौटने पर गर्व के साथ झण्डे को ऊंचा उठाकर वे ऊंचे स्वर के साथ अपने प्रभु परमेश्वर की स्तुति करते तथा धन्यवाद देते, उन अद्‌भुत चीज़ों के लिए जो उसने उनके बीच की थी।

पद 6 में दाऊद हमें स्मरण कराता है कि यहोवा अपने अभिषिक्त और अपने लिए अलग किये हुओं को बचाता है। वह उनके शत्रुओं पर उन्हें विजय देता है। वह स्वर्ग पर से उन्हें उतर देता और अपने सामर्थी दहिने हाथ से उन्हें बचाता है। जब परमेश्वर हमसे कुछ करने को कहता या हमें कुछ करने को बुलाता है तो हम निश्चिंत हो सकते हैं कि इस कार्य को करने के लिए वह हमें अकेला नहीं छोड़ेगा। जब हम उस बुलाहट की आज्ञाकारिता में चलेंगे तो वह हमारी सहायता करने और हमें बचाने को आएगा।

ऐसे बहुत से हैं जिन्हें अपनी शक्ति पर भरोसा होता है। दाऊद के दिनों में कुछ को अपने रथों और घोड़ों पर भरोसा था। तौभी, दाऊद को अपनी सेना पर भरोसा नहीं था। उसका भरोसा अपने प्रभु परमेश्वर में था। अपनी शक्ति पर भरोसा करने वाले झुक जाते व गिर जाते हैं। तौभी, यहोवा पर भरोसा करने वाले युद्ध के बीच में उठते व सीधे खड़े रहते हैं। अपने प्रयासों पर भरोसा करना कितना सरल है। प्रचारक पवित्र आत्मा की सेवकाई की तुलना में अपनी तैयारी, अध्ययन या दानों पर भरोसा करता है। व्यवसाय करने वाले परमेश्वर की अगुवाई की तुलना में अपने अनुभव या बुद्धि पर भरोसा करते हैं। हमारे दिनों में, हम रथों का प्रयोग नहीं करते परन्तु स्वयं पर भरोसा करने की परीक्षा वैसी ही है। दाऊद हमें प्रभु की खोज करने और उसके द्वारा दी जाने वाली बुद्धि व बल से सेवा करने की चुनौती देता है।

इस भजन का समापन करने पर दाऊद परमेश्वर से उसे एक राजा के रूप में उसे बचाने को कहता है। वह जानता था कि परमेश्वर ने उसे राजा की भूमिका के लिए बुलाया था और अब युद्ध के लिए जाने और उन लोगों पर शासन करने के लिए जिनकी अगुवाई करने के लिए उसे बुलाया गया था उसने परमेश्वर पर भरोसा किया कि उसकी सहायता के लिए आए और उसे शक्ति दे।

इस भजन में हम देखते हैं कि दुख और संकट इस जीवन का एक भाग हैं। अपने लोगों द्वारा सहायता की मांग किये जाने पर परमेश्वर उनकी पुकार को सुनता है। उनकी ज़रूरत के समय में उनकी सेवकाई करने में उसे खुशी मिलती है। अपने शत्रुओं का सामना करने पर, दाऊद को अपनी सेना और उस प्रभु में था जो बुलाता व तैयार करता है। चूंकि परमेश्वर उसका सहायक था, वह असफल नहीं हो सका।

विचार करने के लिए:

- क्या आप कभी निराशा में रहे हैं? परमेश्वर आपकी सहायता के लिए कैसे आया था?
- परमेश्वर ने आपके मन में क्या इच्छा डाली है? क्या आप इस भरोसे के साथ आगे बढ़ सकते हैं कि प्रभु आपको उस इच्छा को दे सकता है?
- सेवकाई के लिए परमेश्वर ने आपको कैसे तैयार किया है? उसने आपको कैसी शक्ति दी है? उसने आपके जीवन पर किस बुलाहट को रखा है?
- परमेश्वर से अलग, सेवकाई में सफल होने के लिए आप पर कौन सी परीक्षा रही है? आज इस भजन से हम क्या सीख सकते हैं?
- प्रभु परमेश्वर द्वारा सेवा में हमें मज़बूत करने की इच्छा के बारे में इस भजन से हम क्या सीखते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि निराशा के समयों में वह आपकी सहायता के लिए आता है।
- परमेश्वर से आपके जीवन के लिए उसकी इच्छा हेतु अपने हृदय को खोलने के लिए कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि जब वह हमें किसी कार्य को करने के लिए बुलाता है, तो वह हमें इस कार्य के लिए तैयार भी करता है।
- प्रभु से कहें कि उसमें और उसकी शक्ति में आपके भरोसे को बढ़ाए। उसके द्वारा दी जाने वाली शक्ति में कदम बढ़ाने के लिए आप को अधिक निर्भयता देने को कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि हमारे सामने चाहे युद्ध कितना भी कठिन क्यों न हो, हम विजय देने के लिए उसकी बुद्धि और शक्ति पर्याप्त है।

21 परमेश्वर का विश्वसनीय प्रेम

पढ़ें भजन संहिता 21:1-13

भजन 20 उस राजा के लिए एक प्रार्थना के रूप में दिखाई देती है जो युद्ध में गया था। यह भजन विजय प्राप्त करने पर धन्यवाद की प्रार्थना है। अपनी विजय के स्रोत को लेकर दाऊद के मन में कोई प्रश्न नहीं है। दाऊद जानता है कि प्रभु परमेश्वर उसकी शक्ति का स्रोत और उसकी विजयों का कारण था। वह उसे पूरा श्रेय देता है।

प्रभु को हमें सेवकाई में मज़बूती देते हुए देखना कितनी महिमामयी चीज़ है। मुझे अपनी सेवकाई का वह समय याद है जब मुझे निकट के एक समुदाय में एक सभा में बोलने को कहा गया था। उस समय मैं बहुत निराश था और मुझे नहीं लगता था कि लोगों को उत्साहित करने के लिए मुझमें कोई शक्ति बची है। उस दिन जब मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ मैं जानता था कि प्रभु की उपस्थिति लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए मुझे समर्थ कर रही है। उस सभा में संदेश कुछ विशिष्ट लोगों के लिए बोला गया था। हमारी दुर्बलता में प्रभु की उपस्थिति और बल का जानना कितना आनंददायक है। पद 1 में, दाऊद परमेश्वर द्वारा उसे युद्ध के लिए दी गई सामर्थ पर आनंद मनाता है। उसे पता था कि उसकी विजय परमेश्वर द्वारा दी गई सामर्थ का परिणाम थी। उसने विजय का श्रेय नहीं लिया। वह सारी महिमा परमेश्वर को देता है।

परमेश्वर दाऊद के मन की इच्छा को जानता था। उसने ही उसे वह इच्छा दी थी। उसने दाऊद की प्रार्थना को सुना और स्वर्ग से उसे उत्तर दिया। संदर्भ संकेत देता है कि यह प्रार्थना अपने शत्रुओं पर विजय पाने के लिए थी। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि दाऊद अपने सारे युद्धों को परमेश्वर को सौंप देता था।

पद 3 में दाऊद हमें बताता है कि प्रभु परमेश्वर ने उसके सिर पर शुद्ध सोने का मुकुट रखा था। परमेश्वर ने दाऊद को राजा होने के लिए चुना था। दाऊद की अगुवाई आरम्भ में सामना करने पर पूरी हुई थी। शाऊल के समर्थक दाऊद को राजा के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते थे। दाऊद ने परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा की और समय आने पर परमेश्वर ने इस्राएल और यहूदा दोनों पर शासन करने को उसके लिए मार्ग खोल दिया।

ऐसे भी समय थे जब दाऊद का जीवन खतरे में था। राजा शाऊल उसे मार डालना चाहता था। उसका अपना बेटा भी उसके प्राण का खोजी था। उन समयों में, दाऊद ने स्वयं को परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया था। परमेश्वर ने उसके जीवन को बचाया था। एक सामर्थी योद्धा होने पर भी दाऊद बुढ़ापे में मरा; परमेश्वर की ओर से

आशीषित होकर दाऊद ने परमेश्वर के हाथ को उसके जीवन को बचाते देखा था।

यद्यपि उसकी अगुवाई मूल रूप से संघर्ष पूर्ण थी, तौभी परमेश्वर की योजना से दाऊद राजा बना। प्रभु द्वारा उसे एक के बाद दूसरी विजय दिये जाने के कारण वह एक महान व महिमावान राजा बना। परमेश्वर ने उसे एक राजा के गौरव व प्रताप को दिया। उसने अपने राजा के पद को परमेश्वर की ओर से एक उपहार के रूप में जाना था। उसकी प्रसिद्धि, महिमा और धन सभी परमेश्वर की ओर से दान थे। वह इसे कभी नहीं भूला।

अपने संपूर्ण शासन में दाऊद प्रभु की उपस्थिति में आनन्दित रहा था। (पद 6)। परमेश्वर दाऊद के निकट था। युद्ध में जाने पर दाऊद जानता था कि परमेश्वर भी उसके साथ गया है। जीवन में महत्वपूर्ण निर्णयों का सामना करने पर, दाऊद जानता था कि उसे अकेले उन निर्णयों को नहीं लेना था। दाऊद परमेश्वर की उपस्थिति को जानता था और इसी कारण उसका हृदय आनंद से उछलता था। प्रत्येक दिन को पाना और यह जानना कितनी अनोखी आशीष है कि प्रभु हमारे साथ है पूरे दिन वह हमारे साथ चलेगा। परमेश्वर ने दाऊद का पक्ष क्यों लिया ? पद 7 में दाऊद हमें बताता है कि इसका कारण उसका अविश्वसनीय प्रेम था। परमेश्वर ने दाऊद को आशीष दी थी, इसलिए नहीं कि वह आशीष पाने के योग्य था, परन्तु इसलिए क्योंकि वह उससे प्रेम करता था। दाऊद के जीवन में ऐसे भी समय थे जब वह गहरे पाप में गिरा। इन समयों में भी परमेश्वर का प्रेम उसके लिए अविश्वसनीय रहा था। दाऊद ने परमेश्वर के उस प्रेम पर भरोसा किया था। वह जानता था कि चाहे कुछ भी क्यों न हो, परमेश्वर का प्रेम उसे बनाए रखेगा ताकि वह हिलाया न जाए।

दाऊद को भरोसा था कि परमेश्वर उसके शत्रुओं से निपटेगा। ऐसा एक भी शत्रु नहीं था जिस पर परमेश्वर विजयी नहीं हो सकता था। एक अग्निमय भट्टी के समान परमेश्वर दाऊद के सभी शत्रुओं को भस्म कर देगा। हमारे द्वारा सामना किये जानेवाले शत्रु सदैव लोग नहीं नहीं होते हैं। मेरे सबसे बड़े शत्रु मेरे भीतर रहते हैं। ये शत्रु मुझे उस तरह से सेवकाई को करने से रोकते हैं जैसी मुझे करनी चाहिए। परमेश्वर घमण्ड, लालसा, गलत व्यवहार या हमारे और परमेश्वर द्वारा हमें दी जानेवाली विजय के बीच खड़े होनेवाली किसी भी चीज़ से निपटने के योग्य है। यह जानना कितना सुविधाजनक है कि परमेश्वर हमारी देह में रहने वाले पाप से बड़ा है। अपनी महिमा के लिए वह प्रत्येक शत्रु पर विजय पाने के योग्य है।

पद 10 में दाऊद हमें स्मरण करता है कि परमेश्वर न केवल हमारे शत्रुओं का नाश करेगा परन्तु वह उनके वंश का भी नाश करेगा। कई बार एक पेड़ को काट दिये जाने पर, उसकी जड़ में से एक शाखा निकलकर दूसरे पेड़ का रूप ले लती है। हमारे शत्रुओं से निपटते समय, वह ऐसा इस तरह से करता है कि पुरानी जड़ से कोई शाखा न निकलने पाए। वह शत्रु को तब तक भस्म करेगा जब तक कि इस बात की आशा न रहे कि उसकी संतान हमें पुनः कष्ट देगी। परमेश्वर पूरी तरह से कार्य करता है।

परमेश्वर हमारे विरोध में शत्रु द्वारा बनाई गई योजनाओं को मिटा डालेगा (पद 11)। वह उनकी योजनाओं को निष्फल करेगा ताकि वे सफल न हो सकें। परमेश्वर हमारे शत्रु पर अपने तीरों को चलाएगा। ताकि वे हमारी ओर पीठ करके अपने जीवनों के लिए भागें।

परमेश्वर ने दाऊद को जो अद्‌भुत विजयें दी थीं उनके लिए उसने परमेश्वर की बड़ाई की। परमेश्वर की उपस्थिति और उसके अद्वितीय प्रेम के लिए दाऊद उसके नाम को ऊंचा उठाता है। वह प्रभु परमेश्वर की सामर्थ और शक्ति की बड़ाई गाने को स्वयं को समर्पित करता है। दाऊद ने परमेश्वर के जिस अनुग्रह का अनुभव पाया था वह परमेश्वर के अविश्वसनीय प्रेम का फल ही था। अपने जीवनों में पीछे देखने पर, हमें परमेश्वर द्वारा हम पर उसके अद्वितीय प्रेम और अनुग्रह को दिखाए जाने के लिए आश्चर्य करना चाहिए। काश कि हमारी प्रतिक्रिया भी दाऊद के समान हो।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर ने आप पर कौन सी आशीषें बरसाई हैं?
- पिछले सप्ताह परमेश्वर ने आपको अपनी उपस्थिति का आभास कैसे कराया था?
- परमेश्वर ने आपको कौन सी विशिष्ट जय दी हैं?
- आपके जीवन में प्रभु की आशीषों के प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया रही है?
- अपनी सेवकाई में कदम बढ़ाने हेतु आपको इस भजन से क्या प्रोत्साहन मिलता है?

प्रार्थना के लिए: :

- अपने जीवन में आपको अभी किन 'शत्रुओं' पर जय पानी है? प्रभु से पूर्ण विजय पाने के लिए कहें।
- आपके जीवन ओर सेवकाई में प्रभु की उपस्थिति के विशिष्ट प्रमाण के लिए धन्यवाद दें।
- कुछ संमय के लिए प्रभु को उसके अविश्वासनीय प्रेम के लिए धन्यवाद दें। धन्यवाद दें कि जब हम इस प्रेम के योग्य भी नहीं होते तब भी यह नहीं मिटता।

22 तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?

पढ़ें भजन संहिता 22:1-31

यदि हम ईमानदारी से कहें, तो ऐसे समय होते हैं जब परमेश्वर दूर प्रतीत होता है। दाऊद उन समयों में से एक में था। वह दुख और संकट का सामना कर रहा था और बेशक उसने परमेश्वर को पुकारा था, तौभी उसे कोई उत्तर नहीं मिला था। उसने छोड़े जाने या अकेलेपन का अनुभव किया था।

पद 1 में वह कहता है: ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है?'' यीशु ने क्रूस पर से ये शब्द कहे थे। उसे भी ऐसा लगा था कि पिता ने उसे छोड़ दिया है। जिस समय यीशु ने हमारे पाप को अपने कंधों पर ले लिया था, उस समय पिता ने अपना मुँह उससे फेर लिया था। विश्वासी के लिए परमेश्वर द्वारा छोड़े जाने के भाव से भयंकर और कोई चीज़ नहीं होती। बहुत से लोगों ने आनंद से अपने जीवनों को न्यौछावर कर दिया है। इन लोगों को उस समय में परमेश्वर की उपस्थिति के भाव से शक्ति मिली थी। यीशु को क्रूस पर मारे जाने के समय में पिता की उपस्थिति का आभास नहीं हुआ था।

दाऊद जीवन के ऐसे ही क्षण का अनुभव कर रहा था। उसने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति के प्रमाण का आभास नहीं था। दाऊद अपने दुख में दिन और रात पुकारता रहा था, परन्तु स्वर्ग से कोई जवाब नहीं आया था। उसे परमेश्वर के होने पर कोई संदेह नहीं था न ही उसे परमेश्वर के नियंत्रण में होने पर संदेह था। पद 3 में यह कहे जाने पर उसने व्यक्ति किया: ''तू जो इस्राएल की स्तुति के सिंहासन पर विराजमान है।'' ऐसा कहते हुए उसने तीन दार्शनिक सच्चाइयों को अंगीकार किया। पहला, परमेश्वर है। दूसरा, कि परमेश्वर सिंहासन पर बैठा है और पृथ्वी पर होने वाली घटनाएं उसके नियंत्रण में हैं। तीसरा, कि परमेश्वर पूरी तरह से पवित्र और बुराई से दूर है। इस तरह से वह स्तुति के योग्य है। ये तीन सत्य दाऊद के लिए प्रोत्साहनजनक थे। तौभी, समस्या इसमें नहीं थी। समस्या वास्तव में इसमें थी कि दाऊद व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर की उपस्थिति को अनुभव नहीं कर रहा था।

सिद्धान्तों पर विश्वास करना एक चीज़ है और उन सिद्धान्तों को अपने जीवनों में अनुभव करना दूसरी चीज़ है। दाऊद को पता था कि परमेश्वर वास्तविक है और कि वह नियंत्रण में है। वह जानता था कि इसी परमेश्वर ने उसके लोगों के इतिहास में बहुत से अद्‌भुत काम किये थे? इन छुड़ाए हुओं की कहानियां अद्‌भुत थीं और

प्रोत्साहन को लेकर आई थीं, परन्तु ये वे कहानियां थी जो परमेश्वर ने अतीत में किया था। दाऊद चाहता था कि परमेश्वर उसके दिनों में भी वैसा ही करें। विशेषकर उस समय में जब वह दुखी था। दाऊद के पूर्वजों ने परमेश्वर को पुकारा व उसके छुटकारे को देखा। वे निराश नहीं हुए थे। परमेश्वर ने उनके जीवनों में स्वयं को और अपनी सामर्थ को प्रगट किया था।

ऐसे बहुत से हैं जो उस परमेश्वर को जानते हैं जो दाऊद और प्रेरितों के समय सामर्थी था परन्तु वे अपने दिनों में उस सामर्थ के प्रमाण को देखने की आशा नहीं करते। दाऊद ने अपने मन की गहराई में इस पर विश्वास किया और उसकी परीक्षा के समय में अपनी सामर्थ को प्रगट करने के लिए कहा।

पद 6 में, अपने जीवन के इस समय में दाऊद जिस संघर्ष को अनुभव कर रहा था वह उसे चित्रित करता है। ''मैं तो कीड़ा हूँ, मनुष्य नहीं'' उसने कहा। दाऊद यहां दर्शन विज्ञान नहीं सिखा रहा है।

वह ऐसे समय पर अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रहा है जब उसने निराशा और परमेश्वर द्वारा छोड़े जाने का अनुभव किया था। वह हमें बता रहा है कि उसे लगता है कि वह एक कीड़ा है, जीवन का सबसे निम्न रूप। उसके आसपास के लोगों ने उसे घृणित समझा था। लोग उसकी हंसी उड़ाते व उसका अपमान करते थे (पद 7)। इस छोड़ दिये जाने के समय में वे उसके विश्वास की भी हंसी उड़ाते थे। ''अपने को यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उससे प्रसन्न है'', वे बोले। उस समय पर परमेश्वर दाऊद से दूर प्रतीत होता था। वह अपने स्वयं के विश्वास के संकट को अनुभव कर रहा था। वह आश्चर्य में था कि परमेश्वर उसकी प्रार्थनाओं का जवाब क्यों नहीं दे रहा था। इस आवश्यकता के समय में शत्रु ने उसकी और उसके परमेश्वर की हंसी उड़ाई।

खामोशी के इस समय में, दाऊद उस सत्य से जुड़ा रहा जिसे वह जानता था। प्रभु ने ही उसे जीवन दिया था और उसे माता के गर्भ से बाहर लाया था। प्रभु ने उसे तक पहुंचकर उसे उस पर भरोसा करने का विश्वास दिया कि उसके नाम पर विश्वास करे। अपनी मां का दूध पीने के समय से वह प्रभु को जानता था और उसने उसकी उपस्थिति को अनुभव किया था। उसके पूरे जीवन में, प्रभु ही दाऊद का परमेश्वर रहा था। इस आधार पर वह परमेश्वर से विनती करता है कि उसके संकट के समय में वह उससे दूर न हो। परमेश्वर के सिवाय और कोई भी दाऊद की सहायता नहीं कर सकता था। उसने स्वयं को पूरी तरह से परमेश्वर पर डाल दिया था और उसके जवाब की प्रतीक्षा की थी।

पद 12 में दाऊद हमें बताता है कि बाशन के सांढ़ों ने उसे घेर लिया था। बाशन अच्छे चारागाहों के लिए प्रसिद्ध था। यहेजकेल 39:18 बाशान के तगड़े पशुओं के बारे में बताता है। बाशान के सांढ़ अच्छा भोजन खाते थे और बलवन्त थे। उन्होंने दाऊद के शत्रुओं को प्रस्तुत किया जिन्होंने उसे घेरा हुआ था। दाऊद अपने शत्रु की तुलना

फाड़नेवाले और गरजनेवाले सिंह से भी करता है (पद 13)। वे उसे निगल जाने को अपना मुंह पसारे हुए आए।

दाऊद स्वयं के बारे में पानी के बहे जाने के समान बताता है (पद 14)। भूमि पर पानी बह जाने के बाद किसी काम का नहीं होता। पृथ्वी इसे सोख लेती है। दाऊद को लगा कि उसकी सब हड्डियों के जोड़ उखड़ गए हैं। जोड़ उखड़ जाना न केवल दर्दनाक होता है परन्तु इससे अंग किसी काम का नहीं रहता। दाऊद को ऐसा ही लगा था। उसका हृदय मोम हो गया था। उसके आस-पास के अग्निमय अत्याचार के कारण उसका हृदय भय से पिघल गया था।

उसमें अब साहस नहीं रहा था। दाऊद का बल एक ठीकरे की नाईं सूख गया था। ठीकरा मिट्टी का पुराना पात्र होता है। यह विशिष्ट पात्र टूट व सूख गया था। अब यह स्वामी के काम का नहीं था। पुनः अपने जीवन के इस समय में दाऊद को ऐसा आभास हुआ था। उसे अनुपयोगी, शक्तिहीन होने के साथ-साथ किसी के काम का न होने का अहसास हुआ।

शारीरिक रूप से दाऊद की जीभ उसके तालू से चिपक गई थी। वह एक ऐसे व्यक्ति के समान था जो पानी की कमी को सह रहा हो। वह मिट्टी पर पड़े हुए मरने की प्रतीक्षा कर रहा था। कुत्तों ने उसे फाड़ खाने के लिए घेर लिया था। कुकर्मियों ने उसे घेरा हुआ था। पद 16 में ध्यान दें कि उन्होंने दाऊद के हाथों को छेद दिया था। हमें नहीं बताया गया है कि शत्रु ने दाऊद के हाथों को कैसे छेद दिया था। हमारे लिये यहां पर ध्यान देना महत्पवूर्ण है कि, यीशु मसीह के हाथों को हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय कीलों से छेदा गया था। यह हमें दाऊद के दुख को समझने में सहायता करता है। दाऊद भविष्यवाणी के रूप में बता रहा था कि यीशु हमारे लिए क्या दुख उठाएगा। हमारे लिए क्रूस पर टांगे जाने के समय उसने वही अनुभव किया जो दाऊद ने किया था।

पद 17 में दाऊद हमें बताता है कि वह अपनी सारी हड्डियां गिन सकता है और लोग उसे घूर कर देखते थे। यह उस समय पर उसके दुख की गहराई थी।

पद 18 में हम प्रभु यीशु के लिए अन्य भविष्यवाणी के हवाले को देखते हैं। इस पद में दाऊद अपने शत्रुओं द्वारा उसके वस्त्रों के बांटे जाने व उन पर चिट्ठी डालने के बारे में बताता है। मत्ती 27:35 हमें बताता है कि उन्होंने यीशु के साथ इसी कारण ऐसा किया था। एक बार पुनः दाऊद भविष्यवाणी के द्वारा हमें बताता है कि यीशु को हमारे लिए किससे होकर गुज़रना पड़ेगा। जो कुछ हो रहा था उसके बारे में यह असभव जान पड़ता है कि दाऊद इसे जानता था। ऐसे समय भी होते हैं जब प्रभु उसके महत्व को छिपा लेता है जिसका सामना हम कर रहे होते हैं। तौभी, दाऊद के दुख बिना किसी कारण के नहीं थे। विश्वासी यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद पलटकर इस ओर देखेंगे जो दाऊद ने ऐसे समय से गुजरते हुए कहा था। वे परमेश्वर पर अपने विश्वास और भरोसे में प्रोत्साहित हुए

होंगे जब उन्होंने देखा कि ये भविष्यवाणियां यीशु में कैसे पूरी हुईं।

जिस दुख और दर्द से होकर दाऊद जी रहा था, उस सबके बावजूद, उसका विश्वास बना रहा। पद 19 में वह परमेश्वर को पुकार उठा, ''परन्तु हे यहोवा तू दूर न रह। हे मेरे सहायक, मेरी सहायता के लिए फुर्ती कर। इस समय में भी, जबकि परमेश्वर दूर प्रतीत होता है, उसकी आशा परमेश्वर में है। दाऊद का बल घटता जा रहा है इसी कारण वह परमेश्वर से फुर्ती से सहायता करने को कहता है। वह परमेश्वर को उसे तलवार और शत्रु के कुत्तों से बचाने को पुकारता है जो उसे निगल जाना चाहते हैं। सिंहों के मुँह और जंगली सांढों के सींगों से छुटकारा पाने को उसने परमेश्वर को पुकारा (पद 21)। वह यहां अपने शत्रुओं की तुलना सिंहों और जंगली सांढों से करता है जो अपने शक्तिशाली सींगों से उसके पीछे पड़े हैं।

यद्यपि परमेश्वर दूर प्रतीत हो रहा था, तौभी दाऊद जानता था कि वह उसे नहीं छोड़ेगा। पद 22 में, उसने पाठकों को स्मरण कराया कि वह दिन आएग जब वह अपने प्रभु परमेश्वर का नाम सभा में अपने भाइयों के बीच घोषित करेगा। अन्य शब्दों में, वह दिन आ रहा था जब दाऊद मन्दिर में जहाँ उसके भाई इकट्ठे होते थे, परमेश्वर की भलाई की गवाही देगा। वह उन्हें प्रभु परमेश्वर की विजय के बारे में बताएगा। वह अपने भाइयों के साथ प्रभु परमेश्वर की प्रशंसा करेगा।

अपनी परीक्षा में, दाऊद प्रभु की प्रशंसा करने और उसके नाम को आदर देने के लिए सारे इस्राएल को बुलाता है। उनका परमेश्वर आदर और स्तुति के योग्य है। इस कथन को शक्तिशाली बनाने वाली चीज़ यह सच्चाई है कि दाऊद अपनी समस्याओं से संघर्ष करते समय यह कह रहा है। वह अपने छुटकारे के लिए विश्वास में होकर आगे देखता है। उसे पता है कि जबकि वर्तमान समय में दर्द असहनीय है, परमेश्वर उसकी सहायता के लिए आएगा। दाऊद का परमेश्वर दुखी लोगों से अपना मुँह नहीं मोड़ेगा। परमेश्वर सहायता के लिए की गई उसकी पुकार को सुन रहा था।

पद 25 में, दाऊद अपने प्रण को प्रभु के लिए पूरा करने की प्रतिज्ञा करता है। हमें नहीं बताया गया है कि दाऊद यहां किस प्रण के बारे में बोल रहा है, परन्तु हम निश्चित हों सकते हैं कि वे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में रहने और उसकी सेवा करने के लिए प्रण लेते थे।

दाऊद जानता था कि वह दिन आ रहा था जब दरिद्र संतुष्ट होंगे। परमेश्वर को खोजने वाले उसके प्रबन्ध और विजयों के लिए उसकी स्तुति करेंगे। वह दिन आ रहा था कि जब पृथ्वी के सब दूर-दूर देशों से लोग प्रभु की ओर फिरेंगे और जाति-जाति के सब कुल उसके सामने दण्डवत करेंगे। (पद 27)। यह फिर से प्रभु यीशु के संदर्भ में है उसकी उस विजय के बारे में जो वह मृत्यु के बाद पाएगा। वह दिन आ रहा था जब संसार के सब धनी लोग इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की आराधना करेंगे। वास्तव में वे सब जो मर गए हैं वे भी परमेश्वर के सामने घुटने टेकेंगे। प्रेरित पौलुस ने फिलिफियों 2:10-11 में लिखते हुए बताया कि ऐसा होगा:

कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेंके और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

दाऊद को निश्चय है कि भावी पीढ़ी प्रभु परमेश्वर के सामने झुकेगी। सारी पीढ़ी को प्रभु के आश्चर्यकर्मों के बारे में बताया जाएगा और जो अभी जन्में भी नहीं हैं उन्हें उसके धार्मिकता के कार्यों के बारे में बताया जाएगा। अन्य शब्दों में, आपके और मेरे समान लोग परमेश्वर की भलाई को सुनेंगे और उसकी स्तुति करेंगे।

इस भजन में हम देखते हैं कि दाऊद को कितने निम्न स्तर पर लाया गया है। परमेश्वर दूर प्रतीत होता है और दाऊद शारीरिक और भावनात्मक रूप से दुखी है। परमेश्वर हमें कुछ अद्‌भुत चीज़ दिखाने को दाऊद के दर्द का प्रयोग करता है। अपने दुख के द्वारा दाऊद भविष्यवाणी के रूप में हमें दिखाता है कि यीशु को क्या सामना करना होगा। अपने दर्द के माध्यम से, दाऊद सामर्थी रूप से मसीहा के बारे में बोलता है जिसका अभी जन्म होना था और जिसे हमारे लिए दुख उठाना था।

जबकि दाऊद परमेश्वर की उपस्थिति को न देख पा रहा था और न ही अनुभव कर पा रहा था, भजन से यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर स्पष्ट रूप से उसके साथ था। प्रभु यीशु की भविष्यवाणी और जो दुख उसे उठाने थे यह हमें दिखाता है कि परमेश्वर अपने उद्देश्य को प्रगट करने के लिए दाऊद में कार्य कर रहा था। हम प्रभु परमेश्वर की बल देने वाली उपस्थिति के प्रमाण को भी देखते हैं कि दाऊद को उसके दर्द के बीच में भी कैसे परमेश्वर ने आशा और भरोसा दिया। दाऊद की आंखें परमेश्वर पर से नहीं हटीं। वह परमेश्वर को पुकारता और पूरे हृदय से उसकी खोज करता रहा। पुनः इसे करने का बल और आशा न खोना इस बात का संकेत है कि परमेश्वर ने भजनकार को नहीं छोड़ा था। बेशक इस समय में दाऊद परमेश्वर देख व अनुभव न कर सका था, परमेश्वर की उपस्थिति ही उसे विजय तक लेकर गई थी।

विचार करने के लिएः

- क्या आपको कभी परमेश्वर द्वारा छोड़े जाने का अनुभव हुआ है? इस भजन में हमें क्या प्रोत्साहन मिलता है।
- परमेश्वर अपनी महिमा के लिए दाऊद के दुख और दर्द को कैसे प्रयोग करता है?
- इस भजन में प्रभु यीशु के कौन से संदर्भ मिलते हैं?
- क्या मसीही निराशा और हतोत्साहित होने का अनुभव कर सकते हैं? इस भजन में हमारा बल क्या है?
- क्या परमेश्वर हमारे उसकी उपस्थिति को जाने बिना उपस्थित हो सकता है? जब हम देख या अनुभव नहीं कर सकते तब सत्य की क्या भूमिका होती है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें, कि चाहे कुछ भी क्यों न हों; वह नियंत्रण में है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि जिस दुख व दर्द का आप सामना कर रहे हैं उसका प्रयोग वह महान भलाई को पूरा करने में कर सकता है।
- जीवन में चाहे कुछ भी क्यों न हो प्रभु की सेवा करने के लिए स्वयं को नये रूप से सौंपें। उस अद्‌भुत आशा के लिए उसे धन्यवाद दें जो हमारी उसमें है।
- कुछ समय के लिए प्रभु को इस पृथ्वी पर आकर हमारे लिए दुख उठाने को धन्यवाद दें जैसी भविष्यवाणी दाऊद द्वारा इस भजन में की गई है।
- क्या आप एक ऐसे स्थान में हैं जहां आपको प्रभु की उपस्थिति अनुभव नहीं होती? परमेश्वर को उस समय में भी उस पर भरोसा करने को आपको बल देने के लिए कहें जब आप उसकी उपस्थिति को देख या अनुभव नहीं कर सकते हैं।

23. प्रभु मेरा चरवाहा है

पढ़ें भजन संहिता 23:1-6

दो तिहाई भजन संभवत: दाऊद द्वारा लिखित जाने-जाने भजन है। इस में दाऊद प्रभु परमेश्वर की तुलना एक चरवाहे के रूप में और अपनी एक भेड़ के रूप में करता है जो उसकी देख रेख में है। आइये इस भजन में चरवाहे की भूमिका की ओर देखने के द्वारा आरम्भ करें।

चरवाहा प्रबन्ध करता है

दाऊद हमें बताता है कि एक चरवाहा होने के कारण, प्रभु प्रबन्ध करता है। चरवाहे का प्रबन्ध इस तरह से होता है कि भेड़ को कुछ करने की ज़रूरत नहीं होती। चरवाहा अपनी भेड़ों को जानता है और उनकी सुरक्षा व आराम की प्रत्येक चीज़ का प्रबन्ध करता है। भेड़ की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी चरवाहे की होती है। परमेश्वर ने इस भूमिका को लिया है। वह हमारी सारी आवश्यकताओं को पूरा करने की प्रतिज्ञा करता है। एक अच्छा चरवाहा होने के कारण परमेश्वर अच्छी तरह से हमारी ज़रूरतों को जानता है और यह ज़िम्मेदारी लेता है कि हमारे पास बढ़ोत्तरी आराम और सुरक्षा के लिए आवश्यक सब कुछ है। हो सकता है कि अपनी ज़रूरत के बारे में हम हमेशा परमेश्वर के साथ सहमत न हों। तौभी, एक अच्छा चरवाहा होने के कारण, वह हमें हमसे अधिक अच्छी तरह से जानता है।

वह भेड़ को आराम देता है

चरवाहे की दूसरी भूमिका भेड़ों की हरी चरागाहों में अगुवाई करने की है। इस पर ध्यान दें कि अच्छा चरवाहा भेड़ों को इन चरागाहों में ले जाता है। यह शांति और आराम का चित्र है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारे जीवन में हमें कोई कठिनाई नहीं होगी। कई बार उस समस्या के कारण ऐसा होगा कि परमेश्वर हमें उन हरी कारण हरी चरागाहों में ले जाएगा। इस समय में जीवन के दबावों के कारण हम परास्त व थका हुआ अनुभव करते हैं। यीशु आराम की इस ज़रूरत को समझता है। मत्ती 11:28-29 में यीशु ने हमें बताया है:

हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।

परमेश्वर के हमारा चरवाहा होने पर हम जीवन की चिन्ता और तनावों से आराम पाते हैं। उसमें हमारा मन नया और ताज़ा होता है। मेरे अपने व्यक्तिगत जीवन में ऐसे समय रहे हैं जब मैं उस आराम को लेना नहीं चाहता था। मैं चीज़ों के पीछे भागना और परमेश्वर से आगे दौड़ना चाहता था। मैंने परमेश्वर की मुझे वापस उस आराम के स्थान में बुलाने वाली आवाज़ को भी सुना था।

इस पर भी ध्यान दें कि आराम का स्थान हरी चरागाहों में होता है। हम सभी के आत्मिक मरूस्थलों में भटकने के समय होते हैं। हरे चरागाह वह स्थान होते हैं जहां हम तृप्त होते व ताज़गी पाते हैं। ऐसे बहुत से हैं जो यह विश्वास करते हैं कि मसीही जीवन निरन्तर संघर्ष और इन्कार करने वाला है। यह परिच्छेद हमें दिखाता है कि परमेश्वर की हमें आशीष देने और इन भरपूर चरागाहों में आराम देने में रुचि है।

चरवाहा अपनी भेड़ों की अगुवाई करता है

पद 2 में, हम यह भी देखते हैं कि चरवाहे की भूमिका अपनी भेड़ों की अगुवाई करना है। दाऊद हमें बताता है कि प्रभु हमें शांत के पास से लेकर जाता है। इस जीवन में बहुत संकट पूर्ण (झरने) होते हैं। शांत जल शांति का स्थान होता है। चरवाहे को अपनी भेंड़ों को संकट व भय में देखकर खुशी नहीं होती। ऐसा होने पर वह इस भय को शांत करने के लिए अपनी शक्ति से सब कुछ करेगा।

परिच्छेद हमें बताता है कि चरवाहा अपनी भेड़ों का उस मार्ग में लेकर जाता है जो उनके लिए भला होता है। हमें हमारे जीवन में परमेश्वर की अगुवाई से भयभीत होने की ज़रूरत नहीं हैं पानी के थम जाने पर भी वह हमारी अगुवाई करेगा। इसका अर्थ यह नहीं कि चीज़ें सदैव सरल होंगी तथापि परमेश्वर का अनुग्रह प्रत्येक कार्य के लिए पर्याप्त होगा और जीवन के संघर्षों के बीच में भी, हम उसके आराम और इस आश्वासन के शांत जल को अनुभव कर सकते हैं कि सब कुछ सही है, चरवाहा अपनी भेड़ों को लौटा लाता है।

हमारे लिए मसीह जीवन में संकट और निराशा के समय होंगे। कई बार भेड़िये चारागाह में आकर भेंड़ों पर हमला करते हैं। एक अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ के घायल हो जाने पर उसके स्वास्थ्य को लौटा लाने के लिए जो कुछ संभव हो सके करेगा। परमेश्वर हमें चंगा करने के लिए संभव हो सके, करेगा। परमेश्वर हमें चंगा करना या लौटा लाना चाहता है। इस पद में विशिष्ट रूप से ध्यान दें कि चरवाहे को अपनी भेड़ों के प्राणों की चिन्ता रहती है। वह चाहता है कि उनके प्राण अच्छी दशा में हों और उनके स्वास्थ्य को लौटा लाने के लिए वह जो संभव हो, करता है।

चरवाहा भेड़ों का मार्गदर्शन करता है

अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों का मार्गदर्शन उस ओर काता है जिसमें उन्हें जाना चाहिए। अपनी भेड़ों का मार्गदर्शन धार्मिकता के मार्गों में करता है। हमारे दिनों में प्रभु ने धार्मिकता में हमारा मार्गदर्शन करने को हमें पवित्र आत्मा दिया है। परमेश्वर कभी

भी हमें विनाश की ओर लेकर नहीं जाएगा। वह हमारी अगुवाई हमेशा उस ओर करेगा जो भला और पवित्र है। यह जानते हुए हम पहचान कर सकते हैं कि अगुवाई परमेश्वर की ओर से है या नहीं। परमेश्वर सदैव हमारी अगुवाई धार्मिकता और पवित्रता में करेगा।

जैसा हमसे पहले भी कहा गया है, इसका अर्थ यह नहीं कि जिस मार्ग पर हम चलेंगे वह सरल होगा कई बार धार्मिकता का मार्ग बहुत कठिन होता है। यह कई बार पथरीले पर्वतों वाला होगा। अन्य समयों पर यह मृत्यु की तराई से होकर जाएगा। यह एक अंधकारमय व ठण्डा मार्ग है। परमेश्वर तराई में भी हमारे साथ जाने की प्रतिज्ञा करता है। इस भयानक तराई में भी भेड़ों को डरना नहीं है।

चरवाहे की लाठी से भेड़ों की अगुवाई सुरक्षित रूप से की जाती है। भेड़ों के अपने मार्ग से भटक जाने पर लाठी उन्हें सही स्थान पर लाती है। लाठी उन्हें पीछे लेकर आएगी। परमेश्वर के अनुशासन की लाठी को हम पसंद नहीं करते हैं। तथापि, यह सदैव हमारी भलाई के लिए होती है। हमें प्रभु के अनुशासन और सुधार कार्य को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। इसके द्वारा परमेश्वर हमें सिखाता है कि क्या सही है और बुराई से हमें बचाता है। प्रभु के अनुशासन को हमें अपने आराम के रूप में देखना चाहिए। क्योंकि यह हमें दिखाता है कि परमेश्वर हमें पाप से बचाने में रुचि रखता है। हमारे दूर भटक जाने पर वह हमें लौटा ले आएगा। वह हमेशा हमें देख रहा है।

चरवाहा सदैव अपनी भेड़ों का आदर करता है। पद 5 में दाऊद हमें बताता है कि प्रभु ने उसके शत्रुओं की मौजूदगी में उसके लिए एक मेज़ तैयार की है। प्रभु अपनी भेड़ों को जानता है। उनके शत्रुओं की मौजूदगी में वह उनको आदर देगा। वह उन्हें अलग करके अपनी मेज़ के लिए बुलाता है। वे उसके साथ बैठकर उसकी दावत का आनन्द उठाते हैं। शत्रु घृणा से देखते हैं। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों का सिर तेल से अभिषिक्त करता है। ऐसा करके वह उन्हें पवित्र लोगों के रूप में अलग करता है। परमेश्वर अपनी भेड़ों से प्रेम करता है और सबसे अधिक उन्हें आशीष देता है। उनके जीवन की विशेष आशीषों के कारण उनका कटोरा उमण्ड रहा है।

दाऊद यह कहते हुए समाप्त करता है कि चूंकि प्रभु उसका चरवाहा है, इसी कारण भलाई और प्रेम उसके जीवन के प्रत्येक दिन में उसके पीछे चलेंगे। परमेश्वर उन सभी को जो उसके हैं आशीष देता, सुरक्षा करता व प्रेम करता है। वह उन पर दया और करुणा दिखाता है। अन्ततः वह अपनी भेड़ों को अपने घर लेकर जाता है जहां वे उसके साथ हमेशा तक रहेंगी। भेड़ें इन आशीषों के योग्य नहीं हैं परन्तु चरवाहा किसी न किसी तरीके से उन पर इन्हें बरसाता है।

अपने जीवनों में परमेश्वर के अद्‌भुत प्रबन्ध, मार्गदर्शन और समर्थन को जानना कितनी बड़ी आशीष है। एक अच्छा चरवाहा होने के कारण प्रभु हमारी देखभाल करेगा और हमारी प्रत्येक ज़रूरत को पूरा करेगा। हम उस पर पूरी तरह से भरोसा कर सकते हैं। उसकी सुरक्षा हमें घेरे रहेगी। उसका प्रबन्ध हमें भर देगा। उसकी आशीषें

हम पर उण्डेली जाएंगी। वह अपनी भूमिका को गंभीरता से लेता है। उसकी भेड़ होना कितने आदर की बात है।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर आपकी ज़रूरतों को कैसे पूरा करता है?
- यह परिच्छेद हमें विश्राम के बारे में क्या बताता है? विश्राम क्यों महत्वपूर्ण है?
- क्या आप ऐसे समय को जानते हो जब आप मृत्यु की घाटी से होकर गुज़रे थे? उस समय परमेश्वर कहाँ था?
- परमेश्वर का अनुशासन हमारे आराम के लिए कैसे है?
- परमेश्वर आपके मन को कैसे लौटाता या चंगा करता है? यह परिच्छेद परमेश्वर की हमारे मन को चंगा करने की इच्छा के बारे में क्या बताता है।

प्रार्थना के लिए:

- अपने जीवन में परमेश्वर की अगुवाई के लिए उसे धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से आपको भागदौड़ और चिन्ता से बचा कर रखने को कहें। उससे कहें कि आप को उस पर पूरी तरह से विश्राम करने में समर्थ करे।
- परमेश्वर के साथ उसकी संतान के रूप में एक अद्‌भुत संबन्ध होने के लिए कुछ समय उसे धन्यवाद देने का निकालें।
- परमेश्वर को उन समयों के लिए आपको क्षमा करने को कहें जब आप उसकी उन बातों के लिए सराहना नहीं कर पाए थे जो वह आपके लिए कर रहा है।

24. अपने हाथ उंचे उठाओ

पढ़ें भजन संहिता 24:1-10

दाऊद इस भजन का आरम्भ प्रभु परमेश्वर के प्रति प्रशंसा के शब्द कहते हुए करता है। वह अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि पृथ्वी और जो कुछ उसमें है परमेश्वर का ही है। वह ऐसा इस सच्चाई के आधार पर कहता_है कि प्रभु ने संसार की नींव समुद्रों पर रखी और जल के ऊपर इसे स्थिर किया। अन्य शब्दों में, परमेश्वर ने भूमि के टुकड़े को इस तरह से रखा कि यह समुद्र से उठाए जाकर फलवन्त हो, जीवन देने के योग्य। क्योंकि परमेश्वर ने इस ब्रह्मण्ड को रचा व क्रमबद्ध किया है और इसमें पाई जानेवाली प्रत्येक चीज़ उससे संबन्धित है।

यह एक सबसे महत्वपूर्ण कथन है। यदि प्रत्येक चीज़ परमेश्वर से संबन्धित है तो इसे इसके साथ जैसा चाहे वैसा करने का अधिकार है। यदि हम परमेश्वर के हैं, तो हमें उसे हमारे जीवनों में जैसा चाहे वैसा करने का अधिकार देना चाहिए। हमें हमारे लिए नहीं परन्तु परमेश्वर के लिए बनाया गया है। हम केवल तब ही किसी अर्थ या उद्देश्य को प्राप्त कर पाएंगे जब हम जान जाएंगे कि हम परमेश्वर के हैं और हमारे जीवनों के लिए उसके उद्देश्यों के प्रति समर्पण करेंगे।

यह कहते हुए कि हरेक चीज़ परमेश्वर से संबन्धित है और वही सब चीज़ों का रचयिता और बनाए रखनेवाला है, दाऊद अब एक ऐसे संबन्ध के बारे में कहने को आगे बढ़ता है जो हमारा उसके साथ हमारे सृष्टिकर्त्ता और परमेश्वर के रूप में हो सकता है। वह प्रश्न करता है: ''यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा हो सकता है?'' (पद 3)

दाऊद ने विश्वास किया कि परमेश्वर के साथ एक संबन्ध संभव था। तौभी, वह हमें चिताता है कि कोई भी उसके सामने खड़ा नहीं हो सकता है। आइये कुछ समय के लिए उस तरह के व्यक्ति पर विचार करें जो परमेश्वर के पास पहुँच सकता है।

साफ हाथ और शुद्ध हृदय

केवल वही जिनके साफ हाथ और शुद्ध हृदय है परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े हो सकते हैं। साफ हाथ एक अच्छे और धर्मी जीवन को प्रस्तुत करते हैं। इन हाथों ने ऐसा कुछ नहीं किया होता जो उस व्यक्ति को दूषित करे। उनके हाथ इस भाव में साफ थे कि उनका प्रयोग अच्छे और धर्मी कार्यों के लिए किया गया था। इस पर भी ध्यान दें कि न केवल हाथ साफ हैं परन्तु हृदय भी। हृदय में विचार रूप लेते हैं। शुद्ध

हृदय वाले का रवैया और प्रेरणा धर्मी होते हैं। शुद्ध हृदय वाला व्यक्ति न केवल परमेश्वर के साथ अपने कार्यों में सही रहता है परन्तु विचार और रवैये में भी। अन्य शब्दों में, यह व्यक्ति ईमानदार होने के साथ-साथ परमेश्वर के सामने कार्य और व्यवहार में सही होता है।

केवल परमेश्वर को खोजना

इस शुद्धता को इस सच्चाई में देखा जा सकता है कि इन्होंने अपने मन को मूर्ति की ओर नहीं उठाया है। वे किसी और देवता के सामने नहीं झुके। उनके परमेश्वर ने उनके हृदयों और इच्छाओं को पकड़ लिया है। वे केवल उसे ही खोजते हैं और वैसे ही जीते हैं जैसे वह उन से चाहता है।

झूठ से शपथ नहीं खाना

पद 4 में ध्यान दें कि परमेश्वर के सिंहासन तक वही व्यक्ति पहुंच सकता था जिसने कपट से शपथ नहीं खाई। अन्य शब्दों में, यह व्यक्ति अपने आस-पास के लोगों के साथ लेन-देन करने में ईमानदार रहा था। आप ऐसे व्यक्तियों के शब्दों पर भरोसा कर सकते हैं और जान सकते हैं कि जो कुछ उन्होंने कहा सत्य था। यह व्यक्ति सत्य के पक्ष में खड़ा रहा और सत्य को बिगड़ने के लिए विपरीत दुख उठाने को तैयार था।

यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से आशीष और समर्थन प्राप्त करेगा। समर्थन (निर्दोष ठहराना) शब्द का प्रयोग बाइबल के नये अंतर्राष्ट्रीय संस्करण में न्याय या उद्धार के भाव में हुआ है। परमेश्वर इस तरह के व्यक्ति का आदर करेगा और अपने नाम में उनका न्याय करेगा। इन व्यक्तियों को न केवल पवित्र पर्वत पर चढ़ने का अधिकार दिया जाएगा, परन्तु परमेश्वर उनकी ज़रूरत के समय में उन्हें आदर देगा और उनका बचाव करेगा।

वे, जो परमेश्वर के लिए जीते हैं, यह जानते हुए कि उनके जीवन और संपत्ति सब परमेश्वर का है, वह उसे प्रसन्नयोग्य जीवन जीते हैं। ऐसा करने पर वे प्रभु की आशीष को जानेंगे। और उनकी ज़रूरत के समय में वह उनकी सुरक्षा करेगा।

हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने मन केवल प्रभु परमेश्वर और उसके मुंह की खोज करने के लिए लगा दे तो हमारा शहर या नगर कैसा होगा। अपने सभी मार्गों से परमेश्वर को आदर न देने के कारण हम कितनी ही आशीषों से वंचित हो गए हैं? कई बार हम मानते हैं कि हम अपने जीवनों और अपनी संपत्ति के साथ जैसा चाहे वैसा कर सकते हैं। दाऊद हमें स्मरण कराता है कि प्रत्येक चीज़ प्रभु की है और हमें किसी भी चीज़ के साथ कुछ करने का अधिकार नहीं है। परमेश्वर के स्वामित्व और सभी चीज़ों पर उसके अधिकार तथा उसे इसे समर्पित करने को स्मरण करके ही हम उसके होने और उसके मार्गों पर चलने के आनंद व आशीष को जान सकते हैं।

पद 7 में दाऊद अपने हृदय से पुकारता है:

हे फाटको, अपने सिर ऊँचे करो। हे सनातन के द्वारा, ऊँचे हो जाओ! क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।

दाऊद के हृदय की पुकार यही थी कि उस का शहर महिमा के इस अद्‌भुत राजा को ग्रहण करे। वह फाटकों और प्राचीन द्वारों को अपने सिर ऊँचे करने और आशा के साथ परमेश्वर की प्रतीक्षा करने को कहता है। उन्हें अपने सांसारिक मार्गों से अपने सिरों को ऊपर करना था, अपनी गलतियों का अंगीकार करके प्रभु परमेश्वर की ओर अपने सृष्टिकर्त्ता और उद्धारकर्त्ता के रूप में देखना था। महिमा के राजा को ग्रहण करने के लिए उन्हें अपने हृदयों को विस्तृत रूप से खोलना था। परमेश्वर उनके पास आना चाहता था। वह उन्हें आशीष देना चाहता था।

यह महिमा का राजा कौन है जो उनके पास आना चाहता था? दाऊद यह स्पष्ट करता है कि वह महिमा का राजा सामर्थी और युद्ध में पराक्रमी परमेश्वर के अतिरिक्त और कोई नहीं है। वह महान बचाने वाला है। वह प्रभुओं का प्रभु है। उसे एक मिलिट्री कमांडर और पराक्रमी योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है। वह विजय देने व अपने लोगों को बचाने के लिए आता है। वह सर्वशक्तिमान प्रभु है। कोई भी शत्रु उसके सामने खड़ा नहीं हो सकता।

यह महान योद्धा और सर्वशक्तिमान प्रभु उनका प्रभु और उद्धारकर्ता होना चाहता था। इन आशीषों में एकमात्र बाधक चीज़ उसके लोगों के पाप थे। उसके पास आने के लिए उन्हें अपने हाथों को साफ व हृदयों को शुद्ध करना होगा। उन्हें सारी सृष्टि पर उसके पूरे अधिकार के साथ उसे अपना प्रभु जानने की ज़रूरत होगी। उन्हें परमेश्वर तथा उसके मार्गों के प्रति समर्पण करने की ज़रूरत थी।

प्रभु और उसके मार्गों के प्रति समर्पण करने पर हम किन आशीषों के बारे में जान सकते हैं? दाऊद हमें बताता है कि हम इस अद्‌भुत सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर तक पहुंच सकते हैं। यदि हम परमेश्वर की ओर अपनी आंखें उठाएं और उसकी इच्छा के प्रति अनुभव कर सकते हैं। संपूर्ण पीढ़ी बदल सकती है और प्रभु की आशीष को अनुभव कर सकती है।

अधिकांश समयों में हम परमेश्वर की आशीषों को नहीं जान पाते क्योंकि हम उससे संबन्धित प्रत्येक चीज़ के प्रति समर्पण करना नहीं चाहते। हम हमारे जीवनों के लिए उसके उद्देश्यों की उपेक्षा करने और अपनी मर्ज़ी के अनुसार जीवन जीने का चुनाव करते हैं। हम अपनी संपत्ति से उसे आदर देने की बुलाहट को ग्रहण नहीं कर पाते। इसके विपरीत हम इस संपत्ति को अपना कहते हैं और अपनी इच्छा से इसका प्रयोग करना चाहते हैं। हमारे हाथ साफ नहीं हैं। हमारे हृदय शुद्ध नहीं हैं। हमने परमेश्वर को दुख देने के साथ साथ उसे दूरी पर रखा है। हम प्रभु को अपने जीवनों पर नियंत्रण देने से डरते हैं।

दाऊद हमें बताता है कि केवल आज्ञाकारिता में रहने और प्रत्येक अधिकार को

समर्पित करने पर ही हम पूरी तरह से प्रभु की आशीष और बचाव को जान सकते हैं। परमेश्वर आज हमारे जीवनों में इस स्थान पर आने में हमारी सहायता करने पाए।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर के साथ संबन्ध के बारे में इस परिच्छेद में दाऊद हमें क्या बताता है?
- परमेश्वर की आशीषों से हमें क्या चीज़ दूर रखती है?
- परमेश्वर के पास जानेवालों को क्या करने की ज़रूरत है? परमेश्वर के पास जाने की यह योग्यता प्रभु यीशु हमें कैसे देते हैं?
- प्रभु का पृथ्वी पर क्या अधिकार है? हमारे जीवनों पर हमारा क्या अधिकार है?
- परमेश्वर की खोज करनेवालों के लिए वह क्या प्रतिज्ञा करता है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह आपको आशीष देना चाहता है।
- आज परमेश्वर की आशीषों का अनुभव पाने से आपको क्या चीज़ रोकती है? परमेश्वर से उस किसी भी चीज़ को प्रगट करने के लिए कहें जो आपके जीवन में उसकी परिपूर्णता को रोकती है।
- स्वयं को प्रभु के प्रति समर्पित करने के लिए कुछ समय लें। जो कुछ आपका है उसे प्रभु को दें, यह जानते हुए कि आपकी प्रत्येक चीज़ पर उसका अधिकार है।

25. मुझे लज्जित होने न दे

पढ़ें भजन संहिता 25:1-22

दाऊद के जीवन में ऐसे भी समय थे जब उसने परास्त होने और अनिश्चियता को अनुभव किया था। ऐसा लगता है कि इस पच्चीसवें भजन का संदर्भ उन समयों में से एक था। दाऊद इस भजन के द्वारा परमेश्वर को पुकारता है कि उसके शत्रुओं के विरुद्ध उसकी सहायता करे।

अपनी परीक्षा के समय में, दाऊद ने अपना मन परमेश्वर की ओर उठाया सहायता और मार्गदर्शन के लिए उसकी ओर देखा। उसे पता था कि जिस सहायता की उसे ज़रूरत है वह उसे न तो स्वयं में और न ही किसी और व्यक्ति में मिल सकती है। उसका ध्यान प्रभु परमेश्वर पर है क्योंकि वह जानता है कि केवल परमेश्वर उसे इस संकट से निकाल सकता है जिसे वह अनुभव कर रहा है।

पद 2 में, दाऊद प्रभु से कहता है कि उसका भरोसा उस पर ही है। तथापि, उसी सांस में, वह परमेश्वर से निवेदन करता है कि उसे लज्जित न होने दे या उसके शत्रुओं को उस पर विजयी न होने दे। ऐसा कहते हुए दाऊद को अपनी कमज़ोरी के बारे में पूरी तरह से पता है। वह जानता था कि यदि परमेश्वर उसकी सहायता के लिए नहीं आया होता तो वह हार गया होता। उसे पता था कि यदि परमेश्वर उसकी ओर नहीं होता तो शत्रु उसे आसानी से हरा सकता था। उसका भरोसा स्वयं में और अपनी सेना पर नहीं है। उसका भरोसा प्रभु में है।

दाऊद जानता था कि प्रभु पर अपनी आशा रखनेवाले कभी लज्जित नहीं होंगे। (पद 3)। दाऊद ने परमेश्वर से उस मार्ग को दिखाने की प्रार्थना की जिसमें वह उसे चलाना चाहता था। दाऊद को पता था कि जब तक वह प्रभु के मार्गों पर चलता रहेगा, शत्रु के कितने भी शक्तिशाली होने पर भी वह सुरक्षित रहेगा। जब तक भेड़ चरवाहे के साथ रहती है वह चरवाहे की सुरक्षा में रहती है। तौभी, चरवाहे से दूर भटकते हुए वह केवल हार को ही आमंत्रित करेगी।

इस संसार का सबसे सुरक्षित स्थान परमेश्वर की इच्छा में है। हमें संघर्ष नहीं करने पड़ेंगे। परमेश्वर की इच्छा में होकर भी विश्वासी परीक्षा का सामना करेगा। तौभी, परमेश्वर की इच्छा में हम परमेश्वर की उपस्थिति, सुरक्षा और आराम में निश्चिंत रहते हैं।

परीक्षा के इस समय में दाऊद ने मार्गदर्शन और निर्देशन के लिए परमेश्वर को पुकारा। उसने उसे उद्धारकर्त्ता के रूप में जाना और जाना कि वह उसमें सुरक्षित था।

उसकी आशा पूरी तरह से परमेश्वर में अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में थी (पद 5)। अपनी परीक्षा में उसकी सबसे बड़ी चिन्ता परमेश्वर की घनिष्टता में बने रहने और उसके मार्ग से न भटकने की थी; क्योंकि केवल उसी मार्ग में वह सुरक्षित रह सकता है।

दाऊद परमेश्वर को उसे अपने महान प्रेम और दया में होकर स्मरण करने को कहता है। (पद 6) उसने परमेश्वर से निवेदन किया कि उसकी ओर देखकर उसके संघर्ष को देखे। अपने संकट में वह प्रभु की दया और प्रेम पर आश्रित था। दाऊद को पता था कि वह परमेश्वर के समर्थन और सहायता के योग्य नहीं था। पद 7 में, उसने अपनी जवानी की मूर्खता और उन पापपूर्ण चीज़ों की ओर देखा जो उसने की थीं। वह जानता था कि ऐसे भी समय रहे थे जब उसने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और पाप में गिरा था। वह परमेश्वर तक इसलिए नहीं पहुंचा था क्योंकि उसे लगा था कि वह इसके योग्य है। परमेश्वर ने उससे कुछ नहीं लिया था। दाऊद ने परमेश्वर को उसके प्रेम और दया के आधार पर पुकारा था। दया अनर्जित है। दया प्राप्त करने वाले उसे प्राप्त करते हैं जिसके वे योग्य नहीं होते।

दाऊद परमेश्वर को दया के परमेश्वर के रूप में जानता था, जिसके वह अनुग्रह के योग्य नहीं था। केवल इसी कारण हममें से कोई भी परमेश्वर के पास आ सकता है। यदि वह दया का पमरेश्वर नहीं होता तो हममें से कोई भी कभी उस तक नहीं पहुंच पाता। ऐसा केवल इसलिए है कि परमेश्वर भला, सीधा और दया से भरा है कि वह पापियों तक पहुंचकर उन्हें अपने मार्गों को सिखाता है। परमेश्वर के मार्गों पर जीवन जीने का चुनाव करनेवाले और उससे निर्देशन प्राप्त करने वाले पाएंगे कि परमेश्वर प्रेमी और विश्वासयोग्य है (पद 10)।

दाऊद के पाप बहुत थे (पद 11)। वह इसके योग्य नहीं था कि परमेश्वर उसे अपने मार्गों को सिखाता और अपने मार्गों में उसका मार्गदर्शन करता। इसने उसे क्षमा के लिए परमेश्वर के पास आने से नहीं रोका था। ऐसे बहुत से लोग हैं जो यह सोचकर प्रभु के पास नहीं आते हैं कि उनके पाप बहुत हैं। दाऊद को पता था कि परमेश्वर दयालु है और जो उसके पास आते हैं उन्हें क्षमा करने और सिखाने में उसे खुशी मिलती है।

पद 12 में दाऊद ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि प्रभु का भय माननेवाला व्यक्ति उसके निर्देशों के बारे में जानेगा। कितनी बार हमने प्रयास किया और असफल हुए। मानव बुद्धि पर भरोसा करने के कारण हम कितनी बार गिरे? दाऊद हमसे प्रतिज्ञा करता है कि परमेश्वर के पास आकर उसे आदर देने वाला उसके निर्देश से लाभान्वित होगा। परमेश्वर को हमें मार्ग दिखाने में खुशी मिलती है। यह जीवन गड़बड़ी वाला और शत्रु के जाल व फंदों से भरा है। मानवीय बुद्धि और दृष्टि पर्याप्त नहीं है। जो सही है वही परमेश्वर हमें सिखाएगा और दिखाएगा। जीवन की भूलभुलैया से जाने में वही हमारी सहायता करेगा। जीवन के इन जोखिमपूर्ण मार्गों पर चलने के लिए हमें

बिना मार्गदर्शक के नहीं छोड़ा गया है। सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर उन सभी को सिखाएगा जो उसका भय मानते हैं। वह उन्हें मार्ग पर चलना सिखाएगा।

परमेश्वर का भय माननेवाले और उसके निर्देशों को सुननेवाले संपन्नता को जानेंगे। उनके वंशज भूमि के अधिकारी होंगे। वह संपन्नता हमेशा सांसारिक अमीरी में नहीं होगी। परमेश्वर की अमीरी इस संसार से बंधी नहीं है। परमेश्वर की उपस्थिति उद्धार, प्रबन्ध, सुरक्षा और मार्गदर्शन उसकी आशीषों की उन बहुतायत में से है जो उसके मार्गों पर चलनेवालों और उसके निर्देशों को सुननेवालों के लिए है।

पद 14 में दाऊद हमें बताता है कि प्रभु उन्हीं पर विश्वास करेगा जो उसका भय मानते हैं। वह उन्हें अपनी वाचा के बारे में बताएगा। यहां बताई गई वाचा वह वाचा है जिसे परमेश्वर को अपने लोगों के साथ बांधने में खुशी मिलती है। यह विवाह वाचा के समान है जिसमें दो लोग एक विशेष संबन्ध में आते हैं। परमेश्वर सुरक्षा देने और मार्गदर्शन करने की प्रतिज्ञा करता है। हमें उसके प्रति विश्वासयोग्य और सच्चे बने रहने की प्रतिज्ञा करनी है। इस वाचा समझौते में परमेश्वर हम पर अपने हृदय को खोलता और अपने उद्देश्य को प्रगट करता है। हमारे साथ वह एक बहुत घनिष्ठ और व्यक्तिगत संबन्ध में आता है।

इस संकट के समय में, दाऊद की आँखें प्रभु पर थीं। वह जानता था कि परमेश्वर उसके पैरों को शत्रु के फंदे से छुड़ाएगा। उसने परमेश्वर से उसके साथ अनुग्रहकारी बने रहने और अपने वाचा समझौते को पूरा करने की विनती की। उसने प्रभु को स्मरण कराया कि वह अकेला और दुखी था (पद 16)। उसके संकट बढ़ गए थे और वह क्रोध से भर गया था। उसने अपने दुख और निराशा में प्रभु से उसकी ओर देखने को कहा। वह परमेश्वर से उसके सभी पापों को दूर करने की विनती करता है। वह जानता है कि वह पमरेश्वर के प्रेम के योग्य नहीं है परन्तु वह उसके साथ सही होने और उसके सीने के निकट होने की इच्छा करता है।

दाऊद ने परमेश्वर को स्मरण कराया कि उसके शत्रु कैसे बढ़ गए थे (पद 19)। उन्होंने उससे घृणा की। दाऊद सहायता के लिए परमेश्वर को पुकार उठा। उसने परमेश्वर से इन शत्रुओं से उसकी रक्षा करने और उसे बचाने को कहा जो उससे बुरी तरह से घृणा करते थे।

पद 21 में दाऊद के छुटकारे का आश्वासन उसकी सीधाई और खराई से आया। दाऊद परमेश्वर के साथ चला और उसकी आज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा। इसका अर्थ यह नहीं कि दाऊद सिद्ध व्यक्ति था। उसने पहले ही हमें बताया है कि उसके पाप बहुत हैं। इन असफलताओं के बावजूद दाऊद ने प्रभु से प्रेम किया और उसके पीछे पीछे चला। गिरने के बाद उसने क्षमा प्राप्त करनी चाही। दाऊद को पता था कि खुले विद्रोह में कोई आश्वासन नहीं था। विद्रोह और बुराई के मार्ग पर दाऊद को परमेश्वर की उपस्थिति और सुरक्षा का कैसा आश्वासन हो सकता है? चूंकि वह परमेश्वर के साथ सहभागिता में था, तथापि, उसके साथ चलते हुए दाऊद को निश्चय था कि परमेश्वर उसकी आवश्यकता के समय में उसे सुरक्षित रखेगा।

अपने संकट में, दाऊद का भरोसा पूरी तरह से अपने प्रभु परमेश्वर पर है। दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया और उसके मार्गों में चला; इस निश्चय के साथ कि ऐसा करने पर वह विजयी होगा। दाऊद को पता था कि स्वयं पर भरोसा करने पर वह लज्जित होगा और बड़ी हार का अनुभव करेगा। केवल पूरी तरह से परमेश्वर को देखने और उसके साथ चलने के द्वारा दाऊद को पूर्ण विजय का निश्चय हो सकता है। उसका भरोसा प्रेम और दया करनेवाले परमेश्वर पर था उस दया और प्रेम पर वह भरोसा कर सका क्योंकि उसकी संतान होने के कारण दाऊद परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य था और उसके मार्गों में चल रहा था। आज्ञाकारिता बड़े भरोसे को लाती है।

विचार करने के लिए:

- क्या आपको कभी अपने शत्रुओं के हाथों हार की लज्जा का अनुभव हुआ है?
- यह भजन हमें विश्वासी के जीवन में दर्द और दुख की वास्तविकता के बारे में क्या सिखाता है?
- आज विश्वासी होने के कारण परमेश्वर हमें कैसे निर्देशित करता है? हाल ही में वह आपको क्या सिखा रहा है?
- परमेश्वर ने आप पर कैसे भरोसा किया था स्वयं को और अपने मार्गों को आप पर कैसे प्रगट किया?
- आज्ञाकारिता और विजय के आश्वासन के बीच क्या संयोजन है? परमेश्वर की आज्ञाकारिता में न चलने पर क्या हम विजय के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं?
- प्रभु के साथ साथ लोग किन चीज़ों पर भरोसा करते हैं? क्या ये चीज़ें विजय ला सकती हैं?

प्रार्थना के लिए:

- अपने मार्गों को हमें सिखाने की प्रभु की इच्छा के लिए धन्यवाद दें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह प्रेम और दया का परमेश्वर है। उसे धन्यवाद दें कि हम उसके प्रेम और दया के कारण उसके पास आ सकते हैं।
- क्या आपको वह समय याद है जब परमेश्वर ने आपको विजय दी थी? उस विजय के लिए कुछ समय उसे धन्यवाद देने को निकालें।
- क्या आपके जीवन में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें आप प्रभु के साथ वैसे नहीं चल रहे हैं जैसे आपको चलना चाहिए। न कुछ समय प्रभु से क्षमा मांगने को थें। आप के जीवन के इस क्षेत्र में उसे निर्देशित करने को कहें ताकि आप बड़ी आज्ञाकारिता में चलना सीख सकें।

26. न्याय, जांच और छुटकारा

पढ़ें भजन संहिता 26:1-12

यहां भजन 26 में, दाऊद की परमेश्वर के लिए तीन-तरफा विनती हैं। इसे अलग-अलग करके हम प्रत्येक निवेदन की जांच करेंगे।

मेरा न्याय कर

भजन में दाऊद की पहली विनती यह है कि परमेश्वर उसका न्याय करे। न्याय शब्द का अर्थ है बचाव करना, या किसी चीज़ के लिए विनती करना। दाऊद को उन लोगों द्वारा सताया गया व पीछा किया था जो उसके जीवन के पीछे पड़े थे, जबकि दाऊद ने कुछ भी गलत नहीं किया था। उसका पीछा एक सामान्य अपराधी के समान किया गया था। उसे अपने जीवन को बचाने के लिए भागना पड़ा था। कई बार जीवन में चीज़ें न्यायोचित नहीं होती हैं। कई बार धर्मी लोग दुख उठाते हैं। जीवन के इस स्थान पर दाऊद के साथ यही हो रहा था।

दाऊद प्रभु को स्मरण कराता है कि इस व्यवहार के योग्य उसने कुछ गलत नहीं किया था। अपने जीवन की जांच करने पर उसने स्वयं को निर्दोष पाया था। उसके सभी पापों को भुला दिया गया था और वह परमेश्वर के सामने एक साफ विवेक के साथ खड़ा था। दाऊद ने बिना डगमगाएं परमेश्वर पर भरोसा किया। उसने परमेश्वर से अब उसकी सहायता के लिए आने को कहा। उसने परमेश्वर को पृथ्वी पर न्याय करने और अपने शत्रुओं से निपटने को पुकारा।

मुझको जांच

इस भजन में दाऊद की दूसरी विनती है कि परमेश्वर उसे जांचे और परखे। दाऊद परमेश्वर से अपने जीवन की जांच करने और उसे परखने को कह रहा है। ध्यान दें कि दाऊद कहता है कि परमेश्वर उसके हृदय और मन को परखे। परमेश्वर से अपने हृदय और मन को परखने के लिए कहते हुए दाऊद परमेश्वर से उसके भीतरी व्यवहार और इच्छाओं की खोज करने को कह रहा है। हम बाहरी गतिविधियों को देख सकते हैं परन्तु परमेश्वर हृदय और मन को जांच सकता है।

विशिष्ट रूप में, दाऊद ने परमेश्वर को उसकी प्रेरणा की जांच करने को कहा। जीवन में दाऊद की प्रेरणा क्या थी? पद 3 में वह हमें बताता है कि परमेश्वर का प्रेम

सदा उसके सामने था। अन्य शब्दों में, यह परमेश्वर का प्रेम ही था जिसने उसके प्रत्येक कार्य को प्रेरित किया था।

दाऊद परमेश्वर से उसकी चाल को भी परखने को कहता है। दाऊद को पूरा भरोसा था कि परमेश्वर उसकी चाल की जांच करने पर जान पाएगा कि वह सत्य और धार्मिकता के मार्ग पर चल रहा था। (पद 3)

दाऊद धोखेबाज़ों के साथ नहीं बैठा था। उसने पाखंडियों के साथ मेल-जोल नहीं रखा था और कुकर्मियों की सभा से घृणा की थी। उसने दुष्ट लोगों के साथ बैठने से इन्कार कर दिया था (पद 5)। बुरा करने वालों के साथ रहना दाऊद को अच्छा नहीं लगता था।

दाऊद ने 'अपने हाथों को निर्दोषता से धोया था' (पद 6)। ऐसे भी थे जिन्होंने दोषी हाथों को धोया था। इन व्यक्तियों के हाथों पर खून के धब्बे और अधर्मी जीवन की गंदगी लगी थी। दाऊद के साथ ऐसा नहीं था। उसने अपने हाथों को शुद्ध और निष्कलंक रखा था। उसने बुराई करने से इन्कार कर दिया था और बुरे व्यक्तियों के मार्गों से उसे खुशी नहीं मिलती थी। आराधना के लिए आने पर वह साफ हाथों के साथ आता था। इस पर भी ध्यान दें कि वह प्रभु से लजाता नहीं था। वह चाहता था कि हर कोई जान ले कि वह परमेश्वर से प्रेम करता था और उसने एक सच्चे परमेश्वर के रूप में उसकी आराधना की थी (पद 7)।

पद 8 में, दाऊद स्पष्ट करता है कि वह परमेश्वर के घर से प्रेम करता था। इस पर ध्यान दें कि दाऊद प्रभु के घर क्यों आया था। वह प्रभु की उपस्थिति में समय बिताने और उसकी महिमा को जानने के लिए आया था। बहुत से कारणों से हम चर्च जाते हैं। कुछ शिक्षा पाने और कुछ सहभागिता के लिए जाते हैं। दाऊद सैद्धान्तिक रूप से परमेश्वर की उपस्थिति में रहने को गया।

इस दूसरे निवेदन में दाऊद परमेश्वर से अपनी इच्छाओं और व्यवहार की जांच करने को कह रहा है। परमेश्वर के सामने अपना हृदय खोलने में उसे कोई डर नहीं है। उसे भरोसा था कि उसके कार्यों और व्यवहार की जांच करने पर परमेश्वर जान लेगा कि उसका हृदय निष्कप्ट और धर्मी था। हमारे व्यवहार और प्रेरणा की जांच करने पर परमेश्वर को क्या मिलेगा? काश कि हमारे पास दाऊद के समान हृदय हो।

मुझे छुड़ा ले और मुझ पर अनुग्रह कर

इस भजन में दाऊद का अन्तिम निवेदन यह कि परमेश्वर उसे छुड़ाए और उस पर अनुग्रह करे। दाऊद परमेश्वर से प्रेम करता था और वह उसके मार्गों पर चला था। वह चाहता था कि परमेश्वर उसके जीवन में इसे जान पाए। वह पापी और हत्यारे व्यक्तियों की गणना में नहीं आना चाहता था। वह न तो उनके समान था और न ही उसे उनकी संगति में आनन्द मिलता था। इन व्यक्तियों के हाथ बुरी युक्तियों और रिश्वत से भरे थे।

दाऊद की तीसरी विनती यह है कि परमेश्वर उसे छुड़ाए या इन दुष्ट लोगों के हाथों से उसे बचाए। वह परमेश्वर से दया के लिए कहता है। वह जानता है कि बेशक उसने एक ऐसा जीवन जीया था जो परमेश्वर के सामने शुद्ध था, तौभी उसे दया अथवा अनुग्रह की ज़रूरत थी। उसने परमेश्वर से यह कहते हुए स्वयं को उस पर डाल दिया था कि उसे उन दुष्ट व्यक्तियों के षडयंत्र से बचाए जो उसे नष्ट करना चाहते हैं।

इस भजन में, दाऊद परमेश्वर से उसका न्याय करने को कहता है। वह चाहता है कि परमेश्वर पृथ्वी पर न्याय को लेकर आं और विशेष कर उसकी स्थिति में, जहां दुष्ट व्यक्तियों द्वारा उसका विरोध किया गया था और उसे सताया गया था। उसने यह भी प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके हृदय और मन को परखे, किसी भी बुरे रवैये पर विचार को प्रगट करते हुए। दाऊद विचारों और कार्यों में परमेश्वर के सामने पूरी तरह से शुद्ध होना चाहता था। अन्त में दाऊद ने परमेश्वर से दया और छुटकारे की विनती की। वह चाहता था कि परमेश्वर उसे ऊँचा उठाए। वह अपने शत्रुओं पर विजय का जीवन जीना चाहता था। विश्वासी का जीवन विजय का जीवन होना चाहिए। दाऊद की प्रार्थना न्याय, निष्ठा और विजय के लिए है। यही हमारी भी प्रार्थना होनी चाहिए।

विचार करने के लिए:

- एक विश्वासी होने के कारण आज आपके कौन शत्रु हैं? ये शत्रु परमेश्वर के साथ आपकी चाल में कैसे बाधा बनते हैं?
- क्या कोई पाप या गलत व्यवहार है जिसका अंगीकार आपको परमेश्वर के सामने करने की ज़रूरत है? क्या आप परमेश्वर के सामने एक शुद्ध विवेक के साथ रहते हैं?
- क्या आप अपने शत्रुओं पर विजय का जीवन जी रहे हैं? शत्रुओं के रूप में हम केवल लोगों को ही संबोधित नहीं करते ये शत्रु आपके जीवन में विशिष्ट पाप हो सकते हैं।

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से आपके हृदय और रवैये का जांच करने को कहें। स्वयं को उसकी जांच के लिए खोल दें।
- क्या आप आस-पास और बुराई पर विजय में जी रहे हैं? परमेश्वर से आपको विजय देने के लिए कहें।
- परमेश्वर को आपकी परीक्षा में सुरक्षित रखने के लिए धन्यवाद दें।

27 यहोवा की बाट जोहता रह

पढ़ें भजन संहिता 27:1-14

इतने वर्षों से अधिकांश लोगों के लिए दाऊद के भजनों के प्रोत्साहनजनक बने रहने का कारण यह है कि क्यों दाऊद अपने संघर्षों को नहीं छिपाता। हमारे समान वह जीवन के दर्द और परीक्षाओं को जानता है। इन परीक्षाओं के बीच, दाऊद हमारा ध्यान परमेश्वर की ओर लगाता है। इस भजन में वह अपने उद्धारकर्त्ता प्रभु परमेश्वर पर हमें अपने भरोसे को दिखाता है।

दाऊद अपने पाठकों को यह स्मरण कराते हुए आरम्भ करता है कि परमेश्वर उसकी ज्योति है। दाऊद व्यक्तिगत अनुभव कैसे बोलता है। वह जानता था कि यह अंधकार के समान होना था। जीवन में अधिकांश समय उसे आश्चर्य हुआ था कि परमेश्वर कहाँ था। दाऊद ने दुख छोड़े जाने और दर्द के अंधकार को अनुभव किया था। परमेश्वर इस अंधकार में उसकी ज्योति था। इस ज्योति में उसे बने रहने के लिए आशा और साहस मिला था।

परमेश्वर उसका उद्धार भी था। उसने अनगिनत बार उसे उसके शत्रुओं से भी बचाया था। जब तक परमेश्वर उसकी ओर था, दाऊद को किसी चीज़ का भय नहीं था। यदि परमेश्वर उसकी ओर था तो कौन उस पर विजयी हो सकता था?

परमेश्वर दाऊद के लिए एक दृढ़ गढ़ था। दाऊद प्राय: उस दृढ़ गढ़ की ओर भागता था। एक दृढ़ गढ़ होने के कारण, दाऊद की परीक्षाओं और दुखों के समय के बीच परमेश्वर उसका रक्षक था। शत्रुओं के आने पर दाऊद परमेश्वर के पास आश्रय पाने को दौड़ता था। उद्धारकर्त्ता की बांहों में उसका दर्द और संकट कम हो जाता था। अपने उद्धारकर्त्ता की बांहों में उसे आश्वासन और भरोसे का अनुभव मिलता था।

हमारे लिए यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि दाऊद एक शक्तिशाली राजा था। इस्राएल में और किसी राजा को इतनी विजय नहीं मिली थी। मानव दृष्टि में दाऊद अपने दिनों का सबसे शक्तिशाली राजा था। उसके एक छोटे बच्चे के समान बोले जाने पर हमें आश्चर्य होता है। वह हमें बताता है कि डर जाने पर वह अपने स्वर्गीय पिता के पास दौड़कर आराम पाता था। जब उसके शत्रु उसके विरोध में आते; वह सहायता के लिए परमेश्वर की ओर दौड़ता। इस भजन में हमें दाऊद की सफलता का रहस्य मिलता है। दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा किया। उसने स्वयं पर या अपने अनुभव पर भरोसा नहीं किया परन्तु अपने स्वर्गीय पिता की बुद्धि और मार्गदर्शन में। ऐसा ही हम सबको करना है।

परमेश्वर ऐसे स्त्री पुरुषों को नहीं देख रहा है जो अपनी समस्याओं से स्वयं निपट सकते हैं। वह उनकी तलाश कर रहा है जो अपनी ज़रूरत के समय में एक बच्चे के समान विश्वास के साथ उसकी ओर दौड़ें। सच्ची मसीही परिपक्वता प्रभु पर निर्भरता में मिलती है। जितना अधिक हम परिपक्व होंगे, उतना अधिक हम स्वयं को दाऊद के समान बुद्धि और मार्गदर्शन पाने के लिए परमेश्वर की ओर दौड़ता पाएंगे।

जब बुरे लोग उसकी देह को निगल जाने के लिए उसकी ओर बढ़े तब दाऊद अपने दृढ़ गढ़ की ओर दौड़ा। जब उसके शत्रुओं ने उस पर हमला किया, वे लड़खड़ा कर गिर गए क्योंकि वह अपने प्रभु की बांहों में था (पद 2)। हम यहां कितने अद्‌भुत बच्चे समान विश्वास को देखते हैं।

पद 3 में, दाऊद हमें बताता है कि एक सेना के उसके विरुद्ध छावनी डालने पर भी वह नहीं डरेगा। चाहे उसके विरुद्ध युद्ध छिड़ जाए, तौभी उसका भरोसा परमेश्वर पर था। अपने जीवन में कितनी बार मैं इस तरह के विश्वास से गिरा हूँ। समस्याओं के आने पर मैं चिन्ता करने लगता था। सामान्यता मैं स्वयं को डरा हुआ पाता था। यदि मुझ में दाऊद की तरह बाल समान विश्वास होता तो मैं भी विश्राम का अनुभव कर पाता।

दाऊद का परमेश्वर के साथ एक अद्‌भुत संबन्ध था। उसने अपनी समस्याओं और कठिनाइयों में प्रभु पर पूरी तरह से भरोसा किया था। पद 4 में हम उसके ऐसा कहने पर परमेश्वर के प्रति उसके प्रेम की झलक को देखते हैं:

एक वर मैंने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं।

दाऊद के हृदय की सबसे बड़ी इच्छा न तो सेना की सफलता थी और न इस जीवन की संपन्नता थी। उसका हृदय परमेश्वर को जानने पर लगा था। किसी भी अन्य चीज़ से अधिक दाऊद परमेश्वर के साथ रहना चाहता था। इस पर ध्यान दें कि दाऊद परमेश्वर के साथ क्यों रहना चाहता था। वह परमेश्वर की सुन्दरता को निहारना और उसके मन्दिर में उसे खोजना चाहता था। हमारे स्वर्ग की ओर देखने के बहुत से कारण हो सकते हैं। कुछ लोग स्वर्ग की ओर इसलिए देखते हैं क्योंकि वे अपने प्रियजनों के साथ जुड़ना चाहते हैं। कुछ स्वर्ग की ओर इसलिए देखते हैं क्योंकि वे अपने जीवन के दुख और दर्द से आराम पाना चाहते हैं। दाऊद ने स्वर्ग की इच्छा इसलिए की क्योंकि वह परमेश्वर की सुन्दरता को निहारना और उसके साथ सहभागिता में बने रहना चाहता था।

दाऊद को भरोसा था कि संकट के समय में परमेश्वर उसकी सुरक्षा करेगा (पद 5)। वह अपने तम्बू में उसे आश्रय देगा और उसे चट्टान पर रखेगा जहां वह अपने शत्रुओं से सुरक्षित रह सकता है। पुराने नियम के संदर्भ में तम्बू वह स्थान होता था जहां प्रभु वास करता था। परमेश्वर उसे सुरक्षित रखेगा।

दाऊद अपनी विजयों का श्रेय नहीं लेता। वह सारी महिमा परमेश्वर को देता है। परमेश्वर ने उसके सिर को उसके उन शत्रुओं से ऊपर उठाया था जिन्होंने उसे घेरा हुआ था (पद 6)। दाऊद ने परमेश्वर के तम्बू में परमेश्वर की आराधना की थी क्योंकि परमेश्वर ने उस पर अपने अनुग्रह को दिखाया था। तम्बू में उसने आनन्द से जयजयकार किया और प्रभु के लिए भजन भी गाए। पुनः दाऊद के बालक समान विश्वास पर ध्यान दें। एक आनंदित बच्चे के समान जिसे प्रतीक्षा के बाद कोई उपहार मिलता है, दाऊद आनंद से उछलकर परमेश्वर के लिए गाता है।

अपने संकट के समय में, दाऊद पुकारता है: ''हे यहोवा मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूँ, तू मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे उत्तर दे'' (पर 7)। दाऊद का भरोसा परमेश्वर में है। परमेश्वर के साथ उसका संबन्ध इस तरह का है कि वह उसे अपने पुकारे जाने पर सुनने के लिए कह सकता है। उसे पता है कि परमेश्वर ऐसा ही करेगा। क्योंकि दाऊद बहुत व्यक्तिगत और निकट था। वह परमेश्वर से उसे सुरक्षा और मार्गदर्शन देने को कह सका। दाऊद को पता था कि परमेश्वर उसी तरह से उसकी देखभाल करेगा जैसे एक पिता अपने बच्चे की करता है।

जीवन में किसी भी अन्य चीज़ से अधिक दाऊद परमेश्वर के मुख के दर्शन करना चाहता था। परमेश्वर के मुख को देखने के लिए उसे व्यक्तिगत रूप से जानना पड़ता है। बाइबल में परमेश्वर के बारे में पढ़ना और उसकी विशेषताओं का अध्ययन करना एक बात है, और उसे व्यक्तिगत रूप से जानना व उसके मुख को देखना दूसरी चीज़ है। दाऊद की परमेश्वर के बारे में जानने में अधिक रुचि नहीं थी, वह उसके मुख को देखना चाहता था और उसके सामने झुकना चाहता था। वह उससे बात करना और उसकी मुस्कुराहट को जानना चाहता था।

दाऊद ने परमेश्वर से वितनी की कि अपने मुख को उससे न छिपाए (पद 9)। वह उससे उसकी आवश्यकता के समय में उसे छोड़ न देने की विनती करता है। दाऊद के लिए इससे बुरा और कुछ नहीं हो सकता है। उसका हृदय परमेश्वर को देखना चाहता था। उसने परमेश्वर से विनती की कि उसकी ज़रूरत के समय में उसे न छोड़े।

यह हमें दिखाता है कि दाऊद के जीवन में ऐसे समय थे जब परमेश्वर दूर प्रतीत हो रहा था। ऐसे भी समय थे जब दाऊद को डर लगा कि वह परमेश्वर से अलग हो गया है। उन समयों में, तथापि, उसे भरोसा था कि उसके लिए परमेश्वर का प्रेम किसी भी पिता या माता की तुलना में अधिक शक्तिशाली था। एक पिता या माता अपने बच्चे को छोड़ भी सकते हैं, परमेश्वर दाऊद को कभी नहीं छोड़गा (पद 10)। कमज़ोरी के क्षणों में उसका यही भरोसा था।

पद 11 में दाऊद के हृदय की पुकार यह है कि परमेश्वर उसे अपने मार्गों को सिखाए और सही मार्ग में उसकी अगुवाई करे। ध्यान दें कि दाऊद को मार्ग पर जाने के लिए परमेश्वर द्वारा सिखाए जाने की ज़रूरत थी, उसके सतानेवालों के कारण।

मानवीय रूप में दाऊद संघर्ष कर रहा था। वह नहीं जानता था कि कहां जाए। उसके शत्रु बहुत से थे और वह नहीं जानता था कि क्या करे या कहां जाए। उसे अपने स्वर्गीय पिता की बुद्धि की ज़रूरत थी और अपने पूरे मन से उसने इसकी खोज की।

दाऊद परमेश्वर से विनती करता है कि उसे उसकी शत्रु की इच्छा पर न छोड़ (पद 11)। उसे निगल जाने को झूठे गवाह उठ खड़े हुए थे। उसका नाश करने के प्रयास में उन्होंने हिंसक झूठ कहे। यद्यपि चीज़ें उसके लिए बहुत बुरी दिखती थीं, तौभी दाऊद का भरोसा प्रभु में था। उसे पता था कि वह जीवितों की भूमि पर परमेश्वर की भलाई को देखेगा बेशक चीज़ें उस समय बुरी दिख रही थीं, दाऊद को भरोसा था कि परमेश्वर विजयी होगा। अपने संकट में दाऊद ने परमेश्वर की प्रतीक्षा की। उसने इस भरोसे से प्रतीक्षा की कि परमेश्वर अपने समय में उसे बचाएगा और उसके सिर को उसके शत्रुओं पर ऊँचा उठाएगा। हमें भी वह ऐसा ही करने की चुनौती देता है। वह हमें शक्तिशाली होने को बुलाता है। वह हमें धीरज के साथ उन परीक्षाओं को लम्बे समय तक सहन करने को कहता है और यह कि परमेश्वर हमारी सहायता के लिए आएगा।

विचार करने के लिए:

- दाऊद का विश्वास एक बच्चे के समान कैसे है?
- दाऊद अपने दिनों का एक महान सैनिक अगुवा था। उसे शक्ति कहां से मिली थी?
- क्या आप कभी अपनी शक्ति पर भरोसा करने की परीक्षा में पड़े हैं?
- भयभीत होने पर दाऊद ने क्या किया था?
- परमेश्वर के मुख की खोज करने का अर्थ क्या है? यह परमेश्वर के बारे में अध्ययन करने से कैसे भिन्न है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से आपको बालक के समान विश्वास देने को कहें।
- परमेश्वर से आपको सिखाने को कहें कि उसके मुख की खोज करने का अर्थ क्या है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि हमारी आवश्यकता के समय में वह हमारा दृढ़ गढ़ है।
- क्या आप आज किसी विशिष्ट परीक्षा से होकर गुज़र रहे हैं? परमेश्वर से कहें कि इस समय में भरोसे के साथ उसकी सहायता के लिए धीरज धरने में सहायता करे।

28. मेरी पुकार सुन ले

पढ़ें भजन संहिता 28:1-9

भजन संहिता 27 के समान, दाऊद अपने लिए प्रभु की ज़रूरत को जानता है। बेशक वह एक सामर्थी राजा था, तौभी वह अपनी शक्ति के स्त्रोत को जानता था। अपनी आवश्यकता के समय में दाऊद ने परमेश्वर को पुकारा। भजन का विषय इस ओर संकेत करता है कि दाऊद अपने शत्रुओं के कारण दुखी था। वह जानता कि यदि प्रभु उसकी सहायता के लिए न आए तो वह नाश हो जाएगा।

पद 1 में प्रभु पर उसकी निर्भरता पर ध्यान दें। वह परमेश्वर को पुकारता है; यह जानते हुए कि यदि प्रभु उसकी सहायता नहीं करता तो वह भी उनके समान हो जाता जो पाताल में चले जाते हैं। पाताल मृत्यु या कब्र को बताता है। अपनी कमज़ोरी को जानने पर दाऊद लज्जित नहीं होता था। क्योंकि वह अपने लिए प्रभु की ज़रूरत को जानता था, दाऊद ने बहुत सी विजयों का अनुभव पाया। जब तक हम अपनी ज़रूरत की पहचान करने को तैयार नहीं होते हैं; हम उस ज़रूरत के लिए अद्‌भुत समाधान का अनुभव कभी नहीं कर पाते हैं।

पद 1 में दाऊद प्रभु को अपनी चट्टान कहता है। चट्टान एक मज़बूत आधार होती है। जीवन के तूफान चट्टान के विरुद्ध आ सकते हैं परन्तु यह हटेगी नहीं चट्टान में कोई परिवर्तन नहीं आता। दाऊद ने परमेश्वर को इस कारण चट्टान कहा क्यों कि वह जीवन के तूफानों और परीक्षाओं से अपरिवर्तनीय और अप्रभावित था।

दाऊद ने परमेश्वर को पुकारा कि उसकी सुन लें (पद 2)। उसे पता था कि यदि प्रभु उसकी सुनने से इन्कार कर दे तो वह नष्ट हो जाएगा। दाऊद की परमेश्वर से उसकी प्रार्थना को सुनने के लिए कहने में निर्भीकता को देखें। दाऊद का परमेश्वर के साथ एक संबन्ध था जिसके कारण वह परमेश्वर से इस तरह से बोल सका था। उसे इस संबन्ध पर भरोसा था। वह निर्भीकता के साथ परमेश्वर के पास आकर उसे बचाने और उस पर दया दिखाने को कह सका। आज परमेश्वर हमें भी यही विशेषाधिकार देता है। दाऊद के समान, हम अपनी आवश्यकता के समय में प्रभु से निर्भीकता के साथ दया के लिए कह सकते हैं।

पद 3 में दाऊद ने न्याय के लिए कहा। उसने कहा कि प्रभु उसे दुष्टों और अनर्थकारियों के साथ न घसीटे। दाऊद जानता था कि प्रभु एक दिन दुष्टों का न्याय करेगा। वह न्याय के समय में परमेश्वर के अनुग्रह के लिए कहता है।

दाऊद के दिनों में दुष्ट लोग अपने पड़ोसियों से बातें तो मेल की करते थे परन्तु

अपने हृदयों में बुराई रखते थे। अन्य शब्दों में, बाहर से तो वे संतों के समान दिखते थे परन्तु अपने हृदयों में पड़ोसियों से घृणा करते थे। निस्संदेह यह घृणा और बुराई उनके कार्यों से प्रगट होती थी। पद 4 में, दाऊद ने परमेश्वर को दुष्टों को उनके बुरे कार्यों और उनके हाथों के कामों के अनुसार बदला देने को कहा। वह चाहता था कि परमेश्वर उन्हें वह दे जिसके वे योग्य हैं।

दुष्टों ने परमेश्वर के कार्य के प्रति कोई सम्मान नहीं दिखाया था। इस कारण, दाऊद ने भविष्यवाणी कि एक परमेश्वर उन्हें फाड़ डालेगा ताकि वे फिर कभी उठ न सकें। दाऊद ने माना कि उसके दिनों में दुष्ट संकट का कारण थे, वह समय आने वाला है जब परमेश्वर उन्हें उनके बुरे कार्यों के अनुसार बदला देगा। दाऊद यह भी जानता था कि परमेश्वर उसे इस भयानक न्याय से बचाकर रखेगा। पद 6 में, उसने परमेश्वर की प्रशंसा की कि उसने दया के लिए की गई उसकी पुकार को सुन लिया था।

जब तक प्रभु न्याय नहीं करेगा दाऊद ने भरोसा किया कि प्रभु उसका बल और ढाल बना रहेगा। वह प्रभु और उसके मार्गों पर भरोसा करता रहेगा। वास्तव में उसका हृदय आनंद और धन्यवाद से उछल रहा था क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों के लिए उद्धार का एक गढ़ था। दाऊद इस भजन का समापन परमेश्वर से अपने सभी लोगों को बचाने और हमेशा के लिए उनका चरवाहा होने को कहते हुए करता है। उसने आशा की कि परमेश्वर इससे कम नहीं करेगा।

इस भजन में हमें बहुत सी महत्वपूर्ण शिक्षाओं को देखने की ज़रूरत है। सर्वप्रथम, परमेश्वर के लोगों के लिए परीक्षाएं और संघर्ष आएंगे। दाऊद अपने हिस्से की समस्याओं को जानता था, ऐसा ही यीशु ने किया था। इस जीवन में हम परीक्षा से बचते नहीं हैं। वास्तव में यदि हम प्रभु यीशु के लिए जीना चाहते हैं तो हम और भी संघर्षों का सामना करेंगे।

दूसरा, परमेश्वर बुरा करनेवालों का न्याय करेगा। दाऊद को प्रभु पर भरोसा था। परमेश्वर बुराई को बने नहीं रहने देगा। कई बार ऐसा लगता है कि न्याय आने में देरी हो रही है परन्तु यह आएगा।

तीसरा, परमेश्वर कई बार हमें बुरे और अन्यायी लोगों द्वारा लाई जानेवाली परीक्षाओं का सामना करने देगा। इस भजन का विषय संकेत देता है कि दाऊद अपने जीवन में बुरे स्त्री पुरुषों द्वारा विरोध का सामना कर रहा था। तौभी, यह सत्य है कि यदि परमेश्वर हमें विरोध का सामना करने देता है तो वह उस विरोध के द्वारा हमें बलवन्त भी करेगा। दाऊद इस भजन में परमेश्वर की प्रशंसा उस आश्वासन के लिए करता है जो उसको परमेश्वर में है क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों के लिए एक अच्छा चरवाहा था।

अन्ततः परमेश्वर एक अच्छा चरवाहा होने के कारण हमें बुराई और शत्रु की हमारे प्रति बुरी मंशा से छुड़ाएगा। दाऊद के समान हमारे पास भी परमेश्वर की प्रशंसा करने

का कारण है। विरोध का समाना करने पर हम निश्चिंत हो सकते हैं कि हमारा चरवाहा हमें नहीं छोड़ेगा। हम निश्चिंत हो सकते हैं कि वह हमारा न्याय करेगा और अन्त में हमारे लिए न्याय लाएगा। इसी कारण हम प्रभु की प्रशंसा करते और उसमें बने रहते हैं।

विचार करने के लिए:

- इस भजन में दाऊद ने अपनी कमज़ोरी को जान लिया था। आपकी व्यक्तिगत कमज़ोरियां क्या हैं?
- दाऊद को इस सच्चाई पर भरोसा था कि परमेश्वर उसे उसके शत्रुओं से छुड़ाएगा। क्या आप में ऐसा ही भरोसा है? यह आपके आपकी परीक्षा का सामना करने को कैसे प्रभावित करता है?
- क्या धर्मी बुरा करनेवालों के हाथों से परीक्षाओं और विरोध से होकर जाते हैं। इस भजन के अनुसार धर्मी को क्या भरोसा है?
- प्रभु कैसे आपका चरवाहा रहा है? आपका चरवाहा होने के कारण आपको उससे क्या अनुभव मिला है?

प्रार्थना के लिए:

- आपकी कमज़ोरी में परमेश्वर को आपको बल देने के लिए कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह हमारा चरवाहा होने की प्रतिज्ञा करता है।
- क्या आप उन विश्वासियों को जानते हैं जो इस समय अनर्थकारियों के हाथों से दुख उठा रहे हैं? कुछ समय उनके लिए प्रार्थना करें कि प्रभु उनके दुख के समय में उन तक पहुंचे।

29. उसकी वाणी की प्रशंसा में

पढ़ें भजन संहिता 29:1-11

यह भजन उस बड़े गर्जन वाले तूफान के समय को बताता है जिसे देखने का अवसर दाऊद को मिला था। उस तूफान को देखने व सुनने पर इस भजन में वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है।

दाऊद अपने पाठकों को इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के बल व महिमा को जानने के लिए बुलाते हुए आरम्भ करता है। विशिष्ट रूप से ध्यान दें कि दाऊद ''सामर्थी'' के बारे में बोलता है। ये सामर्थी स्वर्ग के स्वर्गदूत या इस पृथ्वी के महान और शक्तिशाली अगुवे हो सकते हैं। ये लोग कितने भी चाहे सामर्थी थे, तौभी ये दाऊद के महिमामयी और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने कुछ नहीं थे। मुझे दाऊद के गर्जन वाले तूफान को देखने पर विचार करना अच्छा लगता है। आकाश में गर्जन होने और बिजली के चमकने पर दाऊद अपने प्रभु की शक्ति पर अचम्भित हो जाता है।

उसका हृदय आराधना में लग जाता है और इस तरह की महिमा और प्रताप के प्रदर्शन पर वह प्रशंसा करता है। कौन इस महान परमेश्वर के साथ तुलना कर सकता है?

पद 3 में, दाऊद हमें बताता है कि यहोवा की वाणी बादलों के ऊपर है। हम कल्पना कर सकते हैं कि दाऊद वर्षा होने की ओर देख रहा था। उस वर्षा की आवाज़ को हर कहीं सुना जा सकता है। मुझे इण्डियन ओशन के रियूनियम द्वीप में कलीसियाई सभा की याद है। हम टीन की छत वाले एक घर में सभा कर रहे थे। आराधना सेवा आरम्भ होने पर वर्षा होने लगी। टीन की छत पर वर्षा की बूंदों का शोर इतना अधिक था कि हम एक दूसरे की आवाज़ को सुन नहीं सकते थे। हमें सभा को छोटे समूहों में होकर करना पड़ा ताकि आवाज़ को सुना जा सके। दाऊद शक्तिशाली वर्षा के गिरने की आवाज़ को सुन रहा था। वह वर्षा के साथ-साथ बहरा कर देनेवाली गर्जन की आवाज़ को सुन रहा था। इन सब में वह प्रभु परमेश्वर को देखता है।

दाऊद ने कहा, ''यहोवा की वाणी शक्तिशाली है। यहोवा की वाणी प्रतापमय है। यहोवा की वाणी देवदारों को तोड़ डालती है; यहोवा लबानोन के देवदारों को भी तोड़ डालता है'' (पद 4-5)। हम में से जितनों ने गर्जन की भयंकर आवाज़ को सुना है वे समझ सकते हैं कि दाऊद यहां किसके बारे में बोल रहा है। यह कल्पना करना आसान है कि तेज़ गर्जन के साथ-साथ बिजली की चमक विख्यात देवदार और लबानोन को भी टुकड़े टुकड़े कर देती है।

पद 6 में, दाऊद गर्जन, बिजली और वर्षा के साथ चलने वाली हवा के बारे में बोलता है। हवा के कारण शक्तिशाली केदार एक बछड़े के समान आगे पीछे होते या जंगली बछड़े के समान उछलते हैं।

यहोवा की वाणी आग की लपटों को चीरती है (पद 75)। आकाश से उसकी आवाज़ की गर्जन से ऐसा लगता है कि मरुभूमि हिल जाती है। भयानक तूफान शक्तिशाली वनों को भी उजाड़ देता है। हो सकता है कि आपने इस शक्तिशाली हवा का अनुभव पेड़ों को जड़ से उखाड़े जाने या उन्हें दो भागों में चीरते हुए किया हो।

दाऊद को बिजली, गर्जन और हवा के स्त्रोत की जानकारी थी। उसे पता था कि उस दिन उसने जिस तूफान को देखा था वह परमेश्वर की ओर से ही था और उसकी महान सामर्थ व प्रताप का चिन्ह था। वह कुछ नहीं कर सका परन्तु केवल पुकार सका ''महिमा!''

इस तूफान के कारण एक बड़ी बाढ़ के आ जाने पर भी परमेश्वर अपने सिंहासन पर था। वह राजा था और गर्जन उसकी आज्ञा मानती थी। दाऊद तूफान की शक्ति को देखकर अचम्भित था और यह जानकर कि इसे परमेश्वर ने भेजा था। तूफान के कारण दाऊद आश्चर्य में देकर अपने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर की शक्ति पर विचार करने लगा था।

इन चीज़ों पर विचार करने पर वह दो शक्तिशाली कथनों से परिणाम निकालता है। पहला, वह हमें बताता है कि प्रभु अपने लोगों को बल देता है। तूफान में उसने जिस शक्ति को देखा था उसने उसे परमेश्वर की शक्ति से अवगत कराया था। उसके समान कोई परमेश्वर नहीं था। दाऊद को इस सच्चाई से आश्चर्य होता था कि परमेश्वर ने हमारे लिए भी इस शक्ति को रखा है। गर्जन और बिजली के पीछे पाई जानेवाली शक्ति इसी तरह से हमारे पास भी हो सकती है। हमारे पीछे पाए जानेवाली इस अद्वितीय शक्ति के कारण हमें किसका भय है? परमेश्वर ने हमारे लिए जो मार्ग रखा है हम उस पर साहस और भरोसे के साथ कदम रख सकते हैं। कोई भी चीज़ हमें रोक नहीं सकती क्योंकि परमेश्वर के शक्तिशाली स्त्रोत हमारे लिए उपलब्ध हैं और हमारे आगे जाएंगे।

पद 11 में दूसरा निष्कर्ष दाऊद लाता है कि परमेश्वर अपने लोगों को शान्ति की आशीष देता है। वे जो परमेश्वर के हैं उन्हे किसी भी चीज़ से डरने की ज़रूरत नहीं है। वे इस अद्वितीय परमेश्वर तक भरोसे के साथ जा सकते हैं। प्रभु यीशु हमारे और पिता के बीच शांति को लाया।

तथापि, जिन्होंने परमेश्वर से अपना मुंह फेर लिया है, एक दिन अपने जीवनों का लेखा देने को वे परमेश्वर के सामने खड़े होंगे। वह कितना भयानक दिन होगा। तौभी, जो उसे जानते व उससे प्रेम करते हैं, उनके लिए भय का कोई कारण नहीं है।

विचार करने के लिए:

- क्या आप कभी एक शक्तिशाली तूफानों के प्रभाव के गवाह रहे हैं? यह हमें परमेश्वर के बारे में क्या सिखाता है?
- पद 11 में दाऊद कौन से दो निष्कर्ष निकालता है? इससे आपको क्या प्रोत्साहन मिलता है?
- परमेश्वर स्वयं को प्रकृति के द्वारा कैसे प्रगट करता है? प्रकृति हमें परमेश्वर के बारे में क्या सिखाती है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को उसके महान बल और सामर्थ के लिए धन्यवाद दें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसने अपनी सामर्थ को हमारे लिए उपलब्ध किया है।
- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो अभी भी परमेश्वर के साथ सही संबन्ध में नहीं है? कुछ समय उनके लिए प्रार्थना करें कि इससे पहले कि बहुत देर हो जाए परमेश्वर उन्हें अपने पास लेकर आए।

30. तूने मुझ पर अनुग्रह किया

पढ़ें भजन संहिता 30:1-12

बाइबल के नये अंतर्राष्ट्रीय संस्करण में इस भजन का परिचय हमें बताता है कि इसे दाऊद ने लिखा था और मन्दिर के उद्घाटन के लिए इसका प्रयोग किया जाता था।

दाऊद का एक भजन। एक गीत। मन्दिर के समर्पण के लिए।

इसमें एक तात्कालिक समस्या पाई जाती है। मन्दिर का निर्माण दाऊद की मृत्यु पश्चात् किया गया था। समाधान इस सच्चाई में हो सकता है कि भजन को दाऊद ने गायकों के प्रयोग हेतु लिखा हो जब बाद में सुलैमान के मन्दिर का उदघाटन किया जाना था।

नये नियम संस्करण में अनुवादित शब्द 'मन्दिर' का सरलता से अनुवाद 'घर' शब्द में हो सकता है। जबकि नया नियम संस्करण 'मन्दिर' शब्द का प्रयोग करता है एक फुटनोट संकेत देता है कि 'महल' शब्द भी हो सकता है। इसका अर्थ यह है कि इस भजन का प्रयोग दाऊद के महल के उद्घाटन में किया गया होगा न कि मंदिर के।

यह भजन परमेश्वर की स्तुति का भजन है। दाऊद पद 1 में यह कहते हुए आरम्भ करता है:

हे यहोवा मैं तुझे सराहूंगा, क्यों कि तूने मुझे खींचकर निकाला है और मेरे शत्रुओं को मुझ पर आनन्द करने नहीं दिया।''

दाऊद का जीवन सदा सरल नहीं था। इस संसार में उसके बहुत से शत्रु थे। उसने अस्वीकार किये जाने के दुख व दर्द को सहा था। उसे पता था कि शत्रुओं से भागना और निराशा व दुख की गहराई में रहना कैसा था। पद 7 में, दाऊद परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करता है कि उसने उसे उन संघर्षों से ऊपर उठाया जिनका सामना वह जीवन में कर रहा था। दाऊद ने परमेश्वर को पुकारा और परमेश्वर उसकी सहायता के लिए आया। परमेश्वर ने उसे घायल नहीं रहने दिया था परन्तु जब दाऊद ने उसे पुकारा उसने उसके सारे घावों को चंगा किया (पद 2)।

पद 3 में ध्यान दें कि दाऊद कैसे कहता है कि परमेश्वर ने उसे कब्र से बचाया है। उसने कई बार उसके जीवन को बचाया था। अपने जीवन के लिए दाऊद अपने प्रभु परमेश्वर का ऋणी था।

जो कुछ प्रभु ने दाऊद के लिए किया था उसके कारण दाऊद प्रभु के लिए गाने

को सभी संतों को बुलाता है और उसके पवित्र नाम की प्रशंसा करता है। ध्यान दें कि बेशक परमेश्वर ने उसे विरोध का सामना करने दिया तौभी दाऊद उसे पवित्र कहता है। वह जीवन में अपनी परीक्षाओं ओर निराशाओं के लिए परमेश्वर पर दोष नहीं लगाता। गलत कामों के लिए वह उस पर दोष नहीं लगाता। बेशक वह हमेशा परमेश्वर के मार्गों को नहीं समझा था, उसने उन्हें तौभी एक सिद्ध और निर्दोष परमेश्वर के हाथ से ग्रहण किया था।

इस पर भी ध्यान दें कि दाऊद के हृदय ने परमेश्वर की आराधना करने और उसके लिए गाने के द्वारा प्रतिक्रिया दी थी। ऐसे लोग हैं जो स्वाभाविक रूप से संगीत के द्वारा परमेश्वर को प्रतिक्रिया देते हैं। दाऊद का हृदय गाने की ओर फिरा था। अन्य संतों के हृदय परमेश्वर की भलाई की गवाही देने या घोषणा करने की ओर फिर सकते हैं। तौभी, दाऊद के लिए संगीत उसके हृदय की भाषा थी।

प्रभु के प्रति दाऊद की स्तुति के कारण पर ध्यान दें। पद 5 में वह में बताता है कि जबकि परमेश्वर का क्रोध क्षण भर के लिए होता है, उसकी प्रसन्नता जीवन भर की होती है। दाऊद को पता था कि परमेश्वर समय समय पर अपने बच्चों को अनुशासित करेगा। यह अनुशासन उनकी भलाई के लिए था। इस अनुशासन में दाऊद परमेश्वर के प्रेम पर प्रश्न नहीं करता। उसे पता था कि जिन दुखों को वह अनुभव कर रहा था उनके द्वारा परमेश्वर उसे सही करने का कार्य कर रहा था और उसे अपने निकट ला रहा था। वह यह भी जानता था कि यह अनुशासन किसी बड़ी चीज़ को जन्म देगा और कि वह अनन्तकाल तक परमेश्वर की प्रसन्नता या अनुग्रह में रहेगा। अनुशासन के समय की अनन्तकाल से तुलना किये जाने का क्या अर्थ है? दुख के समय की उन शिक्षाओं से तुलना किये जाने का क्या अर्थ है जिन्हें हमने सीखा और उस अनुशासन के हमें शोधित किये जाने पर हम प्रभु की कैसे निकटता को अनुभव करते हैं?

दाऊद हमें बताता है कि रात को भले ही हमें रोना पड़े तौभी सुबह हमें आनन्द मिलेगा। दुख हमेशा नहीं रहेंगे। चाहे इस पृथ्वी पर हमें अपने जीवन भर दुख उठाना पड़े, तौभी हम जानते हैं कि स्वर्ग में हमारे लिए परमेश्वर के पास एक स्थान है जहां दुख या दर्द नहीं होगा। अविश्वासी के लिए ऐसा नहीं है। नर्क एक ऐसा स्थान है जहां पीड़ा का अन्त कभी नहीं होता (मरकुस 9:47-48)।

पद 6 में दाऊद अंगीकार करता है कि उसके जीवन में ऐसे भी समय थे जब उसे अत्यधिक सुरक्षा का आभास होता था कि वह कहता था: 'मैं कभी नहीं टलने का।'' दाऊद अपने जीवन में परमेश्वर के अद्‌भुत अनुग्रह को जानता था। तौभी, उसके जीवन में यह भरोसा हिल गया था। परमेश्वर कई बार उसे यह स्मरण कराने को नीचे आता कि उसमें कमज़ोरी और नश्वरता है। उन समयों में दाऊद को यह जानना होता था कि उसे परमेश्वर ने इस सुरक्षा और आशीष को ऋण पर नहीं दिया था। वह उस तक प्रेम में होकर पहुंचा था।

पद 7 में ध्यान दें कि जब परमेश्वर ने दाऊद पर अनुग्रह किया था, यरूशलेम का पहाड़ टूट नहीं सकता था। प्रभु के अनुग्रह के उसके जीवन पर होने पर कोई भी चीज़ उसके विरुद्ध खड़ी नहीं हो सकती थी। तथापि, दाऊद ने परमेश्वर के अनुग्रह को हल्के रूप से नहीं लिया था। उसके जीवन में ऐसे भी समय रहे थे जब ऐसा लगता था कि प्रभु ने अपना मुंह उससे छिपा लिया था।

परमेश्वर द्वारा अपना मुँह छिपा लिये जाने पर दाऊद घबरा गया था। 'घबरा जाना' हृदय का एक व्यवहार नहीं था परन्तु कमज़ोरी और असहायता का एक भाव था। दाऊद के शत्रु उसके पीछे होते हैं, भूमि पर अकाल आता और बहुत से जीवन नष्ट हो गए होते। दाऊद अंगीकार करता है कि परमेश्वर के अनुग्रह के बिना वह नष्ट हो गया होता। वह सभी चीज़ों के लिए परमेश्वर के अनुग्रह और समर्थन पर निर्भर था। उसके बल, उसकी बुद्धि, उसकी संपन्नता, उसका जीवन सभी परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर थे।

परमेश्वर ने दाऊद को विरोध का सामना करने दिया ताकि उसे स्मरण करा सके कि वह उसके अनुग्रह पर कितना अधिक निर्भर था। अपने संकट में दाऊद ने परमेश्वर को पुकारा (पद 8)। परमेश्वर दया और करुणा में होकर उस तक पहुंचा। परमेश्वर ने उस पर अनुग्रह किया था और उसके जीवन को बचाया था इसलिए दाऊद ने परमेश्वर को महिमा दी। दाऊद का जीवन प्रभु परमेश्वर और उसके अनुग्रह के प्रति बड़ी विश्वासयोग्यता का सामर्थी उदाहरण था।

परमेश्वर ने दाऊद के विलाप को नृत्य में बदल दिया था। परमेश्वर ने उसके टाट को उतारकर उसे आनन्द का वस्त्र पहनाया था। दाऊद जानता था कि विलाप करना और टाट ओढ़ना कैसा था। परमेश्वर ने उसके जीवन में उसे इन चीज़ों का अनुभव होने दिया। दाऊद विजयी होने के लिए परमेश्वर की सामर्थ को भी जानता था।

दाऊद अपने प्रभु के लिए हृदय से स्तुति के गीत गाता। जबकि परमेश्वर ने उसके लिए इतना कुछ किया था इसलिए वह शांत नहीं रहेगा। वह हर सुनने वाले को चिल्लाकर यह बताना चाहता था कि परमेश्वर एक प्रेमी परमेश्वर था जिसने उस पर अनुग्रह किया था। इसी कारण दाऊद का हृदय हमेशा गाता रहता था।

इस भजन की सबसे बड़ी शिक्षा हमारे जीवनों पर परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में है। इस अनुग्रह के बिना हम कहाँ होते? जब परमेश्वर हम पर अनुग्रह करता है, हम आशीषित और बलवन्त होते हैं। उस अनुग्रह के बिना हम कमज़ोर होते हैं। काश कि हम अपने जीवनों, परिवारों और सेवकाइयों पर परमेश्वर के अनुग्रह के लिए अधिक से अधिक पुकारना सीखें।

विचार करने के लिए:

- इस परिच्छेद में दाऊद परमेश्वर की प्रशंसा कैसे करता है? परमेश्वर की प्रशंसा करने के अन्य तरीके कौन से हैं?

- दाऊद की परीक्षाएं और प्रभु का छुटकारा केवल उसकी आराधना बढ़ाने वाले ही लगते हैं। परीक्षाएं परमेश्वर और आराधना के बारे में आपके अनुभव को कैसे बढ़ाते हैं?
- जो दुखी हैं उनके लिए यह भजन क्या सांत्वना देता है?
- दाऊद की शक्ति का स्त्रोत क्या था? क्या आपने इस तरह से बल पाने का अनुभव किया था?
- क्या परमेश्वर का उद्देश्य जीवन की प्रत्येक परीक्षा से हमें स्वतंत्र करने का है? क्या हमारी परीक्षाएं आशीषों में बदल सकती हैं? आपको अपने निकट लाने के लिए परमेश्वर आपके जीवन में दुखों का प्रयोग कैसे करता है?
- यह भजन दाऊद के जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में क्या सिखाता है? क्या यह अनुग्रह आज आपके लिए भी उपलब्ध है?

प्रार्थना के लिए:

- उन समयों के लिए प्रभु को धन्यवाद दें जब उसने आपको आपकी परीक्षाओं और दुखों से छुड़ाया था? उसे इसलिए भी धन्यवाद दें कि उसने आपके जीवन में दुखों का प्रयोग भला करने के लिए किया है।
- प्रभु को उस बल के लिए धन्यवाद दें जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनके लिए की है जो उससे प्रेम करते हैं।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि आपको अनुशासित करने के लिए वह पर्याप्त रूप से आपकी चिन्ता करता है। उसके पिता समान प्रेम के लिए उसे धन्यवाद दें।
- आपके जीवन, आपके विवाह और आपकी सेवकाई पर परमेश्वर के बड़े अनुग्रह के लिए धन्यवाद दें।

31 यहोवा मेरा रक्षक है

पढ़ें भजन संहिता 31: 1-24

हमने देखा कि दाऊद की जीवन में अपने भाग की समस्याएं थीं। भजन 31 में, दाऊद यहोवा को रक्षा के लिए पुकारता है। हमने जाना कि जबकि परमेश्वर सदैव हमारे द्वारा सामना की जानेवाली समस्याओं और कठिनाइयों को नहीं हटाता, तौभी उन कठिनाइयों में वह निश्चय ही हमारे साथ होगा।

पद 1 में, दाऊद हमें स्मरण कराता है कि कठिनाई के समयों में उसने परमेश्वर में शरण ली थी। इन समयों में उसने उससे चार चीज़ों की मांग की। आइये दाऊद के इन चार निवेदनों की जांच करें।

प्रथम पद 1 में, उसने कहा कि उसे कभी लज्जित न होना पड़े। दाऊद के लिए लज्जित होना वह एक या दो चीज़ें थी जिन्हें होना था। यदि उसने अपने प्रभु परमेश्वर का इन्कार किया होता तो उसके शत्रु उस पर विजयी हो जाते। वह नहीं चाहता था कि उसके साथ इनमें से कोई भी चीज़ हो। अपने जीवन को बचाने या अपने दुखों को कम करने के लिए उसने कभी भी अपने प्रभु परमेश्वर का इन्कार करना नहीं चाहा था। वह नहीं चाहता था कि परमेश्वर से फिरने की परीक्षा में पड़े या उन समयों से समझौता कर ले। अपनी परीक्षाओं में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए उसने बल मांगा।

यदि दाऊद के शत्रुओं ने उस पर विजय पा ली होती तो वह सोचता कि उससे उसके प्रभु परमेश्वर के प्रभाव पर असर पड़ेगा। ये शत्रु मान लेते कि परमेश्वर दाऊद को छुड़ाने योग्य नहीं था। दाऊद इस विचार को सहन नहीं कर सकता था; कि शत्रु ऐसा सोचते कि परमेश्वर उसे छुड़ाने के योग्य नहीं है। उसका हृदय परमेश्वर की महिमा करता था। दाऊद परमेश्वर से उसे बल देने को कहता है ताकि वह परमेश्वर का इन्कार करने के कारण उसके सामने लज्जित न हो। वह यह भी कहता है कि प्रभु का नाम उसके उस बोझ के कारण भी लज्जित न हो जिसे उसे सहना था।

दूसरी बात दाऊद अपनी परीक्षा में परमेश्वर से मांगता है कि परमेश्वर उसे उसके शत्रुओं से छुड़ा ले। विशिष्ट रूप से ध्यान दें कि दाऊद ने परमेश्वर को धर्मी परमेश्वर के रूप में जाना था। वह उसी धार्मिकता में छुटकारे के लिए कहता है। वह यहां कह रहा है कि भलाई बुराई पर विजयी हो। वह कह रहा है कि उसकी आवश्यकता के समय में धार्मिकता प्रबल हो। वह बुराई पर विजयी होते नहीं देखना चाहता। वह चाहता है कि परमेश्वर विजयी हो। वह केवल अपने छुटकारे की ओर ही नहीं देख रहा है। वह छुटकारा इसलिए पाना चहता है ताकि परमेश्वर का धर्मी उद्देश्य पूरा हो, न

केवल दाऊद में परन्तु उसके शत्रुओं के सामने भी।

पद 2 में, तीसरी बात जो दाऊद ने परमेश्वर से मांगी वह थी कि वह अपना कान उसकी ओर फेरे और शीघ्रता से आए। उसे परमेश्वर से यह कहने में संकोच नहीं हुआ कि उसकी सुने। दाऊद जानता है कि परमेश्वर एक व्यक्तिगत परमेश्वर है जो अपने लोगों की दोहाई में रुचि रखता है। वह परमेश्वर के प्रेम, दया और करुणा पर निर्भर है। वह जिस पर निर्भर नहीं करता वह परमेश्वर के अनुग्रह के बिना उसकी अपनी विजय पाने की क्षमता है।

प्रभु में शरण लेने के बाद दाऊद की चौथी विनती थी कि परमेश्वर उसके लिए दृढ़ गढ़ बने। वह परमेश्वर से उसे घेर लेने को कह रहा है। एक गढ़ मज़बूत दीवारों से बना होता था जो उसके भीतर रहनेवालों की शत्रु के हमले से रक्षा करता था। शत्रु गढ़ पर अपने तीर चला सकता था परन्तु भीतर रहने वाले सुरक्षित होते थे। दाऊद को भरोसा था कि जब तक वह गढ़ में है, वह सुरक्षित है। यदि वह इस गढ़ में है तो शत्रु किसी भी तरह से उस तक नहीं पहुंच सकता है। दाऊद का भरोसा प्रभु परमेश्वर में है। वह परमेश्वर से अपनी आवश्यकता के समय में उसे घेर लेने को कह रहा है ताकि शत्रु के तीरों से उसे कोई हानि न हो।

पद 3 से, हम समझते हैं कि दाऊद को पता था कि परमेश्वर उसकी चट्टान और गढ़ था। वह परमेश्वर से ऐसा कुछ करने को नहीं कह रहा है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने पहले से ही करने की नहीं की थी। क्योंकि परमेश्वर ने पहले से ही स्वयं को दाऊद का रक्षक होने के लिए सौंप दिया था, दाऊद परमेश्वर से दो और चीज़ों की मांग करता है। प्रथम, पद 3 में उसने कहा कि अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई कर। अन्य शब्दों में, दाऊद को अपने जीवन के इस समय में बुद्धि की अधिक ज़रूरत थी। दाऊद अपनी कमज़ोरी और दुख में प्रभु के नाम को महिमा दिलाना चाहता था। उसने कहा कि परमेश्वर उसकी अगुवाई करे ताकि वह हमेशा उसके नाम को आदर और महिमा दिलाए न शत्रु यह देखकर जान जाते कि प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान प्रभु के रूप में राज्य करता है।

दूसरी विनती दाऊद की प्रभु-अपने गढ़ से यह है कि प्रभु उसे शत्रु द्वारा बिछाए गए जाल से छुड़ाए। दाऊद को विश्वास था कि प्रभु की इच्छा अपने लोगों को शत्रु के जाल और फन्दों से स्वतंत्र कराने की थी। प्रभु नहीं चाहता कि हम शत्रु से परास्त हों। वह हमें विजय दिलाना चाहता है। शैतान फाड़ खाना चाहता है (1पतरस 5.8)। बहुत से इस फंदे में फंसे हुए हैं। दुख की बात यह है कि ऐसे बहुत से विश्वासी हैं जिनके जीवन शैतान के जाल में फंसे हुए ही बीत जाते हैं। कुछ लोग उनके विरोध में की गई चीज़ों की कड़वाहट और क्रोध पर विजयी नहीं हो पाते। कुछ अपने बहन और भाइयों को उनके अतीत के पापों के कारण क्षमा करने से इंकार कर देते हैं। दाऊद इस जाल में पड़े नहीं रहना चाहता था। वह विजय चाहता था।

अपनी परीक्षा में दाऊद ने स्वयं को परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया था। क्रूस पर अपना जीवन देते हुए यीशु ने इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया था। (लूका 23:46) यीशु

ने भी अपने दुख के समय में अपना जीवन परमेश्वर के हाथों में रख दिया था। दोनों ही पुरुषों ने अपने जीवनों को पिता की इच्छा पर सौंप दिया था, जो कुछ हुआ था उस सब में उसकी महिमा और उद्देश्य को देखते हुए।

दाऊद ने इस पर विश्वास किया कि परमेश्वर उसकी विनती को सुनेगा और उसे छुड़ाएगा। वह स्वयं को केवल परमेश्वर पर ही सौंप देता है। उसने यह माना कि व्यर्थ मूर्तियों पर मन लगाना बेकार है (पद 6)। एक ही सच्चा परमेश्वर है। केवल वही विजय दे सकता है। दाऊद ने स्वयं को किसी और देवता के आगे घुटने न झुकाने को समर्पित किया परन्तु अपनी विजय के लिए केवल इस्राएल के परमेश्वर पर भरोसा करने को।

परमेश्वर पर भरोसा करना कोई सरल चीज़ नहीं है। परमेश्वर के तरीके हमारे तरीकों के समान नहीं होते। वह कई बार हमें ऐसे मार्गों पर लेकर जाएगा जिन्हें हम समझते नहीं होंगे। संकट के समयों में हम पर अपनी स्वयं की विजय देखने की परीक्षा आएगी। दाऊद, अपने दुख में केवल परमेश्वर पर भरोसा करने को ही समर्पण करता है। वह स्वयं को परमेश्वर के ढंग से चीज़ों को करने के लिए सौंपता है।

पद 7 में, दाऊद ने स्वयं को प्रभु के प्रेम में आनंदित और मगन होने के लिए सौंप दिया था। दाऊद हृदय से आराधना करता था। उसकी वचनबद्धता थी कि विजय प्राप्त करने पर वह परमेश्वर को धन्यवाद देगा और उसके नाम की आराधना करेगा। वह परमेश्वर की प्रशंसा उस एक के रूप में करेगा जिसने उसके दुख और उसके प्राण के कष्ट को देखा था। वह प्रभु में आनंद मनाएगा क्योंकि उसने उसे शत्रु के हाथों में नहीं छोड़ा। उसने उसकी प्रशंसा की क्योंकि उसने उसे आशीष देते हुए उसके पैरों को चौड़े स्थान में खड़ा किया।

दाऊद के इन शब्दों के बारे में सबसे अद्वितीय बात यह है कि इन्हें बड़ी पीड़ा के समय बोला गया था। पद 9 में, हम देखते हैं कि दाऊद की आंखें दुख के कारण कमज़ोर हो गई थीं। उसका प्राण और उसकी देह घुले जा रहे थे। ऐसा लगता था कि शोक उसे मिटाता जा रहा था। उसका बल घट गया था और उसकी हड्डियाँ उसके उस बड़े दुख के बोझ के नीचे होने के कारण कमज़ोर हो गई थीं। उसके पड़ोसियों ने भी उसकी उपेक्षा की। उसके मित्रों ने उससे मुँह फेर लिया था। वह इतने अधिक शोक में था कि जो कोई उसे सड़क पर देखता था उससे दूर भाग जाता था। वह अपने जीवन को एक टूटे बर्तन के समान बताता है जिसे लोग जल्द ही भूल जाते हैं। वह निन्दा का विषय रहा था। ऐसा लगता था कि भय ने उसे चारों ओर से घेर लिया था। उसके शत्रु उसके विरोध में षडयंत्र करते और योजना बनाते कि कैसे उसके जीवन का अन्त करें। यह दाऊद के लिए सरल समय नहीं था।

दाऊद ने आशा नहीं छोड़ी। वह यह कहते हुए परमेश्वर पर भरोसा करता रहा, ''तू मेरा परमेश्वर है'' (पद 14)। कुछ भी चीज़ परमेश्वर में उसके विश्वास और भरोसे को हिला नहीं पाई। बेशक वह नहीं समझ पाया कि परमेश्वर क्या कर रहा है, तौभी उसने पूरी तरह से उस पर भरोसा किया।

दाऊद ने यह कहते हुए अपना जीवन परमेश्वर को सौंप दिया था, ''मेरे दिन तेरे हाथ में हैं।'' अन्य शब्दों में, परमेश्वर को पता था कि वह क्या कर रहा था। परमेश्वर का उद्देश्य सिद्ध था। परमेश्वर जिसका सामना उसे कराना चाहता था उसने उसे ग्रहण किया। उसने केवल इतना कहा कि परमेश्वर उसे उसके शत्रुओं से छुड़ाए।

दाऊद ने यह भी कहा कि परमेश्वर अपने मुख का प्रकाश उस पर चमकाए। विचार यहां यह है कि परमेश्वर उस पर अपनी आशीषों को उण्डेले। दाऊद ने विश्वास किया कि परमेश्वर का प्रेम अविश्वसनीय प्रेम था (पद 16)। वह समझ गया था कि जबकि चीज़ें अभी उसके लिए ठीक नहीं दिख रही थीं, तौभी परमेश्वर के प्रेम के समय पर प्रगट होने में संदेह नहीं किया।

पद 17 में दाऊद ने परमेश्वर से दुष्टों को लज्जित करने के लिए कहा। उसने परमेश्वर से उनका न्याय करने को कहा ताकि वे पाताल में चुपचाप पड़े रहें। वह परमेश्वर से झूठ बोलने वाले होंठों को शान्त करने को कहता है जो अहंकार और अपमान से धर्मी की निन्दा करते हैं। वह चाहता था कि परमेश्वर का न्याय देश में प्रबल हो।

दाऊद 19-24 पदों में प्रशंसा और धन्यवाद के शब्दों के साथ इस भजन को समाप्त करता है। उसने परमेश्वर की भलाई का आनन्द लिया जिसे परमेश्वर का भय माननेवालों के लिए रखा गया था (पद 19)। ध्यान दें कि इस भलाई को 'रखा गया था' और मनुष्यों के सामने प्रगट किया गया था। यह भलाई इस संसार में और आनेवाले संसार में भी है।

पद 20 में, दाऊद ने प्रभु की उपस्थिति के आश्रय का आनन्द लिया। उस उपस्थिति में, विश्वासी सुरक्षित रूप से छिप सकता है। विश्वासी वहाँ दुष्ट स्त्री पुरुषों द्वारा उनके विरुद्ध बनाए जाने वाली योजना से सुरक्षित हैं। ध्यान दें कि बुरी योजना बनाना या दोष लगाना यही 'नहीं रुक जाते हैं। अविश्वासी बुरा कहते रहेंगे परन्तु उन समयों में प्रभु हमारी सुरक्षा होगा।

ऐसा लगता है कि पद 21 में दाऊद अपने जीवन की किसी विशिष्ट घटना के बारे में बता रहा है। उस समय पर उसे शहर में चारों ओर से घेर लिया गया था। उसने असहाय होने और परमेश्वर की दृष्टि से दूर हो जाने का अहसास किया था। उस समय में वह परमेश्वर को पुकार उठा और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का जवाब दिया और उसकी सहायता के लिए आया। दाऊद ने परमेश्वर की प्रशंसा की क्योंकि उसने उसे अपने अद्‌भुत प्रेम के द्वारा उस समय छुड़ाया था जब उसे उस शहर में चारों ओर से घेरा गया था। दाऊद उस समय को याद करता है और यह उसके लिए इस नई परीक्षा में आशा को लेकर आया जिसका वह सामना कर रहा था।

दाऊद पद 23-24 में सभी विश्वासियों के लिए एक उपदेश के साथ समापन करता है। वह हमें परमेश्वर से प्रेम करने, हियाव बान्धने और हृदयों को दृढ़ रखने के लिए कहता

है। प्रभु में हमारी आशा व्यर्थ नहीं होगी। परमेश्वर विश्वासयोग्य बने रहनेवालों की रक्षा करता है और जो कुछ उन्होंने किया होता है उसका बदला उन्हें देता है।

इस भजन में, हम देखते हैं कि कैसे अपने दुख और दर्द में दाऊद का ध्यान प्रभु पर है। उसकी सबसे बड़ी इच्छा यह है कि परमेश्वर उसे अपने मार्गों के प्रति विश्वासयोग्य बनाए रखे जब तक कि वह छुड़ाया नहीं जाता। चित्र एक सैनिक का है जो हमला करने की अवस्था में खड़ा है। वह जानता है कि सफलता आ रही है परन्तु तब तक उसका विश्वासयोग्य बने रहना ज़रूरी होगा। परमेश्वर हमारी सहायता के लिए आएगा। तथापि, तब तक हमें उसकी बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना होगा। समय आने पर, हम उसकी विजय का अनुभव करेंगे।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर आपके लिए शरण या आश्रय कैसे रहा है? एक ऐसी विशिष्ट घटना के बारे में सोचें जब परमेश्वर ने आपको सुरक्षित रखा था।
- दाऊद ने परमेश्वर से उसे शत्रु के जाल से स्वतंत्र करने को कहा जो उसने उसके लिए लगाया था। शत्रु ने आपके लिए कौन सा जाल लगाया है? आपके समुदाय के लिए उसने कौन सा जाल लगाया है?
- हमारी परीक्षा और दुख के समय में क्या परमेश्वर पर संदेह करने के लिए हमारे पास कोई कारण है?
- आज जो लोग परीक्षाओं और सताव का सामना कर रहे हैं दाऊद उन्हें क्या परामर्श देता है?
- हमारे दुख में दृढ़ और विश्वासयोग्य बने रहना कितना महत्वपूर्ण है? जिन चीज़ों में आपने दुख उठाया है क्या आप उनके प्रति विश्वासयोग्य रहे हैं?

प्रार्थना के लिए:

- क्या आप आज एक परीक्षा का सामना कर रहे हैं? प्रभु परमेश्वर से आपको दाऊद के विश्वास और भरोसे को देने को कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह हमारी प्रार्थना को सुनता और हमारी सहायता के लिए आता है।
- कुछ समय उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने को निकालें जो अपने जीवन में इस समय परीक्षा का सामना कर रहा है। इस परीक्षा के समय में परमेश्वर को उसे बल देने को कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि चाहे आपके साथ कुछ भी क्यों न हो, उसका प्रेम और मार्गदर्शन हमेशा तक बने रहेंगे।
- परमेश्वर से आपको तब तक विश्वासयोग्य और दृढ़ बने रहने का अनुग्रह देने को कहें जब तक कि वह आपको विजय नहीं दे देता।

32 क्षमा की आशीष

पढ़ें भजन संहिता 32:1-11

अपने प्रभु परमेश्वर के साथ जबकि दाऊद ने एक अद्‌भुत संबन्ध का आनन्द लिया था, तौभी वह सिद्ध नहीं था। ऐसे भी समय थे जब दाऊद गहरे पापों में गिरा। उसे पता था कि परमेश्वर के साथ सहभागिता तोड़ने का क्या अर्थ था। वह यह भी जानता था कि क्षमा किया जाना क्या था। यहां भजन 32 में दाऊद व्यक्तिगत अनुभव से आशीष का क्षमा के बारे में बताता है।

दाऊद पद 1 में हमारे अपराधों के क्षमा किये जाने और हमारे पापों के ढांपे जाने के बारे में बोलते हुए आरम्भ करता है। पद 2 में, वह यह कहते हुए समानान्तर विचार को दोहराता है कि वह व्यक्ति धन्य है जिसके पाप (अधर्म) का लेखा परमेश्वर नहीं लेता और जिसमें कपट नहीं होता। यहां हमें कुछ महत्वपूर्ण विवरणों को देखना होगा। दाऊद पाप के बारे में बताने को चार शब्दों का प्रयोग करता है। वह अपराधों के बारे में बोलते हुए पद 1 से आरम्भ करता है। अपराध करने से अभिप्राय वर्जित क्षेत्र की सीमा को लांघने से है। दूसरा शब्द 'पाप' है। पाप करना लक्ष्य से चूकना या निशाना न लगा पाना है। पाप करना, परमेश्वर द्वारा ठहराए गए मानदण्ड से गिरना है। यहां प्रयुक्त तीसरा शब्द अधर्म है। यह तीसरा शब्द किसी ऐसी चीज़ के विषय में बताता है जो कुटिता होती है यो ऐसी चीज़ जो अपने उचित रूप से हट जाती है। इसका एक अच्छा उदाहरण नदी होगा जिसने अपना मार्ग बदल लिया हो। अंतिम शब्द कपट का प्रयोग हुआ है। यह शब्द झूठ, पाखण्ड या असावधानी के बारे में बताता है।

प्रथम दो पदों से हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि वर्जित क्षेत्र में अपराध करनेवाले सभी लोगों के लिए क्षमा उपलब्ध है। वे जो निशाने से चूक जाते हैं या लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाते उन्हें ढांपा जा सकता है। परमेश्वर के लिए उनके साथ विद्रोह को बनाए रखना संभव नहीं है जो अपने मार्ग से हट गऐ थे। झूठ और पापण्ड में रहने वाले भी परमेश्वर के पास अने और उसकी क्षमा की चाह करने के कारण उसकी क्षमा के निश्चय को पा सकते हैं। इसी कारण, दाऊद परमेश्वर की प्रशंसा करता है।

पद 3 से ध्यान दें कि जबकि पापों के लिए क्षमा उपलब्ध है, अत: पाप करने वालों को प्रभु के समक्ष इसका अंगीकार करना ज़रूरी है। व्यक्तिगत अनुभव से बोलते हुए दाऊद हमें स्मरण कराता है कि जब वह अपने पापी मार्गों को लेकर चुप रहा, उसकी हड्डियाँ कराहते कराहते पिघलने लगीं। दाऊद चुप न रह सका। पाप में बने रहने में दाऊद को आराम नहीं मिल पाया। एक बुरी या भयानक बीमारी के समान, पाप ने दाऊद

को खा लिया था। दिन भर उसे अपने हृदय में पाप का बोझ महसूस होता था। इसने धीरे-धीरे उसका नाश कर दिया था। विश्वास को पाप में बने रहने से संतोष नहीं मिल सकता। दाऊद के समान, हम पाप को हमें भीतर से खाते हुए अनुभव करेंगे।

ध्यान दें कि दाऊद ने अपने पाप को बताने की ज़रूरत को अनुभव किया। जब तक उसने अपने हृदय में पाप को छिपाया, उसने इसके भयानक बोझ को महसूस किया। पद 4 में दाऊद ने अपने पाठकों को बताया कि दिन और रात उसने अपने पाप के बोझ को अनुभव किया था। उसका बल उसमें से निकल गया था। दाऊद के अनुसार इसका समाधान उस पाप को स्वीकारना व उसका अंगीकार करना था।

पद 5 में दाऊद ने अपनी को चुप्पी को तोड़कर अपने पाप को स्वीकार किया, अपने अधर्म को प्रगट कर अपने अपराध का अंगीकार किया। दाऊद स्पष्ट करता है कि पाप को परमेश्वर के सामने मान लेना चाहिए। हमें परमेश्वर के सामने यह स्वीकार करना ज़रूरी है कि हम निशाने से चूक गए हैं। हमें अपनी दोष-भावना को स्वीकार कर अपने टेढ़े मार्गों को प्रगट कर देना चाहिए। हमें स्वीकार करना चाहिए कि हमने वर्जित क्षेत्र में अपराध किया है। यदि दाऊद को अपने जीवन में आराम पाना था, तो इसके लिए उसे अपने पाप को परमेश्वर को बताना ज़रूरी था।

दाऊद हमें आश्वस्त करता है कि जब हम इन गलतियों को परमेश्वर के सामने मान लेते हैं तो वह हमें आश्वस्त कर देगा। हमारे विरुद्ध अधिक समय तक पाप और गलतियाँ खड़े नहीं रहेंगे। अधिक समय तक हम इसके बोझ को नहीं सहेंगे। अधिक समय तक वे हमारा नाश नहीं कर पाएंगे।

दाऊद हर उस व्यक्ति को जो धर्मी है क्षमा की इस अद्‌भुत संभावना की ज्योति में प्रार्थना करने के लिए बुलाता है। जब तक कि परमेश्वर इसका पता न लगा सके कि क्षमा की आशा है। क्षमा के लिए की गई प्रार्थना के परिणाम पर ध्यान दें। दाऊद हमें बताता है कि जल की बड़ी बाढ़ आने पर वह उन तक नहीं पहुंच पाएगी जिन्हें परमेश्वर ने क्षमा किया है। परमेश्वर इस व्यक्ति के लिए छिपने का स्थान होगा जिसने अपने को पाप स्वीकार व अंगीकार किया है। (पद 7) परमेश्वर उसके संकट के समय में उसकी रक्षा करेगा और उसे बुराई से छुड़ाएगा।

पद 7 में ध्यान दें कि जिन्हें क्षमा किया गया है उन्हें परमेश्वर चारों ओर से छुटकारे के गीतों से घेरे रहता है। क्षमा किये जाने से पहले, दाऊद के हृदय में कोई गीत नहीं था। वह पाप में संतुष्ट नहीं हो सका। उसने दोष भावना के एक भारी बोझ को उठाया था। इस बोझ के कारण वह परमेश्वर की प्रशंसा नहीं कर सकता था। तौभी, इस बोझ के हटने पर, दाऊद प्रशंसा और धन्यवाद से भर गया। उसका हृदय आनंद और परमेश्वर के प्रति प्रशंसा से भरा था। आनंद और आराधना को फिर से पा लिया गया था। पाप में बने रहने पर, हममें संतोष नहीं होगा। हमारी आराधना प्रभावित होगी और हम प्रभु के आनंद को अनुभव करने के योग्य नहीं होंगे। पाप का अंगीकार आनंद और आराधना को फिर से लाएगा।

पद 8 में, दाऊद ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि उनके द्वारा अपने पाप का अंगीकार किये जाने पर, परमेश्वर उनकी उस मार्ग में अगुवाई करेगा जिसमें उन्हें चलना चाहिए। उसकी और उसके मार्गों की ओर लौट आनेवालों को परमेश्वर बुद्धि देगा। पाप में बने रहने पर, हम परमेश्वर के मार्गदर्शन व निर्देशन के लिए नहीं खुलते हैं। पाप परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता में बाधक बन जाता है। पाप का अंगीकार इसे फिर से लौटाता है।

दाऊद अपने पाठकों को कहता है कि घोड़े और खच्चर के समान न बनो जिस पर लगाम और बाग से नियंत्रण किया जाता है। जब तक कि उन पर विशिष्ट दिशा की ओर जाने का दबाव नहीं डाला जाता वे आगे नहीं बढ़ते। परमेश्वर घोड़े या खच्चर के समान हम पर नियंत्रण करना नहीं चाहता। उसे दबाव से की जाने वाली आज्ञाकारिता से खुशी नहीं होती। परमेश्वर की इच्छा यह है कि हम स्वेच्छा से उसे प्रतिक्रिया दें और उसकी आवाज़ को सुनें। दबाव से की जानेवाली आज्ञाकारिता वास्तविक आज्ञाकारिता नहीं है।

पद 10 में, दाऊद हमें स्मरण कराता है कि दुष्ट को तो बहुत पीड़ा होती है, परन्तु परमेश्वर का अविश्वसनीय प्रेम उन्हें घेरे रखता है जो उस पर भरोसा करते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमारे मार्ग से भटक जाने पर परमेश्वर हमसे प्रेम नहीं करता है। तथापि, मार्ग से भटक जानेवाले, अपने जीवनों में परमेश्वर के प्रेम के अनुभव को रोक देते हैं। जब हम पाप और विद्रोह के कारण परमेश्वर से दूर हो जाते हैं, हम स्वयं को उस घनिष्ठता से अलग कर लेते हैं जिसका अनुभव हम उसके साथ कर सकते हैं। पाप का अंगीकार परमेश्वर के साथ घनिष्ठता के उस अनुभव को फिर से ला सकता है।

क्षमा की सच्चाई के कारण दाऊद प्रभु में आनंदित हो सका। पाप के बोझ के हटाए जाने के बाद उसका हृदय आनंद से उछल रहा था। सहभागिता के फिर से लौट आने पर उसने प्रभु की प्रशंसा में गीत गाए।

विचार करने के लिए:

- दाऊद इस भजन में पाप के लिए किन चार शब्दों का प्रयोग करता है? ये शब्द हमें पाप के बारे में क्या सिखाते हैं?
- हमारे जीवनों में अंगीकार न किये गए पाप के साथ रहने का क्या परिणाम होता है?
- परमेश्वर उन्हें क्या आशीषें देता है जो स्वेच्छा से अपने पापों का अंगीकार करने का चुनाव करते हैं

प्रार्थना के लिए:

- पाप की क्षमा के लिए प्रभु को धन्यवाद दें।
- परमेश्वर को आपके हृदय की जांच करने और किसी ऐसे पाप को प्रगट करने के लिए कहें जो आपके जीवन में पाया जाता है।
- परमेश्वर से आपको सहभागिता और आनंद को लौटाने के लिए कहें।

33. परमेश्वर की स्तुति और भय मानने के कारण

पढ़ें भजन संहिता 33:1-22

जबकि इस भजन का लेखक विशिष्ट रूप से बताया नहीं गया है, तौभी यह दाऊद के अन्य भजनों के समान लगता है। यह भजन लोगों को यह जानने को बुलाता है कि इस्राएल के प्रभु परमेश्वर से संबन्धित होने का उन्हें कितना बड़ा विशेषाधिकार मिला है। यह प्रशंसा और आराधना के लिए बुलाहट है। भजन में दो प्रमुख निवेदन दिखते हैं। हम इन निवेदनों की अलग अलग जांच करेंगे।

प्रभु के लिए आनन्द से गाएं

परमेश्वर के लोगों के लिए प्रथम विनती या बुलाहट प्रभु के लिए आनन्द से गाने की है। ध्यान दें कि यह बुलाहट धर्मियों के लिए है। यह अधर्मी या पाखण्डी लोगों के लिए नहीं है। उनकी आराधना तब तक ग्रहण नहीं होगी जब तक कि वे अपने पापों से पश्चात्ताप न कर लें। तौभी धर्मियों के लिए यह सही बैठता है कि वे परमेश्वर की स्तुति करें।

पद 2 और 3 में ध्यान दें कि प्रभु आराधना के बारे में तीन चीज़ें कहता है। पहली, धर्मियों को वीणा बजाकर प्रभु की प्रशंसा करनी थी। उन्हें दस तार वाली सारंगी पर प्रभु के लिए संगीत बनाना है। भजनकार अपने पाठकों को ''भली-भांति बजाने'' को प्रोत्साहित करता है। उसे आशा थी कि धर्मी सर्वोत्तम करेंगे। इससे हमें यह नहीं समझना चाहिए। कि केवल निपुण संगीतकार ही हमारी आराधना सेवाओं में संगीत दे सकते हैं। निश्चय ही परमेश्वर उनके दीन प्रयासों को ग्रहण करता है जो निपुण नहीं होते। हमें यहां यह समझने की ज़रूरत है कि हमारी आराधना के संबन्ध में, परमेश्वर हमारे सर्वोत्तम को पाने के योग्य है फिर चाहे वह कैसा भी हो।

भजनकार की बुलाहट प्रभु परमेश्वर की आराधना में संगीत उपकरणों का प्रयोग करने की है। हम कह सकते हैं कि आराधना निश्चय ही संगीत उपकरणों के बिना भी हो सकती है। परन्तु परमेश्वर को अपनी संतान द्वारा उसकी महिमा के लिए वाघ यन्त्रों पर संगीत बजाने से खुशी मिलती है।

दूसरा, पद 3 में ध्यान दें कि भजनकार पाठकों को प्रभु के लिए एक नया गीत गाने को बुलाता है। इससे संकेत मिलता है कि परमेश्वर आराधना में रचनात्मकता को

बढ़ावा देता है। इसक अर्थ यह नहीं है कि हमें उन पुराने गानों को फेंक देना है जिन्हें पीढ़ियों से गाया जा रह है। तौभी, भजनकार संगीत के द्वारा विश्वास की नई अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित नहीं करता है। वह अपने पाठकों को नये गीत लिखने की चुनौती देता है जिसमें वे अपने हृदय की आराधना को व्यक्त करें और दिखाएं कि परमेश्वर उनके लिए व्यक्तिगत रूप से क्या महत्व रखता है।

अन्त में, भजनकार आराधना में एक आनन्द को बढ़ावा देता है। पद 3 में अपने पाठकों को वह प्रभु के लिए जयजयकार करने को कहता है। भजनकार के अनुसार आराधना विश्वास की एक आनंदपूर्ण अभिव्यक्ति होनी चाहिए। कुछ विश्वासी आराधना की आनंदपूर्ण अभिव्यक्ति का दिखावा करते हैं। यह परिच्छेद हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि आराधना का आंनद प्रभु के हृदय को प्रसन्न कर देता है।

भजन 33 की इस प्रथम विनती में, धर्मियों को प्रभु के लिए निपुणता और रचनात्मकता और आनंदपूर्ण संगीत के साथ गाने को बुलाया गया है। इसके बहुत से कारण हैं। पद 4 से 7 में, भजनकार हमें असंख्य कारण देता है कि हमें प्रभु के लिए क्यों आनन्द से गाना और संगीत बजाना चाहिए।

पहला, हमें प्रभु के आनन्द से इसलिए गाना चाहिए क्योंकि परमेश्वर का वचन सही और सत्य है (पद 4)। परमेश्वर ने जो करने को कहा है वह उसे ज़रूर करेगा। वह पूरी तरह से विश्वासयोग्य है। हम पूरी तरह से उस पर भरोसा कर सकते हैं।

दूसरा, हमें परमेश्वर की स्तुति इसलिए करनी चाहिए क्योंकि जो कुछ भी वह करता है उसमें वह विश्वासयोग्य है (पद 4)। परमेश्वर कभी नहीं बदलेगा। हम सदा उस पर निर्भर रह सकते हैं। जब हम उसके प्रति अविश्वासयोग्य रहते हैं। तब भी वह हमारे प्रति विश्वासयोग्य बना रहता है (2तीमुथियुस 2:13)।

परमेश्वर की स्तुति गाने का तीसरा कारण पद 5 में मिलता है। भजनकार ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि प्रभु धर्म और न्याय से प्रीति रखता है। यदि परमेश्वर ने धर्म और न्याय से प्रेम नहीं किया होता तो आज हम कहाँ होते? हमारे लिये यह जानना कितनी अद्‌भुत चीज़ है कि बुराई विजयी नहीं होगी। धर्म और न्याय प्रबल होंगे। क्योंकि परमेश्वर असीम रूप से भला है इसलिए हमें आशा है। परमेश्वर की प्रशंसा करने का यही कारण है।

धर्मियों के लिए परमेश्वर की स्तुति करना ज़रूरी क्यों है, इसका चौथा कारण भी है। पद 5 में, भजनकार अपने पाठकों को बताता है कि पृथ्वी उसके प्रेम से भरपूर है। यह जानना कितनी बड़ी आशीष है कि प्रभु का प्रेम पृथ्वी पर भरपूर मात्रा में है। हममें से प्रत्येक के लिए पर्याप्त प्रेम है। यह प्रेम अविश्वसनीय प्रेम है। जब हम प्रेम किये जाने के योग्य भी नहीं होते, वह हम से प्रेम करता रहता है। कोई भी चीज़ हमें उसके प्रेम से अलग नहीं कर सकती (रोमियों 8:35-39)। परमेश्वर की स्तुति करने का यह भी एक कारण है।

6 और 7 पदों में, भजनकर हमें बताता है कि आकाश अपने सारे तारों सहित प्रभु के मुँह की श्वास से बना है और उसने समुद्र के पानी को अपने भण्डार में रखा है। मुख्य विचार यह है कि प्रभु ने पानी को इसलिए इकट्ठा किया ताकि हमारे समय का महासागर बन सके। उसने इन महासागरों को उनके स्थान पर रखा और उसकी आज्ञा से वे बने रहते हैं। कौन इतने महान परमेश्वर की प्रशंसा स्तुति नहीं करेगा?

सारी पृथ्वी यहोवा का भय माने।

इस भजन की दूसरी चुनौती पद 8 में पाई जाती है। यहां भजनकार सारी पृथ्वी के लोगों को यहोवा का भय मानने और उससे डरने को कहता है। पहली चुनौती के साथ, भजनकार पृथ्वी के यहोवा का भय मानने का कारण देता है। इस पर ध्यान देना चाहिए कि जबकि केवल धर्मियों को ही प्रभु की प्रशंसा करने के लिए बुलाया जाता है, तब सारी पृथ्वी को उसका भय मानना व उससे डरना है।

पहला कारण कि सारी पृथ्वी को यहोवा का भय क्यों मानना चाहिए यह है कि उसके बोलने के द्वारा ही संसार बना है। परमेश्वर के मुख से निकले सरल शब्दों से संपूर्ण सृष्टि अस्तित्व में आई। यह एक ऐसी सामर्थ है जिसकी कल्पना करना हमारी क्षमता से परे है। कौन अपने मन में इस तरह के सामर्थी परमेश्वर का भय नहीं मानेगा या आदर नहीं करेगा?

परमेश्वर का भय मानने का दूसरा कारण है कि परमेश्वर देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है (पद 10)। अन्य शब्दों में, चाहे ये देश कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, परमेश्वर का सामना नहीं कर सकते। उनकी युक्तियां और योजनाएं परमेश्वर के लिए कोई मायने नहीं रखतीं। केवल परमेश्वर की योजनाएं और उद्देश्य ही पूरे होते हैं। इसी कारण, प्रभु परमेश्वर का भय मानने वाले देश बहुतायत से आशीषित होते हैं। उनकी योजनाएं सफल होंगी। (पद 12)

प्रभु परमेश्वर का सारी पृथ्वी द्वारा भय माने जाने का तीसरा कारण है कि प्रभु स्वर्ग से नीचे सारी पृथ्वी पर रहने वालों की ओर की देखता है। वे जो कुछ भी करते हैं उसे वह स्वर्ग से देखता है। पद 15 के अनुसार वह उनके सब कामों पर विचार करता है। यदि आप जानते कि इस सृष्टि का सर्वशक्तिमान परमेश्वर आपके द्वारा की गई प्रत्येक चीज़ को देख रहा था तो क्या आप भयभीत नहीं होंगे? हम सभी को परमेश्वर के सम्मुख अपने कामों का लेखा देना होगा। यह जानते हुए हम सभी को उसके नाम का भय मानना है।

हमें प्रभु का भय मानना चाहिए इसका चौथा कारण है कि वह हम सभी से बड़ा है। पद 16 में भजनकार हमें बताता है कि कोई भी राजा अपनी सेना की बहुतायत के कारण नहीं बच सका है। प्रभु परमेश्वर पर विजयी होने के लिए कोई भी सेना पर्याप्त नहीं है। कोई भी योद्धा उसकी शक्ति से बच नहीं सकता है। प्रभु के सामन कोई योद्धा नहीं है। कोई भी ऐसा युद्ध का घोड़ा नहीं है जो किसी योद्धा को प्रभु के हाथों से बचा

सके। प्रभु को अपना शत्रु मानना अपना नाश करना है।

प्रभु का भय मानने का अन्तिम कारण है कि चूंकि उसकी आंखे अपना भय मानने वालों पर और उन पर बनी रहती हैं जो उसकी करुणा की आशा लगाए रखते हैं (पद 18)। इन व्यक्तियों को मृत्यु से छुड़ाया जाएगा और अकाल में जीवित रखा जाएगा (पद 19)। हमारी एकमात्र आशा प्रभु में है। उससे फिरने वालों के लिए कोई आशा नहीं है।

पद 20 से 22 में भजनकार निष्कर्ष निकालता है। यहां वह पाठकों को समाधान देता है वह पाठकों को बताता है कि उसके और समान मन रखनेवालों को प्रभु की बाट जोहनी होगी। वह उनकी ढाल और सहायक था। वे उस पर भरोसा करें और उसके नाम से आनन्द करें। जाने के लिए कोई और स्थान नहीं। केवल प्रभु में ही उद्धार है। पद 22 में भजनकार परमेश्वर से यह कहते हुए समापन करता है:

हे यहोवा जैसी तुझ पर हमारी आशा है,
वैसी ही तेरी करुणा भी हम पर हो।

उसका भरोसा परमेश्वर के करुणा पूर्ण प्रेम पर है। उसकी आशा उस पर ठोस रूप से केन्द्रित है। केवल उसमें ही विजय थी। उसका भय मानने वाले धन्य थे।

भजन प्रभु से प्रेम करनेवालों के लिए एक चुनौती है कि उसकी आराधना करें और उसका भय मानें। प्रशंसा किये जाने और भय माने जाने के योग्य वह एक अद्वितीय परमेश्वर हैं।

विचार करने के लिए:

- पद 2 और 3 में भजनकार हमें आराधना के बारे में क्या सिखाता है?
- परमेश्वर की स्तुति करने के लिए भजनकार कौन से छह कारण देता है?
- भजनकार हमें क्यों कहता है कि हमें परमेश्वर का भय और डर मानना चाहिए?
- आप अपने समुदाय में क्या प्रभु के इस भय को देखते हैं?
- आराधना और स्तुति करने के लिए क्या आपका अपना व्यक्तिगत मन है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से आपको आराधना करने का मन देने को कहें।
- प्रभु से आपको उसके नाम की आराधना करने में अधिक रचनात्मक बनने को कहें जिससे आपकी आराधना आपके हृदय का गहरा व्यक्तिगत अनुभव हो।
- प्रभु से उसके लोगों के मनों में बड़ा भय डालने बने कहें।
- उन कारणों पर पुनर्विचार करें कि दाऊद हमसे प्रभु की आराधना करने को क्यों कहता है। उनमें से किसी एक कारण के लिए कुछ समय प्रभु की प्रशंसा करें।

34. परखकर देखो

पढ़ें भजन संहिता 34: 1-22

भजन 34 दाऊद का भजन है। इस भजन के बारे में हमें दो चीज़ों को जानने की ज़रूरत है। पहली कि यह एक काव्यात्मक कविता है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक पद का आरम्भ इब्री शब्द के भिन्न अक्षर से होता है। इसका अनुवाद नहीं किया जा सकता।

अन्य विवरण जिस पर ध्यान देना हमारे लिए महत्वपूर्ण है, भजन की प्रस्तावना में मिलता है। यह भजन उस समय लिखा गया था जब दाऊद ने आकीश के सामने पागल होने का दिखावा किया था। हम इस कहानी को 1 शमूएल 21 में पढ़ते हैं। उस समय में दाऊद राजा शऊल से भाग रहा था। उसने नोब में शरण ली जहां उसे अबीमेलेक नामक याजक ने सहारा दिया। जब राजा आकीश को पता चला कि दाऊद उसके देश में है, तो उसे उसके सामने लाया गया जब दाऊद को राजा आकीश के सामने लाया गया तो उसने पागल होने का दिखावा किया जिससे राजा को निश्चय हो गया कि दाऊद से उसे कोई खतरा नहीं है।

दाऊद अपने पाठकों को अपनी इस वचनबद्धता को बताते हुए आरम्भ करता है कि वह हर समय यहोवा की स्तुति करता रहेगा। वह उनसे कहता है कि इसके होठों पर हमेशा परमेश्वर की स्तुति होगी। हमें याद रखना है कि इस समय में दाऊद अपने जीवन को बचाने के लिए भाग रहा था। अपनी परीक्षा के समय में भी वह परमेश्वर की प्रशंसा कर सका।

पद 2 में वह आगे कहता है कि मैं प्रभु पर घमण्ड करूंगा। अन्य शब्दों में, वह प्रभु के महान कार्यों को बताएगा और सब सुननेवालों पर परमेश्वर के भले कामों को घोषित करेगा वह विशेष रूप से दुखी लोगों को बताकर आनंद देना चाहता था। दुख के समय में हमारे लिए प्रभु में आनंदित होना सरल नहीं होता। ऐसे समय में शत्रु हमारा ध्यान समस्या पर लगाकर रखना चाहता है न कि हमारे लिए परमेश्वर की भलाई पर। दाऊद ने ऐसे समय में परमेश्वर पर अपना मन लगाने का चुनाव किया था। ऐसा करके उसे आनंद करने का कारण मिल गया था। दाऊद अपने पाठकों को प्रभु की महिमा उसके साथ करने के लिए कहता है (पद 3)।

दाऊद हमें बताता है कि अपने जीवन के इस समय में उसने प्रभु की स्तुति क्यों की। अपने संकट में उसने प्रभु की ओर देखा और वह उसकी सहायता के लिए आया। शाऊल से बचकर भागने में उसे गत क्षेत्र में आराम मिला। दाऊद को

राजा शाऊल और राजा आकीश एसे अब कोई खतरा नहीं था। परमेश्वर ने उसे विश्राम दिया था।

पद 5 में दाऊद अपने पाठकों को याद दिलाता है कि जिन्होंने भी प्रभु की ओर देखा उन्होंने ज्योति पाई और उन्हें कभी अपमानित नहीं होना पड़ा। ज्योति का अर्थ यहां पवित्र और शुद्ध होने से है। हम अपने जीवनों में स्वयं को कई बार संकटों में पाते हैं। ऐसे समयों में हम पर अपनी शक्ति और अपनी बुद्धि से कामों को करने की परीक्षा आती है। दाऊद हमें बताता है कि ऐसे समय में हमें परमेश्वर के पास जाना व उसे खोजना चाहिए। ऐसा करके हम अपमानित नहीं होंगे। परमेश्वर हमारे आगे आगे चलेगा। वह हमारी सहायता के लिए आएगा और हमारी ज़रूरत को पूरा करेगा। यह दाऊद का अनुभव था। पद 6 में वह हमें बताता है कि उसने परमेश्वर की ओर दृष्टि की और परमेश्वर ने उसकी सहायता करते हुए उसे संकटों से बचाया। यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किये हुए उनकी रक्षा करता है और वह उन्हें परेशानी के समय में छुड़ाता है (पद 7)।

यह जानना कितना अद्‌भुत है कि हम पर एक स्वर्गदूत को ठहराया गया है, कि हमारी रक्षा करे और हमारी ज़रूरत के समय में हमें संभाले। 2राजा 6:15-17 में भविष्यद्वक्ता एलीशा और उसके सेवक को शत्रु ने चहुँओर से घेर लिया था। एलीशा के सेवक ने भयभीत हो उससे पूछा कि अब क्या करें। एलीशा ने प्रार्थना की कि परमेश्वर मेरे सेवक की आंखों को खोल दें। परमेश्वर के ऐसा करने पर सेवक ने चारों ओर अग्निमय रथों को देखा। प्रभु ने अपने सेवकों की सुरक्षा का कार्य स्वर्गदूतों को दे दिया था। परमेश्वर अपने सेवकों की सुरक्षा करने व उनकी ज़रूरत को पूरा करने के लिए अपने सवर्गदूतों को उनके चारों ओर रखता है।

दाऊद अपने सुननेवालों से कहता है कि परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है (पद 8)। वह हमें याद दिलाता है कि उसकी शरण लेने वाला मनुष्य धन्य है। यदि आज आप अपने जीवन में किसी परीक्षा का सामना कर रहे हैं तो दाऊद आपको परमेश्वर के पास आने का निमंत्रण देता है। उसे भरोसा है कि जो कोई परमेश्वर पर भरोसा रखता है वह उसे नहीं छोड़ता।

पद 9 में, वह प्रभु के पवित्र लोगों को उसका भय मानने की चुनौती देता है। परमेश्वर का भय मानने का अर्थ उसका आदर करना है। जवान सिंह तो भूखे रह जाते हैं लेकिन यहोवा के खोजियों को किसी भी भली वस्तु की घटी नहीं होती। परमेश्वर अपनी खोज करनेवालों को आशीष देता है। वह उनकी ज़रूरतों को पूरा करता है। वह स्वयं उनकी देखभाल करता है। इसी कारण हमें आनंद करना है।

दाऊद सभी सुननेवालों को इस बारे में शिक्षा पाने के लिए अपने कानों को खोलने के लिए कहता है। जीवन की इच्छा रखनेवालों और दाऊद ने सलाह दी।

पद 13 में वह अपने पाठकों से कहता है कि यदि वे अच्छे दिन देखना चाहते हैं तो वे अपनी जीभ को बुराई से रोक रखें और अपने मुंह की चौकसी करें कि उससे

छल की बात न निकले। हमारे बोलने और हमारे जीवनों में परमेश्वर की आशीषों का एक प्रत्यक्ष संबन्ध है। दाऊद हमें बताता है कि अपनी जीभ को रोककर रखने और सच बोलने पर, हम अपने जीवन में परमेश्वर की आशीषों को अनुभव करेंगे। यदि हम अपनी जीभ का प्रयोग अपने भाई बहनों की आलोचना करने में करें तो हमें परमेश्वर की आशीषों की आशा नहीं करनी चाहिए। इसके विपरीत हम पर उसका न्याय आएगा।

दूसरा सिद्धान्त दाऊद उन्हें देता है जो बहुत से अच्छे दिन देखना चाहते हैं, उन्हें बुराई से दूर होकर मेल की खोज में रहना है। दूसरों के साथ हमारे संबन्धों में मेल रखना है। दाऊद की सलाह हमारे लिए हमेशा मेल ढूंढने की है। मत्ती 5:9 में यीशु हमें बताते हैं:

धन्य हैं, वे जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

अपने भाई बहनों के साथ मेल से रहनेवालों पर परमेश्वर की आशीष रहती है। यदि हम अपने जीवनों में इस आशीष को अनुभव करना चाहते हैं तो हमें हमारे संबन्धों में मेल रखना है।

दाऊद अपने पाठकों को आगे बताता है कि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं। परमेश्वर धर्मी की दोहाई को सुनता है। अन्य शब्दों में, यदि हम चाहते हैं कि हमारी ज़रूरत के समय में परमेश्वर हम तक पहुंचे तो इसके लिए हमें परमेश्वर के वचन के सत्य में रहना होगा। दाऊद पद 16 में स्पष्ट करता है कि परमेश्वर बुराई करनेवालों के विमुख रहता है। ये लोग न केवल परमेश्वर की आशीषों से वंचित होंगे परन्तु परमेश्वर इनकी स्मृति को भी पृथ्वी पर से हमेशा के लिए समाप्त कर देगा।

परमेश्वर धर्मियों की ज़रूरत के समय में उनकी सुनता है। वह उन्हें उनके संकटों से छुड़ाता है। वह टूटे मनवालों के निकट रहता है। वह पिसे हुओं का उद्धार करता है। सच्चाई यह है कि उनके टूटे मन और पिसे होना यह बताता है कि वे बुराई से बचे नहीं हैं। इन लोगों के दुखी होने पर परमेश्वर उन्हें उनके दुख से छुड़ाने और जीवनों में सभी चीज़ों में भलाई करने को आता है। एक धर्मी पुरुष और स्त्री के जीवन में कठिनाईयाँ होंगी। कुछ की अधिक कठिनाईयां हो सकती हैं। तौभी, दाऊद वादा करता है कि परमेश्वर उन्हें उनके सारे संकटों से छुड़ाएगा। वह उनकी रक्षा करेगा और उनकी कोई हड्डी नहीं टूटेगी। इस पद में मसीह के बारे में संकेत मिलता है। जब पूरी तरह से धर्मी, यीशु, को क्रूस पर टांगा गया था, सिपाही उसके पांवों को तोड़ने जा रहे थे परन्तु जब उन्होंने देखा कि उसकी मृत्यु हो चुकी है तो उन्होंने ऐसा नहीं किया।

यही प्रतिज्ञा हमारे लिए भी है। कोई भी हमें परमेश्वर के उद्देश्य और योजना से बाहर हानि नहीं पहुंचा सकता। यहां तक कि जिन संघर्षों का सामना हम करते हैं वे भी परमेश्वर द्वारा आशीषित होंगे कि हमें परमेश्वर के और निकट लेकर आएं।

अन्त में, दुष्ट अपनी बुराई के द्वारा मारा जाएगा। बुराई एक दिन उन सभी को

निगल जाएगी जो इस पर चलते हैं। परमेश्वर उन्हें उनके मार्गों पर छोड़ देगा। जिस बुराई को वे करते हैं वही उन्हें निगल जाएगी। दुष्ट अधिक समय तक फूले-फलेंगे नहीं। कुछ समय तक वे धर्मी का विरोध तो कर सकते हैं परन्तु वह दिन आ रहा है जब वे दोषी ठहराए जाएंगे।

हमारी आशा केवल प्रभु में है। दाऊद ने पद 22 में अपने पाठकों को याद दिलाया कि परमेश्वर अपने दासों को छुड़ाएगा। प्रभु पर भरोसा करने वालों को दोषी नहीं ठहराया जाएगा।

विचार करने के लिए:

- दाऊद इस परिच्छेद में हमें परीक्षा के समय में प्रभु की स्तुति करने के बारे में क्या सिखाता है?
- दाऊद इस भजन में प्रभु के स्वर्गदूत के बारे में क्या बताता है?
- प्रभु का भय मानने का क्या अर्थ है? प्रभु का भय माननेवालों को क्या आशीषें मिलती हैं?
- दूसरों के साथ हमारे संबन्ध और हमारे जीवनों में परमेश्वर की आशीष के बीच क्या संबन्ध है?
- आशीष और आज्ञाकारिता के बीच क्या संबन्ध है?

प्रार्थना के लिए:

- अपने जीवन की आशीषों के लिए प्रभु को धन्यवाद देने के लिए कुछ समय निकालें। जो विजय उसने आपको दी है उसके लिए उसे धन्यवाद दें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह हम से इतना अधिक प्रेम करता है कि उसने हम पर अपने स्वर्गदूतों को रखा है।
- प्रभु से आपके जीवन के उस क्षेत्र को बताने के लिए कहें जहाँ आप उसके प्रति आज्ञाकारिता के साथ नहीं रह रहे हैं।

35. न्याय के लिए पुकार

पढ़ें भजन संहिता 35:1-28

हम भजनकार दाऊद के साथ एक पहचान बना सकते हैं क्योंकि वह वास्तविक जीवन की समस्याओं और संघर्षों के ऊपर बोलता है। दाऊद अपने जीवन के शोक और दुख को जानता है। कई बार, जो दर्द वह महसूस करता है उसे परमेश्वर की दया की ओर ले चलता है। यह भजन उनमें से ही एक मदद से सम्बन्धित पुकारों में से है।

दाऊद परमेश्वर को अपने लिए लड़ने के लिए बुलाना शुरू करता है। दाऊद के बहुत से दुश्मन थे। वह जानता था कि वह इन दुश्मनों पर स्वयं से काबू पाने में सक्षम/समर्थ नहीं है तभी उसने परमेश्वर को अपने लिए लड़ने को बुलाया। वह यह कल्पना कर रहा है कि परमेश्वर एक महान योद्धा की तरह उस पर अपना वचन डाल रहा है। उसने इस महान योद्धा को अपने दुश्मनों के पीछे भाला और बरछा लेकर पीछा करने के लिए बुलाया। उसने परमेश्वर की ओर उद्धार के लिए दृष्टि उठाई।

वहाँ वे भी थे जिन्होंने दाऊद को मारने की मांग की। दाऊद ने परमेश्वर से उन लोगों को लज्जित और निरादर करने की मांग की जो उसके प्राण के पीछे पड़े हैं (पद 4)। पद 5 में, उसने परमेश्वर से उन्हें वायु से उड़ जानेवाली भूसी के समान बनाने के लिए कहा। वे वायु का विरोध करने में सक्षम नहीं होंगे। वे परमेश्वर के क्रोध की महान वायु से असहाय हो जाएंगे।

पद 6 में, दाऊद परमेश्वर से अपने दुश्मनों के मार्ग को अन्धियारा और फिसलन भरा बनाने को कहता है और परमेश्वर का दूत उन्हें खदेड़ता रहे। यह एक भयानक विचार है। वे परमेश्वर के दूतों से जो न्याय करने आये बच नहीं पाएंगे। यद्यपि वे उससे भागेंगे, परन्तु उसके क्रोध से नहीं भाग सकेंगे।

दाऊद के दुश्मनों ने उसके लिए जाल बनाया। उसने परमेश्वर से कहा कि बर्बादी उसके दुश्मनों को आश्चर्यचकित कर निगल जाए। वह उन्हें जाल में उलझा हुआ देखना चाहता है।

दाऊद परमेश्वर से वादा करता है कि यदि वह मुझे दुश्मनों के हाथ से बचा लेगा, तब मैं आनन्दित हो जांऊगा और उसके उद्धार में आनन्द मनांऊगा। उसकी हड्डी हड्डी कहेगी, 'हे परमेश्वर तेरे समान कौन है?' दाऊद परमेश्वर की आराधना करता है क्योंकि जो उसके लिए बलबन्त थे परमेश्वर ने उनसे उसे बचा लिया। उसने परमेश्वर की स्तुति की क्योंकि वह लुटेरों से दीन-दरिद्र लोगों की रक्षा करता है। आगे के भजन की जांच करने से पहले हमें दो महत्वपूर्ण तथ्यों को महसूस करने की ज़रूरत है। पहला दाऊद परमेश्वर से छुटकारा पाने के लिए हिचकिचाता नहीं है। वह

अपने आप को परमेश्वर के बेटे के रूप में देखता है। ऐसा समय भी था जब वह परमेश्वर से छुटकारा पाने के योग्य नहीं था। उसका परमेश्वर के प्रति गलत विचार था। दाऊद जानता है कि वह एक पापी है लेकिन फिर भी वह परमेश्वर के पास उम्मीद से आता है। आपके पास किस प्रकार का स्वर्गीय पिता है? क्या वह ऐसा पिता है जो अपने बच्चों की परवाह करता है? क्या वह ऐसा पिता है जो अपने बच्चों की परवाह करते हुए अनिन्दत होता है? दाऊद परमेश्वर के पास आत्मविश्वास से आता है। वह परमेश्वर को प्रेम करते हुए और देखभाल करते हुए स्वर्गीय पिता के रूप में देखता है जो अपने बच्चों में आन्निदत रहता है और उनकी सहायता के लिए आता है। वह परमेश्वर से उसके रिश्ते के महान आश्वासन से ही संपर्क करता है।

दूसरी बात जो हमें समझने की ज़रूरत है वह यह कि दाऊद के दुश्मन उससे ज़्यादा ताकतवर थे, लेकिन दाऊद ने यह विश्वास किया कि कुछ भी परमेश्वर से बड़ा नहीं है। उसका स्वर्गीय पिता दीन दरिद्रों को उसके दुश्मनों से जो उनसे बड़े हैं बचाने में समर्थ है। यह मूल्य नहीं रखता है कि आपका दुश्मन कितना शक्तिशाली है, लेकिन फिर भी परमेश्वर बड़ा है। दाऊद जानता है कि वह परमेश्वर में सुरक्षित और दृढ़ है।

दाऊद के दुश्मन क्रूर थे। झूठे गवाह उसके विरुद्ध आरोप लगाने को आए। वे उसकी प्रतिष्ठा को नष्ट करने में कोई संकोच नहीं करते थे। वे बिना वजह उस पर आरोप लगाते थे। दाऊद उनके साथ भला था लेकिन वे दुष्टता से बदला चुकाते थे। यह दाऊद को शोकित करता था। जब उसके दुश्मन बीमार थे तब वह उनके छुटकारे के टाट पहन कर उपवास रखता था। जब परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर नहीं दिया तब वह उनके लिए ऐसे विलाप करता था जैसे वे उसके भाई या मित्र हों। वह ऐसे शोक करता जैसे कोई अपनी स्वयं की माता के लिए करता है।

उनके लिए उसकी दया के बावजूद जब दाऊद ने ठोकर खाई तब ये सब लोग आनन्द मनाने को इकट्ठे हुए। वे बिना रुके उसे बदनाम करते और टट्ठा उड़ाते वे गुस्से में अपने दांतों से उसे फाड़ खाते। वे बिना कारण दाऊद से घृणा करते। उसके दुश्मन उस पर भूखे शेरों की तरह हमला करते। फिर भी दाऊद को यह विश्वास था कि परमेश्वर उसे नहीं त्यागेगा। वह जानता था कि ऐसा दिन ज़रूर आएगा जब वह महान सभा में खड़ा होकर परमेश्वर को धन्यवाद देगा। उसके पास परमेश्वर में आनन्द मनाने का कारण होगा। पद 18 में देखें, वह कैसे लोगों के बीच में आनन्द मनाता है। उसकी विजय ने उसे अन्य विश्वासियों के साथ आनन्द मनाने का कारण दिया। उसने अपनी विजय को अपने तक सीमित नहीं रखा जो लोग परमेश्वर के भवन में आए थे उसने उनमें परमेश्वर के किए गए कामों को बांटा।

पद 19 में, दाऊद परमेश्वर से कहता है कि मेरे झूठ बोलनेवाले दुश्मन मेरे विरुद्ध आनन्द न करने पाएं। जो अकारण मेरे बैरी हैं वे आपस में नैन से सैन न करने पाएं क्योंकि वे मेल की बातें नहीं बोलते परन्तु देश में जो शान्तिपूर्वक रहते हैं उनके विरुद्ध छल की कल्पनाएँ करते हैं। उन्होंने मेरे विरुद्ध मुंह पसार के कहा ''आहा, आहा।'' ये विचार करने के शब्द थे।

दाऊद जानता था कि परमेश्वर देख रहा है कि उसके दुश्मन उसके साथ क्या कर रहे हैं पद 22 में वह उससे विनती करता है, 'चुप मत रह।' वह प्रार्थना करता है कि परमेश्वर मुझसे दूर मत हो। ''उठ, मेरे न्याय के लिए जाग, हे मेरे परमेश्वर मेरा मुकद्दमा निपटाने के लिए आ पद 23 में दाऊद ने कहा।

वह परमेश्वर से कहता है कि जो मेरी हानि से आनन्दित होते हैं उनके मुंह लज्जा के मारे एक साथ काले हों। जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारते हैं वे लज्जा और अनादर से ढँप जाए। पद 27 में वह कहता है कि जो मेरे धर्म से प्रसन्न होते हैं वे जयजकार और आनन्द करें और निरन्तर करते रहें, परमेश्वर की बड़ाई हो जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है।

दाऊद निष्कर्ष निकालते हुए परमेश्वर से कहता है कि उसे विश्वास था कि परमेश्वर धर्मी हैं और इसलिए वह उसकी स्तुति गाता है। उसके पास इस बात के सभी कारण हैं कि वह यह विश्वास करे कि परमेश्वर उसे न्याय दिलाएगा और उसके आनन्द का कारण बनेगा।

यह सच है कि दाऊद ने अपने हिस्से का दर्द और संकट पाया। लेकिन उसने विश्वास रखा, कि उसका परमेश्वर उसे छुड़ाएगा। उसका परमेश्वर एक प्रेमी पिता है जो अपने बच्चों की देखभाल करता है। वह उसके शत्रु के अपमान के प्रति अन्धा नहीं था। दाऊद आश्वासन के साथ न्याय के लिए रोया ताकि परमेश्वर वह करे जो सही और अपने लोगों को विजय दिलाए।

विचार-विमर्श के लिए:

- क्या परमेश्वर से प्रेम रखने वालों को दुख उठाना पड़ता है? क्यों संसार उन लोगों से घृणा करता है जो परमेश्वर के हैं?
- दाऊद का परमेश्वर के साथ किस प्रकार का सम्बन्ध है? उसे किस प्रकार का विश्वास है जब वह प्रार्थना में परमेश्वर के पास आता है?
- हमारा परमेश्वर के प्रति जो दृष्टिकोण है वह इससे कैसे प्रभावित होता है कि हम कैसे उससे सम्पर्क करते हैं?
- क्या आपका आपके परमेश्वर के साथ ऐसा सम्बन्ध है कि जब आपको ज़रूरत हो आप सीधा उसके पास जा सकें?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह आपको अपनी संतान के रूप में प्रेम करता है।
- परमेश्वर से कहें कि वह अपने आपको और महान रूप में आपके ऊपर प्रकट करे।
- परमेश्वर से कहें कि इस संसार में न्याय लाए, जिसमें अन्याय और पीड़ा है।
- परमेश्वर को प्रत्येक छुटकारे के लिए धन्यवाद करने के लिए समय निकालें।

36. पापी मनुष्य और परमेश्वर का प्रेम

पढ़ें भजन संहिता 36:1-12

दाऊद इस भजन में पापी मनुष्यों की तुलना इस्राएल के परमेश्वर से करता है। वह पापी व्यक्ति के बारे में बताते हुए शुरुआती पदों से आरम्भ करता है।

पापी मनुष्य

परमेश्वर का भय नहीं

दाऊद बताता है कि पापी मनुष्य के हृदय में परमेश्वर का भय नहीं होता। परमेश्वर का भय एक ऐसी गुण है जो हमें परमेश्वर को आदर और सम्मान देने में मदद करता है। पापी मनुष्य को परमेश्वर के उद्देश्य की कोई चिंता नहीं होती। वे अपने जीवन और कार्यों में परमेश्वर को आदर देना भूल जाते हैं। वे ऐसे जीते हैं जैसे उनका परमेश्वर के प्रति कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

घमंड और गर्व

दाऊद हमें पापी मनुष्य की दूसरी विशेषता के बारे में पद 2 में बताता है। वह यहां यह बताता है कि वह अपने अधर्म के प्रगट होने और घृणित ठहरने के विषय अपने मन में चिकनी चुपड़ी बातें विचारते हैं। अन्य शब्दों में, जो काम वे करते हैं उनके लिए अन्धे हो जाते हैं। वे हर बात का बहाना जानते हैं। वह परमेश्वर के वचन से अपनी तुलना नहीं करते। वे पाप करने से पहले सोचते भी नहीं हैं। जो कार्य संदिग्ध माध्यम से पूरे हुए हैं वे उन पर घमंड करते हैं। हमें बहुत दूर तक जाकर देखने की ज़रूरत नहीं है कि यह सही है। व्यापार में सफलता 'सच्चाई को झुकाकर' प्राप्त की जाती है। यह आम बात है। ये लोग अपने निर्णयों पर इतना विश्वास करते हैं कि अपने आपको परमेश्वर से बेहतर निर्णय लेने वाला समझ लेते हैं। वे अपने पाप को उचित बताते हैं और विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का उन्हें गलत बताने का कोई अधिकार नहीं है।

धोखा

पापी मनुष्य के शब्द या बातें दुष्टता और धोखे से भरी होती हैं। उनकी बातों पर विश्वास नहीं कर सकते। वास्तव में, इनमें से बहुतों को तो सही और गलत में अंतर ही नहीं पता चलता। उनका रहने और अच्छाई और बुराई को पहचानने का स्तर विकृत

है इसलिए वे कभी परमेश्वर के स्तर पर नहीं आ पाते। दाऊद कहता वे अपने विस्तर पर अनर्थ की बातें सोचते रहते हैं। वे बहुत सोच समझकर कुमार्ग का रास्ता बनाते और अपने पड़ोसी को धोखा देते हैं। यह सब स्वीकार्य है।

दाऊद एक ऐसे व्यक्ति की तस्वीर बनाता है जो अपनी दुष्टता में पकड़ा जाता है। इन व्यक्तियों की परमेश्वर और उसके प्रति श्रद्धा रखने में कोई रुचि नहीं होती। वे यह विश्वास करते हैं कि वे सही और गलत का निर्णय लेने में सामर्थी हैं। अपने मापदंड खुद तय करते हैं और उनका ठट्टा उड़ाते हैं या हंसते हैं जो परमेश्वर के मापदंड से जीवन व्यतीत करते हैं वे उन सब बातों को करते हैं जो उन्हें आगे बढ़ाने का कारण होती हैं। वे एक दूसरे को धोखा देते हैं और दुर्व्यवहार करते हैं ताकि वे वह पा सकें जिसकी वे इच्छा रखते हैं। उनमें परमेश्वर का भय नहीं है या अपने साथी मनुष्यों के लिए आदर नहीं है।

परमेश्वर का प्रेम

प्रेम

इन व्यक्तियों के विपरीत परमेश्वर की करुणा स्वर्ग में है और परमेश्वर की सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंची है। अन्य शब्दों में, उसका प्रेम इतना महान है कि धरती में नहीं समा सकता।

विश्वासयोग्य

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता, भजनकार के अनुसार आकाश से भी ऊँची है। यह पापी व्यक्तियों के सम्बन्ध के विपरीत कहा जा रहा है। समझौते बहुत आसानी से और जल्दी से टूट जाते हैं। विवाह सम्बन्धित प्रतिज्ञाओं को अपनी सुविधानुसार टाला जा सकता है। परमेश्वर की विश्वासयोग्यता अपने लोगों के प्रति अटूट है। परन्तु जब हम उससे किए गए अपने वादों को तोड़ते हैं, तब भी वह विश्वासयोग्य रहता है। उसकी विश्वासयोग्यता अटल है।

धर्मी

उसकी धार्मिकता शक्तिशाली पहाड़ों की तरह है। यह पहाड़ों की तरह बहुत ऊँची है और न बदलने वाली है। यह जीवन के तूफानों को रोकती है और हम हमेशा उस पर भरोसा रख सकते हैं। सही करने के लिए और धार्मिकता का जीवन जीने के लिए कुछ भी परमेश्वर को नहीं बदल सकता। हमारे साथी मनुष्यों के विपरीत, हम हमेशा परमेश्वर पर भरोसा रख सकते हैं।

न्यायी

हम परमेश्वर के न्याय पर भरोसा रख सकते हैं। दाऊद कहता है कि यह 'बहुत गहरा' है। अन्य शब्दों में, यह एक सागर के समान बहुत गहरा और विशाल है।

परमेश्वर का न्याय अनन्त है और इसका वज़न नहीं किया जा सकता है। जैसे सूरज सागर को सूखा नहीं सकता उसी तरह परमेश्वर का न्याय कभी असफल नहीं होता।

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता, धार्मिकता और न्याय को इसमें देखा जा सकता है कि वह कैसे मनुष्य और जानवर दोनों को सम्भालता है। वह हमारी और जंगल में रहने वाले जानवरों की रक्षा करता है। जीवन रहते या फलते-फूलते हैं तो सिर्फ परमेश्वर की वजह से। परमेश्वर पुरुषों और महिलाओं की, चाहे वे उच्च स्तर के हो या निम्न के दोनों की परवाह करता है। वह उनके साथ न्याय और प्रेम से व्यवहार करता है। सभी परमेश्वर के पंखों की छाया में शरण पा सकते हैं। इससे हमें कितना आराम मिलता है। बुरे पुरुष या स्त्री हमें दूर कर सकते हैं या हमारा तिरस्कार कर सकते हैं, परन्तु परमेश्वर सदैव हमारे साथ है। सभी सामाजिक स्तर के पुरुष और स्त्री परमेश्वर के अद्‌भुत प्रावधानों की खुशी मना सकते हैं। वे परमेश्वर के आनन्द की नदी में से पीते हैं।

जीवन का सोता

पद 9 में परमेश्वर को जीवन का सोता कहा गया है। वह जीवन का स्त्रोत है। केवल जीवन का ही नहीं परन्तु बहुतायत के जीवन का। उसके जीवन के द्वारा हम तृप्त किए जाएंगे। दाऊद कहता है, उसकी ज्योति से हम भी ज्योति पाएंगे। अन्य शब्दों में, केवल उस ज्योति के कारण ही आज हम जीवित हैं।

दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वह अपने जाननेवालों पर अपना प्रेम बरसाता रहे। और उसने परमेश्वर से कहा कि जो सीधे मनवाले हैं उन पर अपने भेदों को प्रकट करे। वह परमेश्वर से कह रहा है कि वह अपने भेंदों को उन पर प्रकट करे जो उसे ढूंढ रहे हैं।

रक्षक

निष्कर्ष निकालते हुए, दाऊद परमेश्वर से कहता है कि जो लोग घमंडी है वे मुझ पर लात उठाने न पाएं। बुरे व्यक्ति दाऊद के जीवन को नाश करना चाहते थे परमेश्वर उसका रक्षक था। पापी मनुष्य की तुलना पवित्र परमेश्वर से करते हुए उसका हृदय अभिभूत होता है। उसके साथी मनुष्य उसके जीवन की मांग करते हैं। संपूर्ण जगत का परमेश्वर उससे प्रेम करता है। उसके साथी नागरिक उसको धोखा देते और उसके बारे में बुरी बातें कहते हैं। परमेश्वर, उसका बनाने वाला उसे जीवन, ज्योति और आशा देता है। दाऊद के पास विश्वास रखने का हर एक कारण है कि परमेश्वर उसे बचाएगा और बुरा करने वालों को नीचा करेगा।

विचार विमर्श के लिए:

- परमेश्वर से डरने का क्या अर्थ है?
- तुलना करें कि कैसे परमेश्वर हमसे व्यवहार करता है और कैसे हमारे साथी मनुष्य? इनमें क्या अंतर है?

- आपके जीवन में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और प्रेम का क्या प्रमाण है?
- • परमेश्वर के चरित्र का अध्ययन कैसे हमें ज़रूरत के समय में आशा देता है? क्या आप परमेश्वर पर अपने संघर्षों में विश्वास रख सकते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से कहें कि वह आपको और भी सिखाए कि आदर सम्मान करने और भय मानने का क्या अर्थ है?
- कुछ समय परमेश्वर को उसके प्रेम और विश्वासयोग्यता के लिए धन्यवाद दें।
- परमेश्वर की सच्चाई और धार्मिकता के लिए उसका धन्यवाद करें कि सच्चाई प्रबल हो।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि संघर्ष के समय आप उस पर निर्भर हो सके।

37. धर्मी और दुष्ट

पढ़ें भजन संहिता 37:1-40

हमने भजन संहिता की पुस्तक में देखा है कि दाऊद ने अक्सर दुष्ट लोगों के हाथों दुख उठाया। हम यह भी समझते हैं कि दुष्ट लोग एक समय के लिए ही समृद्ध हो सकते हैं। वह व्यक्ति जो एक धर्मी जीवन जीने की कोशिश करता है, इससे हैरान होगा। इस भजन में दाऊद धर्मी और दुष्ट की तुलना करता है। हम यह धारणा रखते हैं कि वह इस प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश कर रहा है कि दुष्ट लोग क्यों समृद्ध होते हैं। आइए कुछ देर देखें कि दाऊद इस समस्या के विषय में क्या कहना चाहता था।

दाऊद अपने पाठकों को यह चुनौती देते हुए आरम्भ करता है कि दुष्ट लोगों के कारण न कुढ़ें जो लोग गलत करते हैं उनसे ईर्ष्या करने की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे समय होते हैं जब दुष्ट लोग समृद्ध होते हैं। उनके पास बड़े घर होते हैं जिनमें बहुत सारे नौकर होते हैं और उनकी कोई परेशानियां नहीं होती, जितनी उन्हें होती हैं जो परमेश्वर की इच्छा पर चलते हैं। परमेश्वर धर्मी व्यक्ति को परेशानियों से मुक्त जीवन देने का वायदा नहीं करता। यहां तक कि यीशु मसीह ने दुष्ट लोगों की दुष्टता सही। दाऊद बताता है कि दुष्ट लोग घास के समान झट कट जांएगे और हरी घास के समान मुर्झा जाएंगे। उनकी भौतिक आशीषें हमेशा के लिए नहीं हैं।

दुष्ट लोग समृद्ध ज़रूर होते हैं परन्तु हमें यह समझने की आवश्यकता है कि औसत व्यक्ति का जीवन कुछ छोटा होता है। क्या सत्तर और अस्सी साल अनन्त जीवन की तुलना कर सकते हैं? दुष्ट लोग अपने जीवन में समृद्ध तो हो सकते हैं परन्तु उनकी समृद्धि अस्थायी है। एक दिन आएगा जब वे अनन्त जीवन की ओर ताकेंगे और अपनी मूर्खता को जानेंगे कि कुछ समय के विलास के लिए उन्होंने अनन्त जीवन को त्याग दिया। दाऊद अपने पाठकों को परमेश्वर पर विश्वास रखने और भलाई करने के लिए चुनौती देता है। उन्हें उसी भूमि में रहना है जहां परमेश्वर ने उन्हें रखा है और उसकी सुरक्षा में संतुष्ट होना है। दुष्ट लोग हमारे विरुद्ध खड़े होंगे लेकिन परमेश्वर हमें सम्भालेगा।

इसके अलावा, दाऊद अपने पाठकों को परमेश्वर में आनन्दित रहने के लिए कहता है। दुष्ट लोग संसार की चीज़ों में आनन्दित होते हैं। वे सांसारिक सम्पत्ति पाने के लिए जीते हैं। दाऊद कहता है कि जो परमेश्वर को अपने सुख का मूल जानते हैं वह उनके मन की इच्छाओं को पूरा करता है। जब हम परमेश्वर की चीज़ों में आनन्द ढूढ़ते हैं तब हम जान पाते है कि ये बातें कितनी संतोषजनक हैं बजाय उनके जो संसार हमें देता है। परमेश्वर स्वयं हमें संतुष्ट करेगा और हमारे हृदय की सारी ज़रूरतों को पूरी करेगा। ऐसे

कितने लोग हैं जो संसार की चीज़ों की मांग करते हैं लेकिन अंत में निराश होते हैं? परमेश्वर उन्हें जो उसे ढूंढते हैं पूरी संतुष्टि और संतोष देने का वादा करता है।

दाऊद वचन 5 में पाठकों को उत्साहित करता है, कि अपने मार्ग की चिंता परमेश्वर पर छोड़ें। दुष्ट लोग अपनी बुद्धि और ताकत पर विश्वास रखते हैं। यह उन्हें निर्णय की ओर ले जाता है। जो अपना जीवन परमेश्वर को सौंपते हैं, उसकी आशीषों का अनुभव कर सकते हैं। वचन 6 में, दाऊद कहता है कि यदि हम अपने जीवन को परमेश्वर को सौंप देंगे और उस पर विश्वास रखेंगे तो उसकी धार्मिकता को देख पाएंगे-जो ज्योति के समान और उसका न्याय दोपहर के उजियाले के समान प्रगट होगा। वे ज़्यादा से ज़्यादा परमेश्वर की तरह बनते जाएंगे। परमेश्वर उनमें आनन्दित रहेगा और उन्हें अपनी ओर खींचता जाएगा। वे उसके लोग होंगे और उसका चरित्र अपने में लेंगे। यह कितनी अशीष से भरी बात है कि हम भी उन लोगों की तरह एक समुदाय बनें जो परमेश्वर के रास्तों पर चलते हैं और उस पर विश्वास करते हैं। वह समुदाय आशीषित समुदाय होता है। धार्मिकता फलती-फूलती है। हर व्यक्ति को न्याय मिलता है। परमेश्वर उनका आदर करता है जो अपना जीवन परमेश्वर को देते हैं और उसके उद्देश्यों पर विश्वास करते हैं।

दाऊद उनसे कहता है जो दुष्टों के हाथों पीड़ा सह रहे हैं कि चुपचाप रहें, और धीरज से उसकी प्रतीक्षा करें। (वचन 7) दुष्ट लोगों ने उन्हें घेर लिया है और उनके जीवनों का नाश करना चाहते हैं। ऐसे दुष्ट मनुष्यों के कारण न कुढ़ें। उन्हें प्रभु और उसके समय की धीरज और भरोसे के साथ प्रतीक्षा करनी है। न्याय जीतेगा। जबकि दुष्ट कुछ समय के लिए समृद्ध होते जाते हैं परन्तु उनका अंत निकट है।

ध्यान दें कि हमें परमेश्वर का धीरज से इंतजार करने को बुलाया गया है जबकि हम दुष्ट के हाथों में, परीक्षाओं और परेशानियों में होते हैं। हमें बदला लेने की आवश्यकता नहीं है। दाऊद वचन 8 में अपने पाठकों से कहता है, क्रोध से परे रह और जलजलाहट को छोड़ दें। मत कुढ़ उससे बुराई ही निकलेगी। चिंता और कुढ़ने की आवश्यकता नहीं है। इन समयों में क्रोधित होना बहुत आसान है। जब दुष्ट लोग हम पर अन्याय कर रहे हों और दुष्ट लोग हमारे बारें में दुष्ट बातें बोलते हो हम बदला लेने और क्रोधित होने की परीक्षा में पड़ते हैं। दाऊद कहता है कि इसके विपरीत परमेश्वर की प्रतीक्षा करें और प्रलोभन का विरोध करें। हमें दुष्ट के साथ दुष्टता से नहीं लड़ना। इसके बदले हमें इस अन्याय को परमेश्वर को सौंप देना चाहिए जो अपने समय पर इस से व्यवहार करेगा।

दुष्ट लोग काट डाले जाएंगे (वचन 9)। परमेश्वर दुष्ट को प्रबल नहीं होने देगा। जो परमेश्वर की ओर देखते हैं वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे ऐसे दिन आने वाले हैं जब दुष्ट की दुष्टता नाश होगी। परमेश्वर उनका न्याय करेगा और नष्ट होंगे। नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे और आपार शान्ति का आनन्द उठाएंगे।

दुष्ट लोग धर्मी लोगों के लिए जाल बनाते रहते हैं वे जंगली जानवरों की तरह वे

उस पर क्रोध और घृणा से दांत पीसते हैं। परमेश्वर इस पर हंसता है। परमेश्वर उनकी मूर्खता की बातों पर हंसता है। वह जानता है कि न्याय का दिन आनेवाला है। वह उनकी तलवारों को उनकी ओर करेगा ताकि उनके स्वयं के हृदय छिद जाएं।

दाऊद अपने पाठकों को संतुष्ट रहने की चुनौती देता है। यह अच्छा है कि हम थोड़े में ही संतुष्ट रहें। दुष्ट की ताकत और धन दोनों टूट जांएगे परन्तु परमेश्वर धर्मी का बचाव करेगा। धर्मी की विरासत सदैव बनी रहेगी।

विपत्ति के समय, धर्मी मुरझाएगा नहीं। अकाल के दिन परमेश्वर उसकी पूर्ति करेगा। दुष्ट लोग नष्ट हो जाएंगे और यहोवा के शत्रु खेत की सुथरी घास के समान नष्ट होंगे। वे धुएँ की तरह लुप्त हो जाएँगे।

वचन 21 में दाऊद ने पाठकों को बताया, दुष्ट ऋण लेता है और भरता नहीं है। परन्तु धर्मी अनुग्रह करके दान करता है। परमेश्वर दुष्टों के भाग्य को निर्धारित करता है। जिन्हें वह आशीष देता है भूमि उनकी हो जाती है परन्तु जिन्हें वह श्राप देता है वे हमेशा के लिए काट डाले जाते हैं। जब परमेश्वर को किसी व्यक्ति का मार्ग अच्छा लगता है तब वह उसे स्थिर कर देता है। अन्य शब्दों में, परमेश्वर उनमें प्रेम रखता है जो उससे प्रेम रखते और उसके मार्गों पर चलते हैं। मनुष्य की गति परमेश्वर की ओर से दृढ़ होती है और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है। परमेश्वर के मार्गों पर चलने से महान आशीषें मिलती हैं। यदि हम गिरें, तब वह हमें गिरा नहीं रहने देगा। वह हमारा हाथ थामें रहेगा और हमारे मार्गों में हमें सफलता देगा।

वचन 25 में दाऊद अपने पाठकों को याद दिलाता है कि पूरे जीवन में उसने धर्मी को कभी त्यागा हुआ नहीं पाया। न ही किसी धर्मी व्यक्ति को रोटी मांगते देखा परमेश्वर एक प्रेमी पिता की तरह अपने बच्चों की देखभाल करता है।

धर्मी व्यक्ति उदार होता है (वचन 26)। वह अनुग्रह से देता है परन्तु उसकी खुद की कोई ज़रूरत नहीं होती। जब वे देते हैं तो उनकी आशीषें भी फलती रहती हैं। परमेश्वर जो कुछ उन्हें चाहिए उन सब में उन्हें आशीष देता है। दाऊद वचन 27 में अपने पाठकों को बुराई को छोड़ने और भलाई को करने की चुनौती देता है। यदि वे ऐसा करेंगे तब वे उस स्थान में रहेंगे जो परमेश्वर ने उन्हें हमेशा के लिए दिया है।

ध्यान दें आज्ञाकारिता और आशीष में क्या अंतर है। आज्ञाकारिता में आशीष है। परमेश्वर उन्हें नहीं त्यागेगा जो विश्वासयोग्य हैं। वह उन्हें सदैव सम्भालेगा और, दुष्ट काट डाला जाएगा।

वचन 30 में दाऊद बताता है कि धर्मी अपने मुँह से बुद्धि की बातें करता है। हमारे बोलने से हमारा परमेश्वर के साथ सम्बन्ध प्रभावित होता है। जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं वे परमेश्वर की आज्ञाओं को अपने हृदय में रखते हैं। जब वे ऐसा करते हैं तो उनके पैर नहीं फिसलते। दुष्ट धर्मी की ताक में रहता है और उसे मार डालने का यत्न करता है। परमेश्वर का वचन लेकिन, धर्मी व्यक्ति की रक्षा करेगा और उन्हें दुष्ट के जाल में पड़ने नहीं देगा। जीवन के मार्ग पर परमेश्वर हमारा मार्गदर्शक है। सावधानीपूर्वक इस पर चलने

पर हम बड़ी बुराई से बचेंगे और अपनी ज़रूरत के समय में आराम पाएंगे।

परीक्षाओं के समय पर, धर्मी जन को परमेश्वर पर धीरज रखकर इंतज़ार करना होगा। धर्मी को किसी भी बात को अपने हाथों में लेने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु अपने मार्गों पर जो परमेश्वर के हैं उन पर चलते रहना है। परमेश्वर धर्मी को उठाएगा और दुष्ट काट डाला जाएगा।

दुष्ट मनुष्य एक समय के लिए समृद्ध हो सकता है और बहुत सारी सांसारिक सफलताओं को पा सकता है। परन्तु उसका अंत निर्धारित है। दाऊद अपने पाठकों को चुनौती देता है कि पाप रहित और खरे मनुष्य को पहचानें। जो लोग शान्ति के खोजी और विश्वासयोग्य हैं उनके लिए एक भविष्य तय हो गया है। परमेश्वर धर्मी को बचाएगा। वह ज़रूरत के समय उनके साथ रहेगा। वह परेशानी में उनका दृढ़ गढ़ ठहरेगा। परमेश्वर उनको दुष्टता से छुटकारा देगा और उन सब की रक्षा करेगा जो उसमें शरण लेते हैं। पापी काटे जाएंगे और नाश किए जाएंगे।

विचार-करने के लिए:

- क्या दुष्ट लोग इस जीवन में समृद्ध होते हैं?
- इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर में धीरज रखें? हमारा स्वभाव पीड़ा सहते हुए कैसा होता है? हमें स्वाभाविक रूप से पीड़ाओं को कैसी प्रतिक्रिया देना चाहिए?
- अनंत जीवन का दृष्टिकोण कैसे हमारी ज़रूरत के समय में मदद कर सकता है?
- यह संदर्भ हमें दुष्ट के भाग्य के बारे में क्या सिखाता है?
- क्या आप कभी भी देश में पाई जाने वाली बुराई पर कुढ़े हैं? हमें क्यों नहीं कुढ़ना चाहिए?
- दुष्ट के हमें घेरने और हमें दुख देने के समय पर भजनकार क्या करने के लिए कहता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वे जो उसके साथ हैं वह उनकी देखभाल करने का वादा करता है।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि सब वस्तुएं उसके नियंत्रण में हैं और वह अन्त में दुष्ट को समृद्ध न होने देगा।
- परमेश्वर के न्याय और समस्त बुराई पर उसके प्रभुत्व के लिए धन्यवाद करें।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको मुश्किल समयों में उस पर धीरज रखना सिखाए।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने पिछले सप्ताह आपके लिए अपनी व्यक्तिगत देखभाल का नमूना दिखाया।

38. पापी मूर्खता

पढ़ें भजन संहिता 38: 1-22

भजन संहित 38 में, दाऊद अपने हृदय का दर्द व्यक्त करता है। हमें इस भजन में उन परिस्थितियों को नहीं बताया गया जिनका कारण यह दर्द और सताव था।

दाऊद परमेश्वर से यह कहते हुए आरम्भ करता है कि क्रोध में आकर मुझे झिड़क न दे और न जलजलाहट में आकर मेरी ताड़ना कर। दाऊद परमेश्वर के क्रोध की ताकत को जानता है। वह जानता था कि वह पाप में गिरा था (वचन 3,4)। वह जानता था कि वह दण्ड के योग्य है परन्तु वह परमेश्वर से उसके अनुशासन में उस पर दया करने को कहता है।

दाऊद परमेश्वर के अनुशासन के तीरों को महसूस करता है। परमेश्वर का हाथ उस पर भारी था। परमेश्वर के क्रोध के कारण वह अपने पाठकों से कहता है कि मेरे शरीर में कुछ भी आरोग्यता नहीं; और मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों में कुछ भी चैन नहीं। वचन 3 में ध्यान दें कि यह सब उसके पाप के कारण हुआ।

ध्यान दें, दाऊद समय समय पर पाप में गिरा था। जब हम पाप में गिरते हैं तब हम भी इसे याद रखते हैं। इन भजनों में यह देखना महत्वपूर्ण है कि दाऊद ने इन समयों में कैसी प्रतिक्रिया दी।

हमने वचन 3 में देखा कि दाऊद पाप के कारण दूर होता हुआ दिखता है। वह बीमार था और अपनी हड्डियों में दर्द को महसूस करता था। उसके दोष ने उसे पराजित किया था और उसके पापों का भार उससे सहा नहीं जाता था। उसके पापों ने उसे घायल कर दिया था उसके घाव सड़ रहे थे और बुरे हो रहे थे। पापों के दबाव और भार ने उसे झुका दिया था (वचन 6)। वह दिनभर शोक करता और दुखी फिरता रहता था। वचन 7 में दाऊद हमें बताता है। वह झुक गया (संभवत: शर्म के कारण) और उसकी कमर में जलन है। वह संभवत: अपने पूरे शरीर में अपने हठ या विद्रोह को महसूस करता है। वचन 7 में वह कहता है 'मेरे शरीर में कोई आरोग्यता नहीं। वह निर्बल और बहुत ही चूर हो गया और अपने मन में कराहता था।

वचन 9 में हम देखते हैं कि दाऊद जानता है कि परमेश्वर उसकी सारी अभिलाषाएं जानता है और कराहना भी। उसका हृदय धड़कता है और बल घटता जाता है। उसकी ओर देखनेवाले देख सकते थे कि उसकी आंखों से आनंद और संतोष की ज्योति जाती रही थी। जब तक दाऊद पाप में पड़ा रहा, उसके मित्रों और उसके साथियों ने उसे छोड़ दिया। उसके पड़ोसी उस से दूर रहे। ऐसी परिस्थितियों में दृढ़

विश्वास और हठ में हम आसानी से अपने आस-पास के लोगों के साथ कड़वे हो जाते, क्रोध करते और धीरज खो देते हैं।

दाऊद के दुख और दर्द का कोई अन्त नज़र नहीं आता था। उसके शत्रु उसके खिलाफ षड्यंत्र रचते और जो उसे नुकसान पहुँचाना चाहते थे वे उसे नष्ट करने की बातें करते। पूरे पूरे दिन वे उसे नष्ट करने की कल्पनाएं करते रहते।

दाऊद अपने आप को वचन 13 में गूंगा और बहरा बताता है। वह बोल नहीं पा रहा था और न सुन पा रहा था। वह साधारण शब्दों में अपने दबाव की गहराई को व्यक्त कर रहा है। वह अपने मित्रों से प्रोत्साहन के शब्दों को नहीं सुन पा रहा और न ही उसके अन्दर दर्द व्यक्त करने की सामर्थ बची है।

इससे पहले कि हम इस भजन के निष्कर्ष पर पहुँचें, हमें शुरुआत के कुछ वचनों के महत्व को समझना ज़रूरी है। दाऊद बताता है कि पाप में गिरना कैसा होता है। यह वह हो सकता है जो हम सब महसूस करते हैं। प्रभु यीशु के विश्वासी होने के कारण, हम कभी भी पाप में निश्चिन्त नहीं हो सकते। यदि आप अपनी पापमय मूर्खता में उस शर्म और दर्द को महसूस किये बिना चल रहे हैं जैसे दाऊद महसूस करता था, तब आपको सचमुच अपने आप से यह प्रश्न पूछना चाहिए कि आप परमेश्वर की संतान हैं या नहीं। परमेश्वर की संतान समय-समय पर पाप करती हैं और अपने आपको हठी बना लेती है परन्तु जल्द ही उनका हृदय उन्हें कचोटता है। जल्द ही वे परमेश्वर की उपस्थिति में वापस जाना चाहते हैं। जैसे यीशु मसीह ने सुसमाचार में उड़ाऊ पुत्र के बारे में बताया, जिसमें वापिस आने की इच्छा उत्पन्न हुई होती। परमेश्वर की संतान में पाप करने के बाद आराम नहीं होगा। वे तब तक तड़पेंगे जब तक वे अपने परमेश्वर के साथ संगति करना शुरू नहीं कर देंगे।

यहाँ पर दाऊद भी यही इच्छा रखता है। वचन 15 में, वह कहता है कि वह परमेश्वर का इतंज़ार कर रहा है कि वह उतर दे। उसने परमेश्वर को अपनी ओर आने के लिए कहा। उसके शत्रु उसे हराने के लिए घूम रहे हैं और उसके गिरने पर आनन्द मनाते हैं। वचन 17 में, दाऊद अपने दर्द में, परमेश्वर के पास आता है। वह अपना पाप स्वीकार करता है। यह पाप ही उसकी पीड़ा का कारण था। अब यह उसका समय था कि वह उसे स्वीकार करे और उसे अपने से दूर करे। वह परमेश्वर से संगति में फिर से जुड़ना चाहता है।

जीवन के इस समय में दाऊद के बहुत से शत्रु थे। वे दाऊद से बिना किसी उचित कारण के नफरत करते थे। वे उसके भलाई के कामों के बदले बुराई से उसका विरोध करते थे। वचन 21 में, वह परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि जीवन के इस समय में मुझे छोड़ न दे। और परमेश्वर से विनती करता है कि मुझसे दूर न हो। परमेश्वर मेरी सहायता के लिए फुर्ती से आ। निस्संदेह वह परमेश्वर से इस दूरी को सह नहीं पा रहा था।

जब तक दाऊद पाप में पड़ा था, वह संतुष्ट और शुख नहीं हुआ। परमेश्वर दूर

नज़र आता था और उसका हृदय रोता क्योंकि उसका परमेश्वर से संबन्ध टूट गया। क्या हम भी पाप के कारण परमेश्वर से अलग होने पर ऐसे ही करते हैं? परमेश्वर की संतान पाप में रहने से संतुष्ट नहीं रह पाएगी।

विचार-करने के लिए:

- क्या आपके जीवन में कभी ऐसा समय आया जब परमेश्वर आपसे दूर नज़र आया? आपने उस समय कैसा महसूस किया?
- आप तब कैसे महसूस करते हैं जब आप परमेश्वर के साथ वैसे नहीं चल पाते जैसा आपको चलना चाहिए? क्या आप इस भजन में दाऊद से अपने आप को जोड़ सकते हैं?
- दाऊद ने इस भजन में हमें पाप को हमारे जीवन में देखने के लिए क्या करना सिखाया है?
- पाप में गिर जाने पर दाऊद किस ओर मुड़ा? उसकी आशा क्या थी?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से कहें कि वह आपके जीवन में पाप और हठीलेपन को वैसे ही देखने दे जैसे वह देखता है।
- परमेश्वर से अपने जीवन से किसी भी पाप को आप पर प्रगट करने के लिए कहें। उस पाप का अंगीकार करें। परमेश्वर से कहें कि वह उसकी संगति में बने रहने में आपकी सहायता करे।
- क्या आपका कोई भाई या बहन है जो किसी प्रकार के पाप से लड़ रहा है? परमेश्वर से कहें कि वह उनके निकट आए, इस समय उन्हें परमेश्वर की जरूरत है ताकि वे वापस परमेश्वर की संगति में आ सकें।

39. दुख में चुप्पी

पढ़ें भजन संहिता 39:1-13

भजन 38 के समान दाऊद अपने जीवन की पीड़ाओं से लड़ रहा था। यहां वह परमेश्वर के अनुशासन के नीचे है। यह अनुशासन उसके आत्मा में बहुत भारी था और दाऊद हारा हुआ महसूस करता है।

इस पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि यह भजन संगीत के निर्देशक और एक व्यक्ति यदूतून को ध्यान में रखकर लिखा गया है। हम इस व्यक्ति के बारे में 1 इतिहास 16:41 में पढ़ते हैं।

उनके संग उसने हेमान और यदूतून और दूसरों को भी जो नाम लेकर चुने गए थे ठहरा दिया कि परमेश्वर की सदा की करुणा के कारण उसका धन्यवाद करें।

यदूतून परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए नियुक्त किया था। हमारे लिए यह देखना महत्वपूर्ण है कि दाऊद का यह पाप-अंगीकार और कठिन समय में उसका संघर्ष संगीत के प्रति समर्पित था और इसका प्रयोग परमेश्वर की आराधना में किया गया। यह हमें दिखाता है कि ईमानदारी और असफलताओं से लड़ने व परमेश्वर की आराधना करने का एक स्थान है। दाऊद यह भजन संगीत के निर्देशक को सौंपता है ताकि वह परमेश्वर की आराधना में इस संगीत का इस्तेमाल कर सके। भजनकार का यही उद्देश्य है कि सब उसकी असफलताओं से सीखें। हम यहां पर दाऊद की ईमानदारी और उदारता को देखते हैं। कोई भी अपनी असफलताओं को इस प्रकार स्वीकार नहीं करता जैसे दाऊद ने किया।

दाऊद भजन शुरू करने से पहले अपने पाठकों को यह बताता है कि अब वह अपनी चाल-चलन में चौकसी करेगा ताकि उसकी जीभ से पाप न हो। विशिष्ट रूप में दाऊद कहता है जब तक दुष्ट मेरे सामने हैं तब तक मैं लगाम लगाए अपना मुँह बंद किए रहूंगा। वह यह नहीं बताता है कि क्यों वह दुष्ट के सामने अपना मुँह बंद किए रहेगा। हम ऐसा सोचते हैं कि उसका मुँह बंद रखने का यह कारण होगा कि उसके शब्दों के द्वारा भी परमेश्वर का नाम निंदा न पाए। ये दुष्ट लोग भजनकार के जीवन को बहुत मुश्किल बना चुके हैं। यह कितना आसान है कि हम गलत ढंग से कुछ बोलें और फिर पश्चात्ताप करें। अपने साथ बुरा व्यवहार करने वालों से गलत ढंग से व्यवहार करना सरल है।

समस्या यह है कि दाऊद चुपचाप बैठ गया, कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं कहा

इसलिए उसका परिताप बढ़ गया। उसका हृदय अन्दर से जल गया ताकि फूट पढ़े। उसकी बोलने की इच्छा इतनी तीव्र थी कि वह अपने शब्दों को रोक नहीं सका। उसके शब्द ऐसे थे जैसे एक टूटे हुए बांध में से नदी निकल कर आती है। दाऊद ने जो कहा वह उस समय स्पष्ट नहीं था। यह भी हो सकता है कि उसने दुष्ट और दुष्ट के मार्गों के लिए कहा। हो सकता है, उसे अपने शब्दों के विस्फोट पर दुख और अपनी परिस्थिति पर दर्द हो रहा हो। जो भी उस दिन दाऊद ने कहा, हम उसे वचन 4 में देख सकते हैं:

''परमेश्वर, ऐसा कर कि मेरा अन्त मुझे मालूम हो जाए, और यह भी कि मेरी आयु के दिन कितने हैं, जिससे मैं जान लूँ कि मैं कैसा अनित्य हूँ।''

उसकी चुप्पी के टूटने के कारण वह अपने जीवन को छोटा देखता है। यह भी हो सकता है कि दाऊद अपने आप से यह प्रश्न पूछता हो कि दुष्ट क्यों समृद्ध हुआ और धर्मी को क्यों अत्याचार सहना पड़ा। दाऊद जानता है कि जितना चाहे यह दुष्ट लोग समृद्ध हो जाएं लेकिन वे मनुष्य ही हैं और उनका समय सीमित है। उनका समय काल उतना ही है जितना परमेश्वर ने दिया है। यह बताता है कि हम कितने छोटे हैं। आज हम यहां हैं तो कल यहां से चले जाएंगे। दाऊद परमेश्वर से कहता है कि वह इस जीवन को अनन्त जीवन की तुलना में छोटा समझने के लिए उसकी मदद करे।

दाऊद पुरुष और औरत के इस धरती के जीवन पर रोशनी डालता है, वह उन्हें यहां से वहां भागते हुए देखता है। वचन 6 में सचमुच मनुष्य छाया सा चलता फिरता है सचमुच वे व्यर्थ घबराते हैं; वह धन का सचंय तो करता है परन्तु नहीं जानता कि उसे कौन लेगा। यह भी हो सकता है कि वह दुष्ट लोगों से परेशान हो गया हो। जो अनन्त की चिन्ता किये बिना धन संपत्ति का ढेर लगाते हैं?

दाऊद अपवित्र लोगों के व्यर्थ लक्ष्यों की ओर रोशनी डालता है। वह यह पूछने पर मजबूर हो जाता है कि वह इस जीवन में क्या ढूंढ रहा है। अब हे परमेश्वर मैं किस बात की बाट जोह रहा हूँ? मेरी आशा तो तेरी ओर लगी है,'' वह वचन 7 में कहता है। उसके जीने की वजह भी परमेश्वर ही में है न कि भौतिक संसाधनों और संसारिक लक्ष्य। मैं यह सोच सकता हूँ कि दाऊद अपने दुख में इधर उधर घूम रहा है जब कि दुष्ट हंसता और समृद्ध होता है। ऐसा लगता है कि उन्हें संसार की कोई चिंता नहीं है। उनके दोस्त और प्रिय उनके साथ हैं। वे उनके जीवन की अच्छी चीज़ों में उसके साथ आनन्द मनाते हैं। जब वह इस पर रोशनी डालता है तो यह सच्चाई सामने आती है कि इनकी परमेश्वर के कार्यों और उद्देश्यों में कोई रुचि नहीं है। दाऊद ने यह अनुभव किया कि यह कुछ समय का है। वह दिन आएगा जब परमेश्वर के सामने इन्हें खड़ा होना होगा और न्याय होगा। इन सब बातों के विषय में सोचने पर वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वह उन सब से जो आनन्द मनाते हैं बेहतर स्थिति में है जबकि उसने कुछ समय के लिए दुख सहा, वह परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में था और कोई भी संसाधन या सुख विलास इस सौभाग्य की तुलना नहीं कर सकते।

वचन 8 में, दाऊद परमेश्वर के सामने रो कर कहता है कि मुझे मेरे सब अपराधों के बन्धन से छुड़ा ले, मूढ लोग मेरी निन्दा न करने पाएं। उसने अपने आप को चुप रखा और इस पर विश्वास किया कि परमेश्वर क्या करेगा। दाऊद उस समय अपने शत्रुओं से लड़ रहा था। वह उस समय पराजित महसूस कर रहा था और परमेश्वर के उद्देश्य को नहीं समझ पा रहा था। इस पर प्रकाश डालने पर उसने जाना कि यह उद्देश्य और योजना सब महान परमेश्वर ही की थी (वचन 9) परमेश्वर ने यह सब होने दिया और दाऊद का शिकायत करना और कुढ़ना यह साबित करता है कि उसने परमेश्वर पर विश्वास नहीं रखा। जबकि, दाऊद का ध्यान परमेश्वर की ओर ही था। उसने परमेश्वर से कहा कि मेरे दुख को हटा दे ताकि दुष्ट मुझ पर जीत न पाने पाएं।

जब हम अपने जीवन में परीक्षाओं का सामाना करते हैं तब हमें तीन बातों का ध्यान देना ज़रूरी है। पहला, हमें यह समझना है कि चाहे हमारे साथ कुछ भी हो हमारा महान परमेश्वर उसे होने की अनुमति देता है। अगर परमेश्वर उसे होने की अनुमति देता है और अगर परमेश्वर चाहे तो वह हमारी परेशानियों को हटा सकता है लेकिन वह हमेशा ऐसा नहीं करता। दूसरा, चाहे हम कैसी भी परीक्षा से क्यों न गुजरें, परमेश्वर हमें सामर्थ देता है और हमें वह सब कुछ देता है जिसकी हमें उस परीक्षा में ज़रूरत होती है। तीसरा, परमेश्वर अपना उद्देश्य हमारे जीवन से पूरा करने के लिए कुछ भी करेगा। हमारे दुश्मनों की बुरी चाहतें भी हमें परमेश्वर की ओर ही खींच ले जाती हैं।

दाऊद ने स्वीकार किया कि उसकी परीक्षा परमेश्वर की ओर से ही है। उसने यह जाना कि परमेश्वर किसी भी पुरुष या स्त्री को उसके पाप की वजह से ही डाँटता है। उसने यह भी जाना कि उनकी धन सम्पत्ति पतंगे के समान नष्ट हो जाती है। परमेश्वर उसके दुश्मनों से अपने ढंग और अपने समय में व्यवहार करेगा। उनका जमा किया हुआ धन उन्हें असफल करेगा। परमेश्वर पृथ्वी के दुष्टों का न्याय करेगा।

उसकी प्रार्थना को सुने जाने के लिए पुकारता है और उससे कहता है, ''मेरी प्रार्थना को सुन और मेरी सहायता के लिए आ।'' वचन 12 में उसकी प्रार्थना पर ध्यान दें, वह अपने आप को अनजान बताता है। वह इस संसार में उसके पास यहां नीचे क्यों हैं परन्तु परमेश्वर के अनन्त जीवन की वाचा पर उसके मार्ग संसार के मार्ग जैसे नहीं है। वह परमेश्वर के उद्देश्य के लिए नियुक्त किया गया है। परमेश्वर की ओर नज़रे लगाए हुए, दाऊद परमेश्वर से कहता है मेरी ओर से नज़र मत हटा ताकि मैं दुबारा आनन्दित और मगन हो सकूँ। इसके पीछे यह भाव है कि परमेश्वर अपना अनुशासन का हाथ उठाए ताकि दाऊद फिर से परमेश्वर के साथ चलने का अनुभव पा सके।

जीवन के इस समय में दाऊद ने पाया कि वह परमेश्वर के अनुशासित किऐ जाने पर कुड़कुड़ाता और शिकायत करता था। उसने अपने चारों ओर देखा कि दुष्ट समृद्धि और आनन्द में बहुत आसानी से जीवन व्यतीत करते हैं। हालांकि वह यह जानता था कि हर एक व्यक्ति एक दिन पवित्र परमेश्वर के न्याय का सामना करेगा। दाऊद का

विश्वास उसके परमेश्वर पर था। हालांकि वह हर समय परमेश्वर के अनुशासन को नहीं समझ पाया था, परन्तु वह परेशानी में चुप रहा और परमेश्वर को उसका उद्देश्य पूरा करने का मौका दिया। वह जानता था कि परमेश्वर उसे अपनी ओर खींचेगा और अपना उद्देश्य पूरा करेगा। दुष्ट बच न सकेंगे। उनका अन्त आ गया है। यह सब सोचते हुए, दाऊद धीरज धरे हुए है और परमेश्वर पर सफलता के लिए विश्वास करता है।

विचार करने के लिए:

- क्या आप कभी कुड़कुड़ाए हैं क्योंकि परमेश्वर ने आपको जीवन में कुछ चीज़ों को सहने दिया है?
- यह संदर्भ हमें परमेश्वर और उसकी परीक्षाओं के बारे में क्या सिखाता है?
- अभी परमेश्वर आपके जीवन में क्या कर रहा है आपको आकार देने और आपको सिखाने के लिए?
- इसका क्या अर्थ है कि अपनी परेशानी के समय में चुप रहें? इसके विपरीत हम किस बात को करने की ओर आकर्षित होते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह परीक्षाओं का इस्तेमाल करके हमें उसने और करीब ले आता है।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह उस हर एक बात का प्रयोग जो आपके साथ होती है अपनी महिमा के लिए करेगा।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपकी विश्वास करने में मदद करे, जबकि चीज़ें वैसीं नहीं हो रहीं हैं जैसे आप चाहते हैं कि वे हों।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको कुड़कुड़ाने और शिकायत करने से दूर रखे, जबकि वह आपको अनुशासित करता है।

40. सबक सीखना

पढ़ें भजन संहिता 40: 1-17

भजन 40 दाऊद की स्तुति का गीत है। दाऊद इस भजन में उन समयों को देखता है जब परमेश्वर ने उसके जीवन के संकटों में से उसे निकाला था। वह अपनी वर्तमान मुश्किलों में साहस करता है। पुरानी सफलताएं हमें याद दिलाती हैं कि भविष्य में भी सफलता सम्भव है।

दाऊद उस समय की ओर निहारता है जब वह लड़ाई के बीच में फंसा हुआ था। उस समय उसने धीरज से परमेश्वर की प्रतीक्षा की और परमेश्वर ने उसके रोने को सुना।

उस समय में परमेश्वर ने उसे सत्यानाश के गड्ढे और दलदल की कीच से निकाला और चट्टान पर खड़ा करके उसके पैरों को दृढ़ किया था। दाऊद ने महसूस किया कि उस समय उसे परमेश्वर के अलावा कोई आशा नहीं थी। उसकी समस्याएं बहुत बड़ी थीं कि वह उन्हें सम्भाल सके। सिर्फ परमेश्वर उसे बचा सकता था। यह है जो परमेश्वर ने किया। वह दाऊद के पास पहुँचा और उसे छुड़ाया।

परमेश्वर ने उसे छुड़ाया और उसके पैरों को सख्त ज़मीन पर खड़ा किया है। ऐसा करने से उसके मुख से परमेश्वर के लिए नया गीत भी निकला। दाऊद ने परमेश्वर के इस उद्धार के लिए उसका धन्यवाद किया उसने अपने हृदय से उसके लिए स्तुति प्रशंसा के नए गीत गाए है। वह अपने गीतों और आराधना के द्वारा अपना आभार व्यक्त करना चाहता था।

जो परमेश्वर ने उसके लिए किया वह दूसरों के लिए जो परीक्षाओं में होते हैं उत्साहित करने वाली बात है। बहुतों ने देखा कि कैसे परमेश्वर ने दाऊद को छुड़ाया और अपने छुटकारे के लिए परमेश्वर पर विश्वास किया।

दाऊद उन आशीषों को याद दिलाता है जब किसी ने परमेश्वर पर अपना सम्पूर्ण भरोसा रखा। वह व्यक्ति परमेश्वर के छुटकारे को अवश्य देखेगा। आशीषें उन लोगों की प्रतीक्षा करती हैं जो घमंडी लोगों से अपने आप को अलग करते हैं और झूठे ईश्वरों से अपना ध्यान हटाकर सिर्फ परमेश्वर पर ही भरोसा रखते हैं।

दाऊद हमें याद दिलाता है कि इस्राएल का परमेश्वर आश्चर्यकर्म करने वाला परमेश्वर है। परमेश्वर की आशीषें और आश्चर्यकर्म इतने महान हैं कि हम उन्हें गिन भी नहीं सकते। वह अपने लोगों के जीवन में बार-बार अपने आपको साबित करता है।

जो उसने भूतकाल में किया वह उसे वर्तमान में करने की साम्थर्य रखता है। वह सचमुच अपने लोगों को छुटकारा देता है। परमेश्वर अपनी अद्‌भुत आशीषों के बदले में हमसे क्या मांगता है? दाऊद वचन 6 में अपने पाठकों को याद दिलाता है, कि परमेश्वर भेंटों और बलिदानों को नहीं देखता। सब कुछ उसी का है। हम उसे ऐसी कोई भी चीज़ नहीं दे सकते जो उसकी नहीं है।

यदि परमेश्वर भेंट की इच्छा नहीं करता, तब वह क्या देखता है? दाऊद अपने पाठकों को वचन 6 में याद दिलाता है कि परमेश्वर ने उसके कान खोद कर खोले हैं। दाऊद यहां यह समझाना चाहता है हमें पुराने नियम की व्यवस्था में जाना होगा। निर्गमन की पुस्तक में जब एक दास के स्वतंत्र किये जाने का समय आता था तब उसके सामने यह बात रखी जाती थी, यदि वह अपने स्वामी से प्रेम करता है तो वह हमेशा के लिए वहां ठहर सकता है। इस वाचा को बांधने के लिए उसके स्वामी को उसको द्वार के किवाड़ या बाजू के पास ले जाकर उसके कान में सुतारी से छेद करना होता था। इसे हम निर्गमन 21:5-6 में पढ़ते हैं:-

यदि दास कहे, कि मैं अपनी स्वामी से और उसकी पत्नी से और बच्चों से प्रेम रखता हूं तो वह स्वतंत्र न किया जाए, तब उसका स्वामी उसे न्यायियों के पास लेकर जाएगा। तब वह उसको द्वार के किवाड़ या बाजू के पास ले जाकर उसके कान में सुतारी से छेद करेगा, तब वह सदा उसकी सेवा करता रहेगा।

जब दाऊद हमें बताता है कि परमेश्वर ने उसके कानों में छेद किया है, वह यह कह रहा है कि उसने अपने जीवन को हमेशा के लिए परमेश्वर को सौंप दिया है। उसने इस वाचा को कान में छेद करने के द्वारा से बांधा है। दाऊद परमेश्वर के आधीन उसकी सुरक्षा और अगुवाई में था।

परमेश्वर हमसे क्या चाहता है? वह चाहता है कि हम स्वेच्छा से अपने आपको उसे दे दें। वह हमसे क्या चाहता है? उसे हमारी ज़रूरत है। अपनी आशीषों के बदले में वह हमसे होम बलि और पाप बलि नहीं चाहता। वह उन पुरुषों और स्त्रियों को देख रहा था जो उसके प्रति पूर्ण समर्पण कर सकें। वह उन सेवकों की ओर देख रहा था, जो अपना सब कुछ उसे और उसकी सेवा के लिए बलिदान चढ़ा दें।

दाऊद अपने आप को परमेश्वर की सेवा करने के लिए देता है। ''देख मैं आया हूँ, मैं यहा हूँ, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ। तेरी व्यवस्था मेरे अन्तः करण में बसी है'', पद 7-8 में उसने कहा। परमेश्वर के उद्धार के बदले, दाऊद अपने आप को उसके उद्देश्यों के लिए समर्पित करता है। वह परमेश्वर की आज्ञाकारिता में जीवन जीना चाहता है। यही परमेश्वर उन सब से चाहता है जिन्हें वह बचाता है। वह उनकी आज्ञाकारिता और भक्ति चाहता है। ध्यान दें, दाऊद ने यह अद्‌भुत उद्धार अपने पास नहीं रख छोड़ा। जब परमेश्वर ने उसे छुड़ाया, तब उसने इसका वर्णन सबके सामने बड़ी सभा में किया (वचन 9)। वह परमेश्वर के छुड़ाए जाने पर चुप न रह सका। दाऊद ने ऐसा कुछ भी नहीं छिपाया जो परमेश्वर ने उसके लिए किया। उसने सबको

उसकी महान विश्वासयोग्यता और उद्धार के बारे में बताया। उसने सबके सामने परमेश्वर के प्रेम और सच्चाई की प्रशंसा की।

दाऊद ने प्रार्थना की कि तू अपनी बड़ी दया मुझ पर से न हटा ले (वचन 11)। उसने कहा कि उसकी करुणा और सत्यता उसकी रक्षा वैसे ही करे जैसे भूतकाल में की थी। दाऊद ने परमेश्वर को याद दिलाया कि मैं अनगिनत बुराईयों से घिरा हुआ था। मेरे अधर्म के कामों ने मुझे घेरा हुआ था। वे गिनती में मेरे सिर के बालों से भी अधिक थे इसलिए उसका हृदय टूट गया था। दाऊद ने बहुत सी परीक्षाओं का अनुभव किया था। परमेश्वर ने भूतकाल में दाऊद को हर परीक्षा में से निकाला था। दाऊद ने फिर से परमेश्वर पर विश्वास किया कि वह उसे छुड़ाए। उसने परमेश्वर से कहा कि वह उसको फिर उसके दर्द से छुड़ा ले। उसने परमेश्वर से कहा जल्द मेरी सहायता के लिए आ। उसने परमेश्वर से कहा कि मेरे दुश्मनों के मुँह काले हों और वे लज्जित किए जाएं। ध्यान दें कि दाऊद सिर्फ अपने लिए प्रार्थना नहीं करता। उसने जाना कि ऐसे और भी लोग हैं जिन्होंने ऐसी ही परीक्षाओं में परमेश्वर से मांगा था वह प्रार्थना करता है कि परमेश्वर का उद्धार और छुटकारा उन सब को मिलता रहे जो उसे ढूंढ़ते हैं (वचन 16)।

जितने तुझे ढूँढते हैं, वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों; जो तेरा किया हुआ उद्धार चाहते हैं, वे निरंतर कहते रहें, ''यहोवा की बड़ाई हो!''

दाऊद की प्रार्थना यह नहीं है कि सब परेशानियां खत्म हो जाएं, परन्तु उद्धार के लिए है जिससे लोग महान परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हैं। उसकी दुखों में भी यही इच्छा है कि परमेश्वर का नाम महिमा पाए।

ऐसी बहुत सी बातें हैं जिन्हें हम इस भजन से सीख सकते हैं। पहला, हमें यह जानना है कि मसीहियों को इस जीवन में दुख सहना ही पड़ेगा। दूसरा, हमें यह समझना होगा कि परमेश्वर हमें ऐसी परीक्षाओं में नहीं जाने देगा जिसमें से वह हमें निकाल न सके। उसकी साम्थर्य और अनुग्रह हमारे लिए सदैव मौजूद हैं, चाहे जो भी हम सहें। तीसरा, दाऊद के भरोसे पर ध्यान दें जो परमेश्वर के पास फिर से सहायता के लिए आता है। वह अपने और परमेश्वर के सम्बन्ध पर विश्वास रखता है। हम इस विश्वास से कभी भी परमेश्वर के पास आ सकते हैं। हम उसके बच्चे हैं। चौथा दाऊद की इच्छा पर ध्यान दें। उसकी इच्छा है कि परमेश्वर की स्तुति और महिमा हो। इससे पहले कि उसकी उद्धार आए, दाऊद ने धीरज और विश्वास से उसका इंतज़ार किया। जब वह छुटकारा आया, उसने परमेश्वर को ऊँचा किया और बड़ी सभा में उसके उद्धार के बारे में लोगों को बताया। दाऊद को उसके भूतकाल की बातों ने उसके वर्तमान की ज़रूरत के समयों पर उत्साहित किया। उसने परमेश्वर के छुटकारे को साहस से बताया। भूतकाल का परमेश्वर बदला नहीं है। उसकी सामर्थ नष्ट नहीं हुई है। वह अपने लोगों को भूतकाल और वर्तमान दोनों में छुड़ा सकता है।

विचार करने के लिए:

- क्या परमेश्वर अपने बच्चों को पीड़ा और परीक्षाओं से छुड़ाता है?
- दाऊद ने अपनी मुश्किल के समयों में अपने भूतकाल के अनुभवों से क्या सीखा?
- ऐसी परीक्षाओं की सूची बनाएं जिन में परमेश्वर ने आपके मार्गों में मदद की हो?
- क्या आपके पास इस पर संदेह करने का कोई ऐसा कारण है कि परमेश्वर आपको आज भी परीक्षाओं में से छुड़ाने में सक्षम और इच्छुक है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि जब हम परीक्षाएं और क्लेश अपने जीवन में देखते हैं तब उसकी सामर्थ्य और बुद्धि हमारी सहायता के लिए रहती है।
- परमेश्वर का हम धन्यवाद करें कि उसने विशेष रूप से कुछ दिनों पहले ही आपका मार्गदर्शन किया।
- परमेश्वर से कहें कि वह हमें और ज्यादा दाऊद की तरह बनाए ताकि हम दूसरों तक परमेश्वर के अद्‌भुत छुटकारे को घोषित कर सकें।

41. चंगाई को ऊँचा करना

पढ़ें भजन संहिता 41 : 1-13

इस भजन में, दाऊद अपने विश्वास को व्यक्त करता है जबकि वह अपने दुश्मनों के हमलों को झेलता है। वह वचन 1 में कमज़ोर लोगों के प्रति परमेश्वर की दिलचस्पी को बताता है।

दाऊद वचन 1 में हमें बताता है कि जो कंगाल की सुधि रखता है, वह धन्य है। अपने जीवन काल के समय में दाऊद ने कंगालों के प्रति अपनी दया और देखभाल को व्यक्त किया। यह उसका विश्वास था कि परमेश्वर उसे आशीष देगा और छुड़ाएगा।

अपने परीक्षा के समय में दाऊद ने अपने और परमेश्वर के सम्बन्ध पर विश्वास व्यक्त किया। उसने यह विश्वास किया कि परमेश्वर उसे सम्भालेगा और सुरक्षित रखेगा। वह जानता था कि परमेश्वर उसे उसके दुश्मनों की इच्छा पर नहीं छोड़ेगा। उसका अपने स्वर्गीय पिता पर एक बच्चे के समान विश्वास था। हमारे जीवन में कितनी बार यह विश्वास डगमगाता है? कितनी बार हमने हमारे स्वर्गीय पिता की दिलचस्पी और देखभाल पर प्रश्न किए हैं? यह जानना कितनी बड़ी आशीष है कि परमेश्वर परीक्षाओं में हमें कभी न त्यागेगा। वह हमें घेरे रहेगा और सुरक्षा करेगा। उसका प्रेम सांसारिक पिता से बढ़कर है। हमारे पास कोई कारण नहीं है कि हम उसकी सुरक्षा पर संदेह करें।

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर पीड़ाओं को अपने बच्चों के जीवन में नहीं आने देगा। परमेश्वर अपने बच्चों के जीवन में पीड़ाओं को आने देता है। हमारे जीवन में पीड़ाओं को आने देने पर वह हमें सम्भालता भी है। दाऊद वचन 3 में बताता है कि जब वह व्याधि के मारे शय्या पर पड़ा हो तब यहोवा उसे सम्भालेगा, और रोग में पूरे बिछौने को उलटकर ठीक करेगा। बीमारी में भी परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करता है।

इस भजन में ऐसा लगता है कि परमेश्वर दाऊद को उसके जीवन की परीक्षाओं में अनुशासित और शुद्ध कर रहा था। पद 4 में दाऊद ने स्वीकार किया कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। अब वह परमेश्वर से चंगाई मांगता है। परमेश्वर के लोगों के जीवनों में ऐसा समय आता है जब परमेश्वर हमारा ध्यान भटकाने के लए परीक्षाएं आने देता है जिससे हमारे निष्फल कार्य और व्यवहार शुद्ध हो सकें। दाऊद के जीवन में इस समय ऐसा ही होता हुआ दिखता है।

दाऊद के दुश्मन उसकी बीमारी में भी इसके विरुद्ध दुष्ट बातें बोलते हैं। वे चाहते हैं कि दाऊद मर जाए और उसका नाम हमेशा के लिए नष्ट हो जाए। दाऊद के दुश्मन उससे उसके लिए नफरत करते थे जिसके लिए वह खड़ा हुआ था। वे आपस में उसके खिलाफ कानाफूसी करते थे। वे उसके लिए सबसे बुरा चाहते और सोचते थे। वे यह सब जलन के कारण करते थे। उन्होंने यह सब प्रभु यीशु मसीह के साथ भी किया। धार्मिक गुरुओं ने वह सब कुछ किया जिससे भीड़ के बीच में सब उसकी निंदा करें।

यह दाऊद की विशेष रुचि है जो उसने लिखा कि मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है। (देखें वचन 9)। दाऊद के संदर्भ में, हो सकता है कि वह किसी विशेष व्यक्ति के बारे में न सोच रहा हो। यह कितना महत्वपूर्ण है कि प्रभु यीशु मसीह ने यूहन्ना 13:18 में इसे बताया। यीशु ने इस पद का प्रयोग इसलिए किया कि वह अपने चेलों को यह बता सके कि यहूदा आगे क्या करेगा। यीशु ने उसके साथ रोटी बांटी जो उसे धोखा देने वाला था। दाऊद अपने जीवन के द्वारा यह स्पष्ट करता है कि यीशु के साथ क्या होगा।

परमेश्वर ने दाऊद पर दया की और उसे फिर से खड़ा कर दिया, जैसे उसने प्रभु यीशु मसीह को मुर्दों में से ज़िन्दा किया था। ध्यान दें, वचन 10 में परमेश्वर ने उसे इसलिए उठाया ताकि वह बदला ले सके और अपने दुश्मनों का न्याय कर सके। यही प्रभु यीशु ने भी किया। वह कब्र में से जीवित हो गए और एक दिन उनका न्याय करेंगे जिन्होंने उनका इन्कार किया और क्रूस पर उनके काम की निंदा की।

दाऊद के लिए, परमेश्वर का आनन्द उसमें यहां साबित होता है जब परमेश्वर ने उसके दुश्मनों को उसके ऊपर जीतने नहीं दिया। यह समान सिद्धांत यीशु मसीह के जीवन में भी लागू होता है। यीशु कब्र में हमारे लिए गया उसने शैतान और नर्क दोनों का सामना किया। परन्तु न नर्क और न कब्र उसे अपने पास रख सके। वह अपने दुश्मनों के ऊपर विजयी हुआ परमेश्वर का आनन्द यीशु मसीह में कैसा था यह ऐसे साबित होता है कि परमेश्वर ने मसीह के दुश्मनों को उस पर विजयी नहीं होने दिया। यीशु मसीह का जी उठना मसीह के कामों पर परमेश्वर की सहमति को साबित करता है। क्या ही धन्य है यह जानना कि न मृत्यु, न कब्र उसे अपने पास रोक सके। वह अपने दुश्मनों पर विजयी हुआ ताकि हम उसमें और उसके कामों पर विश्वास कर सकें।

दाऊद भी इसी रीति से परमेश्वर के द्वारा ऊपर उठाया गया। उसे उसके दर्द से उठाया गया और परमेश्वर की उपस्थिति में हमेशा के लिए स्थिर किया गया। (वचन 12) यीशु मसीह के साथ भी ऐसा ही हुआ। वह मुर्दों में से जी उठा और हमेशा के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में विराजमान है।

दाऊद यहां अपने जीवन की विशेष घटना के बारे में बताता है। अपने आप से

अपरिचित, भविष्यवाणी करते हुए वह लिखता है जो दाऊद के वंश में से निकला उस मसीह का क्या होगा। दाऊद देखता है कि कैसे उसके दुश्मनों ने उसके खिलाफ बोला और कैसे उसके परम मित्र ने उसे धोखा दिया। परमेश्वर ने फिर भी उसे उसकी परीक्षाओं में से निकाल कर अपनी महिमामय उपस्थिति में रखा। दाऊद के जीवन की यह घटना हमें दिखाती है कि यीशु मसीह हमारे लिए क्या करेगा।

परमेश्वर अपने लोगों को सुरक्षित रखेगा मृत्यु भी सच्चे विश्वासी को हरा नहीं सकती क्योंकि यह उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में लेकर जाती है जहां वे हमेशा के लिए रहेंगे। दाऊद इस्राएल के प्रभु परमेश्वर को स्तुति देते हुए अन्त करता है जो अनन्त परमेश्वर है और सदा सर्वथा के लिए जीवित है।

विचार करने के लिए:

- यह संदर्भ हमें इस बारे में क्या सिखाता है कि परमेश्वर विश्वासियों के जीवन की परिस्थितियों का कैसे प्रयोग करता है?
- दाऊद यहां जो कुछ बोलता है उसकी तुलना उससे करें जो मसीह के साथ होना था। क्या समानताएं हैं?
- यह संदर्भ हमें दाऊद के परमेश्वर में भरोसे और संबन्ध के बारे में क्या सिखता है? क्या आपका इस प्रकार का संबन्ध परमेश्वर से है?
- कौन सी व्यक्तिगत परीक्षाएं परमेश्वर ने आपके जीवन में दीं ताकि वह आपको सिखा सके और बड़ी परिपक्वता में ले सके?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह परीक्षाओं में कैसे आपको सम्भालने का वादा करता है।
- आपके जीवन की परीक्षाओं से जो सबक उसने आपको सिखाए उसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें।
- उन समयों के लिए परमेश्वर से आपको क्षमा करने को कहे जब आप उस पर विश्वास करने में असफल रहे और उस पर जो वह आपके जीवन में कर रहा था।
- प्रभु यीशु का धन्यवाद करें कि उसने स्वेच्छा से अपने दुश्मनों के अपमान को सह लिया ताकि आपको पापों से बचा ले।
- प्रभु को इस आशा के लिए धन्यवाद दें कि प्रभु यीशु के अपने शत्रुओं पर विजयी होने के कारण हमें उसकी उपस्थिति में सदा के लिए अनन्तकाल की आशा है।

42. परमेश्वर कहाँ है?

पढ़ें भजन संहिता 42:1-43:5

एन.आई.वी अनुवादित बाइबल के एक फुटनोट में यह बताया गया है कि कई इब्रानी हस्तलिपि में भजन 42 और 43 एक ही भजन हैं। इसी कारण हम इन दोनों को एक साथ समझेंगे। यह भजन संगीत के निर्देशक के लिए हैं जिन्हें कोरहवंशी, और लेवी के पुत्रों ने गाया है।

यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि कोरह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने मूसा के विरुद्ध विद्रोह शुरू किया (गिनती 16)। उस समय, परमेश्वर ने इस परिवार का न्याय धरती खोलकर और उन्हें ज़िन्दा निगलने के द्वारा किया। हम गिनती 26:11 में देखते हैं, तब भी, कोरह का वंश पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ था। 1 इतिहास 6:33 में, हम उससे मन्दिर के संगीतकारों के रूप में मिलते हैं। यह स्पष्ट नहीं है कि यह भजन किसने लिखा। इसके शीर्षक से पता चलता है कि यह कोरहवंशियों का मश्कील है मश्कील एक संगीतमय पद है। यह समझाता है कि या तो उन्होंने यह भजन लिखा है या उनकी योजना मंदिर में इस गाने की ही होगी।

भजन 42 में परमेश्वर की संतान की तुलना हरिणी से होती है जो नदी के जल के लिए हांफती है। यहां यह चित्र दिखाया जाता है कि गर्मियों के दिनों में एक हरिणी कैसे हर समय जल की खोज करती रहती है। जब उसे पानी मिलता है, वह गहराई तक अपनी प्यासी बुझाती है। भजनकार यही महसूस करते हुए भजन लिख रहा था। जैसे एक हरिणी जीवन देने वाली नदी के निकट आता है वैसे ही वह पूरी गहराई के साथ परमेश्वर को पुकारता व उसका प्यासा है।

ध्यान दें, परमेश्वर भजनकार से दूर नज़र आता है, ''मैं कब परमेश्वर के पास जाँऊगा और मिलूंगा?'' यह भजन 42:2 में भजनकार की पुकार है। ऐसा समय होता है जब परमेश्वर दूर नज़र आता है। कई बार परीक्षाएं और पीड़ाएं परमेश्वर की उपस्थिति को छिपा देती हैं। कई बार हमारे पाप हमें परमेश्वर से दूर ले जा सकते हैं।

यह अनुभूति होना कि परमेश्वर की उपस्थिति दूर हो गई है इससे बड़ी मुश्किल एक विश्वासी के लिए नहीं होगी। परमेश्वर की उपस्थिति को जानते हुए हम किसी भी चीज़ का सामना कर सकते हैं। इस उपस्थिति ने बहुत से शहीदों को दांव पर रखा। परमेश्वर की उपस्थिति में बहुत से लोगों ने अपना जीवन स्वेच्छा से परमेश्वर को सौंप दिया। जब हम परमेश्वर को दूर देखते हैं तो हम साहस खो देते हैं। भजनकार रात दिन आंसुओं के साथ रोता है, प्रभु परमेश्वर की सांत्वना देने वाली उपस्थिति पाने

की चाहत में यह और भी मुश्किल हो जाता है जब लोग पूछते हैं 'तुम्हारा परमेश्वर कहां है?'' (भजन 42:3)। वे भी यह देख पाते हैं कि परमेश्वर की आशीष अब उनके बच्चों पर नहीं है।

इस प्रश्न का उत्तर देते हुए भजनकार अपने पुराने अच्छे और खुश समयों को याद करता है। वह याद करता है कि पुराने दिन कैसे हुआ करते थे। विशेष रूप से, वह याद करता है कि वह कैसे बहुतायत की आशीषों और धन सम्पत्ति के साथ परमेश्वर के भवन में जाता था। जब वे परमेश्वर के भवन जाते थे, तब वे आनन्द से चिल्लाते और धन्यवाद देते थे। वह कितने अच्छे दिन थे जब परमेश्वर पास दिखाई देता था और उसकी उपस्थिति में कितना आनन्द मिलता था।

लिखते समय, बातें अलग थीं। भजनकार उदास है। वह अपने आपको परमेश्वर से दूर और दुखी महसूस करता है। वह यह नहीं समझ पा रहा कि वह इतना दुखी क्यों है। ''हे मेरे प्राण, तू इतना उदास क्यों है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है?'' (42:5)।

उत्तर आता है: ''परमेश्वर पर आशा लगाए रह क्योंकि मैं उसका धन्यवाद करूंगा'' (42:5)। शब्द बहुत साधारण हैं लेकिन उन्हें करना मुश्किल है। परमेश्वर और उसके उद्देश्यों पर विश्वास रखें। किसी भी तरह से वह जगह दूर दिखाई देती है।

अपनी परीक्षाओं में भजनकार अपना ध्यान परमेश्वर की ओर मोड़ता है। वह यरदन के पास के देश से और हर्मोन के पहाड़ों और मिसगार की पहाड़ी के ऊपर से उसे स्मरण करता है। (मिसगार मतलब छोटी पहाड़ी)। भजनकार हर बड़े और महान काम की याद करता है चाहे वह छोटा हो या कोई उस पर ध्यान न देता हो। जब परमेश्वर दूर होता है, तब हमें अपने मन में परमेश्वर के किए गए कामों को स्मरण करना चाहिए। जब हम यह याद रखते हैं कि परमेश्वर ने भूतकाल में हमें कैसे आशीषें दीं तब हम भविष्य का सामना करने के लिए सामर्थ्य पाते हैं।

भजनकार अपने आप को पराजित महसूस करता है। उसके दर्द का कोई अन्त नज़र नहीं आता। परीक्षाएं लहरों और बड़ी रुकावटों के समान अनगिनत हो उठती हैं। ऐसा नहीं है कि भजनकार परमेश्वर की भलाई पर सन्देह कर रहा है। भजन 42:8 में वह कहता है दिन को परमेश्वर अपनी शक्ति और करुणा प्रगट करेगा और रात को भी वह उसका गीत गाएगा और अपने जीवनदाता ईश्वर से प्रार्थना करेगा। परमेश्वर का हाथ प्रकट था तौभी हर दिन कोई न कोई समस्या या परीक्षाएं लाता दिखाई देता था।

यह दर्द और परीक्षाएं क्यों? इन मुश्किलों में परमेश्वर कहां है? वह आश्चर्य करता है कि उसे क्यों शत्रु के अन्धेर के मारे शोक का पहिरावा पहिने हुए चलना फिरना पड़ता है (42:9)। उसके सताने वाले उसकी निन्दा करते हैं और शक्तिशाली है और उसकी हड्डियाँ चूर-चूर हो गई हैं। हर दिन वह परमेश्वर की उपस्थिति को उसकी सहायता के लिए देखता है परन्तु वह नहीं देख पाता। उसका दर्द बरकरार है। वह उसके कारण दुखी और उदास है जो उसके साथ हो रहा है। परमेश्वर उससे बहुत

दूर दिखाई देता है। इसके बावजूद भजनकार परमेश्वर के प्रेम और सुरक्षा पर विश्वास रखता है। वह फिर विश्वास करता है कि परमेश्वर उसे निकालेगा। वह विश्वास रखता है कि परमेश्वर उसके धीरज को देखेगा और वह फिर से परमेश्वर की सामर्थ्य और उपस्थिति के आनन्द को पाएगा।

ध्यान से देखें कि वचन 9 में वह कैसे परमेश्वर को अपनी चट्टान बताता है। जबकि परमेश्वर उसकी चट्टान था, लेकिन उसे लगा परमेश्वर उसे भूल गया है। उसका पमरेश्वर को चट्टान पुकारना यह साबित करता है कि वह परमेश्वर पर अभी भी भरोसा रखता है, हालांकि वह अभी पूरी रीति से उस सच्चाई को अनुभव नहीं कर पा रहा था।

भजन संहिता 43:1 में वह परमेश्वर से कहता है, ''हे परमेश्वर मेरा न्याय चुका और विधर्मी जाति से मेरा मुकद्दमा लड़; मुझ को छली और कुटिल पुरुष से बचा।''

परमेश्वर भजनकार के लिए सदैव शरण ठहरा है। परन्तु अब उसे लगता है कि उसके सतानेवाले जीत रहे हैं। वह जगह-जगह शोक करता और उत्पीड़ित होता है। परमेश्वर क्यों उसे जीत नहीं दिखा रहा था?

भजनकार हार नहीं मानता। वह परमेश्वर को अपनी और सच्चाई को भेजने के लिए कहता है। वह नहीं जानता कि उसे सफलता देने में कितना समय लगेगा, परन्तु उत्पीड़न का सामना करते हुए वह कहता है कि परमेश्वर की ज्योति और सच्चाई उसका मार्गदर्शक होगी। सताव का सामना करने पर उसे परमेश्वर की बुद्धि और मार्गदर्शन की ज़रूरत है।

भजनकार ने भरोसा किया कि परमेश्वर इस मुश्किल समय में उसे ज़रूर देखेगा। वह विश्वास करता है कि ऐसे दिन आएंगे जब वह परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़ा होगा और परमेश्वर के नाम की स्तुति बड़े आनन्द और खुशी से करेगा (43:5)।

भजन संहिता 43:5 में ध्यान दें कि भजनकार अपने प्राण से पूछता है कि प्राण क्यों उदास है। वह अपने प्राण को यह चुनौती देता है कि वह परमेश्वर पर आशा और विश्वास रखे। यहां पर एक मुख्य सिद्धांत है जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए। भजनकार पराजित महसूस करता है। उसकी भावनाएं निम्न हो रही हैं। वह इस समय आनन्द महसूस नहीं कर रहा है। उसकी भावनाएं उसे आनन्द से आराधना नहीं करने दे रहीं, अपनी इच्छा के अनुसार अपने प्राण को वह विश्वास करने की आज्ञा देता है। ऐसे समय भी हमारे जीवन में आएंगे जब हमारी भावनाएं असफल हो जाएंगी। हो सकता है हम उस समय आनन्द और शान्ति महसूस न करें परन्तु हम परमेश्वर पर भरोसा और उसका इतंज़ार कर सकते हैं। यही भजनकार हमें करने को कह रहा है।

ये दोनों भजन भजनकार की असमंजसता को व्यक्त करते हैं। वह अपने द्वारा अनुभव की जा रही परीक्षाओं और पीड़ा से मल्ल युद्ध करता है। वह परमेश्वर के दूर होने और हटने के कारण लोगों की बातें सुनता है। वह परमेश्वर को उसके प्रयत्नों में

उसे मार्गदर्शन देने को कहता है, उसकी ज्योति और सच्चाई के द्वारा। ऐसे समय में परमेश्वर दूर लग रहा था और आनन्द हटता जाता था, फिर भी भजनकार परमेश्वर पर अपना विश्वास दृढ़ रखने में स्थिर है।

यह परमेश्वर के प्रति भजनकार की प्यास है जिसने उत्पीड़न के समय उसे सम्भाला। परमेश्वर के लिए उसकी प्यास साधारण परीक्षाओं और दुख के कारण नहीं बुझेगी। यदि कुछ भी उसका बांझपन जो वह महसूस करता है, वह परमेश्वर की प्यास को और भी बढ़ाता है। उसने परमेश्वर को ऐसे ढूँढ़ा जैसे एक हिरणी पानी के जल के लिए हाँफती हैं वह परमेश्वर को ढूढ़ँना तब तक नहीं छोड़ेगा जब तक उसके प्राण की प्यास नहीं बुझ जाती। क्या आप इसी रीति से अपने जीवन में परीक्षाओं को जवाब देते हैं?

विचार करने के लिए:

- क्या आपके जीवन में ऐसा समय आया जब परमेश्वर आप से दूर हो? आपको लगा हो वह समय कैसा था?
- आपकी परमेश्वर के प्रति प्यास और भजनकार की प्यास की तुलना कीजिए?
- भजनकार ने परमेश्वर के दूर होने की स्थिति का सामना कैसे किया?
- भजनकार को कैसा लगा जब उसकी भावनाओं ने उसे असफल कर दिया था?
- भजनकार की परीक्षाओं ने परमेश्वर के प्रति उसकी प्यास और इच्छा को कैसे बढ़ाया है?

प्रार्थना के लिए:-

- परमेश्वर से कहें कि वह उसकी और उसकी उपस्थिति की प्यास को आपके जीवनों में बढ़ाए।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह आपको आपके जीवन के दुख और परीक्षाओं में अपने साथ लेकर चला।
- क्या आपका कोई भाई या बहन है जो संघर्ष कर रहा है? उसके लिए प्रार्थना करने के लिए समय निकालें।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको अनुग्रह दे जब आप परमेश्वर पर भरोसा रखने में असफल हो जाते हैं जैसे भजनकार ने इन भजनों में किया है।

43. तेरे नाम के निमित्त

पढ़ें भजन संहिता 44:1-26

हमने देखा है कि एक विश्वासी इस जीवन में दुख और परीक्षाओं से नहीं बच सकता। कई बार ऐसा होता है कि इन पीड़ाओं का कारण केवल परमेश्वर ही को पता होता है। उस समय हमारे पास सिर्फ हमारा परमेश्वर पर विश्वास है जो हमेशा वही करता है जो सही होता है। भजन 44 परमेश्वर से की गई पुकार है कि वह अपने लोगों की पीड़ाओं में अपने हाथों को फैलाए।

भजन का आरम्भ पद 1 वचन में इस कथन से शुरू होता है: हे परमेश्वर, हम ने अपने कानों से सुना, हमारे बापदादों ने हम से वर्णन किया है कि तू ने उनके दिनों में और प्राचीनकाल में क्या-क्या काम किए हैं।

भजनकार इस्राएल देश के इतिहास की ओर नज़र डालता है। उसका इतिहास शानदार था। परमेश्वर ने अपनी महान शक्ति को अपने लोगों पर प्रकट किया। जब भजनकार उनकी वर्तमान स्थिति को देखता है, वह आश्चर्य करता है कि वह क्यों परमेश्वर की सामर्थ्य को उन दिनों के समान महसूस नहीं कर पा रहे थे। परमेश्वर ने इस्राएल को एक सुन्दर भूमि में बसाया है। उसने वहां के रहने वालों को चूर-चूर कर दिया और उस भूमि को इस्राएल को दे दिया। उस राज्य में वे परमेश्वर की देखभाल और व्यवस्था में फूले और फले।

भजनकार इसे स्पष्ट करता है कि वह अपनी तलवार से समृद्ध नहीं हुए। सफलता उनकी ताकत से नहीं आई। यह परमेश्वर का दाहिना हाथ था जिसने उन्हें सफलता दिलाई। परमेश्वर के चेहरे की रोशनी उन पर प्रगट हुई! वे इसलिए समृद्ध हुए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें प्रेम किया और आशीषित किया था।

परमेश्वर इस्राएल की शक्ति था। उसके द्वारा वे अपने दुश्मनों को पीछे कर सके। उसके नाम के प्रताप के द्वारा उन्होंने अपने विरोधियों को रौंदा। वचन 6 में भजनकार याद दिलाता है कि तलवार का बल हमें सफलता नहीं दिलाता। सफलता केवल परमेश्वर की ओर से ही आती है। यह परमेश्वर ही है जो हमारे विरोधियों पर हमें विजय दिलाएगा और हमारे बैरियों को लज्जित करेगा। कई बार हम एक विश्वासी होने की ताकत को भूल जाते हैं। हम अपनी शिक्षा और अनुभव पर भरोसा रखते हैं। हम अपनी नीतियों और कार्यक्रमों पर भरोसा रखते हैं। हमें भी वह सब समझने की ज़रूरत है जो उस दिन भजनकार ने समझा। केवल परमेश्वर ही हमारी विजय है। उसकी सामर्थ्य के द्वारा ही हम अपने बैरियों को हरा सकते हैं।

यह जानना कितना सुखद है कि परमेश्वर हमारे लिए लड़ता है। उसके द्वारा ही हम विजयी होते हैं। हमारे पास अपने ऊपर घमंड करने योग्य कुछ नहीं है। हमारा सारा घमंड परमेश्वर पर होना चाहिए जो हमारे लिए सब कुछ करता है।

परमेश्वर के काम की सच्चाई उसके लोगों के जीवनों में सुखदायी होती है; भजनकार जानता था कि यह परमेश्वर के लोगों का वर्तमान अनुभव नहीं था। जब उसने यह भजन लिखा, उसे लगता था कि परमेश्वर ने अपने लोगों को अस्वीकृत कर दिया था और उन्हें दीन किया था। (वचन 9) ऐसा लगता था कि परमेश्वर इस्राएल के साथ आगे नहीं जाने वाला था। इस्राएल उस विजय का अनुभव नहीं कर पा रहा था जिसे उसके पूर्वजों ने अनुभव किया था। इसके विपरीत, उन्हें उनके शत्रुओं के सामने से हटा दिया जाता था। वे लूटे जाते थे। ऐसा लगता था कि परमेश्वर ने उन्हें अन्य जातियों में तितर बितर किया था (वचन 11)। ऐसा लगता था कि परमेश्वर ने अपने लोगों को सेंतमेंत बेच डाला था और बदले में उनके लिए कुछ नहीं ले रहा था (पद 12)। अन्यजाति के लोगों ने परमेश्वर के लोगों का हँसी ठट्टा किया (वचन 13) और देश-देश के लोग परमेश्वर के लोगों के कारण सिर हिलाते थे। (वचन 14)। ऐसा लगता था कि उनके परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया था।

भजनकार को अपमान व अनादर का अनुभव हुआ (पद 15)। किसी समय जो लोग महिमामयी थे अब अपने शत्रुओं के विरुद्ध शक्तिहीन थे। जातिया उन्हें भला-बुरा कहती थीं (पद 16)। उनके शत्रु अब बदला लेना चाहते थे और ऐसा लगता था कि वे ऐसा करेंगे भी।

यह चित्र जो यहाँ दिखाया गया है वह आघात पहुँचाने वाला है और तौभी साधारण है। हम परमेश्वर की संतान हैं। उसकी संतान होने के कारण हमारा उसकी बुद्धि और शक्ति पर अधिकार है। कितनी बार हम हारा हुआ जीवन जीये होंगे?

ध्यान दें वचन 17 में, यह सब कुछ परमेश्वर के लोगों के साथ हो रहा था लेकिन फिर भी वे परमेश्वर को नहीं भूले या उसकी वाचा के साथ अविश्वासयोग्य नहीं रहे। उनके हृदय परमेश्वर से नहीं मुड़े (वचन 18)। परमेश्वर के प्रति उनकी आज्ञाकारिता और प्रेम के बावजूद उन्हें पीस डाला गया था और घोर अन्धकार में छिपा दिया गया था (पद 19)।

यदि इस्राएल प्रभु के नाम को भूल जाता तो दुखों का होना समझ में आता है। यदि इस्राएल ने अन्य ईश्वरों के पीछे चलना चुना होता तो यह स्पष्ट हो जाता कि परमेश्वर उन्हें क्यों उनके शत्रु के हाथों दुखी होने दे रहा था। ऐसा लग नहीं रहा था।

विरोधियों के द्वारा उत्पीड़न सहने दिया, ऐसा नहीं है। यदि उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध कोई गलती नहीं की तो परमेश्वर क्यों उन्हें पीड़ाए सहने दे रहा था?

वचन 22 में भजनकार बताता है कि वे परमेश्वर के नाम के निमित दिन भर मार डाले जाते थे। उसके नाम के निमित्त वे उन भेड़ों के समान समझे जाते थे जो वध होने पर हैं। ऐसा समय आएगा जब हमें उसके नाम के लिए दुख सहना होगा। कई बार

हमारी आज्ञाकारिता ही हमारी परीक्षाओं का कारण होती है। शैतान परमेश्वर के लोगों पर कोड़े मारता है। वह हमें परमेश्वर के रास्ते से भटकाने के लिए भरसक प्रयास करता है। विश्वासियों के लिए यह ज़रूरी है कि वे परमेश्वर के लिए ऐसे विरोध का सामना करने के लिए तैयार रहें।

वचन 23 में, भजनकार परमेश्वर से नींद से जाग उठने को कहता है। वह प्रार्थना करता है कि हे प्रभु मुझे सदा के लिए न त्याग दे। हमें यह जानना है कि परमेश्वर न तो सोता है और न ही अपने लोगों को त्यागता है। जो कुछ हो रहा था उसके प्रति यह भजनकार की धारणा थी। भजनकार को ऐसा लगा कि परमेश्वर ने उसके दुख और दुर्दशा के समय में उससे अपना मुँह छिपा लिया है।

परमेश्वर के लोगों का प्राण मिट्टी में मिल गया था (पद 23)। उन्हें उन शत्रुओं के द्वारा रौंदा गया जो उनका आदर नहीं करते थे। भजनकार परमेश्वर को संकट के समय में सहायता करने के लिए पुकारता है, शत्रुओं से छुड़ा ले। ध्यान दे भजनकार परमेश्वर के प्रेम पर भरोसा रखता है। हालांकि वह अभी उस प्रेम को नहीं देख पा रहा, तौभी वह इसमें विश्वास करता है।

इस भजन में, हम पीड़ा की सच्चाई का सामना करते हैं। पौलुस 2 तीमुथियुस 3:12 में बताता है:

पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जांएगे।

पीड़ाएं सहना मसीह के लिए संगति करने जैसी सच्चाई है। परमेश्वर कई बार हमें पीड़ाओं के द्वारा ही अपनी ओर खींचता है। पीड़ा के समय में वह हमें अपने स्वरूप में बनाता है। पौलुस फिलिप्पियों 3:10 में मसीह की पीड़ाओं की संगति में सहभागी होने के बारे में बताता है:

ताकि मैं उसको और उसके मृत्युंञ्जय की सामर्थ्य को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं।

पीड़ाएं कभी भी आसान नहीं होतीं। ऐसे समयों में हम आश्चर्य करते हैं कि परमेश्वर कहां है और क्या कर रहा है। हमें उसके लिए पीड़ाएं सहने से नहीं डरना चाहिए। इसके बदले, हमें यह सीखना चाहिए कि हम कैसे उसकी प्रतीक्षा करें। हमारी पीड़ाओं के द्वारा परमेश्वर हमें शुद्ध और पवित्र बनाएगा। वह हमें अपनी ओर खींचेगा।

भजनकार अपने को एक नई रीति से परमेश्वर के सामने अपने दर्द को लेकर पुकारते हुए पाता है। उसका विश्वास और भरोसा बढ़ गया था। वह वैसा नहीं रहेगा जब परमेश्वर उसे दूसरी ओर लाएगा। शुद्ध होकर और सामर्थ्य पाकर, वह परमेश्वर के साथ गहरी घनिष्टता का आनन्द उठाएगा।

विचार करने के लिए:

- पाप के कारण उठाई जानेवाली पीड़ाओं और मसीह के कारण उठाई जाने वाली पीड़ाओं में क्या अन्तर है?
- क्या आपको कभी परमेश्वर के साथ सम्बन्ध रखने की वजह से पीड़ाए सहनी पड़ीं? आपको इस भजन से क्या प्रोत्साहन मिलता है?
- परमेश्वर क्यों कई बार अपने बच्चों को पीड़ाएं सहने देता है?
- भजनकार एक ऐसे चित्र को दिखाता है जिसमें परमेश्वर की संतान शत्रु के सामने निस्सहाय महसूस करती हैं। क्या हम ऐसा कुछ अपने जीवन में देख पाते हैं?
- किस तरह मसीह के कारण पीड़ाएं सहना एक महान संगति का रूप है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह पीड़ाओं में हमें सामर्थ्य देता है।
- यदि आप या कोई और पीड़ाएं सह रहा है, तो आप परमेश्वर से कहें कि वह आप को इस परीक्षा में उसकी महिमा के लिए साम्र्थ्य दे।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको अपनी इच्छानुसार उसके लिए पीड़ाए सहना सिखाए?
- परमेश्वर से कहें कि वह आपकी उस पर विश्वास रखने में मदद करे, जब आपको यह समझ में नहीं आता कि परमेश्वर आपके जीवन में क्या कर रहा है।

44. एक विवाह भजन

पढ़ें भजन संहिता 45:1-17

यह भजन कोरह के पुत्रों के द्वारा गाया गया एक विवाह भजन है। विवाह भजन से बढ़कर, यह भजन एक स्तुति का गीत समझा जाता है जो मसीह के लिए गाया गया जो कि आनेवाला था।

यह भजन लेखक के आनन्द उत्सव को प्रस्तुत करता है जो राजा के लिए बोले जा रहे हैं। जो वचन यहाँ बोले गए वे भजन के वचन भी हो सकते हैं। भजनकार महसूस करता है कि यह आदर की बात है कि वह एक ऐसा भजन लिख सका जो राजा की महिमा के लिए है। भजनकार का हृदय उत्तेजना से भर गया था जब वह इस भजन के वचनों को बोलता है। वह अपनी जीभ की तुलना लेखक के कलम से करता है।

पद 2 में भजनकार अपना आनन्द राजा में बताता है। हमें इस भजन को एक दृष्टान्त के रूप में समझना चाहिए। यह एक सांसारिक कहानी है जिसका अर्थ स्वर्गीय है। हालांकि भजनकार सांसारिक राजा की बात करता है, लेकिन हम उसे प्रभु यीशु मसीह के लिए भी बोलते हुए देख सकते हैं। यह भजन विवाह का वर्णन करता है। जो राजा है वह दूल्हा है। भजनकार एक दुल्हे की सुन्दरता का वर्णन इस भजन में करता है। आइए समझें कि भजनकार दूल्हे के बारे में क्या बताता है।

वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ है

दूल्हा (राजा) सब पुरुषों में श्रेष्ठ है। सासांरिक दृष्टिकोण से एक राजा राज्य के और लोगों से अलग होता था। वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ होता था। यह कैसे यीशु मसीह पर लागू होता है। वह भी सब पुरुषों में श्रेष्ठ था। वह सब तरह से सम्पूर्ण था।

राजा के होंठ अनुग्रह के द्वारा अभिषिक्त किए गए थे। वह रोमाचंक है कि प्रेरित यहून्ना यीशु मसीह के बारे में यहून्ना 1:14 में कहता है:

और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसे पिता के एकलौते की महिमा।

ध्यान दें कि यूहन्ना के शब्द भी भजनकार के समान हैं। राजा ने देह धारण की और मनुष्य बन गया जिसके शब्द पूर्ण रूप से अनुग्रह से भरे थे।

परमेश्वर ने हमेशा के लिए उसे आशीष दी

तीसरी विशेषता एक राजा की यह थी कि वह हमेशा के लिए आशीषित किया गया था। इस पृथ्वी पर अपना कार्य करने के बाद प्रभु यीशु अपने पिता के पास वापस चला गया। अब उसे परमेश्वर के पास हमेशा के लए आदर का स्थान मिला है (देखें मरकुस 16:19)

वह सामर्थी है

भजनकार राजा से कहता है कि अपनी तलवार को कटि पर बांध। ध्यान दें भजनकार वचन 3 में उसे 'महान' कहता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि प्रभु यीशु मसीह महान है। अपने पिता की सारी सामर्थ्य उस में थी। उसने हवा को थमा दिया और बीमारों को चंगा किया। नर्क की दुष्टात्माएं उसके शब्दों से भाग जाती थीं। सारी सामर्थ्य उसको दी गई थी।

उसने ऐश्वर्य और प्रताप को पहना हुआ है

अपने पिता के दाहिने हाथ बैठे हुए यीशु मसीह महिमामय है। उसने ऐश्वर्य और प्रताप को पहना हुआ है। प्रतापी होना एक ऐसी विशेषता है जो किसी भी व्यक्ति को आश्चर्य और भय से झुका सकती है।

वह विजय पर सवार है

वचन 4 में, राजा विजय के प्रताप पर सवार होता है। रोचक बात यह है कि राजा सत्य, नम्रता और धर्म के निमित्त अपने ऐश्वर्य और प्रताप पर सफलता से सवार हुआ ये शब्द स्पष्ट रूप से प्रभु यीशु के जीवन और सेवकाई को प्रस्तुत करते हैं। उसने सत्य, नम्रता और धार्मिकता के द्वारा हमारे बीच में सेवकाई की। उसने सत्य, नम्रता और धार्मिकता पर प्रचार किया। उसने अपने अनुयायियों से सत्य, नम्रता और धार्मिकता पर चलने की मांग की।

उसका दाहिना हाथ भयानक काम दिखाता है

इसमें कोई प्रश्न नहीं है कि प्रभु यीशु मसीह की सेवकाई अद्वितीय कामों को प्रस्तुत करती है। बीमारों को चंगा करने, हवा को डाँटकर थमाने से लेकर मुर्दों को जिलाने तक यीशु मसीह ने अपने जीवन और सेवकाई से अपने पिता के कामों को प्रस्तुत किया है।

देश देश के लोग उसके सामने गिरेंगे

दाऊद की तरह लूका बताता है कि प्रभु मेरे बैरियों को मेरे पांव तले कर देगा (देखें लूका 20:42-43)। प्रभु यीशु अपने शत्रुओं के ऊपर विजयी हो उठे। वचन 5 बताता है, कि प्रभु यीशु ने शत्रुओं को छेद दिया और उन पर विजय पाई। जो स्वर्ग में

और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकेंगे। (फिलिप्पियों 2:10)

उसका सिंहासन सर्वदा बना रहेगा

आखिर केवल एक ही सिंहासन है जो सर्वदा बना रहेगा। कोई भी उस सिंहासन को प्रभु यीशु से नहीं ले सकता। वह राज्य अनन्तकाल तक रहेगा।

तेरा राजदण्ड न्याय का है

ऐसे बहुत से राजा हुए जिन्होंने अन्याय से राज्य किया। प्रभु यीशु मसीह ने न्याय के साथ राज्य किया और वह सदैव न्याय के साथ राज्य करता रहेगा। (लूका 18:7) पाप और दुष्ट को दण्ड मिलेगा। सच्चाई और धार्मिकता राज्य करेगी।

वह धर्म से प्रीति और दुष्टता से बैर रखता है

मसीह वह ही था जो धर्म से प्रीति और दुष्टता से बैर रखता था। प्रभु यीशु के अतिरिक्त किसी ने भी धार्मिकता से ज्यादा प्रीति नहीं रखी। वह पूर्ण धार्मिकता में सेवकाई करने आया। उसके अन्दर कोई पाप न पाया गया। वह सम्पूर्णता और धार्मिकता में जीवन बिताता और राज्य करता है।

उसका हर्ष के तेल से अभिषेक किया गया है

'ख्रीष्ट' का अर्थ है 'अभिषेक किया हुआ'। प्रभु यीशु का अभिषेक पिता द्वारा पुरुषों और स्त्रियों को वापिस पिता तक लाने के लिए किया गया। उसकी सेवकाई कठिन थी परन्तु उसे ग्रहण करने वालों के लिए हर्ष और शान्ति लाती है। लूका बताता है कि मन फिराने वाले पापी के विषय में स्वर्ग में आनन्द होगा (लूका 15:7) प्रभु यीशु की सेवकाई पुरुषों और स्त्रियों को परमेश्वर से फिर जोड़ने की थी। अनगिनित प्राण शैतान से बचाए गए हैं और अनन्त जीवन में भेजे गए है प्रभु यीशु का अभिषेक हर्ष की विजय का अभिषेक था।

तारवाले बाजों का संगीत उसे आनन्दित करता है

प्रभु यीशु अपने लोगों की स्तुति से खुश होते हैं। वह हमारी स्तुति और आदर के योग्य है। उसके कामों और स्वभाव की तुलना में कोई भी परमेश्वर नहीं है। भजन संहिता की पुस्तक प्रभु परमेश्वर की स्तुति और प्रशंसा के लिए है। इस भजन का राजा अपने लोगों की स्तुति से प्रसन्न होता है।

राजा को ऊपर करने के बाद, ध्यान दें, दुल्हन पर। ध्यान दें प्रतिष्ठित स्त्रियां और राजकुमारियां राजा के आदर में खड़ी हैं। प्रतिष्ठित दुल्हन सोने से सजी हुई है। जबकि हम इस पद में अत्यधिक पढ़ना नहीं चाहते तौभी यह हमें इसे याद दिलाने में सहायक हो सकता है कि यीशु का उद्देश्य अपने लिए एक ऐसी दुल्हन को शुद्ध करने का था

जो उसके योग्य थी (तीतुस 2:14) जैसे सोना शुद्ध और पवित्र किया जाता है वैसे ही दुल्हन को सोने से इसलिए सजाया गया ताकि वह मूल्य और शुद्धता का प्रतीक ठहरे।

वचन 10 में, वह दुल्हन को कान लगाकर सुनने के लिए कहता है। उसे अपने लोगों और अपने पिता के घर को भूल जाने के लिए कहा गया ताकि राजा उसके रूप की चाह करे। मुझे नहीं लगता कि हम कभी यह समझ पाएंगे कि प्रभु यीशु मसीह ने अपनी इच्छा से हमारे लिए क्यों मौत सही। हमें, मसीह की दुल्हन को, अपने पिता और माता को छोड़ उस से जुड़ना है। हमें एक नए सम्बन्ध के लिए बुलाया गया है। हालांकि इस सम्बन्ध में आने के लिए हमें अपनी इच्छानुसार सब छोड़ना होगा। उसके पीछे चलने के लिए हमें सब से मुड़ना होगा।

दुल्हन सुन्दर है। लोग उसकी सुंदरता देख सकते हैं। वचन 12 में, सारा की पुत्रियाँ भी भेंट देने के लिए उपस्थिति होंगी। प्रजा के धनवान लोग उसे प्रसन्न करने का यत्न करेंगे। यहां हम देखते हैं कि परमेश्वर के पास अपने लोगों के लिए महिमा का स्थान है। जो संसार के हैं और जो यीशु मसीह से सम्बन्ध रखते हैं उनमें यही अंतर है। परमेश्वर के लोग होने के लिए हमें मसीह की सुन्दरता को अपने में से दिखने देना है।

वचन 14 में, वह बूटेदार वस्त्र पहिने हुए राजा के पास पहुँचाई जाएगी। जो कुमारियां उसकी सहेलियां हैं वे उसके पीछे-पीछे चलती हुई राजा के पास पहुँचाई जाएंगी। वे आनन्दित और मगन होकर पहुँचाई जाएंगी और वे राजा के महल में प्रवेश करेंगी।

इस भजन का आखिर का हिस्सा जोड़े को भविष्य सूचक आशीष देता है। भजनकार भविष्यवाणी करता है कि इनके मिलन से जो पुत्र होंगे वे राजकुमार होंगे। इस दम्पत्ति को पीढ़ियों तक याद किया जाएगा। जाति जाति के लोग सदा तक उनका आदर करते रहेंगे। इस भजन में भजनकार राजा और दुल्हन के सम्बन्ध के बारे में चर्चा करता है। वह मसीह और उसके लोगों के सम्बन्ध में भी चर्चा करता है। ध्यान देने वाली बात विवाह की कल्पना है। कोई भी घनिष्ठ मानव सम्बन्ध नहीं है। परमेश्वर अपने लोगों के साथ गहरे व्यक्तिगत और घनिष्ठ सम्बन्ध में आना चाहता है। उसकी दुल्हन के समान उसके लोगों को भी सब चीज़ों से मुड़ना होगा और अपने पति को ही ढूंढना होगा। परमेश्वर अपने लोगों को सदैव की आशीष देकर खुश होता है।

विचार करने के लिए:

- भजनकार इस भजन की शुरूआत में राजा को स्तुति देता है। क्या आप मसीह की विशिष्टता के कारण उसकी प्रशंसा करते हैं?
- क्या आप कभी मसीह की सुन्दरता को देखने पाएं हैं? हमें उसकी सुन्दरता को देखने से क्या रोकता है?

- प्रभु यीशु एक दुल्हे के रूप में अपनी दुल्हन को कैसे देखना चाहता है? वह आपके बारे में क्या महसूस करता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर की सुन्दरता के लिए उसकी स्तुति करें।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह आप से प्रेम रखता है और आपको अपनी दुल्हन कहता है।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपकी आंखों को खोले ताकि आप वह देख सकें जो आपको उस से दूर ले जाता है।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको परमेश्वर को जानने के हर्ष में सदैव रखने पाए।

45. परमेश्वर हमारा शरण स्थान

पढ़ें भजन संहिता 46:1-11

भजनकार इस भजन में अपने पाठकों को यह बताना चाहता है कि उनके पास डरने का कोई कारण नहीं है क्योंकि परमेश्वर स्वयं उनकी ओर है। वह समझाता है कि उसका परमेश्वर कौन है और उसके साथ सम्बन्ध होना क्या है।

परमेश्वर हमारा शरण स्थान है

भजनकार यह याद दिलाते हुए शुरू करता है कि प्रभु परमेश्वर हमारा शरण स्थान है। शरण स्थान रहने का स्थान है। तूफान के समय, परमेश्वर हमारा रहने का स्थान बनता है। वह हमें हर प्रकार के उस खतरे से बचाएगा जो हमारे विरुद्ध आता है। एक विश्वासी होने की वजह से हमारे जीवन में मुश्किलें आएंगी। जब हम इन मुश्किलों से गुज़रते हैं, हम इस बात से खुश हो सकते हैं कि परमेश्वर हमारे रहने का स्थान बनेगा और हमारी ज़रूरत के समय में हमें बचाएगा।

परमेश्वर हमारा बल है

परमेश्वर सिर्फ तूफानों और परीक्षाओं में ही हमें रहने का स्थान नहीं देता बल्कि वह अपने पास आनेवालों को बल भी देता है। ऐसे समय भी आते हैं जब परमेश्वर हमारे जीवन की मुश्किलों में भी हमारी शरण बनता है। अन्य समयों में वह हमें उन परीक्षाओं में से गुज़रने को कहता है। हम इस बात से संतुष्ट हो सकते हैं कि परमेश्वर का बल हमारे उस संघर्ष के बराबर है जो हम झेलते हैं।

परमेश्वर सदैव सहायता के लिए उपस्थित रहने वाला परमेश्वर है

यह जानना कितना सुहावना है कि परमेश्वर सदैव हमारी सहायता के लिए उपस्थित रहने वाला परमेश्वर है। हम जहाँ कहीं भी हैं, परमेश्वर वहां पर हमारी सहायता करने के लिए उपस्थित होगा। जैसा वह हर समय उपस्थित रहता है, वह हमें कभी नहीं छोड़ता।

इस सोच पर हमारा क्या जवाब होना चाहिए? भजनकार पद 2 में बताता है कि क्योंकि परमेश्वर हमारी शरण, बल और हमारी सहायता के लिए सदैव उपस्थित रहने वाला परमेश्वर है तो हमें किसी बात का भय होना नहीं चाहिए। यदि पृथ्वी उलट जाए तब भी हमें क्या भय? जिसने यह संसार बनाया वह हमारा शरण और बल है।

यदि पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं, तब भी परमेश्वर हमारे साथ सदैव उपस्थित रहने वाला परमेश्वर है। वह हमारी ज़रूरत के समय हमें कभी नहीं त्यागेगा। यदि समुद्र गरजे और फेन उठाए और पहाड़ उसकी बाढ़ से कांप उठे, हमें भयभीत होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है।

भजनकार इस सच्चाई को अपने समय के यरूशलेम शहर पर भी लागू करता है। वह पद 4 में याद दिलाता है कि एक नदी है जो यरूशलेम देश से बहती है। पवित्रशास्त्र में नदी को अक्सर परमेश्वर की आशीष के रूप में सम्बोधित किया जाता है। यरूशलेम बहुतायत से आशीष पाई हुई नगरी थी। यह वही स्थान है जहां परमेश्वर की उपस्थिति निवास करती है। इस देश से, पूरे विश्व के लिए परमेश्वर की ओर से योजनाएं और उद्देश्य निकलते हैं। पद 5 में भजनकार याद दिलाता है कि परमेश्वर की उपस्थिति यरूशलेम नगर में थी। जब तक परमेश्वर की उपस्थिति वहाँ थी, वह नहीं गिरा था। क्या बड़े-बड़े दल भी परमेश्वर विरुद्ध खड़े हो पाने में सक्षम थे जब कि वह यरूशलेम नगर को बचा रहा था?

भजनकार पद 5 में अपने पाठकों को यह याद दिलाता है कि परमेश्वर यरूशलेम के टूटने के दिन भी उसकी सहायता करेगा टूटने के दिन बहुत जल्दी था। भजनकार कहता है पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता के लिए आता है। जाति जाति के लोग झल्ला उठे, राज्य राज्य के लोग डगमगाने लगे, उसकी वाणी सुनकर वह बोल उठा और पृथ्वी पिघल गई। यह वह महान परमेश्वर है जिसने इस्राएल को बचाया। वह उनका गढ़ था। उन्हें भयभीत होने की क्या आवश्यकता थी?

भजनकार अपने लोगों को बुलाकर कहता है, आओ परमेश्वर के महाकर्म देखो (वचन 8)। हमें पृथ्वी पर उजाड़ को देखने के लिए बुलाया गया है जिसे परमेश्वर लेकर आया है। वह पृथ्वी की छोर तक की लड़ाइयों को मिटाता है। वह धनुष को तोड़ता और भाले की दो टुकड़े कर डालता है और रथों को आग में झोंक देता है। उसके उद्देश्य के विरुद्ध कोई राज्य खड़ा नहीं हो सकता। उसकी पुकार पृथ्वी के अन्त तक जाती है कि 'चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ।' उसका नाम जातियों में महान् है। वह पृथ्वी भर में महान है।

वह यह कहता है कि चुप हो जाओ। जब शत्रु हमें सताता और मुश्किलें देता है उसमें चुप होना आसान नहीं होता। जिस चुप रहने की बात भजनकार यहां कर रहा है वह यह कि परमेश्वर पर भरोसा और विश्वास रखकर चुप रहो। हम अपने बल से शत्रु को नहीं हरा सकते। हमारा परमेश्वर हमें बचाने का वायदा करता है। हमारे डरने का कोई कारण नहीं है। हम धीरज से परमेश्वर का इतज़ार कर सकते हैं। हम पूरी तौर से उसमें सुरक्षित हैं। हम अपने होंठों से सिर्फ उसके नाम को ऊँचा उठा सकते हैं जो हमारी सहायता के लिए आता है। परमेश्वर हमारा गढ़ है। हम सुरक्षित और निश्चिंत हैं। हमें अपने मन और हृदय में चुप रहना है। वह हमें हारने नहीं देगा।

विचार करने के लिए:

- आप आज किस प्रकार के संघर्ष का सामना कर रहे हैं? यह भजन उस संघर्ष के बारे में क्या बताता है?
- परमेश्वर सदैव हमारी सहायता करने के लिए उपस्थित रहने का वायदा करता है। इससे आपको आज आपके द्वारा सामना किये जाने वाले संघर्षों के बीच दृढ़ खड़े रहने का क्या आश्वासन मिलता है।
- चुप रहने से क्या तात्पर्य है? क्या आप कह सकते हैं कि आप अपनी वर्तमान परिस्थितियों में चुप हैं?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से कहें कि वह आपके संघर्ष में आपको चुप रहने और विश्वास रखने में सहायता करे।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह आपको परीक्षाओं में सभ्भालता और आशीष देता है।
- अपनी निजी समस्या को आज परमेश्वर के सामने लाएं। उसे परमेश्वर को सोंपें और कहें कि वह आपको चुप रहना सिखाए।

46. समस्त पृथ्वी का राजा

पढ़ें भजन संहिता 47:1-9

भजन 47 इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति का गीत है जिसमें उसे सर्वोच्च राजा कहा गया है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने इस्राएल को विशिष्ट लोगों के रूप में चुना लेकिन फिर भी वह सिर्फ इस्राएल का ही नहीं परन्तु पूरी पृथ्वी का परमेश्वर है। यह भजन धरती के सारे राज्यों को इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति और प्रशंसा करने को कहता है।

भजन 47 शुरू होते ही देश देश के सब लोगों को तालियाँ बजाकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिए जयजयकार करने को कहता है। जब हम ताली बजाते हैं, हम सराहना करते हैं। इसका अर्थ है कि जिसके लिए ताली बज रही हैं वह व्यक्ति आदर के योग्य है। भजनकार देश देश के राज्यों को ताली बजाकर इस्राएल के परमेश्वर का आदर करने के लिए कहता है। इस्राएलियों के लिए यह समझना मुश्किल था कि अन्यजातियां कैसे उनके परमेश्वर को धन्यवाद बलि प्रगट कर सकती हैं। ध्यान दें कि देश देश के सब लोगों को ऊँचे शब्द से परमेश्वर के लिए जयजयकार करने को कहा गया।

यह स्तुति की भावना उत्तेजनापूर्ण है। परमेश्वर की स्तुति करने का कारण यह है कि इस्राएल का परमेश्वर परम- प्रधान परमेश्वर है। इस्राएल के परमेश्वर जैसा कोई परमेश्वर नहीं है। वह कार्यों और स्वभाव दोनों में महान् है। वह सारे देशों में महान राजा हुआ है। वह हमारी स्तुति के योग्य है।

भजनकार परमेश्वर के महान कार्यों के कुछ व्यावहारिक नमूने बताना चाहता है। वह हमें याद दिलाता है कि कैसे उसने देश देश के लोगों को इस्राएल के सम्मुख नीचा किया था। उसके लोगों पर उसकी आशीषें इतनी अधिक थीं कि उसने उन्हें पृथ्वी भर के सबसे शक्तिशाली लोग बना दिया था। अपने परमेश्वर के बल व शक्ति के कारण अन्य राज्य के लोग उनका भय मानते थे।

परमेश्वर ने इस्राएल को विरासत दी। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह याकूब और उसके वंश से प्रीति रखता था। परमेश्वर को अपने लोगों को आशीष देने में आनन्द मिलता है। वह उन्हें बचाने के लिए अपनी सामर्थ्य को हिलाता है। वह शत्रुओं की ताकत को तोड़ता है। उसके और उसके प्रेमी उद्देश्यों के विरुद्ध कोई खड़ा नहीं हो सकता।

भजनकार हमें बताता है कि परमेश्वर जयजयकार सहित नरसिंगे के शब्द के साथ ऊपर गया है। (वचन 5) कुछ टीकाकारों ने इस वचन में यह देखा कि यीशु मसीह का स्वर्ग में उठाया जाना उसकी क्रूस की विजय से हुआ। यह कितना आश्चर्य में डालने वाला है कि यीशु मसीह के उठाए जाने के बारे में भजनकार इतने पहले भविष्यद्वाणी के द्वारा बोला।

सांसारिक दृष्किोण से देखें तो परमेश्वर एक राजा के रूप में युद्ध जीत कर वापस आता हुआ दिखता है। जैसे वह यरूशलेम नगर को उठाया गया, वह अपने लोगों के होंठों से विजय की पुकार को सुनता है। फिर से भजनकार इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करता है, उसके महान् कार्यों और उसकी विजय को याद करते हुए जो वह अपने लोगों को देता है।

प्रभु परमेश्वर सब जातियों पर राज्य करता है। भजनकार वचन 9 में कहता है, धरती के सारे राजा परमेश्वर से ही सम्बन्धित हैं। अर्थात् वे परमेश्वर के प्रति ज़िम्मेदार हैं।

परमेश्वर सबका परमेश्वर है। उसके उद्देश्य इस धरती पर पूरे होते हैं। वह राजाओं को हिलाता है और महान् अगुवों से अपने उद्देश्यों को पूरा करवाता है। कुछ भी उसकी योजनाओं को नष्ट नहीं कर सकता। वह अपनी महिमा और अच्छाई के लिए सभी कार्य करता है। हमें परमेश्वर का कितना धन्यवाद करना चाहिए कि वह सभी चीज़ों को अपने वश में रखता है। यह जानना कितना महत्वपूर्ण है कि आज भी परमेश्वर सब चीज़ों को अपने वश में रखता है। इससे हमें कितना सुख मिलता है। वह हमारी स्तुति और महिमा के कितने अधिक योग्य हैं।

विचार करने के लिए:

- हम इस भजन में पूरे संसार के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के बारे में क्या सीखते हैं? यह कैसे बताता है कि आज भी उसका हृदय इस काम पर लगा है?
- आपके जीवन में परमेश्वर ने क्या आश्चर्य किए हैं?
- इस संसार के निर्णयों पर परमेश्वर की महानता हमें क्या सिखाती है?
- अपने विशिष्ट विशेष संघर्ष में आप इस भजन के द्वारा कैसे व्यावहारिक उत्साह पाते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह इस संसार की बातों में महान है।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने अपने लोगों को विजय देने का वायदा दिया है।
- परमेश्वर को अपना जीवन सौंपें और अपनी सारी उन समस्याओं को भी जिनसे आप लड़ रहे हैं। उसकी स्तुति करें कि वह समस्या से बढ़कर है।

47. पर्वत सिय्योन

पढ़ें भजन संहिता 48:1-14

जिन लोगों के साथ आप काम करते हैं क्या वे आप में परमेश्वर को देख पाते हैं? क्या आपके जीवन से वह परमेश्वर दिखता है जिसकी आप सेवा करते हैं? भजन 47 यरूशलेम नगर को दिखाता है और परमेश्वर की उपस्थिति को जो उसे महान बनाती है।

भजनकार इस्राएल के परमेश्वर को स्तुति देते हुए शुरू करता है। वह अपने पाठकों को स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर एक महान प्रभु है जो स्तुति के योग्य है। इस महान और सामर्थी परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को अपने नगर यरूशलेम पर प्रगट किया जो उसका पवित्र पर्वत है।

यरूशलेम नगर एक पर्वत पर बना सुन्दर नगर है, जिस पर परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को ठहराया। यह महान् नगर इसलिए है क्योंकि परमेश्वर इसके बीच वास करता है। भजनकार आगे बढ़ते हुए कहता है कि यरूशलेम समस्त पृथ्वी के हर्ष का कारण है।

यरूशलेम नगर से परमेश्वर की योजनाओं को पूरे संसार पर खोला जाएगा। मसीह उसकी सड़कों पर चलेगा। यहीं पर वह परमेश्वर के उद्धार की अद्‌भुत योजना के अनुसार दोषी ठहराया जाएगा और क्रूस पर चढ़ाया जाएगा; परमेश्वर के उद्धार की योजना को खोलते हुए इन सड़कों से ही प्रेरित उद्धार के संदेश को धरती की छोर तक पहुँचाएंगे। अनगिनित पुरुष और स्त्री उस परमेश्वर के नगर यरूशलेम आएंगे, जिसने स्वयं को यरूशलेम में प्रकट किया था। परमेश्वर अभी भी अपनी योजना को दूसरों पर प्रगट करना चाहता है। पवित्रशास्त्र हमें बतलाता है कि जब अन्त के दिन आएंगे तब यरूशलेम एक बार फिर परमेश्वर की महान और हर्ष से भरी योजनाओं को दूसरों पर खोलने की मुख्य भूमिका निभाएगा।

पद 2 में, एनआईवी अनुवादित बाइबल में यरूशलेम नगर की तुलना सिय्योन (यरूशलेम का एक क्षेत्र) की ऊँचाई से की गई है। किंग जेम्स वर्ज़न में सिय्योन का 'उत्तरी' अनुवाद किया गया है। इब्रानी शब्द साफाऊन को सिय्योन बोला जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ 'उत्तर' है। इस कारण, भजनकार साधारण शब्दों में यह कह सकता है कि सिय्योन पर्वत उत्तरी क्षेत्र में सबसे सुन्दर और ऊँचा है।

यरूशलेम के गढ़ों में परमेश्वर की उपस्थिति प्रत्यक्ष है। परमेश्वर उसका गढ़ है। अन्य शब्दों में, नगर को बचाने के लिए परमेश्वर की असीम उपस्थिति वहाँ प्रत्यक्ष है।

परमेश्वर उसका रक्षक है। जब राजा लोग यरूशलेम को देखने के लिए आगे बढ़े तब वे उसे देखकर अपने मार्गों पर ही रूक गए। उन्होंने जाना कि वह नगर परमेश्वर के द्वारा बचाया जाता है। उस पर हमला करने के बजाए वे मुड़े और भाग गए। उस नगर में परमेश्वर की उपस्थिति के बीच वे कंपकपाने लगे और उन्हें जच्चा की सी पीड़ाएं होने लगीं। परमेश्वर ने अपने लोगों के शत्रुओं को नष्ट कर दिया। वे तर्शीश के जहाज़ों की तरह डूब गए। तर्शीश अदला बदली का स्थान था। कई जहाज़ हर साल वहां आते। ये देश उन जहाज़ों की तरह थे जो खज़ाने से भरे हुए तर्शीश को जाते थे परन्तु समुद्र की गहराई तक डूब जाते थे और फिर कभी दिखाई नहीं देते थे। परमेश्वर भी उनके साथ ऐसा ही करता है जो यरूशलेम नगर के विरुद्ध खड़े होने की हिम्मत करते हैं। परमेश्वर नगर को बचाता है। देश उसके विरुद्ध शक्तिहीन हैं।

यरूशलेम नगर में, परमेश्वर के मन्दिर में, परमेश्वर के लोग, उसके न मिटने वाले प्रेम पर मनन करते हैं। परमेश्वर ने आपके लिए क्या किया है? क्या उसकी उपस्थिति आपके जीवन में प्रत्यक्ष है? क्या आप अपनी समस्याओं और मुश्किलों में उसकी सामर्थ्य की सच्चाई को जानते हैं? तो फिर आपको ज़रूर उसके सहारे और उपस्थिति के लिए सदैव स्तुति के भाव में रहना चाहिए।

परमेश्वर के मन्दिर में न सिर्फ उस की स्तुति होती है बल्कि उसके नाम को पृथ्वी की छोर तक ऊँचा उठाया जाता है। पृथ्वी पर पुरुष और स्त्री दोनों परमेश्वर के बल और धर्म के कामों को देख चुके हैं। जैसे यरूशलेम नगर परमेश्वर की पवित्रता और सामर्थ्य को दिखाता है, वैसे ही हमारे जीवन से भी उसकी सामर्थ्य दिखाता है, वैसे ही हमारे जीवन से भी उसकी सामर्थ्य, धार्मिकता और प्रेम दिखने चाहिए। जहां कहीं भी हम जाएं हमें परमेश्वर की सत्यता को अपने व्यवहार, शब्दों व कार्यों द्वारा प्रस्तुत करना चाहिए।

ध्यान दें पद 11 में सिय्योन पर्वत पर इसलिए आनन्द नहीं किया कि परमेश्वर ने उसकी दीवारों की रक्षा की बल्कि उसके न्याय के लिए। परमेश्वर ने न्याय और धार्मिकता से अपने लोगों का न्याय किया था। परमेश्वर ने पक्षपात नहीं दिखाया था। उसके लोग न्याय और अच्छे व्यवहार के लिए संतुष्ट थे। उसने छोटे और महान दोनों को समझाया था। सबको न्याय मिला था।

भजनकार अपने पाठकों को सिय्योन के चारों ओर चलने की चुनौती देता है। वे उसके गुम्मटों को गिनने के लिए बुलाए गए हैं। उसकी शहरपनाह पर ध्यान देने और महलों पर दृष्टि रखने के लिए उन्हें कहा गया है जिससे कि वे आने वाली पीढ़ी से उसका वर्णन कर सकें, जहां परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को प्रगट किया था। वह परमेश्वर सदा सर्वदा से यरूशलेम का परमेश्वर है। उसने मृत्यु तक उनकी अगुवाई की थी।

इस भजन को अपने आप से यह प्रश्न करके पढ़ना कि क्या हम इस नगर की तरह परमेश्वर की महिमा को प्रगट कर पा रहे हैं, असम्भव है। क्या हम किसी

अविश्वासी को अपने चर्च और जीवन में आकर झाँकने के लिए कहेंगे और हमारी आगे आने वाली पीढ़ी को बताएंगे कि उन्होंने हमारे अन्दर क्या देखा? क्या संसार हमारे जीवन और कलीसियाओं में परमेश्वर की सामर्थ्य, धार्मिकता और प्रेम को देख सकता है?

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर आपका रक्षक कैसे रहा है? कुछ व्यावहारिक उदाहरणों द्वारा समझाएं कि कैसे परमेश्वर ने आपको सम्भाला है?
- आपके जीवन में परमेश्वर की महिमा का क्या प्रमाण है?
- हमारी आगे आने वाली पीढ़ी हमारे और परमेश्वर के सम्बन्ध के बारे में क्या कहेगी?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से कहें कि वह अपनी उपस्थिति को आपके जीवन में अत्यधिक प्रमाणित करे।
- परमेश्वर से क्षमा मांगें कि आप ने परमेश्वर की महिमा को सदैव उस तरह प्रगट नहीं किया जिस तरह करना चाहिए था।
- परमेश्वर को आपकी रक्षा करने और आपको सहारा देने के लिए धन्यवाद करने को कुछ समय निकालें।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह आपके द्वारा लोगों पर अपने आपको प्रगट करना चाहता है।

48. सामान्य अन्त

पढ़ें भजन संहिता 49:1-20 तक

भजन 49 में, भजनकार धन और सफलता की बात को उजागर करता है। यह भजन दुनिया के लोगों को सम्बोधित करता है। यह उनके लिए है जो ऊँचे पदों पर हैं और जो नीचे पदों पर हैं। यह धनी और निर्धन दोनों के लिए लिखा गया है। सभी को भजनकार को सुनना है क्योंकि उसके शब्द बुद्धि और समझ से भरे हुए हैं।

पद 4 में ध्यान दें कि बुद्धि नीतिवचनों और पहेलियों के संगीत के द्वारा बातें करती है। संगीत के द्वारा शक्तिशाली सच्चाई को बताया जा सकता है। भजनकार यह समझ गया है इसलिए वह बुद्धि की बातें शिक्षा देकर या प्रचार करके नहीं बल्कि संगीत के द्वारा बताना चाहता है।

5-6 में पदों भजनकार एक प्रश्न करता है:

विपत्ति के दिनों में जब मैं अड़ंगा मारनेवालों की बुराईयों से घिरूं तब मैं क्यों डरूँ? जो अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखते और अपने धन की बहुतायत पर फूलते हैं?

यह प्रश्न तर्कसंगत है। इतने वर्षों में, ऐसे बहुत से हुए जिन्होंने दुष्टता का उन लोगों के हाथों अनुभव किया है जो धन और सम्पत्ति पर भरोसा रखते थे। जो अधिकार में थे उन्होंने अपने से नीचे पद वालों से दुर्व्यवहार किया। कई बार निर्धन के बल पर धनी और धनी होता चला गया। अन्याय संसार में फैलता जा रहा है। भजनकार का यह प्रश्न है हम ऐसे लोगों से क्यों डरें या दुखी हों जो अपने संसाधनों को हमारे विरुद्ध प्रयोग करके हमें उत्पीड़ित करते हैं?

इस प्रश्न के उत्तर में भजनकार पद 7 में हमें याद दिलाता है कि कोई भी किसी रीति से किसी को छुड़ा नहीं सकता और अपने जीवन के बदले फिरौती नहीं दे सकता। अन्य शब्दों में, जब परमेश्वर न्याय करने आता है तब इन पुरुष और स्त्रियों को अपने दुष्ट कार्यों का उत्तर देना होगा, तब उनका धन और सम्पत्ति उनके किस काम की होगी। परमेश्वर धन की ओर आकर्षित नहीं होता। इस संसार का सारा धन उसका ही है। वह उन लोगों के प्रति अन्धा या भ्रष्ट नहीं होगा जो निर्धन को तंग करते हैं कि उनके पास धन और प्रभाव है। कितना भी धन एक धनी व्यक्ति को मृत्यु और सड़न से नहीं बचा सकता। ऐसे दिन आंएगे जब यह धन और सम्पत्ति उनके कुछ काम न आएगी। अपनी कब्र से बाहर आने के रास्ते को खरीद नहीं पाएंगे।

बुद्धिमान व्यक्ति भी धनी की तरह ही मृत्यु प्राप्त करता है। मूर्ख और पशु सरीखे

मनुष्य भी दोनों नष्ट हो जाते हैं। निर्धन और धनी दोनों मरते हैं। किसी प्रकार की बुद्धि किसी भी पुरुष और स्त्री को मृत्यु से नहीं बचा सकती। धनी अपनी सम्पत्ति दूसरों के लिए छोड़ जाते हैं। धनी अपना धन अपनी कब्र तक नहीं ले जा पाता। जब मृत्य आती है तब, धनी व्यक्ति अपनी कब्र में पाया जाता है। वे भाग नहीं सकते। पीढ़ियों तक वह कब्र में बन्द आराम करते हैं और भाग नहीं सकते। उनका धन, प्रभाव और ताकत उनकी कब्र में उनके कुछ काम नहीं आती। धनी और निर्धन दोनों का अन्त सामान्य होता है।

पद 13 बताता है कि अपने ऊपर भरोसा करने वालों का भाग्य ऐसा ही होता है। कब्र, अमीर और प्रख्यात लोगों के शरीरों का पर्व मनाती है। उनके शरीर महलों और सम्पत्ति से दूर कब्र में सड़ते रहते हैं।

हमने देखा है कि जिन लोगों ने अपनी सम्पत्ति और धन पर भरोसा किया वे हमेशा के लिए कब्रों में सड़ते रहे। कितना भी धन हो वह उस मृत्यु के समय से उन्हें बचा नहीं सकता। दूसरी तरफ, उसके लिए क्या अंतर है जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है। भजनकार पद 15 में बताता है कि परमेश्वर उसके प्राण को अधोलोक के वश में से छुड़ा लेगा। भजनकार यहां पर कितनी अद्‌भुत आशा हमें देता है। वह जानता है कि जीवन यहीं पर समाप्त नहीं हो जाता। परमेश्वर हमारे प्राणों को कब्रों से बचाएगा। हम कुछ समय के लिए इस धरती पर ज़रूर दुख सहते हैं परन्तु हमारे लिए जीवन का एक अनोखा वायदा है जो हमें सदैव परमेश्वर की उपस्थिति में रखेगा और जहां कोई भी दुष्ट हमें हानि नहीं पहुंचा पाएगा।

भजनकार हमें चीज़ों को अनन्त दृष्टिकोण से देखने के लिए कहता है।

जब कोई धनी हो जाए और उसके धन का वैभव बढ़ जाए, तब तू भय न खाना। क्योंकि वह मर कर कुछ भी साथ न ले जाएगा। न उसका वैभव उसके साथ कब्र में जाएगा। (पद 17)

हालांकि ये लोग इस जीवन में अपने आपको धन्य कहते हैं परन्तु वह दिन आ रहा है जब वे उनके साथ जो उनसे पहले जा चुके हैं कब्र में मिलेंगे। वहां जीवन की रोशनी उनसे हटा ली जाएगी। मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित हों, परन्तु यदि वे समझ नहीं रखते तो वे पशुओं के समान हैं, जो मर मिटते हैं। (पद 20) पशुओं का आगे आने वाले जीवन में कोई भविष्य नहीं है। वे कुछ समय के लिए जीते हैं और नष्ट हो जाते हैं। वे ऐसे जीते हैं जैसे यह जीवन यहीं तक सीमित है।

बुद्धिमान स्त्री और पुरुष अनन्त जीवन की तैयारी करते हैं। उनका केन्द्र इस संसार और सम्पत्ति पर नहीं होता ये सब चीज़ें उनके लिए छोटी जान पड़ती हैं। उनका हर्ष और आनन्द अपने परमेश्वर के साथ रहने में है। निर्धन और धनी का सामान्य अन्त होता है। सब अनन्त जीवन और मृत्यु का सामना करेंगे। प्रश्न यह है कि क्या हम इस संसार के वैभव को हमें उस अनन्त जीवन की आशीष से रोकने की अनुमति देंगे जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति होगी।

विचार करने के लिए:-

- क्यों हमें उन लोगों को देखकर ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए जो धन सम्पत्ति इकट्ठा कर रहे हैं?
- जब मृत्यु और अनन्त जीवन का सामना करने पर हमारा धन किस काम आएगा?
- हमारे प्राणों को अधोलोक में जाने से कौन बचाएगा?
- सांसारिक सम्पत्ति आपके लिए कितना महत्व रखती है? क्या वह आपको परमेश्वर से गहरा संबन्ध बनाए रखने से रोकती है?

प्रार्थना के लिए:-

- क्या आप किसी ऐसे को जानते हैं जिसकी अनन्त जीवन में कोई रुचि नहीं है? परमेश्वर से कहें कि वह उनकी आंखों को खोले।
- परमेश्वर से कहें कि वह इस संसार को अनन्त जीवन के दृष्टिकोण से देखने में आपकी सहायता करे। परमेश्वर से कहें कि वह आपकी संसार के वैभव पर भरोसा न रखने में मदद करे।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने आपको अनन्तजीवन की एक अद्‌भुत आशा दी है। परमेश्वर का धन्यवाद करें कि यह आशा संसार के हर वैभव से बढ़कर है।

49. धन्यवाद बलि

पढ़ें भजन संहिता 50:1-23

आसाप, इस भजन का लेखक, अपने लोगों को इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के साथ उनके सम्बन्ध में चुनौती देता है। जैसे वह यह भजन शुरू करता है, आसाप प्रभु को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रूप में चित्रित करता है जो (जहां से सूरज उगता है) से लेकर पश्चिम (जहां सूरज डूबता है) तक पृथ्वी के लोगों को बुलाता है। पूर्व से पश्चिम तक, सारी पृथ्वी परमेश्वर की सुनती है।

जैसा कि संसार सुनता है, परमेश्वर सिय्योन (यरूशलेम) में अपनी महिमा प्रगट करता है। आसाप सिय्योन को परम सुन्दर बतलाता है। यह इसलिए सुन्दर है क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति यहां चमकती है (वचन 2)।

ध्यान दें वचन 3 में परमेश्वर कैसे अपने लोगों से बात करता है। वह धधकती आग और बड़ी आँधी के समान आता है। वह अपनी प्रजा का न्याय करने के लिए ऊपर के आकाश पृथ्वी पर आता है। यह एक गंभीर सभा है। परमेश्वर अपनी प्रजा का न्याय करता है।

परमेश्वर अपने लोगों के बलिदानों और होमबलियों पर दोष नहीं लगाता (वचन 8)। परमेश्वर कहता है, इस तरह के बलिदान उसके पास पहले से ही थे। इस्राएल इस तरह के होम बलि और बलिदान परमेश्वर के पास विश्वासयोग्यता से लाया करता था।

समस्या बलिदानों में नहीं थी। परमेश्वर को न तो बैल और न बकरे चाहिए (वचन 9) परमेश्वर वचन 9-12 में स्मरण दिलाता है कि क्योंकि वन के सारे जीवन-जन्तु और हज़ारों पहाड़ों के जानवर उसके ही हैं। पहाड़ों के सब पक्षियों को वह जानता है और मैदान पर चलने फिरनेवाले जानवर उसके ही हैं। यदि वह भूखा होता, तो वह किसी से न कहता, क्योंकि जगत और जो कुछ उसमें हैं, वह उसका ही है (वचन 12)।

परमेश्वर वचन 13 में यह भी स्मरण दिलाता है कि वह न तो बैल का मांस खाता है और न बकरों का लहू पीता है। परमेश्वर को अपने लिए बलिदान की कोई आवश्यकता नहीं है। यह बलिदान और भेंटें परमेश्वर के लोगों की थीं जिन्होंने पाप किया था। परमेश्वर यह नहीं कहता कि भेंट और बलिदान बन्द कर दिए जाएं। ये बलिदान यीशु मसीह की मृत्यु तक चलते रहे। वास्तव में परमेश्वर वचन 14 में अपने लोगों से कहता है कि अपने बलिदान चढ़ाते रहो। वह अपने लोगों से बलिदान चढ़ाने

और मन्नतें पूरी करने के लिए भी कहता है, वह उन सब को उत्तर देगा जब वे पुकारेंगे (चन 15)। ध्यान दें बलिदान लाना और मन्नतें पूरी करने में क्या सम्बन्ध है। उनकी यह वचन बद्धता थी कि वह उनका परमेश्वर होगा और उन्हें उसकी सेवा और आदर करना है। मन्नतें पूरी करने से अभिप्राय परमेश्वर के साथ ईमानदारी से चलने से है।

परमेश्वर उन लोगों के विरुद्ध है जिन्होंने उसकी वाचाओं से घृणा की। उन्होंने बलिदान तो चढ़ाए परन्तु व्यवस्था की वचाओं को पूरा नहीं किया। सुनें, परमेश्वर उन्हें वचन 16-17 में क्या कहता है।

तुझे मेरी विधियों को वर्णन करने से क्या काम? तू मेरी वाचा की चर्चा क्यों करता है? तू तो शिक्षा से बैर रखता और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है।

परमेश्वर के लोग धार्मिक थे परन्तु पवित्र नहीं। उन्होंने धार्मिक प्रथाएं तो कीं परन्तु शुद्ध हृदय से नहीं।

परमेश्वर के लोगों ने पवित्रशास्त्र के भाव को बताया परन्तु उनमें उसकी आज्ञा मानने की कोई मनसा नहीं थी। उन्होंने परमेश्वर के वचन को ज़मीन पर फेंका और बाद में वह कूड़े का टुकड़ा बन गया (वचन 17)।

वचन 18 में, परमेश्वर उनकी निन्दा करते हुए कहता है कि तू ने चोर को देखा, तब उसकी संगति से प्रसन्न हुआ और परस्त्रीगामियों के साथ साथ भागी हुआ। तूने अपना मुँह बुराई करने के लिए खोला और तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है (वचन 19)। तू बैठा हुआ अपने भाई बहनों के विरुद्ध बोलता है। तू अपने सगे भाई की चुगली खाता है, अपने परिवार या माता-पिता के प्रति कोई आदर न दिखाते हुए। (वचन 20)।

परमेश्वर अपने अनुग्रह और दया में चुप रहा। उन पर हमला करने के बजाय, उसने धीरज और उदारता दिखाई। उसने उन्हें पश्चात्ताप करने का मौका दिया। लेकिन उन्होंने इसका यह मतलब निकाला कि परमेश्वर को इस दुष्टता से कोई समस्या नहीं है। परमेश्वर उन्हें वचन 21 में स्मरण कराता है कि हालांकि वे दिन आएंगे जब वह उनके मुख को फाड़ डालेगा। वह उनके कार्यों को देख रहा है, वह अन्धा नहीं है।

परमेश्वर अपनी बात को वचन 22 में स्पष्ट करता है।

हे परमेश्वर को भूलने वालो यह बात भली भांति समझ लो, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें फाड़ डालूँ और कोई छुड़ाने वाला न हो।

आप इससे स्पष्ट नहीं पा सकते। परमेश्वर क्रोधित है, इसलिए नहीं कि उसके लोग बलिदान नहीं चढ़ा रहे। वे बलिदान तो चढ़ा रहे थे, परन्तु उन्होंने उसके नियमों से घृणा की और वही किया जो वे करना चाहते थे।

भजनकार वचन 23 में अपने शब्दों को बरकरार रखता है:

धन्यवाद के बलिदान का चढ़ानेवाला मेरी महिमा करता है और जो अपना चरित्र उत्तम रखता है उसको मैं परमेश्वर का किया हुआ उद्धार दिखाऊँगा।

परमेश्वर अपने लोगों से कहता है कि यदि तुम धन्यवाद बलि चढ़ाओगे, तब वह उनका तक पहुंचेगा और उनको छुड़ा लेगा। निस्संदेह इस संदर्भ के अनुसार यह बलिदान भेंट पवित्र हृदय से आने चाहिए जो परमेश्वर को ढूढ़ते हों। परमेश्वर यहाँ पश्चात्ताप के लिए बुला रहा है। वह अपने लोगों को मन फिराने के लिए कह रहा है और उसके मार्गों और उसमें आनन्दित रहने को कह रहा है। वह ऐसे लोगों को बुला रहा है जो परमेश्वर को अपने जीवन और बलिदानों से आभार प्रगट कर सकें।

भजनकार हमें हमारे परमेश्वर के साथ सम्बन्ध को फिर से समझने के लिए कहता है। क्या इसमें केवल धार्मिक क्रियाएं आती हैं? जो विश्वास हम प्रगट करते हैं क्या वह सच्चा है? क्या हम परमेश्वर में आनन्दित रहते हैं और उसे धन्यवाद, स्तुति और आभार प्रगट करते हैं? परमेश्वर ऐसे विश्वास की मांग करता है जो बाहरी धार्मिक क्रियाओं से गहरा हो। वह ऐसे विश्वास की ओर देख रहा है जो हृदय से आता है और उस में प्रसन्न रहता है। ऐसे विश्वास को आशीष देने में परमेश्वर आनन्दित होता है।

विचार करने के लिए:-

- यह संदर्भ हमें हमारे हृदय के व्यवहार की महत्वत्ता के बारे में क्या बतलाता है?
- पाखण्ड हमें आराधना करने से कैसे रोकता है?
- परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध में धन्यवाद और स्तुति की क्या भूमिका है?
- बाहरी धार्मिक क्रियाओं और सच्ची धन्यवाद बलि और परमेश्वर के प्रेम में क्या अंतर है?

प्रार्थना के लिए:

- आपको आज किस बात के लिए धन्यवादी होना चाहिए? कुछ समय इन बातों के लिए धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको स्तुति और धन्यवाद करने के लिए और महान् हृदय दे।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको गहरा विश्वास दे जो बाहरी क्रियाओं से बढ़कर हो, जो परमेश्वर के प्रेम, आज्ञाओं, आनन्द और मार्गों में उन्नति करे।

50. मुझे शुद्ध कर

पढ़ें भजन संहिता 51:1-19

यह भजन दाऊद ने तब लिखा जब उसने बेतशेबा के साथ व्यभिचार किया था। नातान नबी दाऊद के पास गया ताकि यह बता सके कि परमेश्वर दाऊद के पाप से अप्रसन्न है। भजन 51 पाप क्षमा का भजन है। यह भजन हमें दाऊद की मानवीय झलक देता है परन्तु वह परमेश्वर के लिए घनिष्ठता का हृदय भी रखता था।

दाऊद इस भजन का आरम्भ परमेश्वर से दया की मांग करते हुए करता है। उसने सिर्फ बेतशेबा के साथ व्यभिचार ही नहीं किया बल्कि उसने इसको छिपाने के लिए उसके पति की हत्या भी की। हम यह कहानी 2शमूएल 11 में पढ़ते हैं। ध्यान दें, दाऊद कैसे परमेश्वर की दया की खोज कर रहा है। दाऊद परमेश्वर के पास सिर्फ उसकी दया के द्वारा आ सकता है। दाऊद जानता था कि वह दोषी है, लेकिन फिर भी परमेश्वर का प्रेम न मिटनेवाला प्रेम है। परमेश्वर इस पाप की उपेक्षा करेगा परन्तु वह उसे अपने सामने से हटाएगा भी नहीं। हमें परमेश्वर का कितना अधिक धन्यवाद करना चाहिए कि वह करुणामय और दयालु है।

वचन 1 और 2 में ध्यान दें, तीन शब्दों का इस्तेमाल पाप के लिए किया गया है। वचन 1 में, दाऊद कहता है कि मेरे अपराधों को मिटा दे। किसी बात का उल्लघंन करना वर्जित क्षेत्र में प्रवेश करना है। यही दाऊद ने भी किया। उसने किसी और पुरुष की स्त्री को ले लिया। वह एक वर्जित क्षेत्र थी। लेकिन फिर भी दाऊद उसे लेने से न रुका। मिटाने का अर्थ पोंछ डालना, नष्ट करना और स्मरण शक्ति से मिटा देना है। दाऊद विश्वास करता है कि परमेश्वर अपनी सूची में से इस अपराध को पोंछ डालेगा।

वचन 2 में, दाऊद ने एक शब्द इस्तेमाल किया 'अधर्म'। इस शब्द अधर्म को कुटिल, घुमावदार, भ्रष्ट और विकृत में वर्णित किया जा सकता है। दाऊद न सिर्फ वर्जित क्षेत्र का उल्लंघन करने का दोषी था बल्कि वह इसलिए भी दोषी था कि जिस मार्ग पर चलने के लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया था वह वहां से भटक गया। उसने बेतशेबा के पति को मार कर अपने पाप को छिपाने के लिए सच्चाई को मोड़-तोड़ दिया था। दाऊद परमेश्वर से अपने अधर्म को धोने के लिए कहता है। धोने का अर्थ गन्दगी और मैल दूर करने से है। उन दिनों में जब कोई भी व्यक्ति अपने गन्दे वस्त्र धोता था तो वह पानी में उसे डुबा कर रखता था, फिर मोड़ता था जब तक कि उसमें से गन्दगी न निकल जाए। अपने हृदय में देखने पर दाऊद को अपने अन्दर घुमावदार और विकृत झूठ दिखते हैं जो उसने बोले। वह परमेश्वर को कहता है कि उन झूठ को

मेरे हृदय में से मोड़ तोड़ कर निकाल दे, जब तक कि वह गन्दगी न हटे। यह आसान प्रक्रिया नहीं है। परन्तु यह ज़रूरी है।

अन्ततः वचन 2 में दाऊद कहता है कि मुझे मेरे पापों से धो दे। पाप के लिए शब्द निशाने से चूकने का भाव है। धनुर्धर अपने निशाने की ओर देखकर अपने निशाने से चूक जाता है, दाऊद भी अपने स्तर से नीचे गिर गया था जो परमेश्वर ने उसके लिए तैयार किया था। यहां, दाऊद कहता है कि मुझे इन पापों से शुद्ध कर दे। शुद्ध शब्द का अर्थ धो डालने और स्वच्छीकरण करने से है। दाऊद शुद्ध होना चाहता था क्योंकि वह परमेश्वर की धार्मिकता के स्तर से नीचे गिर कर दोषी बन गया था।

दाऊद वचन 3 में अपने पाठकों को स्मरण दिलाता है कि वह अपने अपराधों को जानता है और उसका पाप निरंतर उसकी दृष्टि में रहता है। अन्य शब्दों में, वह दिन प्रतिदिन अपने दोष की सच्चाई में ही जीवन व्यतीत कर रहा है। जो उसने किया वह उसके साथ चिपका हुआ है। वह अपने दोष में जी रहा है। उसके हृदय में युद्ध चल रहा है। उसने बेतशेबा के साथ व्यभिचार किया और उसके पति की हत्या की। परमेश्वर उसके हृदय में शान्ति को नहीं आने दे रहा। दाऊद वह नहीं बदल सकता जो हो गया, परन्तु उसके हृदय को तब तक शान्ति नहीं मिलेगी, जब तक वह इस मुद्दे को परमेश्वर के सामने हल नहीं कर लेता। उसका पाप परमेश्वर के विरोध में था। जो परमेश्वर ने नातान नबी के द्वारा कहलवाया वह सही था। उसने पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध अपराध किया और उसकी आज्ञाओं का निरादर किया। परमेश्वर उसके पाप के बदले उसका न्याय करने को सही था।

वचन 5 में, दाऊद यह समझ पाता है कि बेतशेबा के साथ उसका पाप उसकी गहरी लालसा का परिणाम था। वह अपनी माता के गर्भ से ही पापी पैदा हुआ था; उसके जीवन के आरम्भ के दिनों से ही। दाऊद का पाप फैलता गया। उसका पाप बेतशेबा से शुरू नहीं हुआ, दाऊद जन्म से ही पापी था। बेतशेबा के साथ उसके पाप ने उसे उससे भी बढ़कर उसके द्वारा किए गए पापों को स्मरण कराया। जो पाप दाऊद ने यहाँ इस भजन में अंगीकार किया है यह सिर्फ एक लक्षण है कि उसने अपने जीवन में इस से भी महान समस्याएं खड़ी की हैं।

अपना पाप स्वीकार करते हुए, दाऊद परमेश्वर को पुनःस्थापन के लिए खोज रहा है। दाऊद वचन 6 में कहता है कि परमेश्वर हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है। यह परमेश्वर ही था जिसने उसको चलना सिखाया। परमेश्वर बाहरी अंगीकार में रुचि नहीं रखता, यदि वह दाऊद के हृदय से नहीं आए। इस कारण दाऊद परमेश्वर से उसे जूफा से शुद्ध करने को कहता है। जूफा एक ऐसा पौधा है जो मन्दिर की सेवा में शुद्ध करने के लिए इस्तेमाल होता था। उसे लहू में डुबोकर उस पर छिड़का जाता था जिसे शुद्ध होने की आवश्यकता होती थी।

दाऊद जानता था कि परमेश्वर उसे शुद्ध कर सकता है ताकि वह हिम के समान श्वेत हो जाए। हिम की तरह श्वेत होने के लिए उसे शुद्ध और बेदाग होना होगा। दाऊद

को विश्वास है कि परमेश्वर को उसे पूरी रीति से स्वच्छ और दोषरहित बनाने की क्षमता है। वह विश्वास करता है कि परमेश्वर उसे शुद्ध करके क्षमा कर देगा, उस सीमा तक जहां पर कोई दोषी नहीं होता ताकि वह दुबारा से निर्दोष ठहरे। यह परमेश्वर की शुद्धता की सामर्थ्य है। वह हर पाप का धब्बा साफ कर देता है ताकि हम दुबारा से दोषी न ठहरें। प्रभु यीशु के क्रूस की सामर्थ्य उस हर एक व्यक्ति के लिए ऐसा करती है, जो भी उसके पास आता है।

दाऊद के पाप का उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वचन 8 में, हम समझते हैं कि उसका आनन्द चला गया था। उसने परमेश्वर से कहा कि वह उस आनन्द को फिर से ला दे। उसके पापों का भार बहुत भारी था और दाऊद को लगता था कि परमेश्वर ने उसकी हड्डियाँ तोड़ डाली हैं। वह परमेश्वर से कहता है कि वह उन हड्डियाँ को फिर से आनन्द मनाने दे।

दाऊद जानता था कि परमेश्वर उसके पाप को नहीं देख सकता वह वचन 9 में कहता है अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले और मेरे सारे अधर्म के कामों को मिटा दे। दाऊद सिर्फ यह नहीं चाहता कि उसका पाप दूर हो जाए बल्कि वह यह भी चाहता है कि परमेश्वर उसे एक नया हृदय और आत्मा दे। दाऊद सिर्फ अपने पाप को हटाने के लिए नहीं कहता बल्कि अपने हृदय को शुद्ध करने के लिए भी कहता है ताकि फिर से वह उन परीक्षाओं में न फंसे। वह परमेश्वर से उदार आत्मा मांगता है। अर्थात् एक ऐसा हृदय जो ईमानदार और सच्चा रहे चाहे उसके मार्गों में कोई भी आकर्षण आए।

दाऊद का पाप उसे परमेश्वर को उपस्थिति से दूर ले गया। वह परमेश्वर से फिर से अपनी उपस्थिति लाने को कहता है। वह परमेश्वर से कहता है कि अपनी उपस्थिति को मुझसे दूर न कर।

परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में हर्ष होना महत्वपूर्ण है। दाऊद एक बार फिर से उस हर्ष को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के सम्मुख रोता है। ध्यान दें वचन 12 में वह परमेश्वर से उदार आत्मा मांगता है। वह जानता था, एक पापी की नाई, उसका भटक जाना स्वाभाविक था। दाऊद परमेश्वर से ऐसा हृदय और मन मांगता है जो सिर्फ परमेश्वर की ही चाहत रखे। कितनी बार हम अपने हृदय के व्यवहार से मुठभेड़ करते हैं? दाऊद को अपने हृदय और स्वभाव के पूर्ण बदलाव की जरूरत महसूस हुई।

ध्यान दें, दाऊद कहता है, मैं अपराधियों को तेरा मार्ग सिखाऊँगा। वह दूसरों को उनके पाप के विरुद्ध चिताकर उन्हें परमेश्वर के पास लाने को समर्पित था। दाऊद ने यह अनुभव किया था कि कैसे पाप परमेश्वर से हमारे अलगाव का कारण बनता है। दाऊद किसी और को इस फंदे में नहीं फंसने देना चाहता था और वह उन लोगों को पाप के खतरों के बारे में चुनौती देने के लिए स्वयं को समर्पित करता है। यह भजन परमेश्वर के प्रति उस वचनबद्धता का एक भाग भी हो सकता है। इस भजन में दाऊद अपने पाप का सभाओं में अंगीकार करता है और अपने पाप के कारण हुए दुख को भी बांटता है। यह उनके लिए एक चेतावनी के रूप में है जो अपने आपको प्रतिदिन समर्पित करते हैं।

ध्यान दें कैसे दाऊद ने परमेश्वर से बचाने की याचना की ताकि जो खून उसके हाथों में था वह धुल जाए। उसने अपने आप को उसकी स्तुति गाने के लिए समर्पित किया जिसने उसे छुड़ा लिया था।

वचन 16 में दाऊद यह समझा कि परमेश्वर बलिदान से प्रसन्न नहीं होता। उसको पशुओं की कोई ज़रूरत नहीं है। उसके पास भी पशु, जंगल, पर्वत और स्थान हैं। परमेश्वर को टूटा मन चाहिए। वही उसके योग्य बलिदान है। वह टूटे मन और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता है।

दाऊद आखिर में परमेश्वर से कहता है कि सिय्योन की भलाई कर ताकि प्रभु में आनंदित रहनेवाले फिर से अपनी भेंटें और बलिदान उसे चढ़ा सकें। यह दिखाता है कि दाऊद का पाप उसे कुछ राज्यों की समृद्धि से दूर ले गया। पाप परमेश्वर की आशीष को रोकता है। यह सिर्फ हमें प्रभावित ही नहीं करता परन्तु जो हमारे आस-पास होते हैं उन्हें भी प्रभावित करता है। दाऊद जान गया था कि वह आशीष फिर से प्राप्त हो सकती है, उसे पापों को स्वीकार करने की ज़रूरत है और शुद्ध होने की आवश्यकता है। यह सब इसलिए सम्भव है क्योंकि परमेश्वर दयालु और करुणानिधान परमेश्वर है जो उनको शुद्ध करने में आनन्द लेता है जो उसके पास सच्चे हृदय से आते हैं।

विचार करने के लिए:

- हमें इस भाजन में पाप के लिए दिए गए अलग-अलग शब्दों को समझने की क्या ज़रूरत है?
- हमारे लिए अपने पापों का अंगीकार कर उन्हीं पापों को करने की चाह करना क्या संभव है? अपने पाप का अंगीकार करने और अपने हृदय को उन पापों से धोने के बीच क्या अन्तर है? हम इस भजन में परमेश्वर की करुणा के बारे में क्या सीखते हैं?
- पश्चात्ताप करने के लिए हृदय की ईमानदारी कितनी महत्वपूर्ण है?
- आपके जीवन में विशिष्ट प्रलोभन क्या हैं?

प्रार्थना के लिए:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह करुणामयी परमेश्वर है जो हमारे पाप को क्षमा करने के लिए तैयार रहता है।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि वह करुणामयी परमेश्वर है जो हमारे पाप को क्षमा करने के लिए तैयार रहता है।
- परमेश्वर से उस पाप को प्रगट करने को कहें जो उसके साथ गहरी घनिष्टता बनाने के बाधक है।
- परमेश्वर से एक नया हृदय मांगे। उससे पाप की इच्छा को हटाने को कहें।

51 दोएग एदोमी

पढ़ें भजन संहिता 52:1-9

भजन 52 दाऊद के शाऊल से भागने के संदर्भ में है। इस भजन की पृष्ठभूमि को शमूएल की पुस्तक में देखा जा सकता है। परिचय हमें बताता है कि इसे उस समय लिखा गया था जब दोएग अदोमी ने शाऊल को बताया कि दाऊद अहीमेलेक से मिलने गया है। आइये कुछ समय के लिए इस कहानी को देखें।

दाऊद शाऊल से भाग रहा था जो उसे मार डालना चाहता था। शाऊल दाऊद से ईर्ष्या करता था और यह मानता था कि वह उसके परिवार के देश में शासन करने में खतरा था। शाऊल से भागकर दाऊद अीमेलेका से मिलने गया। इस घटना का वर्णन शमूएल 21-22 में है याजक अीमेलेक ने दाऊद को यात्रा की कुछ सामग्री के साथ-साथ उसे गोलियत की तलवार भी दी। दाऊद के अहीमेलेक से बात करने के समय में दोएग अदोमी भी वहां था। याजक ने जो दाऊद के लिए किया था उसे उसने देखा और पाप विश्वासी के जीवन में क्या करता है? दाऊद के जीवन में इसका क्या प्रभाव पड़ा कि अहीमेलेक और याजकों का मरवाने का आदेश दिया है। शाऊल की सेना के सैनिक जो परमेश्वर के न्याय का भय मानते थे, उन्होंने शाऊल का आदेश मानने से इंकार कर दिया। तब शाऊल दोएग अदोमी से याजकों को मारने के लिए कहता है। उस दिन दोएग अदोमी ने परमेश्वर के 85 दासों को मार डाला। जब दाऊद ने यह सुना तो उसका हृदय बहुत दुखी हुआ। दाऊद इस भजन में यही बताता है कि शाऊल और दोएग के ऐसा किये जाने पर उसने क्या महसूस किया।

ध्यान दें इस भजन के पहले भाग में दाऊद शाऊल और दोएग की दुष्टता का वर्णन करता है। दाऊद पूछता है, ''हे वीर, तू बुराई करने पर क्यों घमण्ड करता है?'' (वचन 1) शाऊल और उसके दास दोएग को अपने किए हुए काम पर कोई शर्म नहीं है। बल्कि वे अपनी हत्या की इस योजना पर घमण्ड करते हैं। उन्होंने परमेश्वर के 85 दासों को मार डाला और वह यह कहानी सुनाने के लिए जीवित थे। दाऊद उन दोनों दुष्टों के घमण्ड से प्रसन्न नहीं था। वे परमेश्वर की दृष्टि में घृणित ठहरे हैं।

शाऊल और दोएग जैसे लोग अपने बारे में बहुत कुछ सोचते हैं। उनकी जीभ केवल दुष्टता गढ़ती है। सान भरे हुए उस्तरे के समान वह छल का काम करती है। (वचन 2)

इन लोगों ने छल किया (पद 3)। इन्होंने बुराई से प्रेम और भलाई से घृणा की। इन लोगों के वचनों पर भरोसा न हीं किया जा सकता।

इस संदर्भ में, हम दाऊद की कुण्ठा को महसूस कर सकते हैं। 85 परमेश्वर के दास मारे गए। शाऊल अब दाऊद के पीछे पड़ा है कि उसका जीवन भी नष्ट कर दे, परमेश्वर ने अपने याजकों की हत्या क्यों होने दी? दाऊद के मन में इस समय क्या चल रहा था? यदि परमेश्वर शाऊल को अपने याजकों को मारने दे सकता है, तो क्या वह उन्हें दाऊद को भी मारने देगा? दाऊद का विश्वास अपने जीवन के इस समय में भी नहीं हिला और उसने सन्देह नहीं किया।

हालांकि दाऊद का विश्वास खींचा गया, लेकिन यह टूटा नहीं। वचन 5 में, दाऊद अपने को उस परमेश्वर को स्मरण कराता है जो न्याय करने वाला और पवित्र है, जिसकी वह सेवा करता है। वचन 5 में दाऊद परमेश्वर की पवित्रता की सच्चाई से जुड़ा रहा। वह जानता था कि अन्याय और दुष्टता ज्यादा समय के लिए नहीं रह सकते। शाऊल ने याज़कों को मारा था, परन्तु परमेश्वर स्वयं अपने समय में उसे नीचा करेगा। हालांकि दुष्ट कुछ देर के लिए रह सकता है, परन्तु परमेश्वर 'पवित्र परमेश्वर' एक दिन उसे अनन्त रूप से नष्ट कर देगा। ऐसे दिन आएंगे जब परमेश्वर उन्हें सदा के लिए नष्ट कर देगा और उनके डेरों से उनको निकाल डालेगा। जब पौधा एक बार काट डाला जाता है वह फिर कभी फलता नहीं है। इन परीक्षा के समयों में दाऊद परमेश्वर की सच्चाई से जुड़ा रहता है। परमेश्वर पवित्र और महान परमेश्वर है। दुष्ट एक दिन अवश्य नष्ट हो जाएगा।

हमारे दिनों में हम दुष्ट को हमारे चारों और देखते हैं। हम अपने जीवन में बहुत सी दुखद घटनाओं को सुनते हैं। प्राकृतिक दुर्घटनाएं, युद्ध और जुर्म ने हमें घेरा हुआ है। हमारा जवाब क्या होना चाहिए? दाऊद ने जो देखा उसके लिए वह रोया लेकिन उसने सच्चाई को सदैव अपने साथ रखा। उसके खींचे जाने के समय पर उसने अपनी आँखें परमेश्वर की ओर रखीं। परमेश्वर कभी हारता नहीं है। चाहे दुष्ट हमें घेरे वह ज्यादा समय के लिए नहीं रह सकता। आखिर में, परमेश्वर अपनी पवित्र उपस्थिति और न्याय प्रगट करेगा।

इस भजन के अन्तिम भाग में दाऊद परमेश्वर की विजय पर ध्यान लगाता है। वह अन्त के कुछ वचनों में बताता है कि संकट के समय में धर्मी व्यक्ति का जवाब क्या होना चाहिए।

धर्मी व्यक्ति देखेंगे और डरेंगे (वचन 6)

दाऊद बताता है कि दुष्ट को अपने चारों ओर देखकर धर्मी डरता है। दाऊद यहां उस भय की बात नहीं कर रहा है कि जब हम कुछ देखकर डर जाते हैं। यहाँ जिस भय की बात हो रही है वह है परमेश्वर का भय जब दुष्ट घेरता है, तब धर्मी अपनी आंखें परमेश्वर की ओर लगाएगा। वह विश्वास करेगा और उसके नाम का आदर करेगा। वह अपनी आंखें परमेश्वर की तरफ लगाए रहेगा और दुष्ट को अपने चारों ओर भटकने नहीं देगा। वह परमेश्वर के नाम का आदर और महिमा करते हुए सच्चाई में चलता रहेगा और परमेश्वर के उद्देश्यों पर विश्वास करेगा।

धर्मी हंसेंगे (वचन 6)

दाऊद कहता है कि धर्मी व्यक्ति अपने चारों ओर देखेगा कि क्या हो रहा है और हंसेगा। परमेश्वर के विरुद्ध दुष्टता और हठीलापन हँसी की बात नहीं है। हमें इस हँसी को हँसी की तरह नहीं लेना चाहिए जब हमारे पास कुछ हास्य सम्बन्धित अनुभव करने के लिए आता है। दाऊद उस हंसी के बारे में बोल रहा है कि जब दुष्ट स्त्री और पुरुष परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करते हैं और यह सोचते हैं कि उन्हें कभी परखा नहीं जाएगा। धर्मी व्यक्ति दुष्ट की मूर्खता को जानता है। धर्मी व्यक्ति जानता है कि न्याय का दिन आनेवाला है। धर्मी इसलिए हँसता है क्योंकि वह जानता है कि जय परमेश्वर की ओर से ही आती है।

ध्यान दें कि वचन 7 में धर्मी व्यक्ति हास्य के बारे में क्या कहता है:

देखो, यह वही पुरुष है जिसने परमेश्वर को अपनी शरण नहीं माना। परन्तु अपने धन की बहुतायत पर भरोसा किया है और दूसरों का नाश करते हुए अपने आप को दुष्टता में दृढ़ करता रहा। वह मूर्खता की ऊँचाई है जब मनुष्य यह मानता है कि वह एकमात्र मनुष्य होते हुए महान परमेश्वर के उद्देश्य के ऊपर विजय पा सकता है।

धर्मी जैतून के वृक्ष के समान होंगे (वचन 8)

वचन 8 में, दाऊद बताता है कि धर्मी व्यक्ति परमेश्वर के भवन में हरे जैतून के वृक्ष के समान है। दुष्ट हमें घेरता है। परमेश्वर के लोग भयंकर विरोध में भी फलते-फूलते हैं। परमेश्वर के लोग उसकी उपस्थिति में सुरक्षित हैं। परमेश्वर की इच्छा में रहना ही सबसे सुरक्षित जगह है। इसका यह अर्थ नहीं है कि दुष्ट हमें नुकसान नहीं पहुंचा सकता। उन्होंने यीशु मसीह को भी नुकसान पहुँचाया और कुछ लोग हमारे जीवन के पीछे भी पड़े रहते हैं। कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं है। चाहे हमारे साथ जो कुछ भी हो, वह परमेश्वर की इच्छा के बिना नहीं होगा। ध्यान दें वचन 8 में जैतून का वृक्ष परमेश्वर की उपस्थिति में फलता-फूलता है। यह एक धर्मी व्यक्ति का संकट के समय का वर्णन है। उनकी आँखें परमेश्वर पर लगी हैं। वे परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हैं और फलते-फूलते हैं।

धर्मी परमेश्वर के अविश्वसनीय प्रेम पर विश्वास रखेंगे

दाऊद के जीवन के इस समय में वह शाऊल से भाग रहा था। परमेश्वर के 85 लोग घात किए गए थे। दाऊद इस परिस्थिति में क्या कर सकता था? दाऊद बताता है इन समयों में हमें परमेश्वर के अविश्वसनीय प्रेम पर भरोसा रखना चाहिए। वह अपने लोगों से प्रेम करता है। उसकी रुचि उनके हृदयों में होती है, फिर चारों ओर कुछ भी होता रहे। उसका प्रेम उन्हें सुरक्षित रखेगा और सम्भालेगा। ध्यान दें, दाऊद कभी न कम होने वाले प्रेम की बात कर रहा है। हम संसार की मुश्किलों और उलझनों का

सामना कर सकते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर का प्रेम कभी नहीं बदलेगा। हम उसके प्रेम में आराम पा सकते हैं, जब कुछ भी समझ नहीं आ रहा हो।

धर्मी स्तुति करेंगे (वचन 9)

वचन 9 में, दाऊद कहता है कि मुश्किलों के समयों में धर्मी व्यक्ति सदैव परमेश्वर ने जो काम किए हैं उनकी स्तुति करता रहेगा। दाऊद कैसे परमेश्वर के 85 दासों की हत्या होने के बाद परमेश्वर की स्तुति कर सकता है। दाऊद शाऊल के अन्याय और दुष्ट जुर्म को लेकर परमेश्वर की स्तुति इसलिए करता है क्योंकि परमेश्वर के उद्देश्य दुष्ट लोगों के द्वारा विफल नहीं हो सकते। वह परमेश्वर की स्तुति करता है क्योंकि वह जानता है कि जय उसके समय पर आएगी। घबराहट के समय, परमेश्वर पर अपनी आंखें रखें और विजय उसकी तरफ से आएगी। यह आपको स्तुति का कारण देगा, तब जब सब बातें गिरती हुई सी दिखती हैं।

धर्मी परमेश्वर के नाम पर आशा रखेंगे (वचन 9)

दाऊद वचन 9 में अपने पाठकों को मुश्किलों के बारे में स्मरण दिलाता है, धर्मी लगातार परमेश्वर पर ही आशा रखता है। परमेश्वर का नाम अच्छा है। हम उस में पूर्ण विश्वास पाते हैं। परमेश्वर दुष्ट पर विजय पाएगा। यह हमें परमेश्वर की ओर से प्रतिज्ञा के रूप में मिला है। जो परमेश्वर पर आशा रखते हैं वे कभी निराश न होंगे।

धर्मी अन्य धन्य व्यक्तियों की उपस्थिति को खोजेंगे

ध्यान दें कि अन्त में धर्मी व्यक्ति सन्तों की उपस्थिति में परमेश्वर की स्तुति करेगा। अन्य शब्दों में, धर्मी व्यक्ति अपने जैसे लोगों के साथ रहेगा और परमेश्वर के नाम की स्तुति और आदर करेगा। हम यह इच्छा नहीं रखते कि एक दूसरे से अलगाव में रहे। संख्या में शक्ति है। ऐसे समय में जब कुछ समझ नहीं आता, अपने जैसे मन वाले विश्वासियों को खोजें। उनकी संगति में सामर्थ्य पाएं। परमेश्वर के नाम को एक साथ लेकर ऊँचा उठाएं। धर्मी के साथ संगति करके अपने अन्दर सामर्थ्य को नए तरीके से उजागर करें।

विचार-करने के लिए:–

- क्या आप कभी ऐसी परिस्थिति में आए हैं जहाँ दुष्ट सफल हुआ हो? परमेश्वर उस समय कहाँ था?
- ऐसे समय को याद करें जब आपने दुष्ट के द्वारा हार महसूस की हो। आपने उसका सामना कैसे किया?
- इस भजन में हमें परमेश्वर के बारे में क्या सीखने को मिलता है?
- दाऊद धर्मी को क्या परामर्श देता है जब वे अपने को दुष्ट को घेरे में पाते हैं?
- बुराई पर हमारी विजय मसीह की देह की भूमिका है?

प्रार्थना के लिए:-

- परमेश्वर का धन्यवाद दें, उसके कभी न कम होने वाले प्रेम के लिए।
- क्या आप अभी कोई मुश्किल परीक्षा से गुज़र रहे हैं परमेश्वर से कहें कि वह आपकी सहायता करे कि आप अपनी आंखें उस पर लगा सकें।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसका बुराई पर नियंत्रण है।
- क्या आपका कोई मित्र या प्रिय है जो इस समय मुश्किल और परीक्षा में से गुज़र रहा है? कुछ समय निकालें और ध्यान दें कि दाऊद इस भजन में क्या कहता है। अपने मित्र के लिए उन बातों को लेकर प्रार्थना करें।

52. इस्राएल के लिए उद्धार

पढ़ें भजन संहिता 53:1-6

अन्तिम भजन में, दाऊद अपने लोगों को परीक्षाओं में परमेश्वर पर अपनी आँखें लगाने की आज्ञा देता है। वह इस भजन को जारी रखते हुए कहता है कि अविश्वासी के द्वारा संकट और मुश्किलें आपके रास्ते में आएंगी।

दाऊद ऐसे व्यक्ति की ओर हमारा ध्यान लेकर जाना चाहता है जिसे वह मूर्ख कहता है।

मूढ़ अपने मन में कहता है, 'कोई परमेश्वर है ही नहीं' (वचन 1)।

दाऊद यहाँ अविश्वासी की बात कर रहा है। वह ऐसे व्यक्ति की बात कर रहा है जिसने परमेश्वर को नहीं जाना और न ही कभी उसके मार्गों को अनुभव किया। यह लोग नहीं मानते कि परमेश्वर है। वे अपनी जीवन की समस्याओं को देखते हैं और परमेश्वर के होने पर सन्देह करते हैं हम अपने दिनों में भी ऐसे पुरुषों और स्त्रियों को देखते हैं।

दाऊद इन लोगों को 'मूढ़' कहता है। वे मूढ़ हैं क्योंकि वे सच्चाई की ओर से अंधे हैं। हालांकि एक छोटा बच्चा भी यह समझ सकता है कि यह संसार स्वयं से ही नहीं बन गया। संसार की सृष्टि परमेश्वर की सच्चाई को साबित करती है। पवित्रशास्त्र भी परमेश्वर की गवाही देता है। अनगिनत जीवन पवित्रशास्त्र के वचन के द्वारा बदले गए। इसी कारण संसार के बहुत से पुरुषों और स्त्रियों ने सच्चाई को जाना और इस्राएल के परमेश्वर के पास आए। पवित्र आत्मा पुरुष और स्त्रियों के हृदय और विवेक से बातें करता है और उन्हें सृष्टिकर्त्ता की सच्चाई को समझने में मदद करता है। परन्तु जिन लोगों की दाऊद यहां बात कर रहा है वे ये सब बातें नहीं समझते। उन्होंने सृष्टि में परमेश्वर के प्रमाण को नहीं देखा। वह उसे पवित्रशास्त्र में देखने में असफल हुए। उन्होंने अपने कानों को पवित्र आत्मा की फुसफुसाहट सुनने से रोक लिया है। वे मूढ़ हैं क्योंकि वे सत्य को नहीं देख पा रहे। वे मूढ़ हैं क्योंकि उन्होंने अपनी पीठ उससे मोड़ ली है जो उनकी सबसे बड़ी आशा है।

क्योंकि वे लोग परमेश्वर पर विश्वास नहीं रखते, इसलिए वे उसके मार्गों पर चलने के लिए कोई दबाव महसूस नहीं करते। वे वही करते हैं जो वे करना चाहते हैं। दाऊद के अनुसार वे भ्रष्ट लोग हैं। उनकी जीवन शैली भ्रष्ट और दुष्ट है। वे वही करते हैं जो उनके पास स्वाभाविक रूप से आता है। इससे हम यह नहीं देख पाते कि

एक अविश्वासी अपने जीवन में कुछ आदरणीय चीज़ें करने के योग्य है। हम उन सभी 'अच्छा जीवन' व्यतीत करने वाले अविश्वासियों से मिल चुके हैं। हमें इस भजन में यह समझने की ज़रूरत हैं कि ये लोग अपना जीवन बिना परमेश्वर के जी रहे हैं। उनका पाप उनके सामने कभी बताया नहीं जाता।

परमेश्वर इन मनुष्य के पुत्रों को स्वर्ग से देखता है। ध्यान दें वे मनुष्य के पुत्र कहलाते हैं। वे परमेश्वर के पुत्र और पुत्री नहीं हैं। जब परमेश्वर इन अविश्वासियों को देखता है, तब वह किसी को भी परमेश्वर को समझते और खोजते हुए नहीं पाता। वे अपने ही मार्गों के पीछे भाग रहे हैं। सिर्फ इस जीवन की बातों के लिए ही जी रहे हैं। उनके हृदय परमेश्वर को प्रेम करने और ढूंढने के लिए नहीं हिलते। उनमें से सभी परमेश्वर के खिलाफ मुड़ गए हैं। उनके मार्ग भ्रष्ट और दुष्ट हैं। वे अपनी लालसाओं को पूरा करने में संतुष्ट हैं। कोई भी परमेश्वर या उसके मार्गों को नहीं खोजता।

वचन 4 पर विशेष रूप से ध्यान दें कि ये अनर्थकारी क्या कर रहे थे। वे परमेश्वर के लोगों को निगल जाते थे। वे परमेश्वर के लोगों पर इस प्रकार हमला करते और निगल जाते थे जैसे एक भूखा योद्धा रोटी खाता है। परमेश्वर देख रहा था कि उसके लोगों के साथ क्या हो रहा था। परमेश्वर अपने लोगों की पीड़ाओं की ओर से अन्धा नहीं हुआ था।

ये अविश्वासी देश इस प्रकार चित्रित किए गए हैं जैसे साहसी योद्धा जो युद्ध का अनुभव कर चुके हैं। वे बहुत से राज्यों पर विजयी हुए हैं परन्तु अब वे ऐसे पवित्र और सामर्थी परमेश्वर के खिलाफ खड़े हुए परन्तु जीत नहीं पाए। परमेश्वर की सन्तान पर हमला करने के कारण उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर को क्रोधित किया है। ध्यान दें कि परमेश्वर कैसे इन अविश्वासी देशों को जवाब देता है।

परमेश्वर ने अपने दुश्मनों को भय का कारण दिया। वे आंशका के साथ विजय पा रहे थे। परमेश्वर ने उनकी हड्डियों को तितर-बितर कर दिया जिन्होंने उसकी संतान पर हमला किया और उन्हें लज्जित किया था। परमेश्वर ने अपने शत्रुओं को हरा दिया। उनकी हड्डियाँ दूर देश तक तितर-बितर हो गईं। साहसी योद्धाओं को लज्जित किया था।

दाऊद वचन 6 में कहता है:

इस्राएल का पूरा उद्धार सिय्योन से निकलता है।

यह दाऊद की अपने लोगों के लिए प्रार्थना है। वह अपने लोगों के लिए परमेश्वर के सम्मुख रोता और उसे सहायता के लिए बुलाता है। वह यहां सिय्योन से आनेवाले उद्धार के बारे में बताता है। इस प्रार्थना का जवाब पूरी तरह से प्रभु यीशु के व्यक्तित्व में दिया गया जो सिय्योन में दाऊद के वंशज के रूप में यह दाऊद के दिनों में पूरा नहीं हुआ; पूरी पूर्ति तो यीशु मसीह के द्वारा होगी वह अपने लोगों को उस नियति को वापस दिलाएगा जो पाप और हठीलेपन की वजह से खो गई है।

जन्मा था

दाऊद जानता था कि वह दिन आनेवाला था जब परमेश्वर अपने लोगों की नियति को फिर से सही करेगा।

हम संघर्ष और परीक्षाओं को परमेश्वर के साथ चलते चलते भी देख सकते हैं। एक अनोखा वायदा जो परमेश्वर यहां करता है कि वह अपने लोगों को कभी भूलेगा नहीं। वह हमारी सहायता के लिए आएगा। वह हमारे विरोधियों को तितर बितर करेगा और हमारी नियति हमें वापस दिलाएगा। इस अनोखे वायदे में अपने हृदय में हम साहस और विश्वास से परमेश्वर की सेवा के लिए कदम उठा सकते हैं।

विचार करने के लिए:

- दाऊद अविश्वासियों को मूढ़ क्यों कहता है?
- आज प्रभु परमेश्वर ने हम पर अपने को कैसे प्रगट किया है? उसने आप पर अपने को व्यक्तिगत रूप से कैसे प्रगट किया?
- इस भजन में उन लोगों के लिए जो पीड़ाएं सहते हैं, क्या प्रतिज्ञा है?
- जब अविश्वासी कुछ समय के लिए समृद्ध होता है, तब भजनकार अन्त में क्या कहता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने अपनी उपस्थिति के लिए आपकी आंखों को खोला है।
- उसे धन्यवाद दें कि उसने आपकी परीक्षाओं में आपको सम्भालने का वायदा किया है।
- आइए हम इस समय ऐसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें जिसने अभी तक परमेश्वर और उसके उद्धार को नहीं पाया है। परमेश्वर से कहें कि वह अपने आप को उन पर प्रगट करे।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह एक महान योद्धा है जो बुराई पर विजयी होता और न्याय और धार्मिकता को लाता है।

53. धर्मी की विजय

पढ़ें भजन संहिता 54:1-55:23

भजन 54 दाऊद के जीवन के उस समय को बताता है जब वह शाऊल से भाग रहा था। जब उसने सुना कि शाऊल उसके जीवन की खोज में है, तब दाऊद पहाड़ी देश के जीप नामक जंगल में छिप गया (देखें 1 शमूएल 23:14)। शाऊल ने दाऊद को पकड़ने के लिए सेना तैयार की। जैसे ही वह उस तक पहुंचने वाला था। परमेश्वर का एक संदेशवाहक शाऊल के आकर बताता है कि पलिश्तियों ने तेरे देश पर चढ़ाई की है। यह सुनकर शाऊल दाऊद का पीछा छोड़कर पलिश्तियों का सामना करने को चला जाता है। परमेश्वर ने निश्चित रूप से अपने सेवक दाऊद की सुरक्षा की।

दाऊद ने भजन 54 शाऊल से भागने के समय में लिखा। वह परमेश्वर से उसके बल से उसे बचाने के लिए कहता है। दाऊद जानता है कि यदि यह उसमें होता तो वह कभी भी शाऊल से भागता नहीं रह सकता था। शाऊल की सेना उसकी सेना से बड़ी थी और यह न केवल समय की बात थी कि शाऊल को वह छिपने की जगह ढूंढली जाती। दाऊद ने अपनी बुद्धि और बल पर भरोसा नहीं किया, उसने परमेश्वर को अपने उद्धार के लिए बुलाया।

ध्यान दें भजन 54 में दाऊद ने परमेश्वर से उसकी सहायता करने के लिए प्रार्थना की। वह परमेश्वर को याद दिलाता है कि परदेशी उसके विरुद्ध उठे हैं (54:3)। यह उन जीपी लोगों के लिए है जिन्होंने शाऊल के साथ अपनी ताकतें मिलाईं ताकि वे दाऊद तक पहुँच सकें। हालांकि वे व्यवहारिक रूप से उसे नहीं जानते थे, परन्तु वे शाऊल को उसे सौंपने के लिए तैयार थे। उनको परमेश्वर और उसके मार्गों का कोई आदर नहीं था। वे हृदय रहित लोग थे जो निर्दोष दाऊद के पीछे भाग रहे थे।

वचन 4 में हम देखते हैं कि दाऊद अपना विश्वास परमेश्वर पर रखता है। परमेश्वर उसकी सहायता था और वह उसे परीक्षा में से निकालेगा। दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि मेरे विद्रोहियों की बुराई को उन्हीं पर लौटा दे। परमेश्वर अपनी सच्चाई के कारण उनका विनाश कर। अन्य शब्दों में, वह परमेश्वर को कहता है कि जो लोग उसके बारे में दुष्ट शब्द बोलते हैं, उनके शब्द उन्हीं पर जा गिरें। ये दुष्टता के शब्द उसी प्रकार हैं जैसे सर्प अपने आप को लपेटता है और हमला करने के लिए तैयार हो जाता है। दाऊद यही प्रार्थना करता है कि जो उसके लिए तैयार किया गया है वह उसके शत्रुओं पर जा पड़े।

ध्यान दें, दाऊद ने अपनी सुरक्षा और जीवन परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया है, वह परमेश्वर के पास स्वेच्छा से भेंट लाने के लिए मुक्त था। परमेश्वर दाऊद की देखभाल करता है। दाऊद सिर्फ अपना ध्यान परमेश्वर की स्तुति और आराधना में लगाता है।

जैसा कि हम शुरू के अनुच्छेद में देख चुके हैं, परमेश्वर ने दाऊद को छुड़ाने के लिए शाऊल के पास एक संदेशवाहक भेजा और कहा कि पलिश्तियों ने उस पर हमला किया है। दाऊद जानता है कि यह सब सिर्फ संयोग नहीं था। परमेश्वर ही पलिश्तियों के हमलों के पीछे थे। सब कुछ इसलिए रचा गया ताकि दाऊद और उसके लोग बच सकें। दाऊद का उचित जवाब परमेश्वर की विजय की स्तुति करना था।

भजन 55 भी भजन 54 की पृष्ठभूमि पर आगे बढ़ता है। दाऊद फिर से परमेश्वर से उसकी प्रार्थना सुनने को कहता है। ध्यान दें भजन 55:2 कि उसके विचार उसे व्याकुल करते हैं। उसके शत्रु शेर की तरह उसे फाड़ खाने के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। दाऊद परमेश्वर पर भरोसा रखता है लेकिन फिर भी यह सब बातें उसे व्याकुल करती हैं।

ध्यान दें उसका हृदय संकट में है और वह मृत्यु के भय से घिरा हुआ है (55:4)। दाऊद नहीं जानता कि वह जीवित रहेगा या मर जाएगा। वह इन विचारों के कारण व्याकुल है। प्रभु यीशु भी अपनी मृत्यु से पहले आंसुओं के साथ रोए। वह भी यह महसूस कर चुके हैं कि शत्रुओं के द्वारा उत्पीड़न देना क्या होता है।

इस सकंट में दाऊद कहता है 'भला होता कि मेरे कबूतर के से पंख होते तो मैं उड़ जाता और विश्राम पाता (55.6)। उसने अपने पाठकों को बताया कि मैं उड़ते उड़ते दूर निकल जाता और जंगल में बसेरा लेता। दाऊद इस संकट और दुख से आराम पाना चाहता है। वह इच्छा रखता है कि वह इन सब समस्याओं से भाग जाता और एक ऐसा स्थान पाता जहाँ शान्ति और आराम होता।

दाऊद विचारता है कि उसके चारों ओर क्या हो रहा है, वह परमेश्वर से कहता है कि दुष्टों का सत्यानाश कर और उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दे। (55:9) वह परमेश्वर से कहता है कि दुष्ट लोगों की योजनाओं को विफल कर दे जो धर्मी पर समस्याएं लेकर चढ़े आते हैं। वह नगर में जहाँ कहीं देखता है, उपद्रव और झगड़ा ही देखता है। ये दुष्ट रात दिन उसकी शहरपनाह पर चढ़कर चारों ओर घूमते हैं। उसके भीतर दुष्टता ने बसेरा डाला है (55:10); और अन्धेर, अत्याचार और छल उसके चौक से दूर नहीं होते। दाऊद नगर को देखकर व्याकुल है। वह इसलिए भी व्याकुल है कि दुष्ट उस पर व्यक्तिगत रूप से भी हमले कर रहा है।

ऊपर बताई गई हर समस्या से बढ़कर, दाऊद इस बात से दुखी है कि ये ताड़नाएं और बैर किसी शत्रु की ओर से नहीं बल्कि मेरी जान पहचान और परम मित्र के द्वारा आता है। यह वही था जिसके साथ उसने मीठी-मीठी संगति का अनुभव किया। वे ही उसके विरुद्ध बलवा करते हैं। (55:13-14)। यही मित्र के अस्वीकार किये जाने के

डंक से भी अधिक भयानक है। ध्यान दें दाऊद उस संगति में एक विच्छेद को महसूस करता है।

दाऊद ने परमेश्वर से अपने शत्रुओं को दूर ले जाने को कहा। उसकी कड़वाहट वचन (55:15) में दिखती है। वह परमेश्वर से कहता है कि उनकी मृत्यु अचानक आ दबाए और वे जीवित ही अधोलोक में उतर जाएं।

दाऊद अपने चारों ओर घेरा डाले हुए दुष्ट से उत्पीड़ित और दबा हुआ है। अपनी व्याकुलता में वह परमेश्वर को अपनी सहायता के लिए बुलाता है। ध्यान दें वचन 55:77 में वह सुबह, दोपहर, शाम दोहाई देता है, अपनी व्याकुलता में। ऐसा लगता है कि उसे अपने दर्द से आराम नहीं मिला, उसने परमेश्वर पर अपनी आशा नहीं छोड़ी।

इस समय दाऊद ने आराम को अनुभव किया। दाऊद साक्षी देता है कि जो लड़ाई मेरे विरुद्ध मची थी प्रभु ने उसमें से मुझे कुशल के साथ बचा लिया है। बहुतों के विरोध के बावजूद वह बचा लिया गया। वह विश्वास करता है कि परमेश्वर हमारी कुछ हानि नहीं होने देगा। यह सिर्फ हमें उसकी ओर ही लेकर जाने को है।

जब वह विजय आई, दाऊद को निश्चय हो गया कि परमेश्वर अपने सिंहासन पर महान और पवित्र शासक की तरह विराजमान है। हालांकि उन लोगों को परमेश्वर का कोई भय नहीं है और वे अपने मार्गों से फिरने को इन्कार करते हैं, लेकिन वह दिन आएगा जब परमेश्वर उन्हें उनके कामों का लेखा देने को कहेगा। विजय परमेश्वर से ही है।

दाऊद का हृदय इससे टूट गया था कि कैसे एक मित्र अपने मित्र के विरुद्ध हो जाता है; अपनी मित्रता की वाचा को तोड़ते हुए (55:20)। वह देखता है कि कैसे पाप रिश्तों को तितर-बितर कर देता है। लोग मक्खन की तरह बहुत मीठे शब्द बोलते तो हैं परन्तु उनके हृदय युद्ध से भरे हुए हैं। बाहर से वे तेल जैसे नरम शब्द बोलते हैं परन्तु अपने अन्दर ऐसी तलवार रखते हैं जो धोखा देने के लिए उन्हें जो उनके करीब होते हैं, तैयार रहती है।

दाऊद ने इस धोखे को उसे हराने नहीं दिया। उसने एक बार फिर अपनी आंखें परमेश्वर की तरफ मोड़ीं। उसने अपनी चिन्ताएं और सम्बन्ध परमेश्वर को सौंपे और उसके हाथ के आराम को जाना उसने अपने पाठकों से यह वायदा किया कि अविश्वासयोग्य मित्र के अलावा, वह उन्हें कभी गिरने नहीं देता जो उससे प्रेम करते हैं। वह हमेशा उन्हें सम्भालता है।

दाऊद शत्रु की तलवार के डंक को महसूस किया था। उन दिनों में परमेश्वर का बल ही उसका आराम बना था। दाऊद हमें चुनौती देते हुए कहता है, अपनी चिन्ताएं और सम्बन्ध परमेश्वर को सौंप दो। वह आशा दिलाता है कि परमेश्वर दुष्ट को गड्ढे में डाल देगा। खून के प्यासे और धोखा देने वाले लोग अपने आधे दिन भी नहीं जी पांएगे, वे अपने समय से पहले मर जाएंगे।

ध्यान दें, इन दोनों भजनों में दाऊद को उनसे धोखा मिला जो उसके सबसे नज़दीक थे। भजन 54 में, उसके ससुर ने उसे मारने की योजना बनाई। जब उसने जीप में शरण पाई, जीपी लोगों ने उसे धोखा दिया और शाऊल को उसकी उपस्थिति के बारे में बताया। दाऊद भजन 55 में उन परम मित्रों की बात करता है कि उन्होंने भी उसे धोखा दिया जो मन्दिर में उसके साथ आराधना करते थे। कुछ तरह से, यह भजन उसका भी चित्रण करता है जो प्रभु यीशु के साथ हुआ। उसका भी एक शिष्य उसे धोखा देने के साथ-साथ उसे मार डालने को सौंपेगा। क्या आपने कभी अपने परममित्र द्वारा धोखे का अनुभव किया है? दाऊद समझता है कि वह कैसा होता है। सबसे महत्वपूर्ण, प्रभु यीशु जानता है कि अपने उन लोगों द्वारा धोखा मिलना क्या होता है जो आप के सबसे करीब होते हैं। अपने दुख के समय में परमेश्वर के सामने विलाप करें और उसे आपको बल और सामर्थ्य देने दें। उसने भी वही अनुभव किया है जो आप करते हैं।

विचार करने के लिए:

- ध्यान दें दाऊद कैसे अपने नज़दीकी लोगों द्वारा धोखे का अनुभव करता है। यह अनुच्छेद कैसे प्रभु यीशु के बारे में भविष्यवाणी करता है कि उसके साथ क्या होगा?
- आपको इससे क्या सांत्वना मिलती है कि दाऊद और प्रभु यीशु दोनों यह समझते हैं कि आपको नज़दीकी लोगों द्वारा धोखा मिलना क्या होता है?
- क्या हम पीड़ित और दुखित होने पर भी विजयी हो सकते हैं? क्या जय में जीने का यह अर्थ है कि हमें कभी धोखे का दर्द नहीं मिलेगा?
- इन भजनों में दाऊद की विजय का भेद क्या है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह हमें जय देने में पूर्ण सामर्थी है।
- परमेश्वर को उस विशेष समय के लिए धन्यवाद दें जब आपने विजय का अनुभव किया?
- परमेश्वर से कहें कि वह आपकी कलीसिया के सम्बन्धों की सुरक्षा करे ताकि शत्रु कोई विभाजन न डाल सके।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपकी मदद करे कि पीड़ाओं में आपकी आंखे उस पर ही रहे। धन्यवाद दें कि वह उसे समझता है जिससे होकर आप गुज़र रहे हैं।

54. जब मैं भयभीत हूँ

पढ़ें भजन 56:1-13

इस भजन की सही परिस्थितियां बताना थोड़ा कठिन है। हम जानते हैं कि दाऊद के साथ क्या बीत रहा था जब उसने भजन लिखे। इसकी भूमिका तब की है जब दाऊद पलिश्तियों द्वारा पकड़ा गया जबकि वह गत में था। उस समय भी वह शाऊल से भाग रहा था।

दाऊद अपने जीवन की मुश्किलों और समस्याओं से अनजान नहीं था। इस भजन में वह परमेश्वर को अनुग्रह करने के लिए कहता है। दाऊद ने संकट के समय में अपने पर और अपने बल पर भरोसा नहीं किया। उसने अपने आपको एक सैनिक अगुवे के रूप में साबित किया परन्तु उसका बल परमेश्वर पर सब चीज़ों के लिए केन्द्रित था। यहां पुनः हमें देखते हैं कि दाऊद अपनी समस्याओं में परमेश्वर को पुकार रहा है।

वचन 1 की ओर ध्यान दें, दाऊद अपने शत्रुओं द्वारा पकड़ा गया। वह परमेश्वर को याद दिलाता है कि वे रात दिन लड़कर मुझे सताते हैं। दाऊद को अपने शत्रुओं के कारण कोई आराम नहीं है। उसके शत्रु हर समय उसे निगलने के लिए बैठे हैं।

वचन 2 में द्रोही दिन भर उसे निगलना चाहते हैं। वे जो अभिमान करके उससे लड़ते हैं, वे बहुत हैं। द्रोहियों का काम अपने शब्दों से एक व्यक्ति की प्रतिष्ठा को नष्ट और समाप्त करना होता है। इन लोगों ने झूठ बोला और झूठी बातें गढ़ी ताकि दाऊद की प्रतिष्ठा का नाश करें।

ध्यान दें दाऊद ने उस समय क्या किया जब उसके शत्रु उसे दबाते थे? वचन 3 में वह कहता है, जब वह डरा हुआ था, उसने अपना भरोसा परमेश्वर पर रखा। यहां हम कुछ विस्तृत वर्णन की ओर देखेंगे। पहला, ध्यान दें, दाऊद भयभीत था। भयभीत होना स्वाभाविक है। दाऊद परमेश्वर का जन होने पर भी भयभीत हुआ। दाऊद में भय कहाँ से आया। वह बताता है, जब वह अपने जीवन में भय को अनुभव करता है, वह परमेश्वर की तरफ मुड़ता है और उस पर भरोसा रखता है।

भय सदैव पुरुष और स्त्री को परमेश्वर पर भरोसा करना नहीं सिखाता। कई बार भय हमारा परमेश्वर से भागने का कारण भी बनता है। परन्तु सच्चाई यही है कि भय के समय परमेश्वर के पास जाना ही सबसे अच्छा है।

ध्यान दें, जब दाऊद भयभीत था, उसने परमेश्वर के वचन की ओर देखा (वचन

4)। इस वचन में उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं की खोज की है। उसने परमेश्वर के वचन से प्रेम किया। उसने परमेश्वर के वचन की स्तुति की। दाऊद ने परमेश्वर के वचन की स्तुति इसलिए की क्योंकि यह स्वयं परमेश्वर का ही विस्तार था। वचन की प्रतिज्ञाएं परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं थीं। जो बल वचन से उसे मिला वह परमेश्वर की ओर से ही था।

वचन 4 में, दाऊद अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि मनुष्य उसके सामने कुछ नहीं कर सकते जबकि वह परमेश्वर पर भरोसा रखता है। दाऊद की ओर आने से पहले, इन लोगों को परमेश्वर का पहले सामना करना पड़ेगा। दाऊद अपने परमेश्वर के पीछे छिप गया। उसे कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि परमेश्वर उसका शरण गढ़ था और उसकी ढाल भी। क्योंकि मनुष्य परमेश्वर को हरा नहीं सकते और न कभी हरा पाएंगे।

इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य दाऊद का जीवन मुश्किल नहीं बना सकते। वचन 5-6 में, दाऊद अपने पाठकों को स्मरण दिलाता है, उसके शत्रु उसके वचनों का उल्टा अर्थ लगाकर बोलते हैं। उसके विरुद्ध गलत कल्पनाएं गढ़ते हैं। वे उसके कदमों को देखते भालते हैं और उसके प्राण के घात की ताक में रहते हैं। दाऊद के लिए यह सब आसान नहीं था। हालांकि दाऊद परमेश्वर पर विश्वास रखता था, फिर भी वह शत्रुओं के द्वारा अपने अपमान किये जाने का अनुभव करता था परमेश्वर ने इसकी समस्याओं को दूर नहीं किया था, परन्तु इन समस्याओं में उसकी सहायता की थी।

ध्यान दें कि दाऊद परमेश्वर को कहता है कि मेरे शत्रुओं को भागने न दें (वचन 7)। वह परमेश्वर से कहता है कि वह देश देश के लोगों को नीचे गिरा दे। यह भजनकार की अविश्वसनीय प्रार्थना है। दाऊद का हृदय शत्रु को नष्ट होने के लिए कहता है। वह दुष्ट के फलों को अपने चारों ओर देखता है और इस पर गहराई से दुखित होता है। वह दुष्ट के नष्ट होने की इच्छा रखता है। वह परमेश्वर के उद्देश्य को धरती पर पूरा हाने की इच्छा रखता है। यह पाप और उसके परिणामों के ऊपर एक सच्चा क्रोध और आक्रोश है।

ध्यान दें वचन 8 में, दाऊद परमेश्वर से कहता है कि तू मेरे मारे मारे फिरने का हिसाब रखता है और मेरे आँसुओं को अपनी कुप्पी में रख लेता है। मेरे साथ ऐसा समय भी आया जब मैं रोता और आश्चर्य करता था कि क्या परमेश्वर सही में जानता है कि मैं क्या महसूस कर रहा हूँ। यह वचन उन लोगों के लिए दिलासा है जो रोते हैं। परमेश्वर आपकी आँख के आँसू के हर कण का कारण जानता है। एक भी आँसू उपेक्षित नहीं है। परमेश्वर हमारे द्वारा बहाए गए हर एक आँसू को याद रखता है।

दाऊद को पूरा विश्वास है कि जब वह पुकारेगा तब परमेश्वर उसकी सुनेगा। वह विश्वास करता है कि जब परमेश्वर उसकी सहायता के लिए आएगा तब शत्रु मुड़ जाएंगे। दाऊद वचन 9 में अपने पाठकों को बताता है कि वह जानता है कि शत्रुओं को

दूर करने में परमेश्वर उसके साथ था। दाऊद ने परमेश्वर पर भरोसा रखा। उसने उसके वचन पर भरोसा रखा। दुष्ट लोग उसके विरुद्ध इसके अलावा और कुछ भी नहीं कर पाएंगे, केवल वही जो प्रेमी परमेश्वर और दयालु परमेश्वर अनुमति दे।

वचन 12 में, दाऊद अपने पाठकों को याद दिलाता है कि वह परमेश्वर के साथ वाचा में है। यह कहना मुश्किल है कि यह वाचाएं क्या हैं? बहुत साधारण स्तर से दाऊद ने अपने आप को परमेश्वर के लिए जीने के लिए सौंपा और उसे धन्यवाद बलि चढ़ाई। कोई भी उसे परमेश्वर के साथ वाचा पूरी करने से नहीं रोक सकता।

दाऊद परमेश्वर में अपने विश्वास का प्रदर्शन करता है। वह अपने पाठकों को याद दिलाता है कि एक दिन ज़रूर आएगा जब वह परमेश्वर को धन्यवाद बलि चढ़ाएगा क्योंकि परमेश्वर उसे मृत्यु से छुड़ाएगा और उसके पाँव को ठोकर खाने से बचाएगा। परमेश्वर यह करेगा ताकि दाऊद सदैव उसके साथ उसके जीवन के प्रकाश में चलता रहे।

विश्वासी होने के कारण हमारे जीवनों में भी भय के समय आएंगे। यह भय हमें परमेश्वर के पास आशा और सहारे के लिए लेकर जाता है। उसकी बांहों में हम सुरक्षित हैं। चाहे हमारे साथ जो कुछ भी हो, हम निश्चिन्त हैं कि परमेश्वर हमें छुड़ाएगा। यह भजनकार का विश्वास है। यह हमारा विश्वास भी हो सकता है।

विचार करने के लिए:-

- हम इस भजन में भय के बारे में क्या समझ पाते हैं? क्या विश्वासी किसी समय भय को महसूस करते हैं? भजनकार में भय ने क्या उत्पन्न किया है?
- क्या आप कभी भयभीत हुए हैं? भय ने आपके अन्दर क्या उत्पन्न किया?
- इस भजन में उसके लिए क्या प्रतिज्ञा है जो जीवन में संघर्ष का सामना करते हैं?

प्रार्थना के लिए:-

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह शत्रु की फेंकी जाने वाली हर चीज़ से बढ़कर है?
- परमेश्वर से कहें कि जब परीक्षाएं आपके मार्गों में आएं वह आपको और महान् विश्वास दे।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि जब हम भयभीत होते हैं तो वह हमें बल देता है।

55. मैंने परमेश्वर को पुकारा

पढ़ें भजन संहिता 57:1-11

भजन 57 एक और ऐसा भजन है जो दाऊद के शाऊल से भागने पर लिखा गया है। बहुत से मसीही साहित्य के अंश पीड़ाओं के कारण ही लिखे गए। ऐसे समयों में हमारा ध्यान परमेश्वर की ओर होता है। यह भजन तब लिखा गया जब दाऊद शाऊल से भाग रहा था। दाऊद ने अपने इस अकेलेपन के अवसर का फायदा अपने परमेश्वर को व्यक्त करने और लिखने में उठाया।

दाऊद वचन 1 में परमेश्वर से अपने ऊपर अनुग्रह करने के लिए कहता है। हालांकि दाऊद शाऊल से दूर छिप कर गुफा में था, उसकी सच्ची शरण वह गुफा नहीं, परमेश्वर ही था। उसने अपने आप को परमेश्वर के पंखों की छांव में तब तक छिपा कर रखा जब तक खतरा टल नहीं गया। यह वैसा है जैसे एक पक्षी माँ अपने बच्चों को अपने पंखों तले छिपा कर रखती है। माँ अपने बच्चों को पंखों तले छिपाने के लिए अपना बलिदान करती है। वह ठंड और बारिश में अपने बच्चों को अपने पंखों तले छिपा कर रखती है। दाऊद हमें इस चित्र को दिखाता है। उसके शत्रु यदि उसे पकड़ लेते तो वे परमेश्वर को हरा देते। इस प्रकार का विश्वास और सम्बन्ध परमेश्वर के साथ होना अनोखा है।

दाऊद को यह विश्वास है कि परमेश्वर उसके जीवन के हर उद्देश्य को पूरा करेगा (वचन 2)। दाऊद को यह विश्वास है कि परमेश्वर का उद्देश्य सम्पूर्ण और अच्छा है। वह जानता है कि शत्रु उसको हरा नहीं पाएगा जब तक कि वह परमेश्वर की शरण में सुरक्षित है। परमेश्वर दाऊद के लिए अपने उद्देश्यों को पूरा करेगा।

वचन 3 में ध्यान दे परमेश्वर ने स्वर्ग से उसके लिए सहायता भेजी ताकि उसका पीछा करनेवालों से उसे बचा ले। इस सृष्टि का परमेश्वर दाऊद की प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिए स्वर्ग से उतर कर आया। वह उतर कर आया और उसकी निन्दा करने वालों को उसने झिड़का।

इस वचन में शब्द 'सेला' पर ध्यान दें। यह शब्द एक संगीतमय शब्द लगता है जो विराम के लिए है। कुछ लोग इसे इस प्रकार लेते हैं कि पाठक जो पढ़ रहे हैं वे कुछ देर रुक कर जो अभी तक कहा गया है उस पर विचार करें। इसमें, यह विचार है कि परमेश्वर अपने बच्चों के लिए स्वर्ग से उतर कर सहायता करने को आएगा।

ध्यान दें परमेश्वर अपने लोगों को बचाने के लिए स्वर्ग से क्या भेजता है। वह

अपने प्रेम और विश्वासयोग्यता को भेजता है। हमारे गहरे दुख और दर्द में परमेश्वर का प्रेम हमारे लिए आश्वासन है कि वह गहराई से हमारी देखभाल करता है। उसकी विश्वासयोग्यता ही हमारा आश्वासन है कि हमें परीक्षाओं में त्यागेगा नहीं।

वचन 4 में, दाऊद हमसे अपने शत्रुओं के बारे में कहता है। वह उनकी सिंहों और जानवरों से तुलना करता है कि उनके दांत बर्छी और तीर हैं। उनकी जीभ तेज़ तलवार है। वे उसे फाड़ खाने को तैयार हैं।

भजनकार की इच्छा है कि परमेश्वर स्वर्ग में ऊँचा हो और उसकी महिमा पृथ्वी पर भर जाए। ये दुष्ट शत्रु परमेश्वर के नाम की महिमा नहीं कर रहे थे। दाऊद को पकड़ने के लिए वे परमेश्वर के उद्देश्य और योजनाओं के विरुद्ध खड़े हो गए। वह रोते हुए कहता है कि परमेश्वर महिमा पाए, दाऊद वास्तव में यह कह रहा है कि जो चीज़ें उसे महिमा नहीं देतीं वे हटाई जाएंगी।

दाऊद के शत्रुओं ने उसके पांवों के लिए जाल लगाया है। ध्यान दें वचन 6 में दाऊद निराशा में झुक गया था। उसके दुश्मनों का भार उसके सहने से बाहर था। परमेश्वर ने उसे नहीं त्यागा, दाऊद के दुश्मनों ने उसके लिए गहरा गड़हा खोदा परन्तु परमेश्वर ने उन्हें ही उस गड़हे में डाला जो कि उन्होंने दाऊद के लिए खोदा था।

दाऊद का हृदय स्थिर हो जाता है (वचन 7)। अर्थात् इस कठिनाई के समय में वह प्रभु के प्रति अपने विश्वास और वचनबद्धता में डगमगाया नहीं। वह परमेश्वर की आराधना में स्थिर बना रहा। उसने अपनी आँखें परमेश्वर पर लगाईं और उसकी ओर देखना न छोड़ा।

ध्यान दें कि दाऊद ने अपने संकट के समय में न केवल अपनी आंखें परमेश्वर पर लगाईं परन्तु संगीत के द्वारा परमेश्वर की स्तुति भी की। वचन 8 में वह अपनी आत्मा को जाग जाने को कहता है। वह अपनी सारंगी और वीणा को जाग जाने के लिए कहता है। कई बार अपने जीवन में पीड़ाओं और समस्याओं में परमेश्वर की स्तुति करना मुश्किल होता है। दाऊद गुफा में छिपा हुआ है जबकि शाऊल उसे मारने के लिए ढूढ़ रहा है। लेकिन फिर भी वह अपने हृदय से सारंगी और वीणा बजाकर उसकी स्तुति करता है। यह इसलिए सम्भव हुआ कि उसने अपनी आंखें परमेश्वर पर रखीं और विश्वास के द्वारा वह जानता था कि जय उसकी ही होगी।

दाऊद अपने पाठकों से कहता है कि वह देश देश के लोगों के बीच में परमेश्वर का धन्यवाद करेगा। (वचन 9) दाऊद का हृदय चाहता था कि सारा संसार परमेश्वर की महिमा और अच्छाई को जाने। वह चाहता था कि संसार उस परमेश्वर की प्रेम को जाने जिसने ज़रूरत के समय पर स्वर्ग से नीचे आकर उसकी सहायता की थी। वह उसके प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को सबको बताना चाहता है। उस गुफा में दाऊद ने परमेश्वर की शान्ति का अनुभव किया। परमेश्वर उससे गुफा में भी मिलने आया अपने छिपने के स्थान के अन्धकार में दाऊद अपनी वीणा उठाकर उसकी विश्वासयोग्यता और प्रेम के लिए आराधना और स्तुति करता है।

आज आपकी पीड़ाओं और दुखों में क्या आप अपनी आँखें परमेश्वर की ओर उठा सकते हैं? क्या आज आप अन्धेरी गुफा की पीड़ा में परमेश्वर पर विश्वास रख सकते हैं? दाऊद प्रतिज्ञा करता है कि आपके दुख और पीड़ा में परमेश्वर का प्रेम और विश्वासयोग्यता हमारा बल और विश्वास होगी।

विचार करने के लिए:

- दाऊद सारी मुश्किलों और परीक्षाओं में परमेश्वर की ओर देखने के हमें किस महत्व को सिखाता है?
- संकट और परीक्षाओं में स्तुति करना कैसे सम्भव हैं?
- परीक्षाओं और परखे जाने में आपका क्या निजी जवाब है? यह परिच्छेद आपको क्या चुनौती देता है?
- कुछ क्षण उन चीज़ों की सूची बनाने में बिताएं जब परमेश्वर ने आपको अपने प्रेम और विश्वासयोग्यता को दिखाया था।

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से कहें कि वह परीक्षाओं में उस पर आँखें रखने में आपकी सहायता करे।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि दाऊद अपने शत्रुओं से गुफा में छिपकर भी स्तुति कर पा रहा था। परमेश्वर से कहें कि वह आपके दर्द और तकलीफ में भी उसकी स्तुति करने में आपकी सहायता करे।
- कुछ समय निकाल कर ऐसे भाई या बहन के लिए प्रार्थना करें जो ऐसे मुश्किल समय से निकल रहा है। परमेश्वर से कहें कि इस समय में वह अपना प्रेम और विश्वासयोग्यता उन पर प्रगट करे।

56. न्याय के लिए प्रार्थना

पढ़ें भजन संहिता 58:11-11

भजन 58 पृथ्वी पर न्याय होने के लिए एक प्रार्थना है। विशेष रूप से भजनकार दुष्ट शासकों के लिए प्रार्थना करता है। यह भजन तीन भागों में विभाजित है। वचन 1-5 देश के दुष्ट शासकों के बारे में बताता है। वचन 6-9 इन शासकों के विरुद्ध प्रार्थना है। वचन 10-11 उस प्रार्थना का परिणाम दिखाती है।

देश के शासक

दाऊद देश के शासकों के बारे में बताते हुए शुरू करता है। ध्यान दें कि वह हमें उनके बारे में क्या बताता है। दाऊद प्रश्न पूछते हुए शुरू करता है:-

हे मनुष्यो (शासको), क्या तुम सचमुच धर्म की बातें बोलते हो? क्या तुम सीधाई से न्याय करते हो? (वचन1)

स्पष्ट है कि दाऊद शासक की न्याय से शासन करने की बाध्यता को देख पा रहा है। शासकों को अपने प्रशासन में काम करने वालों के साथ उचित और सच्चाई से व्यवहार करना चाहिए। उन्हें अपने न्याय करने में सीधा होना चाहिए। दाऊद शासकों से पूछता है कि क्या वे सीधाई से न्याय कर रहे हैं (वचन 1)। वह अपने प्रश्न का उत्तर स्वयं वचन 2 में देता है।

दाऊद अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि उनके हृदय न्यायी और सीधे नहीं है। इसके विपरीत वे मन ही मन में कुटिल काम करते हैं। वे देश भर में उपद्रव करते जाते हैं। जिन शासकों की दाऊद यहाँ बात कर रहा है वे अन्यायी और कुटिल हैं। वे अपने अधीन काम करने वाले लोगों की कोई चिन्ता नहीं करते और न ही परमेश्वर के कानून व्यवस्था का आदर करते हैं।

वचन 3 में दाऊद सिर्फ दुष्ट के बारे में बात करता है। वह अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि दुष्ट लोग जन्मते ही पराए हो जाते हैं, वे पेट से निकलते ही झूठ बोलते हुए भटक जाते हैं। यह कहते हुए दाऊद कह रहा है कि हम जन्म से ही पापी थे। दुष्टता हमारे अन्दर जन्म से ही है, इसे सीखने की आवश्यकता नहीं। जिन लोगों की दाऊद यहाँ बात करता है वे जन्म से ही दुष्ट थे। वे अपनी मां के गर्भ से ही झूठ बोलते आए हैं। दुष्टता उनके द्वारा होना स्वाभाविक है।

दाऊद इन दुष्ट लोगों को सर्प के समान प्रस्तुत करता है। वह यहां दो बातें बताता है। पहला, उनका विष सर्प जैसा है। जब ज़हरीला सर्प काटता है वह अपने शिकार में

अपना विष भेजता है। इस विष का यदि सही रूप से इलाज नहीं किया जाए तो यह शिकार को मार डालती है। यह विष पाप और उसके परिणामों का चित्रण करता है। पाप हमें नष्ट कर देता है। ये दुष्ट लोग ज़हरीले सर्पों की तरह होते हैं, जो अपना घातक ज़हर अपने अधीन काम करने वालों पर डालते हैं। सर्प की तरह वे अपने शिकार को नष्ट कर देते हैं। अपनी भेड़ों के चरवाहे बनने के बजाय वे अपने झूठ और पापी मार्गों से उनमें ज़हर फैलाते हैं।

दूसरा, ये शासक उस नाग के समान हैं जो सुनना नहीं चाहते। यहाँ उस नाग का चित्रण है जो सपेरे की धुन पर नाचता है। हालांकि ये शासक अपने परमेश्वर की नहीं सुनते। ध्यान दें कि चाहे कितना भी निपुण संगीत हो, यह नाग सुनने से इंकार करता है। परमेश्वर ने दाऊद के दिनों में लोगों से बात करने के लिए भविष्यद्वक्ता भेजे परन्तु शासकों ने सुनने से इन्कार किया। उन्होंने अच्छाई और धार्मिकता से सम्बन्धित कुछ भी सुनने से अपने कानों को बंद कर लिया। वे अपने लिए जीते थे।

शासकों के विरुद्ध प्रार्थना

उन दिनों के शासकों के बारे में बताने के बाद दाऊद अब उनके विरुद्ध प्रार्थना करता है। उसकी प्रार्थना बहुत प्रचण्ड है। वह इन दुष्ट शासकों के बारे में कठोरता से बोलता है। हमने देखा कि उसके दिनों के शासक सर्प के समान काटते थे और अपना विष फैलाते थे। दाऊद वचन 6 में प्रार्थना करता है कि परमेश्वर तू ज़हीरीले सर्पों के दाँतों को तोड़ दे ताकि वे फिर से अपने पाप और दुष्टता को न फैला सकें। वह उनकी तुलना सिंहों से करता है जो परमेश्वर के लोगों को फाड़ डालते हैं। दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि सिंहों की दाढ़ों को उखाड़ डाले ताकि वे फिर से परमेश्वर के लोगों को न फाड़ खाएं।

वचन 7 में, दाऊद प्रार्थना करता रहता है कि इन दुष्ट शासकों को घोलकर बहते हुए पानी के समान बना दे। वह चाहता है कि परमेश्वर इन लोगों को हटा दे ताकि ये दुष्टता न फैला सकें।

दाऊद ऐसे शासकों का चित्रण करता है जो अपने अधीन काम करने वालों पर तीर चलाते हैं। भजनकार परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि जब वे अपने तीर चढ़ाएं तब तीर मानो दो टुकड़ें हो जाएं और परमेश्वर के लोगों की कुछ हानि न हो।

वचन 8 में, दाऊद अपने समय के शासकों की तुलना घोंघे से करता है। हम में से बहुत लोगों ने गर्मियों के दिनों में घोंघे को देखा है। जैसे जब वे हिलते हैं तो वे अपने पीछे कीचड़ के धब्बे छोड़ जाते हैं। ऐसा लगता है कि घोंघे सूरज के कारण धीरे-धीरे पिघलते जाते हैं। दाऊद प्रार्थना करता है कि ये दुष्ट लोग भी घोंघे की तरह पिघलते जाएं ताकि वे परमेश्वर के लोगों को फिर से धमकी न देने पाएं।

वचन 8 के अन्तिम भाग में, दाऊद परमेश्वर से कहता है कि इस देश से दुष्ट को

स्त्री के गिरे हुए गर्भ के समान हटा दे। ताकि ये शासक सूरज को देख ही न सकें और दुष्टता को फैला न सकें।

वचन 9 में दाऊद प्रार्थना के महत्व को बताता है दाऊद प्रार्थना करता है। इससे पहले कि तुम्हारी हांडियों में कांटों की आंच लगे, दुष्ट को बवण्डर उड़ा ले जाएगा। यहां पर जिन हांडियों का वर्णन है वे कांटों की आग से उबाले जाते हैं। कांटे बहुत जल्दी जल जाते हैं। दाऊद यहाँ यह प्रार्थना कर रहा है कि परमेश्वर अपना न्याय जल्द ही देश के दुष्ट शासकों के विरुद्ध प्रगट करे। वह भविष्यवाणी करता है कि यह न्याय तेज़ी से होगा।

प्रार्थना का परिणाम

भजन के दो अन्तिम वचनों में दाऊद बताता है कि परमेश्वर के न्याय का उसके देश पर क्या परिणाम होगा। पहले वचन 10 में, वह अपने पाठकों को बताता है कि जब परमेश्वर दुष्ट का न्याय करेगा तब धर्मी लोग आनन्दित होंगे और अपने पैरों को दुष्ट के लहू में धोएंगे। दाऊद हमें बता रहा है कि प्रभु का न्याय दुष्टों को नाश करेगा। उनका लहू देश में बहाया जाएगा। धर्मी उनके लहू में चलेगा। जबकि वह देश की गलियों में बहाया जाएगा तब वह अपने पाँव उसमें धोएगा। यह धर्मी की विजय का सम्पूर्ण चित्रण है।

दूसरी बात परमेश्वर के न्याय करने पर यह होगी कि पुरुष और स्त्रियां कहेंगे: ''निश्चय धर्मी के लिए फल है, निश्चय परमेश्वर है, जो पृथ्वी पर न्याय करता है। (वचन 11)। सारी पृथ्वी देखेगी कि परमेश्वर उन्हें फल देता है जो उससे प्रेम रखते हैं और वह पृथ्वी का न्याय करता है। दुष्ट शासकों के लिए बहुत देर हो चुकी थी, परन्तु सुनने वालों के लिए यह जाग उठने की पुकार थी।

दाऊद न्याय के लिए प्रार्थना कर रहा है। धर्मी दुष्ट के हाथों के नीचे अन्याय सह रहे थे। वह प्रार्थना करता है कि धर्मी दुष्ट पर जय पाएगा। यह हमारी आशा भी है, जब हम इस संसार को अन्याय और दुष्टता से भरा हुआ देखते हैं।

विचार करने के लिए:-

- भजनकार इस भजन में अपने दिनों के दुष्ट लोगों का वर्णन करने के लिए किन चित्रों का वर्णन करता है?
- आज अपने समाज में आप किस प्रकार की दुष्टता को देखते हैं?
- क्या हमें अपने देश में पाई जानेवाली दुष्टता के विरुद्ध प्रार्थना करनी चाहिए? वर्णन करें।
- एक विश्वासी के लिए इस भजन में क्या प्रतिज्ञा है?

प्रार्थना के लिए:-

- कुछ समय प्रार्थना के लिए निकालें और प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपके देश से अन्याय और भ्रष्टाचार को हटाए।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह उन सभी के लिए जय की वाचा बाँधता है, जो उस पर भरोसा रखते हैं।
- हमारे देश या क्षेत्र में अगुवाई करनेवालों के लिए प्रार्थना करें। परमेश्वर से कहें कि उनके मन और मस्तिष्क को छूए और उन्हें धार्मिकता और न्याय से शासन करने को तैयार करे।

57. गुर्राने वाले कुत्ते और सुरीला संगीत

पढ़ें भजन संहिता 59:1-17

प्रत्येक भजन को जानना उसके संदेश की सराहना में मदद करता है। इस विशेष भजन का परिच्छेद 1शमूएल 19:11-12 में मिलता हैं। यहाँ हम पढ़ते हैं कि कैसे शाऊल अपनी जलन के कारण दाऊद के घर पर उसे मारने के उद्देश्य से लोग भेजता है। तब मीकल, दाऊद की पत्नी ने उसे उस योजना के बारे में चेतावनी दी। दाऊद खिड़की से उतर गया और भाग कर बच निकला।

यह भजन स्पष्ट रूप से उसके दुश्मनों से सुरक्षा पाने की प्रार्थना है। वचन 1 का आरम्भ वह परमेश्वर से यह कहते हुए करता है। उसे उसके शत्रुओं तथा उसके विरुद्ध खड़े होनेवालों से छुड़ाए वह अपने शत्रुओं को दुष्टता करने वाले और लहू के प्यासे लोग बताता है। वे हिंसक लोग हैं जो उसकी घात में हैं और उसके विरुद्ध षडयंत्र करते हैं जबकि उसने कुछ गलत नहीं किया।

वचन 4 में, दाऊद परमेश्वर से सहायता की प्रार्थना करता है। प्रार्थना करता है कि न्याय दिला और जो दौड़े आते हैं उन्हें दण्ड दे। वह परमेश्वर से दूर तक जाकर कहता है कि उन पर अनुग्रह मत करना।

दाऊद अपने शत्रुओं की तुलना कुत्तों से करता है। वे सायं काल में उसके पास आते हैं। वे लोग सांझ को लौटकर कुत्ते के समान गुर्राते हैं और नगर के चारों ओर घूमते हैं। वे दुष्ट और गन्दे लोग हैं। उनके मुँह के भीतर तलवारे हैं। ये तलवारें दुष्ट और घात करने वाले शब्द हैं। ये वे शब्द हैं जो दूसरों को हानि पहुँचाते हैं। जो लोग ये शब्द बोलते हैं वे झूठी सुरक्षा के भाव में जीते हैं। वे महसूस करते हैं कि वे कुछ भी दुष्टता भरी बातें बोल सकते हैं और परमेश्वर कभी नहीं सुनेगा और न न्याय करेगा।

जितने शक्तिशाली और डरावने वे व्यक्ति लगते हैं, उनकी उस परमेश्वर से जो स्वर्ग में है तुलना नहीं की जा सकती। वह उनके कार्य देखता और उनके शब्दों पर कान लगाता है। परमेश्वर उनकी ढिठाई और घमण्ड पर हँसता है। इस कठिन समय में दाऊद परमेश्वर के चरित्र को याद करता है।

परमेश्वर दाऊद का बल है। उसने परमेश्वर की प्रतीक्षा अपनी सहायता के लिए की। उसने अपनी योग्यताओं पर भरोसा नहीं किया बल्कि परमेश्वर के बल और सामर्थ्य पर विश्वास किया। दाऊद एक शक्तिशाली व्यक्ति था। वह एक बुद्धिमान व्यक्ति था और उसके अधीन बहुत से महत्वपूर्ण और प्रभावित लोग थे। उसका बल

इन सब चीज़ों में नहीं था, बल्कि परमेश्वर में था। वचन 9 के अनुसार परमेश्वर दाऊद का गढ़ था। एक गढ़ के रूप में परमेश्वर ने उसे सब तरफ से घेरा और सुरक्षित किया। दाऊद तक पहुंचने के लिए शत्रु को परमेश्वर का सामना करना था।

ध्यान दें वचन 10 में, दाऊद परमेश्वर को एक प्रेमी पिता के रूप में सम्बोधित करता है। वह जानता है कि परमेश्वर ने उसे देखा और उसकी परिस्थितियों को जानता था। तौभी, सबसे महत्वपूर्ण यह सच्चाई थी कि दाऊद को पता था कि यह परमेश्वर उससे बहुत अधिक प्रेम करता था और शत्रु को उसका नाश नहीं करने देगा। अपने सामर्थ्य से परमेश्वर दाऊद को बचा सका लेकिन यह परमेश्वर का प्रेम था जिसने उसे ऐसा करने को प्रेरित किया। दाऊद के प्रेम के लिए परमेश्वर उससे पहले उसके शत्रुओं को मारने के लिए गया। उसने दाऊद के शत्रुओं को उसे घूरने और उसके नाम की झूठी निन्दा नहीं करने दी।

वचन 11 एक दिलचस्प वचन है। यहाँ दाऊद परमेश्वर को अपने शत्रुओं को न मारने के लिए कहता है। मरे हुए होंठ परमेश्वर की स्तुति नहीं कर सकते। दाऊद की इच्छा यह नहीं है कि उसके शत्रु नष्ट हो जाएं, परन्तु यह कि वे परमेश्वर को जान लें। दाऊद चाहता है कि परमेश्वर उसके शत्रु को सिर्फ दण्ड दे। वह चाहता है कि परमेश्वर उन्हें ऐसे भटकने के लिए छोड़ दे जिनका कोई घर नहीं होता। वह चाहता है कि परमेश्वर उनका बल खत्म कर दे और उन्हें नीचे ले आए। उनके शब्द दुष्ट और निन्दापूर्ण हैं। वे अपने होठों से शाप देते और झूठ बोलते हैं। दाऊद परमेश्वर से अपने शत्रुओं को क्षीण करने के लिए कहता है, बिना उनकी हत्या किए; ताकि पृथ्वी की हर छोर यह देख सके कि परमेश्वर से भागने और उसकी आज्ञाओं का निरादर करने का क्या परिणाम होता है। दाऊद चाहता था कि उसके शत्रु और पूरा संसार उसके परमेश्वर के आश्चर्यकर्म और सुन्दरता को देखे। आखिर में वह अपने शत्रुओं को परमेश्वर की स्तुति करने के लिए झुकते हुए देखना चाहता है।

दाऊद के शत्रुओं और दाऊद के इस भजन के समापन वचनों की तुलना पर ध्यान दें। उसके शत्रु सांझ को लौटकर कुत्ते के समान गुर्राते हैं और नगर के चारों ओर घूमते हैं। वे टुकड़े के लिए मारे मारे फिरते हैं और तृप्त न होने पर रात भर गुर्राते हैं।

इन दुष्ट कुत्तों का चीखना नगर में सुना जाता है, जबकि दाऊद परमेश्वर की सामर्थ्य के लिए सुरीली स्तुति करता है। वह सुबह उठकर परमेश्वर के महान और अनोखे प्रेम की स्तुति करता है। यही परमेश्वर संकट के समय में उसका शरण और गढ़ ठहरा है।

यह तुलना आश्चर्यजनक है। ये दुष्ट कुत्ते भूखे थे और ठंडे थे, क्योंकि ये नगर की गलियों में दिन रात भोजन ढूँढ़ते थे। ये घृणित और घात करने वाले शब्दों से चीखते और गुर्राते थे, जबकि दाऊद आराम से विश्वास के साथ अपने घर की गर्माहट में बैठा धन्यवाद और स्तुति गीत गा रहा है। उसका हृदय परमेश्वर में बलवन्त है और वह परमेश्वर के असीम प्रेम से सुरक्षित है।

इस अनुच्छेद पर विचार करने के बाद परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में मैं क्या चुनौती महसूस करता हूँ? मेरा मुश्किलों और परीक्षाओं में क्या जवाब होता है? क्या मैं चुपचाप और आराम से शत्रु का सामना करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि परमेश्वर का प्रेम और सामर्थ्य मुझे आनन्द देते हैं? परमेश्वर हमारी ज़रूरत के समय में हमें विश्वास और दाऊद के समान धन्यवादी हृदय दे।

विचार करने के लिए:-

- इस परीक्षा के समय में दाऊद का क्या भरोसा है?
- सामर्थ्य और प्रेम में क्या अन्तर है? आपको यह जानकर कितना उत्साह मिलता है कि परमेश्वर प्रेमी और सामर्थी दोनों है?
- आपके जीवन की परीक्षाओं में आपका क्या जवाब है?
- दाऊद की उसके शत्रुओं के लिए बनाए गए चित्र से तुलना करें। उनका भरोसा क्या है? उनका जीवन के प्रति क्या रवैया है?

प्रार्थना के लिए:-

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह सामर्थ्य और प्रेम का परमेश्वर है।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको परीक्षाओं के समय में दाऊद जैसा विश्वास दे।
- क्या आप जानते हैं कि किन लोगों के जीवनों की तुलना इस भजन में 'गुर्रारते हुए कुत्तों' से की जा सकती है? कुछ समय निकाल कर उन लोगों के लिए प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन पर अपने आपको अनोखे ढंग से प्रगट करे।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको आपके कठिन समय में धन्यवादी हृदय दे।

58. हमें पुन:स्थापित कर

पढ़ें भजन संहिता 60:1-12

इस भजन की तुलना अस्पष्ट सी है। पवित्रशास्त्र यहाँ पर पृष्ठभूमि में कोई कहानी नहीं बताता। हम पढ़ते हैं कि भजन तब लिखा गया जब दाऊद अरम्न हरैम और अमरसोबा से लड़ा था। और यह उस समय की बात है जब योआब ने लौटकर लोन की तराई में एदोमियो में से बारह हज़ार पुरुष मार डाले थे।

यह भजन नकारात्मक टिप्पणी से शुरू होता है। ''हे परमेश्वर, तू ने हम को त्याग दिया और हम को तोड़ डाला (वचन 1)। वहां स्पष्ट कारण होगा कि क्यों परमेश्वर उन लोगों से क्रोधित हुआ और अपनी उपस्थिति को वहां से हटा लिया। ऐसे समय आते हैं जब परमेश्वर हमारे पाप के कारण अपनी उपस्थिति हटा लेता है। इसका यह अर्थ नहीं कि हम अपना उद्धार खो सकते हैं। तथापि हमारा पाप परमेश्वर को अपनी आशीषें हमसे हटाने के लिए मजबूर करता है। योना नबी ने भी ऐसे ही परमेश्वर के अनुशासन को महसूस किया होगा जिसके कारण उसने बलवा किया और परमेश्वर की इच्छा का इन्कार करते हुए नीनवे जाने से इन्कार कर दिया। यहोशू जानता था कि क्यों परमेश्वर ने अपनी आशीषें वापस लीं जब उसी के सैनिकों में से किसी एक ने परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध यरीहो को लूट लिया था। नहीं पापों के कारण परमेश्वर की आशीषें उसके लोगों से हट गईं। जब उन्होंने अपना पाप अंगीकार किया, तब वे महान सफलता की ओर गए।

वचन 1 में, भजनकार परमेश्वर के सामने रोते हुए उन्हें एक राष्ट्र के रूप में पुन:स्थापित करने को कहता है। परमेश्वर अपने लोगों से क्रोधित था लेकिन फिर भी उनके लिए आशा थी हो सकता है कि आपने भी अपने पाप के कारण परमेश्वर का आप से अपनी उपस्थिति को वापस लेना महसूस किया हो। दाऊद हमें आशा देता है कि उसने विश्वास किया कि परमेश्वर अपने लोगों के पास जरूर लौटेगा।

ध्यान दें तब क्या हुआ जब परमेश्वर ने अपने लोगों के ऊपर से आशीष का हाथ उठा लिया था। वचन 2 में, हमें बताया गया है कि भूमि काँप गई और फाड़ डाली गई। भजनकार परमेश्वर से कहता है कि वह देश की दरारों को भर दे। परमेश्वर के लोग बहुत कठिन समय से गुज़र रहे थे।

वचन 4 के अनुसार, ये वे हैं जो विजयी हुए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का भय रखा। परमेश्वर ने शत्रु के विरुद्ध झण्डा फहराया। यह झंडा एक ध्वज और एक प्रकार का ऐसा चिन्ह है जो युद्ध के समय देश को एक प्रकार से प्रस्तुत करता है। इस तरह

से यह ध्वज परमेश्वर का ध्वज था जो यह दर्शाता था कि परमेश्वर अपने लोगों के शत्रुओं के विरुद्ध लड़ेगा। ध्यान दें, परमेश्वर का भय मानने वाले लोग ही इस ध्वज के नीचे खड़े रह सकेंगे और विजय का अनुभव कर पाएंगे।

भजनकार परमेश्वर के सम्मुख रोता है कि उसको और उसके लोगों को बचा ले। वचन 5 में ध्यान दें जबकि परमेश्वर के लोग कठिन समय का अनुभव कर रहे थे, भजनकार जानता है कि उनसे अभी भी प्यार किया जा रहा है। ऐसा समय आता है जब परमेश्वर अनुशासन सिखाता है और उनसे भी अपनी उपस्थिति ले लेता है जिनसे वह प्रेम करता है। अपनी क्रूस का पीड़ा के समय में प्रभु पुकार उठा, 'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे प्रभु, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया (मत्ती 27:46)। इन समयों में भी उसका प्रेम बना रहता है।

वचन 6, में परमेश्वर भजनकार की पुकार का उत्तर देता है। परमेश्वर अपने पवित्र स्थान से बोलता है। वह अपने लोगों के लिए जय का आदेश देता है। शकेम को बांट लिया जाएगा। अन्य शब्दों में, परमेश्वर यहूदा की सीमाओं को बढ़ाएगा। वे फिर से विजयी होंगे।

परमेश्वर गिलाद, मनश्शे, एप्रैम और यहूदा पर अपना राजदण्ड घोषित करेगा (वचन 7)। परमेश्वर को इन राज्यों को अपना कहने पर बहुत गर्व होता है। जबकि वर्तमान में उसका क्रोध खुल गया है और ऐसा दिन आएगा जब परमेश्वर का क्रोध हट जाएगा। ध्यान दें, एप्रैम उसके सिर का टोप है और यहूदा उसका राजदण्ड बल और ताकत को दर्शाता है। यहूदा और एप्रैम प्रतापी ढंग से इस्तेमाल किए जाएंगे। परमेश्वर फिर से उनको अधिकार देगा।

परमेश्वर के शत्रुओं के लिए, उनका भविष्य अजीब होगा। मोआब परमेश्वर के धोने का पात्र होगा। धोने का पात्र वहाँ होता है जहाँ लोग अपने हाथों और पैरों की गन्दगी धोते हैं। मोआब का न्याय होगा और वह परमेश्वर के क्रोध को देखेगा।

एदोम का भाग्य भी कुछ अच्छा नहीं है। परमेश्वर एदोम पर अपना जूता फेंकेगा। यह बड़ा अपमान होगा। एदोमियों की हार होगी। पलिश्त भी हारेगा। परमेश्वर अपनी विजय का जयजयकार इन पर करेगा।

परमेश्वर अपने लोगों को विजय देगा। वे अपने शत्रुओं के दृढ़ नगरों पर जयजयकार करेंगे। उनकी आशा भजनकार के अनुसार केवल परमेश्वर में है जिसका उन्होंने इन्कार किया था। भजनकार परमेश्वर को उनकी सहायता के लिए बुलाता है। वह यह जान पाता है कि मानव शक्ति में कोई आशा नहीं है। परमेश्वर में होकर वे अपने शत्रुओं को रौंद सकेंगे।

परमेश्वर क्रोधित था और अपने लोगों के पाप के कारण उसने अपनी उपस्थिति को वहाँ से हटा दिया था वह उनके पास लौटने और उन्हें फिर से आशीषें को देने को तैयार था यदि वे उसकी ओर फिरें और उसका भय मानें। इसके लिए ज़रूरी था कि

परमेश्वर के लोग अपने पाप का अंगीकार करें और यह जानें कि वही उसकी एकमात्र आशा था।

परमेश्वर अनुग्रहकारी और हमारे पाप के विद्रोह को क्षमा करने को तैयार है। हालांकि कुछ समय के लिए परमेश्वर अपनी उपस्थिति वापस ले लेता है, लेकिन हमारे उसकी अधीनता में आ जाने पर वह फिर से सामर्थ्य देता है। दुखद सच्चाई यह है कि बहुत से लोगों को यह पता ही नहीं लगा कि परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति हटा ली है। उन्होंने यह सोचा कि उनकी हार और परायज सामान्य है। उन्होंने कभी भी उस विजय की खोज नहीं की जो उनकी हो सकती थी।

विचार करने के लिए:-

- क्या सभी विजय परमेश्वर की हैं? क्या हम किसी बात में विजयी होकर भी परमेश्वर की इच्छा में नहीं हो सकते हैं?
- क्या आपके जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति का कोई प्रमाण है? क्या आप ऐसे समय से होकर गुज़रे हैं जब ऐसा लगा हो कि परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति हटा ली है?
- आपको इस बात से क्या सांत्वना मिलती है कि जब भी हम पुकारते हैं परमेश्वर हमारे पास आ जाता है?
- हम कैसे परमेश्वर की अनुपस्थिति का अहसास कर सकते हैं?

प्रार्थना के लिए:-

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि जब हम उसके पास आते हैं तो वह हमें पुन:स्थापित करता है।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको और आपकी कलीसिया को सामर्थ्य दे। परमेश्वर से कहें कि हर प्रकार के मानवीय बल के विश्वास को तोड़े।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको पाप की जानकारी देते हुए बताए कि हमें क्या चीज़ परमेश्वर से दूर करती है।

59. एक राजा का निवेदन

पढ़ें भजन संहिता 61:1-8

भजन 61 में दाऊद की प्रार्थना है। इसमें वह परमेश्वर से बहुत से महत्वपूर्ण निवेदन करता है। वह यह कहते हुए आरम्भ करता है कि वह उसकी पुकार को सुने और उसके निवेदनों की ओर कान लगाए। उसके निवेदन में भरोसे का भाव है। दाऊद जानता है कि वह परमेश्वर के पास जा सकता है और वह उसकी सुनेगा। वह परमेश्वर से निधड़क होकर सुनने के लिए कहता है। वह जानता है कि हालांकि परमेश्वर उससे बढ़कर महान है, वह फिर भी परमेश्वर के पास अपने निवेदन ला सकता है।

हमें यह नहीं बताया गया कि इस प्रार्थना के आस-पास की क्या परिस्थितियां थीं। ध्यान दें, हालांकि वचन 2 में, दाऊद कहता है, 'मैं तुझे पृथ्वी की छोर से भी पुकारूंगा'। हम यह नहीं जानते कि इस समय दाऊद कहाँ पर था परन्तु हम यह अंदाज़ा लगा सकते हैं कि वह अपने घर से दूर किसी यात्रा पर था। उसे विश्वास था कि हालांकि वह अपने घर से बहुत दूर है, लेकिन परमेश्वर वहां उपस्थित है और उसकी प्रार्थना सुनेगा।

वचन 2 में, ध्यान दें दाऊद का हृदय मूर्छित हो जाता है। हमें नहीं पता कि वह मूर्छित क्यों था। उसके मूर्छित होते समय वह परमेश्वर से कहता है कि जो चट्टान ऊँची है उस पर उसे ले जा। दाऊद को आराम चाहिए था। जिस चट्टान की यहां बात की गई है वह उसे उन पीड़ाओं में शरण देगी जिनका वह अनुभव कर रहा था। अन्तिम चट्टान परमेश्वर ही था। उसमें दाऊद अपने परिश्रम से आराम पाता है। उसमें वह अपने शत्रुओं के तीरों से सुरक्षित है। यहां पर यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि दाऊद ने परमेश्वर को अपनी चट्टान माना जो उससे कहीं अधिक महान है। उसने जाना कि यह चट्टान संकट में शरण की चट्टान और युद्ध के बीच में मजबूत गढ़ है।

यहां पर यह ध्यान देना चाहिए कि यह प्रार्थना सिर्फ एक घायल और थके हुए व्यक्ति की नहीं है। यह उस मनुष्य की प्रार्थना है जो परमेश्वर में आनन्दित रहता है। ध्यान दें वचन 4 में, दाऊद यह इच्छा रखता है कि वह परमेश्वर के तम्बू में युगानुयुग बना रहे और परमेवर के पंखों की ओट में शरण लिए रहे। यह चित्रण घनिष्ठता का है। यह दाऊद की इच्छा है कि वह परमेश्वर के निवास-स्थान में वास करने पाए। वह परमेश्वर की अद्भुत उपस्थिति को जानना व अनुभव करना चाहता था। उसके साथ संगति करना चाहता था। वचन 4 में पंखों की ओट के संदर्भ पर ध्यान दें। दाऊद यहां

एक मादा पक्षी का चित्रण परमेश्वर की समानता में करता है जो अपने पंखों तले अपने बच्चों को शरण देती और सुरक्षित रखती है। इस तरह का ही सम्बन्ध दाऊद का परमेश्वर के साथ था।

वचन 5 में दाऊद जान पाता है कि परमेश्वर ने उसकी मन्नतें सुनीं और जो उसके नाम से डरते हैं, उनका सा भाग उसने दाऊद को दिया। आंशिक रूप में वह भाग यह दर्शाता है कि दाऊद ने परमेश्वर के सम्बन्ध का आनन्द उठाया। वह भाग जो दाऊद का था वह घनिष्ठ और व्यावहारिक सम्बन्ध था। वह उसकी आशीषों और सुरक्षा में सन्तुष्ट था। वह परमेश्वर की उपस्थिति के साथ संगति रखने में सन्तुष्ट था।

यहाँ पर यह अस्पष्ट है कि दाऊद किन मन्नतों की बातें करता है जो उसने परमेश्वर के साथ बाँधी। परन्तु मैं इन मन्नतों को इस प्रकार देखता हूँ जो पत्नी अपने पति को विवाह के समय देती है। क्या यह वह मन्नते हैं जो दाऊद ने परमेश्वर से प्रेम रखने और उसकी सेवा करने को कहीं? परमेश्वर उन प्रतिज्ञाओं को जो हम उससे करते हैं बहुत गम्भीरता से लेता है। दाऊद जानता है कि वह परमेश्वर के साथ प्रतिज्ञाबद्ध है। वह उसकी उन मन्नतों को पूरा करना चाहता था।

दाऊद ने परमेश्वर के साथ एक विशेष सम्बन्ध का आनन्द उठाया। यह सम्बन्ध घनिष्ठता का और गहरी संगति का था। दाऊद ने परमेश्वर के साथ रहने और उसकी सुरक्षा और आशीषों को जानने की इच्छा की है। दाऊद अपने देश का अगुवा था। कल्पना करें कि यदि हमारे देशों के अगुवों का हृदय भी परमेश्वर के लिए ऐसा ही हो जाए तो क्या होगा।

वचन 6 और 7 में दाऊद की परमेश्वर से तीन प्रार्थनाएं थीं। हम एक एक करके इन्हें समझेंगे।

राजा की आयु को बहुत बढ़ाना

वचन 6 में दाऊद परमेश्वर से कहता है कि उसकी आयु और उसकी पीढ़ी की आयु को बढ़ा। इस प्रार्थना के पीछे क्या कारण था?

दाऊद यह भी कह सकता था कि परमेश्वर उसे उसके शत्रुओं से बचाए ताकि वह उनके हाथों में न पड़े। ऐसा लगता है कि वह इसलिए परमेश्वर से अपनी आयु बढ़ाने के लिए कहता है कि वह उसकी सेवा और आदर कर सके। यह दिखाता है कि किसी समय दाऊद को यह डर था कि उसका जीवन छोटा होगा।

ध्यान दें, दाऊद इस निवेदन में यह कहता है कि परमेश्वर आयु को बढ़ाएगा और उसके वर्ष पीढ़ी-पीढ़ी के बराबर होंगे। एक तरफ दाऊद एक लम्बा जीवन जीना चाहता है और अपने बच्चों के बच्चों को देखना चाहता है। उसकी इस इच्छा में लम्बे जीवन जीने से बढ़कर कुछ और है। क्या दाऊद परमेश्वर से यह कह रहा है कि आनेवाली पीढ़ियाँ उसकी विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता के कारण धन्य हों? हम अपने बच्चों तक पवित्र भाग को अपने उदाहरणों द्वारा पहुंचाते हैं। माता और पिता का

प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है। दाऊद चाहता है कि जिन आशीषों का अनुभव उसने किया उसकी पीढ़ियाँ भी उनका अनुभव कर सकें।

स्पष्टीकरणों से भी कुछ और अधिक महत्वपूर्ण है। कुछ इस वचन को प्रभु यीशु में देखते हैं जो दाऊद के वंश में जन्म लेते हैं? दाऊद के वंशज होने की कारण, प्रभु यीशु सदैव का राजा है। दाऊद के इस महत्वपूर्ण वंशज के कार्यों के द्वारा आने वाली पीढ़ियां धन्य होंगी और परमेश्वर की ओर खींची जाएंगी।

दाऊद की पहली प्रार्थना है कि परमेश्वर उसे उसके शत्रुओं के ऊपर विजय दे और परमेश्वर की महिमा करने के लिए उन मौकों को खोल दे कि आनेवाली पीढ़ी पर इसका प्रभाव पड़े। आप और मैं आने वाली पीढ़ी के लिए क्या भाग छोड़ रहे हैं?

परमेश्वर की उपस्थिति में बैठना

दाऊद की दूसरी प्रार्थना यह है कि वह परमेश्वर के सम्मुख सदा बना रहे। दाऊद सांसारिक शासन की नहीं स्वर्गीय शासन की बात कर रहा है। दाऊद कह रहा है कि उसे परमेश्वर के साथ बैठने का अनंत अधिकार दिया जाए। दाऊद उसकी उपस्थिति में संगति और आनन्द पाता है। वह सदैव उसके साथ बैठेगा और परमेश्वर के साथ आनन्द और घनिष्ठता का लाभ उठाएगा। दाऊद का हृदय परमेश्वर के लिए है। वह परमेश्वर के साथ अनन्त काल तक रहना चाहता है। वह इस पृथ्वी पर की गई विश्वासयोग्य सेवा का इनाम लेना चाहता है। वह महिमा का मुकुट पाना चाहता और सदा परमेश्वर की उपस्थिति में रहना चाहता है।

यह हममें से प्रत्येक के लिए भी महत्वपूर्ण प्रार्थना है। परमेश्वर हमें हमारी विश्वासयोग्य सेवा के लिए मुकुट पहनाए और हम परमेश्वर की उपस्थिति की संगति और आनन्द का लाभ उठाते रहें। दाऊद का हृदय इस पृथ्वी पर नहीं लगा था। वह अपने परमेश्वर की चाह रखता है।

अपने प्रेम और विश्वासयोग्यता को रक्षा के लिए ठहरा

दाऊद की तीसरी प्रार्थना यह है कि परमेश्वर अपनी विश्वासयोग्यता और प्रेम को उसकी रक्षा के लिए ठहरा रखे। दाऊद का विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के प्रेम और विश्वासयोग्यता में है। युद्ध के समय में जब वह अपने जीवन के लिए भाग रहा था, उसे इस बात से बहुत सांत्वना मिली कि परमेश्वर उससे प्रेम रखता है जिसकी प्रतिज्ञाएं कभी असफल नहीं होतीं। दाऊद ने कभी अपनी समस्याओं को हटाने के लिए नहीं कहा। बल्कि, उसने परमेश्वर से उसके कभी न कम होने वाले प्रेम और विश्वासयोग्यता को इस समय के लिए मांगा। परीक्षाएं और मुश्किलें हमारे लिए ऐसा समय है जब हम परमेश्वर के अनोखे प्रेम और विश्वासयोग्यता को गहरे ढंग से अनुभव कर सकते हैं।

दाऊद अंत में प्रार्थना के साथ प्रतिज्ञा करता है कि वह परमेश्वर के नाम का भजन गा गाकर अपनी मन्नते हर दिन पूरी किया करेगा। (वचन 8)

विचार करने के लिए:–

- हमें इस बात से कितना आश्वासन मिलता है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएं सुनता है?
- परमेश्वर की तुलना चट्टान से कैसे की जा सकती है?
- इसका क्या प्रमाण है कि इस भजन में दाऊद परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाना चाहता है। क्या आप बता सकते हैं कि आप भी ऐसी ही घनिष्ठता के पीछे भाग रहे हैं?
- दाऊद ने क्यों परमेश्वर से उसके दिन बढ़ाने को कहा? आप पर यह व्यक्तिगत रूप से कैसे लागू होता है?

प्रेम और विश्वासयोग्यता हमारी सुरक्षा कैसे हैं?

प्रार्थना के लिए:-

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह आपके लिए चट्टान है। उसे धन्यवाद दें कि उसे आपको अपने पंखों के नीचे शरण देने में आनन्द मिलता है।
- परमेश्वर से कहें कि वह इस संसार पर परमेश्वर के लिए आपके प्रभाव को बढ़ाए।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि जो उसके प्रति विश्वासयोग्य हैं वे परमेश्वर के साथ स्वर्ग में अनन्तकाल के जीवन का आनन्द उठाएंगे।

60. मज़बूत और प्रेमी परमेश्वर

पढ़ें भजन संहिता 62:1-12

समस्याओं का सामना करते समय दाऊद ने अपनी आँखें परमेश्वर की ओर लगाईं और परमेश्वर में महान् आराम को पाया। दाऊद इस भजन का आरम्भ अपने पाठकों को यह याद दिलाते हुए करता है कि मेरी आत्मा परमेश्वर में ही आराम पाती है। ऐसी बहुत सी चीज़ें थीं जो दाऊद का ध्यान अपनी ओर खींच सकती थीं। उसके जीवन में आराम और आनन्द की कोई कमी नहीं थी। लेकिन फिर भी दाऊद ने यह निष्कर्ष निकाला कि इनमें से कोई भी सांसारिक वस्तु उसकी आत्मा को सन्तुष्ट नहीं कर सकती। केवल परमेश्वर ही उसके आत्मा के खालीपन को भर सकता है।

दाऊद जानता था कि उसका उद्धार परमेश्वर की ओर से था। दाऊद के पास शक्तिशाली सेना थी, पर उसकी सेना में उसके लिए कोई उद्धार नहीं था। वह धन और सम्पन्नता से घिरा हुआ था परन्तु इनमें भी उसके लिए कोई आशा नहीं थी। दाऊद का उद्धार परमेश्वर की ओर से आया।

वचन 2 में दाऊद हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर उसकी चट्टान और उद्धार था। चट्टान होने पर परमेश्वर कभी कभी नष्ट नहीं हो सकता। हमले के समय पर वह दाऊद की अमेघ शरण था।

दाऊद परमेश्वर को गढ़ बताता है। जब तक दाऊद उस गढ़ में है, वह थरथराएगा नहीं। कोई उस पर विजयी नहीं हो पाएगा। उस गढ़ में दाऊद सुरक्षित और विश्वास में है। परमेश्वर ही उसकी रक्षा करने वाला है। दाऊद अपने पर और अपनी सेना पर कोई भरोसा नहीं रखता। परमेश्वर ही उसकी मज़बूत नींव और शरण है।

अपने शत्रुओं से बोलते समय दाऊद पूछता है, ''तुम कब तक एक मनुष्य को घात करोगे?'' दाऊद को लगता है कि उसके शत्रु उसे नष्ट करना चाहते हैं। मनुष्य अपनी तरफ से सर्वोत्तम करते हुए भी कमज़ोर हैं। दाऊद उनकी तुलना झुकी हुई भीत या गिरते हुए बाड़े से करता है। वे कमज़ोर हैं और गिरने के लिए तैयार हैं। हमें अन्त:शक्ति और क्षमता के प्रति महामहिम दृष्टिकोण रखते हैं। हमें पता नहीं कल होंगे भी या नहीं। वर्तमान में हमारा जीवन हमसे लिया जा सकता है। हमें मनुष्यों पर विश्वास रखने का साहस नहीं करना चाहिए। एक मनुष्य के रूप में दाऊद की अपने बल और शक्ति के बारे में कोई धारणा नहीं। वह जानता था कि परमेश्वर की सुरक्षा न होने पर वह गिर सकता है।

दाऊद के शत्रुओं की इच्छा स्पष्ट थी। वे उसे गिराना चाहते थे वे उसे उसके ऊँचे स्थान से गिराना चाहते थे।

दाऊद के शत्रुओं के विश्वास के स्रोत पर ध्यान दें। उन्हें झूठ बोलने और धोखा देने में आनन्द मिलता था। यह शैतान की रणनीति है। शैतान का परमेश्वर पर कोई बल नहीं चलता। वह झूठ और धोखे का पिता है। उसने अदन की वाटिका में झूठ बोला और तब से ही झूठ बोलता आ रहा है। धोखे और धूर्तता के द्वारा वह लोगों को सच्चाई के मार्ग से फेर लेता है। दाऊद के शत्रु शैतान के झूठ पर विश्वास करते हैं। वे विश्वास करते हैं कि वे मजबूत हैं और वे सब कुछ कर सकते हैं, जो वे करना चाहते हैं। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर भी उनके सामने खड़ा नहीं होगा।

इस भ्रम और दुर्व्यवस्था में दाऊद अपने आपको वचन 5 में याद दिलाता है कि परमेश्वर में ही विश्राम मिलता है। उसकी आशा परमेश्वर में ही है। ध्यान दें, दाऊद फिर बताता है कि परमेश्वर उसकी उद्धार की चट्टान और गढ़ है (वचन 6) दाऊद के इन वचनों में सुरक्षा और आराम है?

वचन 7 में, दाऊद अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि उसके उद्धार और महिमा का आधार परमेश्वर है, जो उसकी दृढ़ चट्टान और शरण स्थान है। फिर से परमेश्वर पर बल दिया गया है न कि मनुष्य और उसके बल पर। सब कुछ परमेश्वर और उसके बल पर निर्भर करता है। उसका भरोसा और विश्वास परमेश्वर पर ही है।

दाऊद सब लोगों को अपना भरोसा हर समय परमेश्वर पर रखने की चुनौती देता है। वह उन्हें उनकी ज़रूरत के समय पर अपना हृदय परमेश्वर के लिए उंडेल देने की चुनौती देता है। वह कहता है कि परमेश्वर को परखकर देखें। वह इस बात से सुनिश्चित है कि परमेश्वर सहायता के लिए आता है जबकि हम उसके पास आते हैं।

वचन 9 में, दाऊद कहता है कि सचमुच नीच लोग तो अस्थायी और बड़े लोग मिथ्या हैं। दाऊद यहां पर क्या कहना चाहता है? यह संदर्भ बताता है कि मनुष्य के बल से ज्यादा परमेश्वर पर भरोसा रख। जब मनुष्यों पर भरोसा रखने की बात आती है तो नीच लोग और गरीब लोग तो केवल श्वास के समान होते हैं यह सोचिए कि आप अपने दुश्मन का सामना करते हैं तो अपने आप को बचाने के लिए आप सिर्फ उन्हें अपनी श्वास उड़ा सकते हैं। आपको क्या भरोसा है? आप शत्रु की तलवारों और भालों के सामने किसी काम के नहीं होंगे।

बहुतों ने इस तरह से बहुत सा धन कमाया परन्तु वह उन्हें याद दिलाता है कि यह धन न तो उनके लिए छुटकारे को खरीद पाएगा और न ही उनके लिए किसी भी तरह से सहायक होगा, जब प्रभु न्याय के लिए आएगा।

बड़े लोगों की तुलना में उन पर भरोसा रखना झूठ पर भरोसा रखना है। इन बड़े लोगों की शक्ति और बल जो दिखाता है वह झूठ साबित होती है। जब युद्ध की बात होती है, तब वे नीच लोगों के समान कुछ काम के नहीं होते। दाऊद कहता है कि

यदि इन बड़े लोगों को तौला जाए तो कुछ भी नहीं निकलेगा। वे खुद ही अस्थायी हैं।

दाऊद अपने पाठकों को मनुष्य के बल पर भरोसा न करने की चुनौती देता है। वह यह चुनौती भी देता है कि सांसारिक धन पर भरोसा मत रखो। वचन 10 में वह चोरी और छीना झपटी से कमाए हुए धन के बारे में बताता है। ऐसा लगता है कि वह अपने दिनों के महान और शक्तिशाली अगुवों के बारे में बता रहा है जिन्होंने इसी तरह से धन प्राप्त किया था। ये लोग सोचते थे कि इनका धन इन्हें बल देगा। ये विश्वास करते थे कि इनका पैसा इन्हें विजय दिलाएगा। दाऊद स्वीकार करता है कि उद्धार केवल परमेश्वर में ही है।

मनुष्य के बल और धन पर भरोसा रखने के बजाय दाऊद ने अपना भरोसा उस पर रखा जो उसने परमेश्वर के बारे में सीखा था। दाऊद ने परमेश्वर के बारे में दो महत्त्वपूर्ण बातें सीखीं। पहली, कि परमेश्वर बलवान है। परमेश्वर का बल मनुष्यों के बल से भी अधिक महान है। परमेश्वर शक्तिशाली है और अपने समय की शक्तियों में सबसे महान है जो एक दिन उसके सामने झुक कर हार जाएंगी। दाऊद का भरोसा परमेश्वर और उसके बल पर है।

दूसरी चीज़, दाऊद ने परमेश्वर के बारे में यह सीखी कि वह प्रेमी है। (वचन 12)। प्रेम के बिना बल भयानक होगा। यदि परमेश्वर ने हमसे प्रेम न किया होता; तो उसका बल हमें कितना अच्छा लगता? वह हमारी रक्षा करने के बजाय हमारा न्याय करने आता। तब हमारी पराजय होती। क्योंकि परमेश्वर ने हम से प्रेम किया, इसलिए हमारे पास आशा है। उसका बल ज़रूरत के समय में हमारा सहायक होता है। प्रेम में, वह हमारी दुर्दशा को देखता है और हमारी सहायता के लिए आता है। क्योंकि परमेश्वर बलवान और प्रेमी है, हमारे पास आशा है, उद्धार है और अनोखी संगति है।

शक्तिशाली होने पर दाऊद का भरोसा स्वयं पर न ही था और नहीं धन पर, बल्कि परमेश्वर पर ही था। हमारा विश्वास भी उस पर बना रहे।

विचार करने के लिए:-

- क्या आपने कभी अपनी परीक्षाओं और मुश्किलों में अपने आप को मनुष्य के बल पर भरोसा करते हुए पाया? दाऊद इस भजन में मनुष्य के बल के बारे में क्या बताता है?
- दाऊद इस भजन में दाऊद किन उद्धरणों द्वारा परमेश्वर का वर्णन करता है? वह मनुष्यों का वर्णन करने के लिए किन उद्धारणों का प्रयोग करता है?
- मनुष्यों को अपना भरोसा और आशा किस पर रखनी चाहिए।
- परमेश्वर के बल के साथ-साथ उसके प्रेम पर भरोसा रखना कितना महत्वपूर्ण है? यह दोनों विशेषताएं किस प्रकार मिलकर काम करते हैं?

प्रार्थना के लिए:-

- परमेश्वर से कहें कि वह आपको उन समयों के लिए क्षमा करे जब आपने अपना सम्पूर्ण भरोसा उस पर नहीं रखा था।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह आपके उद्धार की चट्टान और गढ़ है।
- क्या आप किसी ऐसे को जानते हैं जो इस समय मुश्किल समयों से गुजर रहा है? कुछ समय निकाल कर परमेश्वर से कहें कि वह उनका बल बने।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह सिर्फ अति बलशाली नहीं परन्तु महान् और उमण्डने वाला प्रेम भी रखता है।

61. सन्तुष्ट

पढ़ें भजन संहिता 63:1-11

दाऊद ने यह भजन उस समय को याद करते हुए लिखा जब वह यहूदा के जंगल में था। दाऊद एक सुनसान जगह पर था। हो सकता है कि आप दाऊद के साथ अपनी आज की परिस्थिति में अपने आप को रख पा रहे हैं। इस भजन में दाऊद अपनी परमेश्वर के भीतरी भावनाओं को बांटता है। इस सुनसान जगह पर दाऊद की आँखें परिस्थितियों पर नहीं बल्कि परमेश्वर पर हैं। हमारे जीवन में भी ऐसा केन्द्र होना चाहिए।

दाऊद वचन 1 में शुरू करते हुए परमेश्वर को पुकारता है। ध्यान दें, वह कहता है कि परमेश्वर उसका परमेश्वर है। उसमें और परमेश्वर में गहरा सम्बन्ध है। उसे परमेश्वर को पुकारते हुए गर्व होता है और उसका अपने जीवन में आदर करता है। वह परमेश्वर को अपना परमेश्वर कहकर अन्य देवताओं का इन्कार करता है। उसका केवल एक ही परमेश्वर है।

इस पर भी ध्यान दें कि दाऊद कहता है कि उसने परमेश्वर को यत्न से ढूंढा किंग जेम्स वर्ज़न में 'यत्न' का अर्थ 'जल्दी' है। अन्य शब्दों में, दाऊद अपने हृदय और मन से परमेश्वर के साथ सुबह उठता है। वह उसे परिश्रम और उत्साह से ढूँढता है।

दाऊद वचन 1 में अपने परिश्रम और इच्छा की तुलना प्यास से करता है। रेगिस्तान में दाऊद जानता है कि प्यास क्या होती है। उसकी आत्मा और प्राण परमेश्वर को ऐसे ढूंढते हैं जैसे एक प्यासा हिरण रेगिस्तान में पानी ढूंढता है। उसका पूरा शरीर परमेश्वर की इच्छा ऐसे करता है जैसे थका-माँदा यात्री ऐसे देश से गुज़र रहा हो जहाँ पानी नहीं है। इस थके-मांदे और प्यासे यात्री के लिए पानी से बढ़कर कुछ नहीं है। ऐसा यात्री पानी के लिए अपनी इच्छा से कुछ भी दे देगा। यही दाऊद भी अपने परमेश्वर के लिए महसूस करता है। परमेश्वर उसके लिए उपभोग मनोभाव है। उसके लिए कुछ महत्व नहीं रखता, यदि वह परमेश्वर को नहीं खोज पाता।

वचन 2 में, दाऊद परमेश्वर से कहता है कि उसने पवित्रस्थान में दृष्टि की कि उसकी सामर्थ्य और महिमा को देख सके। दाऊद परमेश्वर की सामर्थ्य और महिमा का अनुभव करता है। दाऊद के लिए परमेश्वर वास्तविक है। दाऊद सिर्फ कुछ सिद्धान्तों ही से चिपका नहीं है बल्कि परमेश्वर के साथ एक वास्तविक और घनिष्ठ व्यक्ति के रूप में।

दाऊद ने केवल परमेश्वर की सामर्थ्य और महिमा का अनुभव किया बल्कि उसके प्रेम का भी। ध्यान दें वचन 3 में, वह कैसे अपना प्रेम व्यक्त करता है। वह अपने पाठकों को बताता है कि जो परमेश्वर का प्रेम का वह अनुभव करता है वह उसके जीवन से भी बढ़कर है। दाऊद अपने परमेश्वर के प्रेम में ऐसा खींचा चला जाता है कि वह अपना जीवन उस प्रेम के लिए न्यौछावर करने के लिए तैयार है। वह अपने जीतने से कहीं अधिक परमेश्वर के प्रेम को मूल्य देता है। उस प्रेम के कारण वह सदैव उसकी महिमा करेगा। जब तक वह जीवित है, वह अपना हाथ स्तुति के लिए उठाएगा; क्योंकि परमेश्वर अद्‌भुत और प्रेमी परमेश्वर है।

दाऊद की आत्मा जीवित परमेश्वर के द्वारा ही सन्तुष्ट होती है (वचन 5)। वह अपनी सन्तुष्टि की तुलना उस व्यक्ति की सुन्तुष्टि से करता है जो मानो चर्बी वाले और चिकने भोजन से तृप्त होता है। उसकी आत्मा भर जाती है और पूरी तरह से सन्तुष्ट होती है। परमेश्वर निम्न चीज़ों के लिए उसकी भूख को ले लेगा। उसकी गहरी इच्छा यही है कि वह परमेश्वर में ही सन्तुष्ट रहे। इस संसार में ऐसे बहुत से लोग हैं जिनकी आत्माएं अभी भी भूखी हैं। वे एक जगह से दूसरी जगह जाती हैं ताकि अपनी भूख को भर सकें, परन्तु कुछ भी उनके हृदयों के खालीपन को नहीं भर पाता। दाऊद अपने परमेश्वर में सम्पूर्ण सन्तुष्टि का अनुभव करता है। इस कारण, दाऊद अपने होठों से उसकी स्तुति करता है।

वचन 6 में, दाऊद कहता है कि वह परमेश्वर को रात में अपने बिछौने पर स्मरण करता है। हमने देखा कि दाऊद ने भोर के समय में परमेश्वर को ढूंढ़ा। अब हम देखते हैं कि वह रात को अपने बिछौने पर जाने के बाद भी उसे ढूंढता है। रात के दौरान वह परमेश्वर के बारे में सोचता है। उसका हृदय इस आनन्द से भरा हुआ है और वह रात को सोते समय भी उसकी उपस्थिति को अनुभव करना चाहता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वह अपनी दिन भर की आशीषों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता है। रेगिस्तान में होने पर भी वह आराम करता है क्योंकि वह जानता है कि परमेश्वर उसका सहायक था। दाऊद जानता है कि परमेश्वर उसे देखता और सम्भालता है। वह प्रभु के पंखों की छाया में विश्राम करता है और इसी कारण मरूस्थल की गर्मी में भी उसकी स्तुति कर सका। जब वह आराम करता है, वह अपनी सारी चिन्ताएं और स्वयं को परमेश्वर को सौंप देता है।

दाऊद वचन 8 में बताता है कि उसका मन परमेश्वर के पीछे-पीछे लगा चलता है। किंग जेम्स वर्ज़न में 'पीछे चलना' का अर्थ है 'मुश्किल से पीछा करना'। यहां यह भाव है कि दाऊद ने परमेश्वर के पीछे चलने के भरसक प्रयास किए और उसमें निवास पाया। उसको पता है कि परमेश्वर के अतिरिक्त और सुरक्षा नहीं है। वह अपने परिश्रम को परमेश्वर में निवास पाने और सब बातों में उस पर निर्भर रहने में लगाता है। जैसा उसने किया, परमेश्वर का दाहिना हाथ उसे पकड़े रहा। दाऊद ने अपने आपको परमेश्वर को दिया और उसमें सच्चाई से बना रहा। यह परमेश्वर था जिसने उसकी इस इच्छा को

सच्चाई में बदला। परमेश्वर दाऊद को पकड़े रहा इसलिए वह नहीं गिरा।

दाऊद अपने शत्रुओं का सामना विश्वास के साथ कर सका। जो उसके जीवन के खोजी थे वे नष्ट हो गए और पृथ्वी की गहराई के नीचे चले गए। वे तलवार से मारे गए और गीदड़ों का आहार हो गए। दाऊद परमेश्वर के कारण आनन्दित है। जो कोई परमेश्वर की शपथ खाएगा वह बड़ाई करने पाएगा अर्थात् जो कोई परमेश्वर पर भरोसा रखेगा वह लज्जित नहीं होगा। वे उसके सामर्थ्य और प्रेम का अनुभव करेंगे। वे परमेश्वर के कारण उसने नाम की स्तुति करेंगे।

हम भी दाऊद की तरह ही इस परमेश्वर को जान सकते और अनुभव कर सकते हैं। जो परमेश्वर की सेवा नहीं करते उनके मुँह बन्द किए जाएंगे, और जो उससे प्रेम रखते हैं वे उसकी स्तुति सदैव करेंगे। क्योंकि वह रेगिस्तान में एक के बाद एक विजय का अनुभव करते हैं।

विचार करने के लिए:-

- दाऊद ने किन परिस्थितियों में यह भजन लिखा? क्या आप भी अपने आपको इसी तरह की परिस्थिति में पाते हैं? वर्णन करें।
- परमेश्वर के बारे में जानने और परमेश्वर को व्यावहारिक रूप से जानने में क्या अन्तर है?
- क्या आपने दाऊद के समान भूख और प्यास को अनुभव किया है? प्रभु परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत संबन्ध और उसके लिए लालसा रखने के बारे में बताएं।
- क्या आपकी आत्मा परमेश्वर में पूरी तरह सन्तुष्ट है? वर्णन करें।
- क्या ऐसी चीज़ें हैं जो आपके और परमेश्वर के बीच में आती हैं? वे क्या हैं?

प्रार्थना के लिए:-

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह आप तक पहुँचना चाहता है, जब आप रेगिस्तान का अनुभव अपने जीवन में कर रहे होते हैं।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको और अधिक भूख और प्यास दे। परमेश्वर से क्षमा मांगें कि अब तक आपने उसके लिए इच्छा रखने में कमी रखी।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको अपना 'पीछा करना' सिखाए।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपके जीवन से हर वह बात हटा दे जो आपको परमेश्वर पर पूरी तरह से भरोसा करने से रोकती है।

62. एक शिकायत और प्रतिज्ञा

पढ़ें भजन संहिता 64:1-65:13

भजन 64 और 65 दोनों दाऊद के भजन हैं। हम इन दोनों को इस अध्याय में देखेंगे। भजन 64 में, दाऊद परमेश्वर के सम्मुख शिकायत लाता है। भजन 65 में, वह हमसे महान आशीषों को बताता है जो परमेश्वर उसकी सेवा करने वालों की प्रतीक्षा में है।

दाऊद भजन 64 में प्रभु परमेश्वर से शिकायत करते हुए शुरू करता है। जबकि वचन 1 में वह अपने शब्दों को शिकायत के रूप में बोलता है परन्तु सच्चाई में यह एक प्रार्थना है जिसमें परमेश्वर से अगुवाई व सुरक्षा मांगी गई है, जब हमारे चारों ओर भयानक चीज़ें हो रही होती हैं।

वह परमेश्वर से यह कहते हुए आरम्भ करता है कि परमेश्वर मेरे शत्रुओं की धमकियों से मेरी रक्षा कर। दाऊद के बहुत से शत्रु थे। उसका विश्वास, उसकी सैनिक शक्ति, उसकी बुद्धि और योग्यता पर नहीं था, बल्कि परमेश्वर में था। उसकी प्रार्थना बहुत सामान्य है; ''शत्रु के उपजाए हुए भय के समय मेरे प्राण की रक्षा कर।'' (64:1)

उसके शत्रुओं ने उसके विरुद्ध गोष्ठी बनाई (64:2)। दाऊद इन लोगों को दुष्ट और हुल्लड़ करने वाले अनर्थकारी कहता है। वे अपनी दुष्ट योजनाओं को छिपाते नहीं हैं। वे अपनी जीभ को तलवार के समान तेज़ करते हैं ताकि उनके वचन और अधिक कड़वे और हानिकारक हों। वे अपनी जीभ को हथियार के समान दाऊद के विरुद्ध इस्तेमाल करते हैं। वे उसके विरुद्ध दुष्टता भरी बातें करते हैं और उसकी प्रतिष्ठा को नष्ट करने की योजनाएं बनाते हैं। उनके वचन कड़वे/घातक तीरों के समान हैं जो काटते और नुकसान पहुंचाते हैं।

इन अनर्थकारियों को इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता कि वे किसके विरुद्ध बोलते हैं। वे दुष्टता की बातें बोलते हैं ताकि छिपकर खरे मनुष्य को मारे। वे निडर होकर उसे अचानक मारते भी हैं। उनके हृदय में परमेश्वर का कोई भय नहीं है। बल्कि वे बुराई करने वालों का हियाव बांधते हैं (64:5)। वे निर्दोष के विरुद्ध फन्दे लगाने के विषय में बातचीत करते हैं। भजन 64:6 हमें बताता है कि वे कुटिलता की युक्ति निकालते हैं और कहते हैं, हम ने पक्की युक्ति खोज कर निकाली है। वे मनुष्य के धूर्त हृदय पर घमण्ड करते हैं। धोखे के लिए जीते हैं। वे सोचते हैं कि यह एक खेल है जैसे जानवरों को फंसाया जाता है, वैसे ही ये अनर्थकारी उन लोगों के लिए जाल बनाते हैं और तब आनन्द मानते हैं जब वे उनके फन्दों में फंस जाते हैं। ये भजनकार के शत्रु है दाऊद परमेश्वर से खुलकर कहता है कि वह इन दुष्ट लोगों और उनके वचनों पर कैसा महसूस करता है।

दाऊद का विश्वास था कि परमेश्वर इन दुष्ट लोगों को समृद्ध नहीं होने देगा भजन 64:7 में, वह परमेश्वर में अपने विश्वास को बताता है। वह अपने पाठकों को बताता है कि परमेश्वर के भी अपने तीर हैं। वह अपने तीरों को दुष्ट पर फेंकेगा। वे एक बार में गिर जाएंगे। परमेश्वर उनकी दुष्ट जीभों को उन्हीं के विरुद्ध कर देगा और उन्हें नष्ट कर देगा। उनका अनर्थ ऐसा होगा कि जितने उन पर दृष्टि उठाएंगे वे सब आश्चर्य से अपने अपने सिर हिलाएंगे।

इन अनर्थकारियों का न्याय पृथ्वी पर रहने वाले सभी निवासियों को सोचने का मौका देगा। जब वे देखेंगे कि परमेश्वर ने उन अनर्थकारियों की शक्ति के साथ क्या किया है, तब वे भी उसका भय मानेंगे परमेश्वर अनर्थकारियों के न्याय के द्वारा दूसरों को चेतावनी देता है।

धर्मी के लिए उनका भाग्य अलग है। दाऊद अपने पाठकों को भजन 64:10 में स्मरण कराता है कि धर्मी तो यहोवा के कारण आनन्दित होकर उसका शरणागत होगा और सब सीधे मनवाले बड़ाई करेंगे। परमेश्वर उनकी शरण होगा और जो उसके विरुद्ध दुष्ट योजनाए गढ़ते हैं वह उनके विरुद्ध होगा।

भजन 65 में, दाऊद परमेश्वर से कहता है कि सिय्योन में स्तुति तेरी बाट जोहती है (65:1)। सिय्योन परमेश्वर के नगर यरूशलेम को दिखाता है जहाँ परमेश्वर के लोग रहते थे। कई तरीकों से यह उनको दर्शाता है जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं। परमेश्वर के लोग उसे धन्यवाद और स्तुति देने की बाट जोहते हैं। यह इसलिए क्योंकि वह जो है और जो उसने अपने लोगों के लिए किया। भजन 64 में हम देखते हैं कि कैसे परमेश्वर अनर्थकारियों के हाथों से अपने लोगों का छुटकारा करता है। इसके कारण वे धन्यवाद और स्तुति करते हैं।

बहुत से कारणों से परमेश्वर इन लोगों की स्तुति के योग्य था। दाऊद अपने पाठकों को याद दिलाता है कि परमेश्वर उनकी प्रार्थनाएं सुनेगा (65:2)। पाप से हार जाने पर वे परमेश्वर के पास आकर उसके नाम से क्षमा पा सकते हैं। परमेश्वर ने उनमें से कुछ को अपने सेवक होने के लिए चुना है। ये लोग याजक और मन्दिर के सेवक थे। उसके विशेष सेवक होने के कारण वे उसके पवित्र मन्दिर के उत्तम पदार्थों से तृप्त होंगे (65:4)। परमेश्वर अपने सेवक को देखता है। वह पृथ्वी के दूर दूर के और दूर के समुद्र पर के रहनेवालों का आधार है। अपनी सामर्थ्य और शक्ति से वह पर्वतों को स्थिर करता है (65:6)। वह समुद्र का महाशब्द, उसकी तरंगों का महाशब्द और देश देश के लोगों का कोलाहल शान्त करता है। (65:7)।

जो लोग दूर रहते हैं, उसके आश्चर्यकर्मों को सुनकर वे परमेश्वर का भय मानते हैं। ये आश्चर्यकर्म स्तुति और आनन्द के गीत गाने का कारण हैं (65:8)। महान् आश्चर्यकर्मों के द्वारा, परमेश्वर भूमि की सुधि लेकर उसे सींचता है और उसको बहुत फलदायक करता है (65:9)। परमेश्वर अपने लोगों को जल व अन्न देता है (65:9)। वह रेघारियों को भली भांति सींचता है और उनके बीच की मिट्टी को बैठाता है, और भूमि को मेह से नरम करता है और उसकी उपज पर आशीष देता है

(65:10)। अपनी भलाई से भरे हुए वर्ष पर मानो परमेश्वर ने मुकुट रख दिया हो। इसके प्रमाण में उसके लोगों के ठेले भरे हुए हैं (65:11)।

जंगल की चराइयों में हरियाली फूट पड़ती है। अर्थात् रेगिस्तान भी जीवन देने लगे हैं पहाड़ियां हर्ष का फेंटा बांधे हुए हैं और चराइयाँ भेड़ बकरियों से भरी हुई है। (65:12-13)। तराईयां अन्न से ढँपी हुई हैं। वे परमेश्वर की स्तुति में जयजयकार करती और गाती भी हैं, जिसने उन्हें यह बहुतायत दी है (65:13)।

जब हम इन दोनों भजनों को देखते हैं तो हम यह देख पाते हैं कि परमेश्वर के लोग बहुतायत से आशीषित लोग थे। भजन 64 स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर अपने बच्चों के जीवन की मुश्किलों में ढाल बन कर आता है। भजन 65 स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर की सेवा करने पर अनोखी सुविधाएं मिलती हैं। आशीषें उन के पास आती हैं जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं। जो उसे सचमुच जानते हैं उनके पास स्तुति का कारण है चाहे वे परीक्षाओं और सताव में पड़े हों।

विचार करने के लिए:-

- भजन 64 में दाऊद की क्या शिकायत थी? भजन 64 के अनर्थकारियों का वर्णन करें। परमेश्वर इस भजन में कैसे अपने लोगों की सहायता के लिए आता है?
- क्या आपके पास ऐसे लोग रहे हैं जो आपके विरुद्ध दुष्टता से भरी बातें बोलते थे? आपका क्या जवाब होता था? भजन 64 इस बारे में हमें क्या सिखाता है कि हमारा जवाब क्या होना चाहिए?
- उन आशीषों की एक सूची बनाएं जिनकी प्रतिज्ञा भजन 65 में परमेश्वर धर्मियों के लिए करता है?
- आपको परमेश्वर से कौन सी निज़ी आशीषें मिली हैं?
- आपके पास परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए क्या कारण हैं?

प्रार्थना के लिए:-

- आपके कौन से विशिष्ट संघर्ष हैं? परमेश्वर के सम्मुख उन संघर्षों को लाने के लिए कुछ समय निकालें।
- कुछ समय उन आशीषों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए समय निकालें जो उसने आप को दी हैं।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह ऐसा परमेश्वर है जो प्रार्थनाओं को सुनता है और उन्हें आशीषें देता है जो उसका आदर करते हैं।
- परमेश्वर से कहें कि वह आशीषें देखने में आपकी मदद करे जबकि आप मुश्किलों का सामना कर रहे हों। परमेश्वर से कहें कि वह आपको उन समयों के लिए क्षमा करे जब आपने अपनी परीक्षाओं के कारण उसकी आशीषे छिपाई थीं।

63. लोगो परमेश्वर की स्तुति करो

पढ़ें भजन संहिता 66:1-67:7

भजन 66 और 67 परमेश्वर के लिए स्तुति के भजन है। यहां इन भजनों में पृथ्वी के लोगों को इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करने के लिए बुलाया गया है। भजन 66 लोगों को अलग-अलग प्रकार के भावों की आराधना के साथ आने की चुनौती देता है। आइए, अलग-अलग प्रकार के भावों की आराधना को समझें।

आनन्द से चिल्लाएँ।

भजनकार और पृथ्वी के लोगों से यह कहते आरम्भ करता है कि 'परमेश्वर के लिए जयजयकार करो'। ज़ोर से आवाज़ करने के पीछे यह भाव है कि और लोग सुन सकें। ऐसा समय भी होता है जब हम चुपचाप आराधना करें और ऐसा भी समय होता है जब हम सच्चाई के साथ आनन्द से चिल्लाकर धन्यवाद दें। यह धन्यवादी और लज्जाहीन होने की पुकार है। यह परमेश्वर की अच्छाई की सार्वजनिक घोषणा है। ध्यान दें कि सम्पूर्ण पृथ्वी को पुकारना है। धरती पर ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है जिसके पास परमेश्वर की स्तुति करने का कारण न हो।

महिमा के गीत गाएं

भजन 66:2 में, भजनकार कहता है कि उसके नाम की महिमा का भजन गाओ' और 'उसकी स्तुति करते हुए उसकी महिमा करो'। 'महिमा' शब्द को आदर, समृद्धि और वैभव के रूप में भी समझा जाता है। अन्य शब्दों में, जो आराधना हम परमेश्वर को चढ़ाते हैं वह वैभव और आदर से भरी होनी चाहिए। हमें ऐसे गीतों के साथ उसकी स्तुति करनी चाहिए जिनमें उसके नाम को आदर मिले। हमें गीतों में उसकी योग्यताओं की घोषणा करनी है। हमारी आराधना ओछी या हल्की नहीं होनी चाहिए। यह समृद्ध गंभीर और रचनात्मक होनी चाहिए। इसमें तैयारी की आवश्यकता होती है।

परमेश्वर से कहें

अगला आराधना का भाव भजनकार भजन 66:3 में दर्शाता है। भजनकार यहाँ हमें परमेश्वर को यह कहने की चुनौती देता है कि 'परमेश्वर के काम क्या ही भयानक हैं और उसकी सामर्थ्य महान है। वह कहता है कि जो कोई उसकी आराधना करने आता है वह परमेश्वर की योग्यता का वर्णन करें।

यह प्रश्न पूछा जा सकता है: हमें परमेश्वर को वह बताने की क्या आवश्यकता है

जिसे वह जानता है?'' स्पष्ट रूप में परमेश्वर तो जानता है कि वह महान और अद्‌भुत है। परमेश्वर सब चीज़ों को जानता है लेकिन फिर भी वह अपने बच्चों से सुनकर प्रसन्न होता है। हम इसे पति पत्नी के रूप में समझ सकते हैं। क्या पति और पत्नी एक दूसरे से यह शब्द नहीं सुनना चाहते कि 'मैं आपसे प्रेम करता/करती हूँ'। क्योंकि आप तो जानते हैं कि आपका जीवन साथी आपसे प्रेम करता है लेकिन फिर भी जब आप उनके होंठों से ये शब्द सुनते हैं तो ये महत्वपूर्ण हो जाते हैं। वैसे ही परमेश्वर को भी अपने लोगों से यह सुनने में प्रसन्नता होती है कि वह कितना योग्य है। भजनकार हमें बताता है कि जब हम परमेश्वर की आराधना करने के लिए आएं तो हमें उसकी योग्यता के बारे में बोलना चाहिए कि वह कितना योग्य है।

आएँ और देखें

भजन संहिता 66:5 में, भजनकार हमें यह बताता है कि आराधना करने में देखना भी शामिल है। भजनकार , ''आओ देखें कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या-क्या कार्य किए हैं।'' वह हमें परमेश्वर के महान कार्यों को ताज़े रूप से देखने के लिए प्रेरित करता है। वह अपने पाठकों को यह उदाहरण देकर समझाता है कि कैसे परमेश्वर ने समुद्र को सूखी भूमि बना दिया था ताकि इस्राएली जाति उस सूखी भूमि के ऊपर से जा सके।

यदि हमें ऐसे आराधना करनी है जैसे भजनकार हमें कहता है, तो उसके लिए हमें परमेश्वर के हमारे लिए किए गए कार्यों को देखना ज़रूरी है। ऐसी आराधना करने में समय लगता है। यह कुछ इस प्रकार है कि अपने पिछले सप्ताह की ओर देखें कि परमेश्वर ने क्या क्या किया था। फिर हमें ऐसे समय देखने होंगे जहां पर परमेश्वर ने हमारे लिए कार्य किए थे। हमें एक दूसरे को यह भी बताना चाहिए कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया है। इसीलिए जब हम अपने जीवन के उन समयों को स्मरण करेंगे जब परमेश्वर ने हमारे जीवन में कार्य किया था और जब हम यह देखेंगे कि वह हमारे मित्रों और प्रियजनों के जीवनों में भी कार्य कर रहा है तब हमारे हृदय अपने आप धन्यवाद और स्तुति के लिए उठ जाएंगे।

आओ, परमेश्वर में आनन्द मनाएं

जैसे ही हम देखते हैं कि परमेश्वर हमारे लिए कुछ कर रहा है, वैसे ही हमें परमेश्वर में आनन्दित होना चाहिए। (पद 6) क्योंकि आनन्द मनाना उत्सव मनाने जैसा है। परमेश्वर आनन्दित होता है, जब कि उसके लोग खुश और आनन्दित होते हैं। परमेश्वर प्रसन्न होता है, जब वह यह देखता है कि उसके लोग उसके द्वारा किए गए कार्यों का उत्सव मना रहे हैं। जब हम आराधना करें तब वह आनन्द और प्रसन्नता से भरा हुआ समय होना चाहिए।

ऐसे बहुत से कारण हैं जो हमें यह बताते हैं कि हमें परमेश्वर में आनन्दित रहने के लिए क्यों बुलाया गया है। भजनकार भजन संहिता 66:7 में अपने पाठकों को

स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर अपने पराक्रम से सदा सर्वदा प्रभुता करता है। भजनकार यह भी बताता है कि परमेश्वर की आँखें जाति जाति को और उनके कामों को ताकती रहती हैं। इन सभी कारणों से हमें परमेश्वर के सम्मुख आनन्दित और मगन रहना चाहिए।

स्तुति की ध्वनि सुनी जाए

फिर से भजन संहिता 66:8 में भजनकार अपने लोगों यह स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर के लोगों को स्तुति करते समय संकोची नहीं होना चाहिए। वह कहता है कि परमेश्वर की स्तुति का गीत सुनने में आना चाहिए। यह सार्वजनिक आराधना के लिए एक निमंत्रण के रूप में होना चाहिए। यह सही है कि परमेश्वर हमारी व्यक्तिगत आराधना से प्रसन्न होता है परन्तु उसने हमें इसलिए नहीं बुलाया कि हम अपनी आराधना अपने पास रखें। हमें उसकी स्तुति ऐसे करनी चाहिए ताकि वह सुनाई दे। हमें परमेश्वर की अच्छाई दूसरों तक पहुंचाने में प्रसन्नता होनी चाहिए।

परमेश्वर ने अपने लोगों के जीवनों की रक्षा की है और उनके पांवों को कभी टलने नहीं दिया। परमेश्वर ने उन्हें जाँचा और ताया ताकि वे परमेश्वर की दृष्टि में अनमोल हो जाएं। परमेश्वर ने अपने लोगों को स्वतंत्र करवाया। वे लोग जेल में थे, और भारी बोझों से दबे हुए लोग थे। लोग उन पर चढ़े आते थे। वे आग और जल से होकर गुज़रे लेकिन परमेश्वर ने उन्हें सुख से भर दिया (66:12)। यह अपने तक सीमित रखने वाली बात नहीं थी। उनको परमेश्वर की योग्यता को घोषणा करनी थी और उनकी स्तुति दूसरों तक सुनाई देनी चाहिए थी। उन्हें ऐसी स्तुति करनी चाहिए थी कि पूरा संसार यह जान जाए कि उनके परमेश्वर ने उन्हें स्वतंत्र किया है।

मैं तेरे भवन में होमबलि लेकर आऊँगा

भजन 66:13 में भजनकार हमें एक अन्य आराधना भाव को दिखाता है। वह अपने पाठकों को बताता है कि वह परमेश्वर के भवन में होमबलि लेकर जाएगा। होमबलि परमेश्वर को पाप करने के बाद चढ़ाई जाती है। जो लोग ऐसी होमबलि परमेश्वर को चढ़ाते हैं वे अपने आप को दीन करके यह समझ पाते हैं कि जो स्तर परमेश्वर का था वे उससे गिर गए थे। वे होमबलि चढ़ाकर परमेश्वर के साथ सभी चीज़ें सही करना चाहते हैं।

हम परमेश्वर की आराधना तक नहीं कर सकते जब तक कि हम उसकी क्षमा को नहीं पहचानते। भजनकार बताता है कि आराधना में पापों का अंगीकार और सम्बन्धों को पुन:स्थापित करने का एक भाग आता है। ऐसे ही यदि आपके पास भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें परमेश्वर के साथ ठीक होना चाहिए तो आपको इन सब बातों को गंभीरता से लेना चाहिए। परमेश्वर के सम्मुख नम्रता से आएं और उन बातों का अंगीकार करें। जब आप परमेश्वर के सामने आएं तो आपके और परमेश्वर के बीच में किसी भी बाधा को न आने दें।

मैं अपनी मन्नतें पूरी करूंगा

भजन 66:13-14 में, भजनकार एक और प्रकार के आराधना के भाव को प्रस्तुत करता है। वह बताता है कि जब वह परमेश्वर के भवन में आराधना के लिए जाता है तो वह मन्नतें पूरी करने के समर्पण के साथ जाता है। विशेष रूप से वह उन मन्नतों को पूरी करने की बात करता है जो उसने संकट के समय में परमेश्वर के लिए मानी थीं (66:14)। ऐसी आराधना को निष्कपट आराधना कहते हैं। पाखण्डी लोग परमेश्वर की आराधना बिना मन्नतों को पूरी किए भी करते हैं। कई प्रकार की मन्नतें होती हैं। ऐसी विश्वासयोग्यता और समर्पण की मन्नते भी होती हैं जहां हम अपने आप को परमेश्वर के साथ विश्वासयोग्य और सच्चे होने के लिए सौंपते हैं। आशीषें और उदारता की भी मन्नते होती हैं जिसमें हम अपनी सम्पत्ति और सांसारिक पदार्थ परमेश्वर को सौंप देते हैं। वचनबद्धता और सेवा की मन्नते भी होती हैं जिसमें हम अपना समय और प्रयास सब परमेश्वर को सौंपते हैं। हम सभी ने किसी न किसी रूप में, चाहे वह स्वयं सम्पत्ति या फिर प्रयास से सम्बन्धित हो, प्रतिज्ञा की है। इसी रीति से परमेश्वर भी यह देखता है कि जब हम उसके पास आ रहे हैं तो क्या उन प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में विश्वासयोगय ठहरे हैं। आराधना तभी रुकती है जब हम परमेश्वर से की गई प्रतिज्ञाओं में विश्वासयोग्य नहीं ठहरते।

मैं बलिदान दूंगा

भजनकार अपने पाठकों को यहां बताता है कि जब वह आराधना करने के लिए भवन में गया तो वह परमेश्वर के लिए बलिदान लेकर गया। बलिदान एक ऐसी वस्तु है जो हमारी है और हम उसे एक भेंट के रूप में लाते हैं। ऐसे बहुत से बलिदान हैं जो हम परमेश्वर के लिए करते हैं। हमारा बलिदान परमेश्वर की योग्यता के भाव को प्रस्तुत करता है। परमेश्वर को यह बताना कि वह हमारे लिए कितना योग्य है एक भेंट है। बलिदान शब्द एक निश्चित दुख-तकलीफ को दर्शाता है जब आप कोई ऐसी चीज़ देते हैं जिसकी आपको जरूरत नहीं तो वह बलिदान नहीं है। बलिदान वह है जब हम अपनी बहुमूल्य वस्तु को देते हैं, जो हमें बहुत प्रिय है। हम स्वेच्छा से इससे अलग हो जाते हैं क्योंकि हम अपनी बलिदान की गई चीज़ से ज़्यादा परमेश्वर को बहुमूल्य समझते हैं।

आएं और सुनें

अन्ततः भजन 66 में, भजनकार एक और प्रकार के स्तुति के भाव को स्मरण दिलाता है। यहाँ वह परमेश्वर के लोगों को आने और सुनने के लिए कहता है। इस परिच्छेद में, भजनकार लोगों को आकर सुनने के लिए कहता है जबकि वह परमेश्वर की अच्छाईयों को दुबारा से गिनता है। (66:16) वह बाकी बचे हुए पदों में इनके उदाहरण देता है। वह अपने सुनने वालों को बताता है कि जब उसने परमेश्वर को पुकारा तो परमेश्वर ने सुना और प्रार्थना का उतर दिया। वह स्मरण दिलाता है कि यदि

उसने अपने पाप के कारण आनन्द मनाया होता तो परमेश्वर कभी नहीं सुनता परन्तु क्योंकि उसने अपने पाप का सामना किया इसलिए परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी। वह उन्हें बताता है जो यह सुनेंगे कि परमेश्वर अच्छा था और उसने अपने प्रेम को रोका नहीं।

भजनकार के अनुसार आराधना में सुनना भी आता है। एक दूसरे को परमेश्वर की अच्छाईयों की गवाहियां सुनाना और स्वयं परमेश्वर से भी सुनना। आप तब तक आराधना नहीं कर सकते जब तक आप ने सुना न हो। हम इसलिए आराधना में जाएं ताकि हम सुन सकें। हम अपनी आराधना की सेवा को यह चुनौती देकर छोड़ते हैं कि हमारा परमेश्वर के साथ क्या सम्बन्ध है और हम परमेश्वर के बारे में क्या सोचते हैं।

मैं भजन संहिता 67 की कुछ बातों पर कुछ टिप्पणी देते हुए वह मनन खत्म करूंगा। इस भजन में भजनकार अपने हृदय की इच्छा से परमेश्वर की स्तुति करता है।

भजन 67:1 में, भजनकार के हृदय की पुकार यह है कि परमेश्वर उस पर अनुग्रह करे और अपने लोगों पर अपने मुख का प्रकाश चमकाते हुए आशीष दे। अन्य शब्दों में, भजनकार की यह इच्छा है कि परमेश्वर अपने लोगों को स्तुति का कारण दे। भजनकार चाहता है कि परमेश्वर के मार्ग और उद्धार को सारी पृथ्वी जाने। वह कुछ इस प्रकार कह रहा है: ''प्रभु, हमें आपकी स्तुति करने के ज्यादा से ज्यादा कारण दो। आपकी आशीषें हमें इस प्रकार घेरे रहें ताकि समस्त संसार जाने कि आप कितने दयालु और प्रेमी हैं। ध्यान दें, भजनकार ऐसी आशीषें नहीं मांगता जो सिर्फ स्वयं के के लिए हो; बल्कि ऐसी आशीषें मांगता है जिससे सिर्फ परमेश्वर का नाम ही ऊँचा हो।

भजनकार की दूसरी इच्छा यह है कि परमेश्वर के लोग परमेश्वर की ओर प्रतिक्रिया दें और उसके नाम की स्तुति करें (67:3)। इसमें एक चीज़ यह है कि परमेश्वर अपनी आशीषें हम पर उंडेले और दूसरा हम उन आशीषों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करें। परमेश्वर के लोग हमेशा उन चीज़ों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद नहीं करते जो वह उन्हें देता है। हमेशा ऐसे लोग नहीं होते जो परमेश्वर के कार्यों के कारण उसमें आनन्दित होकर आराधना करें या धन्यवाद करें। भजनकार परमेश्वर से यह कहता है कि वह अपने लोगों को उसके नाम की आराधना करने की क्षमता दे। वह कहता है कि परमेश्वर अपने लोगों पर आराधना की आत्मा उंडेले।

तीसरा, भजनकार कहता है कि पृथ्वी का हर राज्य आनन्द और खुशी के गीत गाए (67:4)। वह चाहता है कि पृथ्वी के हर कोने से परमेश्वर की स्तुति उठे। परमेश्वर पूरी पृथ्वी पर राज्य करता है। अन्य राज्य जो उसे नहीं जानते उन्हें उसकी ज्यादा स्तुति करनी है। इसलिए भजनकार तब तक सन्तुष्ट नहीं होगा जब तक वह पृथ्वी के हर कोने से परमेश्वर की स्तुति न सुन ले। वह चाहता है कि परमेश्वर का नाम हर जीभ, राज्य और देश द्वारा ऊँचा किया जाए। उसका हृदय एक मिश्नरी का हृदय है।

ऐसी परमेश्वर की स्तुति का क्या परिणाम होगा? भजनकार बताता है कि भूमि ने अपनी उपज दी है, और परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देगा। इससे पृथ्वी के छोर तक सब उससे डरेंगे। स्तुति में बल है। जब परमेश्वर के लोग अपनी आँखें परमेश्वर के चमत्कारों के लिए खोलते हैं जैसे उसने निर्देश दिये हैं, तब संसार स्वयं बदल जाएगा और समस्त राज्य परमेश्वर की ओर भयभीत और विस्मत होकर मुड़ेंगे।

विचार करने के लिए:

- भजनकार परमेश्वर की महिमा की घोषणा सार्वजनिक रूप से करने के बारे में हमें क्या बताता है?
- बलिदान की आराधना में क्या भूमिका है?
- आज आराधना करते समय हम परमेश्वर की अच्छाईयों के किन तरीकों को देख सकते हैं?
- इन भजनों में भजनकार आराधना में सच्चाई और ईमानदारी के बारे में क्या कहता है?
- भजन 67 'भूमि ने स्तुति की ऊपज दी' से क्या समझते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- कुछ समय निकालकर सोचें कि परमेश्वर ने अन्तिम चीज़ आपके लिए क्या की थी। परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह अपनी उपस्थिति को प्रमाणित करता है।
- परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से आपके लिए क्या है? कुछ समय लें और उसे बताएं कि वह आपके लिए कितना महत्व रखता है।
- आपने अपने परमेश्वर के लिए व्यक्तिगत रूप से क्या बलिदान किए हैं? उससे कहें कि वह आपको बताए कि वह आपसे और किस प्रकार के बलिदान करवाना चाहता है?

64. हे परमेश्वर, उठ

पढ़ें भजन संहिता 68:1-35

भजन 68 युद्ध की पुकार है। इस युद्ध की पुकार में अनोखी बात यह है कि यह पुकार मानव सेना को जगाने के लिए नहीं है बल्कि परमेश्वर के लिए पुकार है कि वह अपने लोगों के बचाव के लिए आए। भजनकार दाऊद यहाँ परमेश्वर को बुलाने से आरंभ करता है और परमेश्वर को उठने और उसके शत्रुओं को बिखेरने के लिए कहता है। हमें यहाँ इन शत्रुओं की पहचान नहीं दी है। भजनकार जानता है कि परमेश्वर के लिए उसके शत्रुओं को बिखेरना कितना आसान है। वह शत्रुओं की तुलना धुएँ से करता है जो कि उड़ जाता है और मोम से करता है जो कि आँच से पिघल जाता है। परमेश्वर के लोगों के शत्रुओं के पास जीवन पाने का कोई मौका नहीं है। यदि परमेश्वर उनके विरुद्ध खड़ा हो जाता तो वे निश्चय ही नष्ट हो जाते।

जब शत्रु नष्ट होते हैं तो परमेश्वर के लोग परमेश्वर में आनन्द मनाते हैं। परमेश्वर, जो कि अपने लोगों के शत्रुओं का नाश करता है, उनके गीत का कारण बनता है। भजनकार हमें ऐसे कई कारण देता है जिनके कारण परमेश्वर के लोग उसकी स्तुति करते हैं।

वचन 4 में, भजनकार परमेश्वर के लोगों को स्तुति करने के लिए कहता है क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग के बादलों पर सवारी करता है। यह चित्र संभवत: यह दर्शाता है कि परमेश्वर बादलों पर सेना के सेनापति के रूप में घोड़े पर सवारी करता है। वह इस उद्देश्य से आता है कि वह अपने शत्रुओं का न्याय करे और उन्हें हरा दे।

यह महान योद्धा परमेश्वर जिनके पिता नहीं होते उनका पिता है और विधवाओं का बचानेवाला है। उसने उनकी ज़रूरतों को देखा और उनकी ज़रूरतों ने परमेश्वर के हृदय को छुआ। ध्यान दें वचन 6 में, परमेश्वर अनाथों का घर बसाता है। अन्य शब्दों में, उसने उन्हें, जिनके परिवार नहीं होते, संगति और सहारा दिया। जो कैदी थे, परमेश्वर ने उनकी अगुवाई संगीत के द्वारा की। परमेश्वर उनकी सहायता के लिए आता है और उनकी वैसे ही अगुवाई करता है जैसी उसने इस्राएली लोगों की मिस्र की बंधुआई से बाहर लाने में की थी। ये कैदी परमेश्वर को छुड़ानेवाला मानकर उसके लिए प्रेम और श्रद्धा के गीत गाते हैं।

विद्रोही लोग वे तो सूर्य में झुलझती हुई भूमि के समान जीएंगे। वे उन झुलसाने वाली सूर्य की किरणों के कारण जल जाएंगे। उनके पानी सूख जाएंगे और उनकी फसलें गर्मी में मुरझा जाएंगी। यह चित्र निराशा का चित्र है। यह सब उनका इतंजार कर रहा था जिन्होंने परमेश्वर से अपनी पीठ मोड़ ली थी।

वचन 7 में एक और चित्र है जिसमें परमेश्वर उसके शत्रुओं के विरुद्ध सवार है। जब वह निर्जल भूमि पर चला तब धरती उसकी उपस्थिति के कारण हिल गई। स्वर्ग वर्षा बरसाने लग गए। परमेश्वर की महान पवित्रता से धरती हिल उठी और उससे शत्रु डर गए। जब वह मरूस्थल में चलता है तब वह प्यासी भूमि पर झरनों की बहुतायत का जल उंडेल देता है। यह चित्र इस्राएल सन्तान का उजाड़ देश से वाचा किए हुए देश में जाने का है। परमेश्वर उस समय भी उनके आगे आगे शत्रुओं को मारते हुए और उनकी सारी जरूरतें पूरी करते हुए चला।

परमेश्वर के लोग उस देश में बस गए जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था। परमेश्वर की आशीष उनके साथ उस देश में थीं। उसने गरीबों को दिया और अपने वचन से भरपूर किया। यह वचन मूसा को दिया गया और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा उन पर घोषित किया गया जो उस देश में परमेश्वर के साथ रहते थे, जो उन्हें दिया गया था। (वचन 11)

परमेश्वर की आशीषें उसके लोगों पर वास करती रहीं। राजा और सेना उनसे भाग जाते थे क्योंकि वे परमेश्वर के पीछे चलते थे। शिविर विभाजित हो जाते थे और लूट बांट ली जाती थी। परमेश्वर ने अपने लोगों को सम्पन्न किया।

वचन 13 ऐसे चित्र का चित्रण करता है जहाँ पर परमेश्वर के लोग शिविर में लेट जाते थे। एक प्रेमी पिता की तरह परमेश्वर अपने लोगों की तुलना कबूतरी से करता है। वह लाड़-प्यार जैसा दिखाई पड़ता है। जैसे परमेश्वर इस्राएल को कबूतरी जैसे देखता है। वैसे ही यह भी देखता है कि उसके पंख चांदी से और जिसके पर सोने से मढ़े हुए हों इस्राएल बहुत सुरक्षित है क्योंकि वह शिविर के पास सो पाता है। उसके पंख और पर सोने और चांदी की तरह चमक रहे हैं। यह समृद्धि का चित्र है जो उन्हें परमेश्वर की आशीष के रूप में मिली है।

इस्राएल की सुन्दर कबूतरी के विरोध में आस पास के देशों के शत्रु राजा है। परमेश्वर ने उन्हें ऐसी हिम के समान बिखेर दिया जैसे वह जगह जगह पर गिरी रहती हैं। इस्राएल की कबूतरी जो शिविर की गर्माहट में आराम करती है और परमेश्वर के शत्रु जो हिम के समान उड़ जाते हैं, दोनों की तुलना की गई है।

भजनकार बाशान के पहाड़ों और उन पहाड़ों की तुलना करता है जहाँ परमेश्वर राज्य करता है। वचन 15 में, भजनकार बाशान के पहाड़ों को बहुत शिखरवाला पहाड़ बताता है। जबकि यह पहाड़ स्वयं इतने शिखर वाले हैं लेकिन यह उस पहाड़ पर जहाँ परमेश्वर ऊँचा किया गया जलन से उसकी ओर घूरते हैं। सारी सुन्दरता और सम्पति की तुलना इससे नहीं की जा सकती है। परमेश्वर के लोग परमेश्वर में अनुभव करते हैं देशों के लोग इस सम्बन्ध का अनुभव करने की इच्छा रखते थे।

वचन 17 में यह बताया गया है कि परमेश्वर सीने पर्वत पर अपने रथों व हजारों योद्धाओं के साथ ऊँचा उठाया गया। वचन 18 में उसकी वापसी पर वह लोगों को बंधुआई में ले गया। जब वह उनके बीच में चलता तब पुरुष और स्त्रियाँ उसका आदर करते और भेंट चढ़ाते। वह एक विजयी योद्धा है जो युद्ध से वापस आ रहा है। वचन

18 में ध्यान दें कि हठी लोग भी आकर परमेश्वर की महानता और सामर्थ्य को पहचानते हुए भेंट देते हैं।

भजनकार इस महान सेना के सेनापति की स्तुति करता है। वचन 19 में ध्यान दें यह महान परमेश्वर जिसने अपने शत्रुओं को हराया था, कैसे अपने बच्चों की व्यक्तिगत रूप से देखभाल करता है। भजनकार भजन 19 में अपने पाठकों से कहता है, कि यह परमेश्वर अपने प्रिय जनों के दिन प्रति दिन के बोझ की चिंता करता है। उसने उनके बोझों को ले लिया। हम कितने महान परमेश्वर की सेवा करते हैं वह हमारे शत्रु से भी बढ़कर है लेकिन फिर भी उसका प्रेम हमारी छोटी से छोटी ज़रूरत को पूरा करता है।

भजनकार को अपने परमेश्वर पर पूरा भरोसा है यह वही परमेश्वर है जो अपने लोगों को बचाता है। वह महान परमेश्वर है। उसके हाथ के कामों के द्वारा परमेश्वर के लोग मृत्यु से बचते हैं। जब वह अपने लोगों की देखभाल करता है, उसी समय उनके शत्रुओं को तितर बितर करता है। वह उन्हें ऊँचाई से गिराकर नीचे लाता है और उन्हें समृद्ध की गहराई में डाल देता है। परमेश्वर के लोग अपने पाँव को शत्रुओं के लहू में डुबोएंगे और इस्राएल के कुत्ते उनका लहू चाटेंगे (वचन 23)।

पद 24 परमेश्वर के पवित्र स्थान की महान् विजय का प्रदर्शन करता है। जब परमेश्वर विजय में होकर परेड करता था तो उसके आगे आगे गीतकार और संगीतकार रहते थे। जवान लड़कियाँ खंजरी बजाती थीं। परमेश्वर के लोगों की महान सभा में से प्रभु परमेश्वर के लिए स्तुति उठती थी। इस महान विजय परेड में इस्राएल के सब राज्य थे, छोटे विन्यामीन से लेकर यहूदा के हाकिमों, जबूलून और नप्ताली तक। उन्होंने भी परमेश्वर की विजय को लेकर उसे स्तुति दी।

वचन 28 में यह पुकार आगे बढ़ी कि परमेश्वर अपनी सामर्थ्य दे और ताकत दिखा। परमेश्वर के लोग यही पुकारते रहे कि परमेश्वर हमें दृढ़ कर। बहुत से देशों ने उसकी सामर्थ्य की वजह से अपने आप को नम्र किया। अलग अलग देश के राजा यरूशलेम के मन्दिर में परमेश्वर के पास गए और उसे भेंट चढ़ाई।

भजनकार परमेश्वर से कहता है कि नरकटों में रहने वाले बनैले पशुओं को, साँड़ों के झुण्ड को और देश देश के बछड़ों को झिड़क दे (वचन 30)। हम इस पद को शक्तिशाली अगुवों के सम्बन्ध में देख सकते हैं। इन नरकटों में रहने वाले बनैले पशुओं को मगरमच्छ से सम्बोधित किया है। साँड़ों के झुण्डों को आज के शक्तिशाली अगुवों से सम्बोधित किया गया है। ये झाँड़ों के झुंड घमंडी और कठोर थे। ये जो संसार के महान अगुवे थे इस्राएल के परमेश्वर द्वारा झिड़के गए और परमेश्वर के सम्मुख नम्र किए गए। भजनकार कहता है कि इन शक्तिशाली और महान अगुवों ने परमेश्वर को सच्चे परमेश्वर के रूप में पहिचान लिया है। वह परमेश्वर से कहता है कि ये अगुवे अपने घुटने परमेश्वर की ओर झुकाएंगे और उसे भेंट चढ़ाएंगे।

मिस्र से दूत आएंगे और कूशी अपने हाथों को परमेश्वर की ओर फुर्ती से फैलाएंगे। पृथ्वी के राज्यों को परमेश्वर के नाम की स्तुति के लिए बुलाया गया है। उस

दिन परमेश्वर उन्हें जिन्होंने युद्ध में आनन्द मनाया था, तितर-बितर कर देगा। भजनकार बताता है कि भविष्य में ऐसा समय आएगा जब राज्य राज्य परमेश्वर को समर्पण करेंगे और उसके नाम की महिमा करेंगे। कुछ अलग तरीकों से देखें तो हम आज की कलीसिया की आत्मिक उन्नति को देख रहे हैं। हर राज्य के लोग, जीभ और देश इस्राएल के परमेश्वर के ज्ञान की ओर बढ़ रहे हैं। हम इससे भी बढ़कर आगे आने वाले दिनों में महान् भविष्यवाणी देख सकते हैं।

भजनकार अंत में कहता है कि परमेश्वर सबसे ऊँचे सनातन स्वर्ग में सवार होकर चलता है। वह अपनी गम्भीर शक्तिशाली वाणी सुनाता है। वह पृथ्वी को इस्राएल के परमेश्वर का प्रताप फैलाने की चुनौती देता है जो इस्राएल पर ऊँचा है और जिसकी सामर्थ्य आकाश तक है। यह परमेश्वर कार्यों और सामर्थ्य में महान् है और अपने लोगों को बल देता है।

भजनकार परमेश्वर के सम्मुख पुकारने में अपने को स्वतंत्र महसूस करता है। परमेश्वर भी उसकी पुकार का जवाब देता है और एक महान योद्धा की तरह अपने लोगों की सहायता के लिए आता है। शत्रु तितर बितर हो गए हैं। इससे परमेश्वर की आशीषें पुनः स्थापित हुई और उसका नाम उसके प्रेम करने वालों के कारण ऊँचा किया गया।

विचार करने के लिए:-

- इस भजन में दाऊद का विश्वास कहाँ है?
- दाऊद परमेश्वर को एक महान जीता हुआ नायक बताता है। वह उसे मृदु और चिंता करने वाला बताता है। परमेश्वर को मृदु और चिंता करने वाला बताने के लिए हमें इन भजनों में क्या उदाहरण मिलते।
- दाऊद हठी के भाग्य में क्या बताता है?
- यह भजन परमेश्वर के राज्यों के बीच चलने और नम्र होने के बारे में बोलता है। यह हमें परमेश्वर की सामर्थ्य के बारे में क्या सिखाता है? हमें इस संसार को देखते हुए क्या संतुष्टि मिलती है?

प्रार्थना के लिए:-

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि हम अपना सम्पूर्ण विश्वास उस पर रख पाते हैं। उसे धन्यवाद दें कि वह हमारी सहायता के लिए आता है।
- कुछ समय निकाल कर सोचें कि हमारा परमेश्वर कितना मृदु और चिंता करने वाला है। परमेश्वर को धन्यवाद दें कि महान् और सामर्थी होने पर भी वह हमारे प्रतिदिन के संघर्षों के लिए चिंतित रहता है।
- परमेश्वर से कहें कि वह संसार के राज्यों राज्यों में फिरे और उन्हें अपने व्यक्तित्व की महान् समझ से परिपूर्ण करे।
- परमेश्वर से प्रार्थना करें कि आपके देश को नम्र बनाए और उसकी इच्छा के लिए अपने आप को समर्पित करें।

65. मुझे बचा ले

पढ़ें भजन संहिता 69:1-36

भजन 69 दाऊद का भजन है जो उसके जीवन के संकट के समय में लिखा गया। इस भजन में दाऊद परमेश्वर से अपने शत्रुओं से छुड़ाने की पुकार करता है।

दाऊद परमेश्वर से यह कहते हुए इस महान भजन की शुरूआत करता है कि मुझे बचा ले। वह अपनी परिस्थिति को शुरुआत के कुछ पदों में बताता है। वचन 1 में वह अपने आपको ऐसे व्यक्ति से जोड़ता है जो जल में डूबा जाता है। वह जल उसकी गर्दन तक आ गया था। इस कारण जल्द ही उसका जीवन बुझ जाएगा। वह जल्दी ही बड़े दलदल में धंस जाएगा जहाँ उसके जीवन का अन्त हो जाएगा और अभी भी वह गहिरे जल की धारा में डूबा जाता है (वचन 2)। वह सहायता के लिए पुकारते पुकारते थक गया था। उसका गला पुकार पुकार कर सूख गया था। वह परमेश्वर की ओर देख रहा था परन्तु अब उसकी आँखे धुधँली पड़ रही थीं। परमेश्वर ज़रूरत के समय कहाँ था? क्यों परमेश्वर उसके बचाव के लिए नहीं आया था?

वचन 4 में वह उनके बारे में बोलता है जिन्होंने बिना कारण उससे घृणा की। वे गिनती में उसके सिर के बालों से भी अधिक हैं। हालांकि उनके पास उसके विनाश के लिए कोई कारण नहीं था, लेकिन फिर भी वे उसे नष्ट होता हुआ देखना चाहते थे। उसके शत्रु ईमानदार नहीं थे। वे उसे उस चीज़ को लौटाने के लिए कह रहे थे जो उसने नहीं चुराई थीं।

दाऊद परमेश्वर के पास नम्रता से आता है। वह जानता है कि वह परमेश्वर से कुछ नहीं छिपा सकता। वह जान गया था कि वह सम्पूर्ण नहीं था। ऐसा भी समय था जब दाऊद ने मूर्खता से व्यवहार किया था। परमेश्वर उसकी मूर्खता को जानता था (पद 5)। दाऊद के दोष परमेश्वर से नहीं छिपे थे। जबकि दाऊद जानता था कि वह सम्पूर्ण नहीं था, वह यह भी जानता था कि जो परमेश्वर पर भरोसा रखते थे वे कभी भी अपमानित नहीं होंगे। परमेश्वर क्षमा करने वाला परमेश्वर है और उन्हें क्षमा करेगा जो उसके पास नम्रता से आते हैं।

वचन 6 में ध्यान दें कि भजनकार कैसे प्रार्थना करता है कि जो परमेश्वर की बाट जोहते हैं उनकी आशा मेरे कारण न टूटे। दाऊद की समाज में ऊँची पदवी थी। ऐसे बहुत से लोग थे जो उसे परमेश्वर के जन की तरह देखते थे। दाऊद जानता था कि उसके दोष सिर्फ उसे ही प्रभावित नहीं करेंगे परन्तु उनको भी जो उसके चारों ओर थे। पाप भूमि पर श्राप लाया और जो लोग उस भूमि पर रहते थे उन्होंने उस श्राप

का अनुभव किया। दाऊद की प्रार्थना यही थी कि उसके कार्यों के कारण दूसरे व्यक्ति न गिरें और उनकी आशा न टूटे।

वचन 7 में, हम समझ पाते हैं कि दाऊद अपने जीवन में व्यक्तिगत पाप के कारण दुख नहीं सह रहा था। उसका यह दुख उसके और परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध के कारण था। ऐसे समय भी आते हैं जब परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए हम कई बार झगड़ों में पड़ जाते हैं। दाऊद ने अपनी इच्छानुसार परमेश्वर के लिए निर्णय लिया और इसी कारण उसे पापियों की घृणा सहनी पड़ी। परमेश्वर के लिए इस व्यक्तिगत निर्णय के कारण वह अपने घरवालों के लिए पराया बन गया। ऐसे समय होंगे जब हमें हमारे निर्णयों के कारण जो हम प्रभु यीशु मसीह के लिए लेंगे, अपने स्वयं के परिवार से दूर होना पड़ेगा या उनकी घृणा को सहना पड़ेगा। दाऊद परमेश्वर के साथ यह वचनबद्धता करने को तैयार था। प्रभु यीशु को भी अपने परिवार व प्रियजनों के उपहास को सहना पड़ा जो पृथ्वी पर उसके उद्देश्य को समझ नहीं पाए थे।

वचन 9 में जब दाऊद लिखता है तब उसका हृदय स्पष्ट था:

मैं तेरे भवन की धुन में जलते जलते भस्म हुआ और जो निन्दा वे तेरी करते हैं, वही निन्दा मुझको सहनी पड़ी है।

दाऊद परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को गम्भीरता से लेता था। वह परमेश्वर के भवन के बारे में बहुत उमंगी था और राज्य के कार्यों के लिए भी। जब किसी इस्राएली या अजनबी ने परमेश्वर की चीज़ें की निन्दा की या ठंठे में उड़ाया तब दाऊद ने वह निन्दाएं गम्भीरता से लीं।

यूहन्ना 2 में, हम पढ़ते हैं कि जब यीशु फसह के पर्व के लिए यरूशलेम आया, तब उसका सामना वहाँ व्यापार करने वालों से मन्दिर में हुआ। वह क्रोध में आ गया, और उसने उनकी मेज़ों को उलट दिया और परमेश्वर के भवन से उन्हें बाहर निकाल दिया। यूहन्ना 2:17 हमें बताता है कि जब चेलों ने यह देखा कि यीशु ने क्या किया है तब उन्हें भजन संहिता में लिखा यह भजन याद आया। 'तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी'। दाऊद भी परमेश्वर के भवन की इसी धुन की बात करता है।

दाऊद ने भी घृणा को सहा और उसने उपवास रखा। वह रोया और टाट का वस्त्र पहिना। हमें यहां यह नहीं बताया गया कि दाऊद क्यों रोया था। हो सकता है कि वह अपने लोगों और परमेश्वर के बीच के सम्बन्ध को लेकर या फिर अपने और परमेश्वर के सम्बन्ध को लेकर रोया। जो उसके चारों ओर थे वे उसकी इस धुन को न समझ सके। वे यह पहिचान नहीं पाए कि उसका हृदय क्यों टूटा हुआ था। यह इसलिए था क्योंकि परमेश्वर के वचन और भवन की निन्दा की जाती थी।

दाऊद परमेश्वर का दास होने के कारण अकेला ही चलता रहा। वह अपने दिनों की दिन प्रतिदिन की बातों के विरुद्ध चला गया ताकि परमेश्वर को प्रसन्न कर सके। जो उसके साथ द्वार पर बैठते थे वे उसका ठट्ठा करते थे। क्योंकि उस ने परमेश्वर के

लिए एक निर्णय लिया दाऊद मदिरा पीने वालों के गीत का कारण बना और फाटक के पास बैठने वाले उसके विषय में बातचीत करते थे।

यह सब बातें इसलिए हुईं ताकि दाऊद परमेश्वर के और नज़दीक आ सके। वचन 13 में वह परमेश्वर के सामने गिड़गिड़ाता है कि उसका सच्चा उद्धार बने। उसने परमेश्वर के महान प्रेम पर विश्वास किया। हालांकि उसका समाज ने मज़ाक उड़ाया और निन्दा की, लेकिन दाऊद ने परमेश्वर के महान प्रेम में शरण पाई।

दाऊद को मदिरा पीने वालों का गीत बनकर या समाज के द्वारा निन्दा सहने में कोई गुप्त आनन्द नहीं मिला। वचन 14 में वह अपनी तुलना दलदल में फंसे एक व्यक्ति से करता है। वह उस दलदल में धंसा जा रहा था और उसको यह भी निश्चय नहीं था कि वह फिर बाहर आ पाएगा या नहीं। वह अपनी तुलना उस व्यक्ति से भी करता है जो गहिरे पानी में डूब जाता है। वह परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि धारा को उस पर काबू न पाने दे और न वह उसे निगल सके।

दाऊद ने अस्वीकृति के दर्द को सहा ऐसे भी समय थे जब वह भावनात्मक रूप से पराजित महसूस करता था बल्कि संभवत: निरूत्साहित भी था। वह नहीं चाहता था कि वह दर्द उसे परमेश्वर से दूर ले जाए। उसका दर्द उसे उसकी सामर्थ्य और उद्धार बना कर परमेश्वर के करीब ले गया।

वचन 16 में, दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना में उसके प्रेम के उत्तर को मांगता है। वह यह प्रार्थना परमेश्वर की महान करुणा और दया के कारण करता है। दया कृपा है जो अयोग्य पर की जाती है। दाऊद को विश्वास नहीं था कि परमेश्वर उसकी प्रार्थना का उत्तर देगा, उसकी आत्मिक धुन के कारण दाऊद परमेश्वर से उसकी दया और करुणा के कारण प्रार्थना करता है जो उन पर होती है जो अयोग्य होते हैं। वह परमेश्वर से कहता है कि अपने दास से अपना मुँह मत मोड़ और संकट में फुर्ती से सुन ले। (पद 17)

दाऊद समझता है कि उसकी आशा सिर्फ परमेश्वर में ही है। वह परमेश्वर को संकट में बचाव के लिए बुलाता है। वह प्रार्थना करता है कि मेरे शत्रुओं से मुझे छुड़ा। वह जानता था कि परमेश्वर उसकी पीड़ाओं में अन्धा नहीं था। परमेश्वर ने देखा था कि उसकी कैसी निन्दा हुई और कैसे उसे अपमान का सामना करना पड़ा, सिर्फ उसके नाम के निमित्त। परमेश्वर ने समझा कि कैसे उसका हृदय नामधराई के कारण फट गया और वह बहुत उदास हुआ (पद 20)। दाऊद के पास उसकी जरूरत के समय पर कोई तरस खाने वाला न था और कोई शान्ति देने वाला भी न था।

हमें यह देखना है कि दाऊद अस्वीकृति को सहन करने पर कुछ ऐसी भविष्यवाणी के वचनों को कहता है कि प्रभु को क्रूस पर क्या सहना होगा। हम इसे पद 21 में पाते हैं, जहाँ लोगों ने दाऊद को खाने में इन्द्रायन खिलाया और पीने में सिरका पिलाया। यही प्रभु यीशु के साथ भी हुआ। मत्ती 27:34 हमें बताता है:–

उन्होंने उसे पित्त मिला हुआ दाखरस पीने को दिया, परन्तु उसने चखकर उसे पीना न चाहा।

दाऊद ने बिना कारण यहां इस भाषा का प्रयोग नहीं किया। वह स्वयं उस पीड़ा का अनुभव कर पा रहा था जो यीशु को भी सहनी थी।

दाऊद नहीं चाहता कि दुष्ट की विजय हो। वह यहाँ पद 22 में एक चित्र चित्रित करता है जिसमें उसके शत्रु एक महान भोज के लिए बैठे हुए हैं। दाऊद प्रार्थना करता है कि उनका भोजन उनके लिए फन्दा हो जाए। अन्य शब्दों में, परमेश्वर उनके भोजन को देखे जो दुष्टता के लाभ से भरा है और उनका न्याय करे। वह पद 23 में प्रार्थना करता है कि उनकी आँखों पर अन्धेरा छा जाए ताकि वे देख न सकें और उनकी कमर झुक जाए। दाऊद प्रार्थना करता है कि परमेश्वर दुष्ट कर्मियों का न्याय करने के लिए आए। वह चाहता है कि परमेश्वर उनकी छावनी उजाड़ दे। ये वही दुष्टकर्मी थे जो परमेश्वर और उसके कार्यों का ठ्ठ्टा उड़ाते थे। इससे दाऊद का हृदय टूट गया कि ये दुष्ट लोग इस संसार में बने रहेंगे ताकि धर्मी लोगों का जीवन दुखद बनाएं।

वचन 26 में दाऊद परमेश्वर को स्मरण दिलाता है कि वे दुष्ट उसके पीछे पड़े हैं जिनको परमेश्वर ने घायल किया और उनकी पीड़ा की चर्चा करते हैं जिन्हें उसने (परमेश्वर) दुख दिया। ऐसा समय आता है जब परमेश्वर अपने लोगों को अनुशासित करता है। कई बार परमेश्वर पीड़ा को आने देता है ताकि उसके लोग उन्नति करें। परमेश्वर का दर्द उनके लिए होता है जो उससे प्रेम करते हैं और उसके और नज़दीक आ जाते हैं। जिन लोगों की दाऊद यहाँ बात करता है वे उनका फायदा उठाते हैं जिनको परमेश्वर अनुशासित करता है वे उन्हें सताते और उनकी परीक्षा में उनके बारे में बुरा बोलते हैं। इसलिए दाऊद कहता है कि उन पर अधर्म पर अधर्म बढ़ा। वह परमेश्वर से कहता है कि उन्हें ऐसा श्राप दे ताकि वे उस उद्धार को न बाँट सकें। वह चाहता है कि इन दुष्ट लोगों का नाम जीवन की पुस्तक में से निकाल दिया जाए और धर्मियों के साथ उनकी सूची न बने। क्योंकि वे परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के शत्रु थे। दाऊद परमेश्वर से कहता है कि दुष्ट और अनर्थकारियों के ऊपर धर्मी को ही विजय मिले।

ये शब्द कठोर लगते हैं परन्तु वास्तविकता में यह सच्चे और निष्कपट हैं। अगर दुष्ट और दुष्टता को दण्ड न मिला तो क्या होगा। ऐसा कौन सा परमेश्वर होगा जो दुष्ट लोगों को उनके कार्यों का फल न देगा। हमें इस में बहुत शान्ति पाने की आवश्यकता है कि परमेश्वर दुष्ट और दुष्टता पर विजय अवश्य पाएगा। दुष्ट ज़्यादा समय तक न रह सकेगा। उसका सामना हमेशा के लिए किया जाएगा और धार्मिकता अवश्य ही जीतेगी।

दाऊद अपने चारों ओर की बुराई को देखकर पीड़ा और दुख से भर जाता था। वह परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि उसे अनर्थकारियों के हाथों से बचा ले। वह विश्वास करता है कि परमेश्वर ऐसा अवश्य करेगा, इसलिए दाऊद परमेश्वर से वायदा करता है

कि वह परमेश्वर की स्तुति गीतों के द्वारा करेगा और धन्यवाद बलि से उसकी महिमा करेगा। (पद 30) दाऊद जानता है कि स्तुति परमेश्वर को बैल से वरन सींग और खुर वाले बैल से भी अधिक भाएगी। परमेश्वर हमारे द्वारा दिए गए बलिदानों से आनन्दित नहीं होता बल्कि हृदय के भावों को देखकर आनन्दित होता है।

दाऊद विश्वास करता है कि परमेश्वर दुष्ट के ऊपर विजय पाएगा। नम्र लोग परमेश्वर के उद्धार को देखकर आनन्दित होंगे (पद 32)। जो परमेश्वर को खोजते हैं उनका हृदय फिर जीवित हो जाएगा। परमेश्वर दरिद्रों की ओर कान लगाएगा। वह अपने लोगों को जो बंदी हैं, तुच्छ नहीं जानता। दाऊद स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र को परमेश्वर की स्तुति के लिए बुलाता है। परमेश्वर अपने लोगों के बचाव के लिए अवश्य आएगा। वह दिन आ रहा है जब सिय्योन फिर से बसाया जाएगा और परमेश्वर के लोग फिर देश में बसेंगे। वहाँ वे परमेश्वर के लिए जीएंगे और उसके साथ शान्ति पाएंगे। परमेश्वर अपने लोगों को भूलेगा नहीं। हालांकि उन्हें अनर्थकारियों की निन्दा और झूठी निन्दा को सहना पड़ता है, लेकिन परमेश्वर उन्हें छुड़ाएगा। वह उनका उद्धार होगा।

विचार करने के लिए:-

- इस भजन में दाऊद को किन संकटों का अनुभव करना पड़ा?
- क्या दाऊद ने ऐसा विश्वास किया कि चूंकि वह परमेश्वर से प्रेम रखता है या उसकी सेवा करता है इसलिए परमेश्वर ने उसे सुरक्षा और उद्धार दिया? वर्णन करें।
- दाऊद का परमेश्वर और उसके पृथ्वी पर राज्य के प्रति क्या प्रतिक्रिया है?
- दाऊद ने भविष्यवाणी करते हुए कैसे बताया कि प्रभु यीशु कैसे हमारे लिए दुख सहेगा?
- दाऊद को इस सच्चाई से कितनी सांत्वना मिली कि परमेश्वर न्यायी परमेश्वर है और पाप और दुष्ट को दण्ड देगा? आपको इससे कितनी सांत्वना मिलती है?

प्रार्थना के लिए:-

- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि चाहे हमें धरती पर मुश्किलों का सामना करना पड़े लेकिन फिर भी वह हमें सम्भाले रहेगा।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें, उसके महान् उद्धार के लिए। परमेश्वर को विशेष रूप से धन्यवाद दें कि हमारे अयोग्य होते हुए भी वह अपने प्रेम से हम तक पहुँचता है।
- परमेश्वर की उसकी न्याय के लिए कुछ समय स्तुति करें।
- परमेश्वर को जानने व उसके राज्य के कार्य को आदर देने के संबन्ध में उससे कहें कि वह आपको दाऊद के समान हृदय दे।
- परमेश्वर से कहें कि जब आप त्यागा हुआ महसूस करें तो वह आपको सहने की सामर्थ्य दे।

66. मेरा बचाव कर

पढ़ें भजन संहिता 70:1-71:24

भजन 70 और 71 एक साथ दिखते हैं। इन दोनों में हम एक धर्मी की ज़रूरत के समय में सहायता की पुकार को देखते हैं। हम इन दोनों को इसी अध्याय में एक साथ समझेंगे।

इन दोनों भजनों पर विचार करना आरम्भ करने पर हम पाते हैं की भजनकार दुख में है। वह परमेश्वर से कहता है कि उसकी सहायता के लिए फुर्ती से आ। उसको यह विश्वास है कि वह सहायता के समय या संकट के समय परमेश्वर के पास आ सकता है।

भजन 70: 2 में ध्यान दें कि भजनकार अपने जीवन के कारण भयभीत है। क्योंकि लोग उसे मार डालने के लिए ढूँढ रहे थे। वह परमेश्वर से कहता है कि जो मेरे प्राण के खोंजी हैं, उनकी आशा टूटे और उनका मुँह काला हो। वह परमेश्वर से यह भी कहता है कि जो मेरी हानि से प्रसन्न होते हैं वे पीछे हटाए और अपमानित किए जाएँ (72:2-3)।

भजनकार परमेश्वर से यही प्रार्थना नहीं करता कि उसके शत्रुओं का मुँह काला हो बल्कि यह प्रार्थना भी करता है कि जो प्रभु को खोजते हैं वे आनन्दित और मगन रहें। उसकी प्रार्थना यह है कि जितने प्रभु को ढूँढते हैं, वे सब उसके कारण हर्षित और आनन्दित हों और जो उसका उद्धार चाहते हैं, वे निरन्तर कहते रहें, ''परमेश्वर की बड़ाई हो (70:4)। भजनकार एक विश्वासी के दुख की सच्चाई को पहिचान गया था। उसकी प्रार्थना हालांकि यह भी है कि एक विश्वासी सदैव दुख में नहीं रहे यह उसकी पुकार है कि विश्वासी परमेश्वर के अनोखे उद्धार का अनुभव करे और उस उद्धार के लिए उसकी स्तुति करें।

भजनकार दुख और पीड़ा में कोई आनन्द नहीं लेता। वह भजन 70:5 में कहता है कि मुझे छुड़ा ले। वह जल्द ही इस छुटकारे का अनुभव करना चाहता है। हमें यहाँ यह समझने की आवश्यकता है कि परीक्षाएं और मुश्किलें हमें हराने के लिए नहीं आतीं। वे परमेश्वर के अनुग्रह और सामर्थ्य का प्रमाण हैं जिससे हम जीतते हैं और संसार के लोगों को परमेश्वर के बुराई पर अद्‌भुत अधिकार के बारे में गवाही देते हैं।

भजनकार भजन 71 में भी निरतंर यही कहता है। उसके जीवन के संघर्षों में उसके जवाब पर ध्यान दें। भजन 71:1 में वह अपने पाठकों को स्मरण दिलाता है कि अपने

छुड़ाने के लिए प्रतीक्षा करने पर उसने परमेश्वर की शरण पाई। वह विश्वास करता है कि जब तक वह परमेश्वर में शरण पाएगा, उसका मुँह कभी काला नहीं होगा।

परमेश्वर में शरण लेने का क्या अर्थ है? जो परमेश्वर में शरण पाते हैं वे उसमें और उसकी सच्चाई से लिपटे रहते हैं। मैं इसे ऐसे सोचना चाहता हूँ जैसे एक बच्चा अपने माता और पिता से चिपका रहता है। यह सम्पूर्ण विश्वास और भरोसे का चित्र है। मुश्किल और संकट के समयों में, चीज़ों को अपनी तरह से करने की कोशिश करना बहुत आसान होता है। जो व्यक्ति परमेश्वर में शरण पाता है वह उस पर विश्वास रखता और उसके कार्यों से लिपटा रहता है। इसलिए भजनकार पूर्ण विश्वास रखता है कि उसका परमेश्वर में शरण पाना कभी भी उसका मुँह काला नहीं करेगा। संकट के समयों में, जो कुछ आप परमेश्वर के बारे में जानते हैं उसे थामे रहें। उसके मार्गों पर भरोसा करें और शत्रु को आपको परमेश्वर की सच्चाई और वाचाओं से दूर न ले जाने दें।

भजनकार कहता है कि अपनी धार्मिकता के कारण मुझे छुड़ा। (भजन 71:2) उसका विश्वास परमेश्वर की धार्मिकता पर है। वह जानता है कि परमेश्वर वही करेगा जो सही है।

परमेश्वर भजनकार के लिए शरण की चट्टान है। कोई भी शत्रु इस चट्टान को तीर से भेद नहीं सकेगा। ध्यान दें कि भजनकार अपने पाठकों को स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर उसकी शरण और चट्टान है। इसलिए चाहे परीक्षा कितनी भी कठिन क्यों न हो, परमेश्वर की बांहें सदैव अपने बच्चों को लेने के लिए तैयार रहती हैं। उस समय भी जब भजनकार अपने परमेश्वर के साथ चलते समय हार जाता है, वह इस बात पर विश्वास करता है कि वह उस चट्टान की शरण में जाएगा और अनुग्रह, क्षमा और उद्धार को पाएगा।

पद 71:3 में भी ध्यान दें कि भजनकार परमेश्वर से कहता है कि मुझे बचाने की आज्ञा दे। हम जीवन में किसी भी परिस्थिति से गुज़रें लेकिन हम विजय से सिर्फ एक शब्द की दूरी पर होते हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है जो शत्रु हमारे साथ कर सके जिसे परमेश्वर अपने एक शब्द से ठीक न कर सके। ऐसी कोई जेल नहीं है जो परमेश्वर के एक शब्द से खुल न जाए। उसकी एक आवाज़ पर शत्रु भाग जाता है। हमारी ज़रूरत के समय पर यह कैसा शांतिपूर्ण है।

भजनकार भी प्रभु द्वारा दुष्ट के हाथों से अपना छुटकारा चाहता है (71:4)। ध्यान दें कि दुष्ट का उस पर कब्ज़ा है। भजनकार दुष्ट और क्रूर व्यक्तियों के हाथों में था हालांकि वह जानता था कि वे उसे परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य के विरुद्ध पकड़ नहीं सकते।

अपनी जवानी के दिनों से भजनकार ने अपना भरोसा परमेश्वर पर लगाया था। अपने जन्म से वह परमेश्वर पर निर्भर रहा था। यह परमेश्वर ही था जो उसे उसके माता के गर्भ से लाया था। अपने पूरे जीवन भर उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा और

परमेश्वर ही उसका छुड़ानेवाला था। इसलिए अब ऐसा कोई कारण नहीं था कि परमेश्वर उसे नहीं छुड़ाएगा।

संसार की दृष्टि में भजनकार एक बुरा व्यक्ति था। संसार को उसकी ओर देखकर लगता था कि उसके लिए अब कोई आशा नहीं थी। वे विश्वास करते थे कि वह नष्ट हो जाएगा। लोग उसके और उसके भविष्य के बारे में क्या सोचते हैं इससे भजनकार के परमेश्वर पर विश्वास में कोई अन्तर नहीं पड़ता था। परमेश्वर उसका मज़बूत गढ़ था। ऐसे दिन आ रहे थे जब वह अपने मुँह से परमेश्वर की स्तुति करता और परमेश्वर की महिमा की घोषणा करता (71:8)। हालांकि सभी चीज़े उजाड़ थीं, लेकिन वह जानता था कि परमेश्वर उसे गिरने नहीं देगा। वह परमेश्वर से चिपका रहा और शत्रु को परमेश्वर पर अपनी आशा से भटकाने नहीं दिया।

उसके बचपन और जवानी में परमेश्वर ने उसे संकट से बचाया। इसलिए अब वह परमेश्वर से कहता है, क्योंकि मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ और अब मुझ में सामर्थ्य बाकी नहीं है इसलिए अब मुझ से दूर मत जा।

भजनकार के शत्रु उसके विरुद्ध बोलते थे और ऐसे समय का इंतज़ार करते थे कि उसे मार डालें। उसका जीवन दांव पर था। उन्होंने सोचा कि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया है। उन्हें लगा कि वे उसे पकड़ लेंगे और उनके हाथों से उसे कोई बचा नहीं पाएगा। यह हमें बताता है कि भजनकार किस प्रकार की असीम पीड़ा का सामना कर रहा था। ध्यान दें, तौभी भजन 71:12 में उसका भरोसा अभी भी परमेश्वर पर था। शत्रु के शब्दों और भयानक परिस्थितियों ने उसके विश्वास को दूर नहीं होने दिया। उसने प्रार्थना की कि मुझे घात करने वाले नष्ट हों और उन्हें निन्दा और अपमान मिले। वह उन्हें परमेश्वर को सौंपता है जो भी वे परमेश्वर के लिए कर रहे हैं (पद 13)।

भजन 71:14 में भजनकार के दृढ़ विश्वास की सामर्थ्य पर ध्यान दीजिए:

मैं तो निरन्तर आशा लगाए रहूंगा और तेरी स्तुति अधिक करता जाऊँगा।

भजनकार विश्वास करता है कि ऐसे दिन आएंगे जब वह परमेश्वर की धार्मिकता और उद्धार के कारण उसकी स्तुति करेगा। वह नहीं जानता था कि उद्धार उसके पास कैसे आएगा और यह कैसा रूप लेगा। अभी सभी चीज़ें सही नहीं दिख रहीं परन्तु इससे उसके विश्वास में कोई अन्तर नहीं पड़ता। ऐसे दिन आएंगे जब वह परमेश्वर के महान कार्यों का वर्णन करेगा (71:16) भजनकार का तर्क बहुत सीधा है। परमेश्वर धर्मी है और वही करेगा जो सही है। परमेश्वर ने उसकी देखभाल जवानी में की थी तो ऐसा कोई कारण नहीं है कि अब उसकी बूढ़ी अवस्था में उसकी देखभाल न करे। वह विश्वास करता था कि परमेश्वर का कार्य अभी उसके साथ पूरा नहीं हुआ था। वह परमेश्वर की सामर्थ्य की घोषणा युवा पीढ़ी तक करेगा। (71:18)।

इस्राएल के परमेश्वर जैसा कोई परमेश्वर न था। भजनकार बताता है कि परमेश्वर की धार्मिकता आकाश तक पहुँची है। वह हमेशा परमेश्वर रहेगा और दुष्ट विजय पाएगा।

हालांकि परमेश्वर ने भजनकार को उसके जीवन में संकट और कड़वाहट को देखने की आज्ञा दी, लेकिन वह अपने समय में उसे फिर पुनःस्थापित करेगा। परमेश्वर पृथ्वी की गहराई तक जाकर उसे फिर से उठाएगा (71:20)। परमेश्वर उसकी महिमा बढ़ाएगा और उसे फिर शान्ति देगा (71:21)। भजनकार परमेश्वर की सच्चाई का धन्यवाद सारंगी बजाकर गाएगा (71:22)। वह अपने मुँह से और प्राण से भी जो परमेश्वर ने बचा लिए हैं जयजयकार गाएगा (71:23)। वह अपनी जीभ से परमेश्वर के धर्म की चर्चा दिन भर करता रहेगा, क्योंकि जो उसकी हानि की अभिलाषी थे, उनकी आशा टूट गई और उनके मुँह काले हो गए।

विचार करने के लिए:–

- परमेश्वर को अपनी शरण बनाने से क्या अभिप्राय अर्थ है?
- परमेश्वर ने आपको बीते समय में कैसे छुड़ाया? क्या आप उसके योग्य थे? इससे उसके आज के छुटकारे के बारे में क्या पता चलता है?
- परमेश्वर की धार्मिकता क्या है? यह हमें संकट के समय में कैसी आशा देती है?
- संकट के समय में शत्रु हमारा ध्यान परमेश्वर से हटाने की कोशिश करेगा। इस संदर्भ में उसने आपको परीक्षाओं के समय में कैसे आकर्षित किया?
- संकट के समय में इस भजन के अनुसार आपके पास क्या चुनौती है?

प्रार्थना के लिए:-

- बीते हुए समय में परमेश्वर के दिए गए छुटकारे पर विचार करें। ऐसे समयों के लिए विशेष रूप से धन्यवाद दें जब वह आपको छुड़ानेवाला बना।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि चाहे हमारे जीवन में कुछ भी हो, वह हमेशा सही ही करता है।
- परमेश्वर से कहें कि वह आपको भी संकट के समय में भजनकार जैसा विश्वास दे।

67 राजा की प्रार्थना

पढ़ें भजन संहिता 72:1-20

भजन 72 दाऊद राजा की अपने राज्य के बारे में प्रार्थना है। अपनी प्रार्थना में, दाऊद अपने राज्य को परमेश्वर के पास लाता है और परमेश्वर की आशीषें मांगता है। ध्यान दें, दाऊद परमेश्वर से दो चीज़ें माँगता है।

पहली, दाऊद परमेश्वर से न्याय मांगता है। न्याय एक ऐसी क्षमता है जिसमें सभी व्यक्तियों को समान और निष्पक्ष समझा जाता है। गरीबों के साथ अमीरों की समानता में व्यवहार किया जाता है। न्याय में कोई भेदभावपूर्ण व्यवहार नहीं होता। दूसरी प्रार्थना दाऊद की धार्मिकता के लिए है। इस परिच्छेद में धार्मिकता परमेश्वर की व्यवस्था का आदर करना और परमेश्वर के उद्देश्य अनुसार जीवन व्यतीत करना है। दाऊद परमेश्वर से कहता है कि मुझे अपने पवित्र स्तर के अनुसार राज्य करना सिखा। यह दाऊद की इच्छा है कि वह परमेश्वर को लोगों पर धार्मिकता और न्याय से राज्य करे (पद 2)

ध्यान दें यह भजन हमें दाऊद के राज्य के बारे में क्या बताता है। पद 3 बताता है कि पहाड़ लोगों के लिए समृद्धि लाए। यह ऐसी वर्षा का चित्र है जो पहाड़ों पर पड़ती और उसके नीचे की भूमि को नया बना देती है। इस विषय में यह वर्षा नहीं परमेश्वर की आशीष है जो पहाड़ों पर उंडेली जाती है और झरनों से बहती हुई भूमि पर जाती है जहाँ परमेश्वर के लोग रहते हैं। दाऊद का राज्य परमेश्वर द्वारा आशीषित किया गया और वह एक समृद्ध राज्य था।

दाऊद का राज्य समृद्ध ही नहीं था बल्कि वह धार्मिकता का राज्य था। पद 3 में, पहाड़ धार्मिकता का फल लाते हैं। दाऊद अपने राज्यकाल के दौरान परमेश्वर के मार्गों के पीछे चला। धार्मिक कार्यों का फल और न्याय उसके राजा बनने के समय तक रहा।

पद 4 में, हम देखते हैं कि दाऊद ने दरिद्र लोगों को बचाया। उसने अन्धेर करने वालों से ज़रूरतमंदों के बच्चों की रक्षा की। दाऊद उन सब के बारे में जानता था जिनके साथ सही व्यवहार नहीं होता था।

परमेश्वर की आशीष दाऊद के जीवन और राज्य पर बनी रही। इसी कारण वह बूढ़ा व्यक्ति बनकर भी जीवित था। भजन 21 में, दाऊद परमेश्वर से लम्बी आयु की आशीष माँगता है।

उसने तुझसे जीवन माँगा और तूने जीवन दान किया; तू ने उसको युगानयुग का जीवन दिया। (भजन 21:4)

पद 5 में, दाऊद अपने जीवन और राज्य के बारे में बताता है कि जब तक सूर्य और चन्द्रमा बने रहेंगे 'पीढ़ी पीढ़ी तक' उसका राज्य व जीवन भी बने रहेंगे। लम्बी उम्र इस बात का चिन्ह था कि परमेश्वर दाऊद से प्रसन्न था और यह परमेश्वर की उसकी सेवा पर आशीष का स्पष्ट प्रमाण है।

दाऊद अपने राज्य की तुलना खेतों में होने वाली वर्षा या पृथ्वी पर वर्षा होने से करता है। (पद 6) वर्षा इस लिए आई ताकि नया बनाए और समृद्धि लाए। बरसने वाला मेंह भूमि पर बहुतायत फसले लाया। समान रूप में, दाऊद का राज्य भी परमेश्वर के लोगों के लिए एक नई आशीष थी। इस्राएल और यहूदा के कुछ राजा परमेश्वर की ओर पीठ करेंगे और उसकी आशीषों को तुच्छ जानेंगे। परन्तु ऐसा दाऊद के साथ न था। वह अपने लोगों को महान् आशीषों की ओर लेकर गया।

दाऊद के राज्य के समय में, धर्मी फूले फले और बहुतायत की समृद्धि आई (पद 7)। दाऊद ने परमेश्वर से प्रेम किया और उसके मार्गों पीछे चला। जो आशीष उस देश ने अनुभव की वह उनके राजा के परमेश्वर को खोजते रहने का परिणाम थी। क्योंकि दाऊद ने अपने राज्य में परमेश्वर को खोजा इसलिए परमेश्वर ने उसके राज्य को बढ़ाया। दाऊद बहुत शक्तिशाली बन गया। वह अपने राज्य का वर्णन पद 8 में करता है कि समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक। जैसे दाऊद ने बहुत से युद्ध जीते और अपनी सीमाओं को बढ़ाया, वैसे ही प्रभु यीशु भी दाऊद के वंश से होकर, समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा। दाऊद का राज्य जैसे समृद्ध हुआ उसी प्रकार मसीह भी धरती पर राज्य करेगा।

दाऊद के राज्य पर परमेश्वर की आशीषों का प्रमाण पद 9 और 10 में देखने को मिलते हैं। यहाँ दाऊद बताता है कि उसके सामने जंगल के रहनेवाले घुटने टेकेंगे और उसके शत्रु मिट्टी चाटेंगे। तर्शीश और अन्य द्वीपों के राजा भेंट ले आएंगे, शेबा और सबा दोनों के राजा उपहार पहुंचाएंगे। बहुत राज्यों के राजा दाऊद के सम्मुख झुकेंगे और उसकी सेवा करेंगे। परमेश्वर ही ने उसे राजा के रूप में सफलता दी है। यह भी ध्यान देने वाली बात है कि प्रभु यीशु, दाऊद का वंशज, भी बहुत से राज्यों में प्रभुओं के प्रभु और राजाओं के राजा के रूप में पहिचाना गया।

शक्तिशाली राजा होने पर भी दाऊद ने कभी भी ज़रूरतमंद और दुखी लोगों पर से अपनी नज़र नहीं हटाई। उसका हृदय उनके लिए बोझ से दबा हुआ था। वह ज़रूरतमंदों को छुड़ाता और उन तक पहुँचता था जिनके पास कोई सहायता के लिए नहीं आता था। वह कंगाल और दरिद्र पर तरस खाता था और दरिद्रों के प्राण को अन्धेर, मृत्यु और उपद्रव से बचा लेता था। उनका लहू उसकी दृष्टि में अनमोल था (पद 13-14)।

हम इन पदों में दाऊद के राज्य के समय में न्याय और धार्मिकता को काम करते

हुए देख रहे हैं। उसकी पुकार परमेश्वर से यही है कि वह उसे न्याय और धार्मिकता के द्वारा राज्य करता रहने दे।

पद 15-17 में, दाऊद परमेश्वर से विशेष आशीषें माँगता है। पद 15 में, वह कहता है कि उसकी आयु लम्बी हो और वह न्याय और धार्मिकता से राज्य करता रहे। वह 15-16 पदों में आशीषों और समृद्धि को भी माँगता है। इन पदों में वह कहता है कि शेबा के सोने में से उसको दिया जाए। वह यह भी कहता है कि देश में पहाड़ों की चोटियों पर बहुत सा अन्न हो। पद 16 में, वह प्रार्थना करता है कि बहुतायत से फल हों और भूमि फूले-फले तथा लंबानोन के देवदारों के समान फले-फूले। वह चाहता है कि बालें घास के समान लहलहाएँ। दाऊद परमेश्वर से बहुतायत की आशीषें माँगते हुए नहीं हिचकिचाता। वह इसे अपने कर्तव्य के रूप में देखता है कि उन्हें दे जिन लोगों के पास कमी है। वह यह सब करने के लिए अपनी प्रतिभाओं पर भरोसा नहीं रखता। वह परमेश्वर के प्रबन्ध को खोजता है।

दाऊद की तीसरी इच्छा पद 15 में मिलती है। यहाँ दाऊद कहता है कि लोग उसके लिए प्रार्थना करें और प्रतिदिन उसके लिए आशीष मांगें। वह अपने अधीनस्थों के लिए प्रार्थना की ज़रूरत को पहिचानता था। वह जानता था कि उसकी सामर्थ्य और बुद्धि कहां से आई थी। इसी कारण वह परमेश्वर से कहता है कि जब वह सेवा करता है तो उसके पीछे लोगों को खड़ा करें।

दाऊद ने यह भी प्रार्थना की कि उसके लोग प्रतिदिन उसे आशीषें दें। लोग उसे उनके लिए किए गए कामों के कारण आशीषें दें। वह उनके साथ पक्षपात रहित और न्यायसंगत व्यवहार करता था। उसके प्रशासन में, गरीब और द्ररिद्रों की देखभाल की गई। आशीषें भूमि पर फैलती गईं। यह सब दाऊद के प्रयास का परिणाम था जो उसने अपने लोगों के लिए किया था। दाऊद चाहता था कि लोग उसका एक अगुवे के रूप में आदर करें और उसके न्यायसंगत और धार्मिकता से भरे प्रभाव को अपने बीच में देखें। वह चाहता था कि लोग परमेश्वर की सेवा करने और उसके साथ ईमानदारी से चलने के लाभ को देखें।

पद 17 में, दाऊद प्रभु से कहता है कि उसका नाम सदा सर्वदा बना रहे और बहुत से राज्य उसके कारण धन्य हों। दाऊद परमेश्वर से अपनी सेवा क्षेत्र को बढ़ाने के लिए कहता है। वह चाहता है कि सम्पूर्ण राज्य उसके धार्मिक और सच्चे शासन को याद रखें। वह चाहता था कि राज्य भी उन आशीषों का अनुभव करें जो उसने पाई थीं। प्रभु यीशु के द्वारा यह प्रार्थना बहुतायत से पूरी की जाएगी। प्रभु यीशु पृथ्वी के दूर दूर के कोनों तक पहुंचेगा और उस उद्धार के द्वारा जो उसने दिया है, आशीषें लाएगा।

हमारे लिए यह ध्यान देना ज़रूरी है कि दाऊद ऐसा राज्य चाहता था कि लोग उसे देखें और प्रशंसा करें। वह एक उदाहरण बने रहना चाहता था, विशेष रूप से न्याय और धार्मिकता के क्षेत्र में हमारे लिए यहां एक चुनौती है। क्या हम न्यायसंगत और धार्मिकता से भरा जीवन जीते हैं? क्या हम इस प्रकार जीते हैं कि लोग हमारी

उपस्थिति के कारण आशीषित और उत्साहित हों? क्या हम अपने बच्चों के लिए शक्तिशाली और पवित्र उदाहरण छोड़ेंगे क्या वे हमारा परमेश्वर के साथ चलना और पवित्र जीवन शैली के लाभ देख सकते हैं? दाऊद के हृदय की यह इच्छा थी कि पृथ्वी की दूर-दूर की छोर उसके कारण धन्य हो और उसकी ईमानदारी भरी चाल देखकर धन्य कहलाएं।

दाऊद ये सब आशीषें अपने लिए नहीं चाहता था। पद 18-20 में, वह यह स्पष्ट करता है कि सारी स्तुति और महिमा इस्राएल के परमेश्वर को ही जाती है। यह परमेश्वर ही है जिसमें इतने आश्चर्यकर्म किए थे। वह परमेश्वर को महान कामों का स्रोत मानता है और यह स्वीकार करता है कि बिना परमेश्वर के उसका राज्य फलरहित होता।

पद 19 में, दाऊद अपनी यह इच्छा प्रगट करता है कि परमेश्वर का नाम सदैव स्तुति पाए और पूरी धरती उसकी महिमा से भर जाए। वह यह नहीं चाहता कि उसका नाम धन्य हो या याद किया जाए। वह चाहता है कि धरती प्रभु की महिमा और स्तुति से भर जाए। तथापि वह अपने द्वारा महान चीज़ों को किये जाने की प्रार्थना करने से नहीं हिचकिचाया ताकि परमेश्वर को महिमा मिले।

लोग हममें और हमारे द्वारा परमेश्वर को उसके प्रतिनिधि होने के रूप में देखते हैं। क्या हमारे जीवनों से परमश्वेर को महिमा मिलती है? क्या लोगों को हमारी ओर देखने पर प्रभु के कार्य और विचार दिखाई देते हैं? दाऊद ने बहुतायत की आशीष की प्रार्थना करने में संकोच नहीं किया ताकि संपूर्ण पृथ्वी परमेश्वर की सेवकाई के स्पर्श को पा सके। हम लोगों को हमारे जीवनों से क्या समझना चाहते हैं। आप क्या चाहेंगे कि लोग आपको इस जीवन में किस चीज़ के लिए याद करें? उन्हें आपमें परमेश्वर कितना अधिक दिखाई देता है? क्या हमें देखकर वे परमेश्वर के सामर्थ न्याय और पवित्रता को जान पाते हैं? काश हम भी दाऊद के समान यह प्रार्थना कर सकते कि परमेश्वर अपने राज्य का विस्तार करने के लिए हमें सामर्थी रूप से प्रयोग करें। काश कि हम अत्यधिक आशीष मांगने में कभी संकोच न कर सकें ताकि प्रभु का नाम ऊँचा उठाया जाए।

विचार करने के लिए

- न्याय क्या है? धार्मिकता क्या है?
- आपकी सेवकाई और व्यक्तिगत जीवन के लिए आपकी प्रार्थना है?
- अपने लिए महान चीज़ों की प्रार्थना करने और परमेश्वर की महिमा के लिए महान चीज़ों की प्रार्थना करने के बीच क्या अन्तर है?
- आपके समाज में आपकी किस तरह की गवाही और साक्षी है? क्या आपके आस-पास रहनेवालों को आप में परमेश्वर की उपस्थिति और सामर्थ का अनुभव होता है? स्पष्ट करें?

- आपके जीवन और सेवकाई में परमेश्वर की उपस्थिति का क्या प्रमाण है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर ने आपको जो सेवकाई दी है उसके लिए उसे धन्यवाद दें। परमेश्वर से कहें कि वह अपनी महिमा के लिए इस सेवकाई को बढ़ाए।
- दाऊद को अपने राज्य में उसके पीछे खड़े रहने को प्रार्थना सहयोगियों के दल की ज़रूरत थी? क्या आपके पास ऐसा कोई दल है? प्रभु से कहें कि वह आपको और आपकी ज़रूरतों को परमेश्वर के सम्मुख रखने के लिए एक प्रार्थना सहयोगी दल दे।
- धार्मिकता सामर्थ और न्याय का व्यावहारिक प्रगटीकरण करने के योग्य बनाए।

लाईट टू माई पाथ पुस्तक वितरण

लाईट टु माय पाप पुस्तक वितरण एक पुस्तक लेखन व वितरण सेवकाई रही है। विकासशील देशों में अधिकांश मसीही कर्मियों के पास अपनी सेवा से और व्यक्तिगत प्रोत्साहन के लिए बाइबल प्रशिक्षण पाने या बाइबल अध्ययन सामग्री को प्राप्त करने के संसाधन नहीं हैं। इन पुस्तकों को प्राप्त करने के संसाधन नहीं है। इन पुस्तकों का वितरण संसार भर के ज़रूरतमंद पास्टरों और मसीही कर्मियों में नि:शुल्क या लागत मूल्य पर किया जाता है।

आज की तिथि में पचास से भी अधिक देशों में हज़ारों पुस्तकों का प्रयोग स्थानीय विश्वासियों के बीच प्रचार, शिक्षण और प्रोत्साहन देने में किया जा रहा है। इस शृंखला की पुस्तकों का अब हिन्दी, उर्दू, फ्रैंच, स्पैनिश में अनुवाद भी किया गया है। हमारा लक्ष्य अधिक से अधिक विश्वासी बनाने का है।

लाईट टु माय पाप, पुस्तक वितरण सेवकाई एक विश्वास पर आधारित सेवकाई है और संसार भर के विश्वासियों को प्रोत्साहित व मज़बूत करने के हेतु पुस्तकों के वितरण के लिए ज़रूरी संसाधनों के लिए हमारा भरोसा प्रभु पर है। क्या आप प्रार्थना करेंगे कि प्रभु इन पुस्तकों के अनुवाद व भावी वितरण के लिए द्वार खोले?

लाईटु माय पाप के बारे में अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट www.ltmp.com